

धन्य स्मृति
माउंट अथोस के एल्डर पैसयिोस
शब्द

खंड II

आध्यात्मिक जागरण

वर्ष-सूची:

अनुवाद की प्रस्तावना

धन्य वृद्ध, माउंट अथोस के शेमामोंक पैसयिोस का जन्म 1924 में कैपाडोसिया में हुआ था। वे ग्रीस में पले-बढ़े। बचपन से ही उन्होंने तपस्या का जीवन जिया। 1950 में, वे एक भिक्षु बने, और उन्होंने अपना अधिकांश समय माउंट अथोस, साथ ही कोनटिसा के स्टोमथिन मठ और माउंट सनिई पर बताया। उन्होंने असाधारण तपस्या की और प्रभु ने उन्हें अनुग्रह के अनेक वरदानों से उदारतापूर्वक नवाजा। अपनी द्रव्य पुकार का अनुसरण करते हुए, उन्होंने हजारों लोगों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया और वे आधुनिक युग के सबसे अनुग्रह-पूर्ण और वविकी एल्डर (बुजुर्ग) में से एक थे। 29 जून/12 जुलाई 1994 को प्रभु में उनका नधिन हो गया। उन्हें थ्रेसैलॉनीकी के पास सुरोती गाँव में, सेंट जॉन द थयिलोजियन के महिला मठ में दफनाया गया, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी।

1998 और 2001 के बीच, एल्डर पैसयिोस की *वर्ड्स* के पहले तीन खंड ग्रीक में प्रकाशित हुए। यह नरिणय लिया गया कि *वर्ड्स* का रूसी में अनुवाद खंड II से शुरू किया जाए, क्योंकि इसकी वर्ष-वस्तु आज विशेष रूप से सामयिक है। रूस और पूरी दुनिया में हाल की चर्चाजनक घटनाएँ एक बार फिर से एल्डर पैसयिोस के शब्दों की सच्चाई, महत्व और तात्कालिकता की पुष्टि करती हैं। हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक रूसी लोगों को उनकी उदासीनता और नरिशा की नींद से जागने में मदद करेगी, और यह उन्हें इस पापी नींद में वापस धकेलने के धूर्त प्रयासों का विरोध करने में एक शक्तिशाली हथियार के रूप में काम करेगी।

खंड I की प्रस्तावना में, परम पूज्य एबेस फिलोथेया वसितार से वर्णन करती हैं कि एल्डर पैसयिोस की 'वर्ड्स' के प्रकाशन पर काम कैसे किया जा रहा है। हम उनके स्पष्टीकरणों का संक्षेप में सारांश प्रस्तुत करेंगे।

एल्डर ने 1967 से अपने परम वशिष्ठ तक सेंट जॉन द थियोलोजियन मठ में आध्यात्मिक पति के रूप में सेवा की। उनकी आध्यात्मिक वरिष्ठता मठ में ही रही: ननियों को लिखे पत्र—सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों; उनके साथ हुई सामान्य बातचीत की टेप रिकॉर्डिंग और संक्षिप्त हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ; और बहनों द्वारा लिए गए नोट्स, जिनोंने मदर सुपीरियर की अनुमति से, एल्डर के साथ हुई प्रत्येक व्यक्तिगत बातचीत की सामग्री को तुरंत बाद रिकॉर्ड किया था। इस आध्यात्मिक वरिष्ठता को व्यवस्थित किया गया है और अब इसे स्वयंसेवकों के एल्डर पैसियों की *वर्ल्ड्स* श्रृंखला में अलग-अलग विषयगत खंडों के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। जहाँ आवश्यक हो, संग्रह की सामग्री को एल्डर पैसियों द्वारा अपने जीवनकाल में लिखी गई पहले से प्रकाशित पुस्तकों के अंशों से पूरक किया जा सकता है (इस खंड के अंत में सूची देखें)।

इस प्रकार, ग्रीक संस्करण में, प्रत्येक बाद का खंड पछिले वाले का निरंतरता नहीं है, बल्कि इसे एक अलग पुस्तक माना जा सकता है। इसलिए, रूसी अनुवाद में खंड II के प्रकाशन को दी गई प्राथमिकता पाठकों के लिए कोई कठिनाई पैदा नहीं करेगी। यदि ईश्वर की इच्छा हुई, तो निकट भविष्य में एल्डर पैसियों के *वर्ल्ड्स* के खंड I और फिर खंड III का रूसी अनुवाद प्रकाशित किया जाएगा, जिसके बाद रूसी संस्करण का प्रत्येक खंड अपनी उचित जगह ले लेगा।¹

एल्डर पैसियों की *वर्ल्ड्स* की भाषा असाधारण रूप से जीवंत और रूपकात्मक है, जिसमें बोलचाल के मुहावरे, मुहावरों वाले वाक्यांश, कहावतें और इसी तरह की अन्य बातें प्रचुर मात्रा में हैं।

कुछ मामलों में, रूसी में शैलीगत रूप से सटीक अनुवाद असंभव था। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि पुस्तक संकलित करते समय, विभिन्न शैलियों—पत्रकारिता, संतों के जीवन-चरित्र, मौखिक बातचीत और अन्य—के अंश अक्सर एक ही संदर्भ में शामिल किए गए थे। अनुवाद पर काम करते समय इसने एक अतिरिक्त चुनौती पेश की। अनुवादक उन सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस संस्करण में योगदान दिया है और आशा करते हैं कि विद्वत् पैसियों के आध्यात्मिक बीज अच्छी भूमि पर पड़ेंगे और रूसी पाठकों के ग्रहणशील हृदयों में भरपूर फल देंगे, 'जो वचन सुनते हैं और ग्रहण करते हैं, और फल देते हैं...' (मरकुस 4:20)। आमीन।

मसीह जी उठे हैं!

वह सचमुच जी उठे हैं!

हैरोमोंक डोरीमेडोंट। माउंट अथोस। ईस्टर, 2001।

भूमिका

1980 के बाद से, एल्डर पैसियों ने हमें आने वाले कठिन समय के बारे में बताया। वे अक्सर दोहराते थे कि हमें भी, प्रकाशन की पुस्तक में वर्णित बहुत कुछ सहना पड़ सकता है। अपनी शिक्षाओं के माध्यम से, उन्होंने हम में चिंता की एक स्वस्थ भावना जगाने का प्रयास किया, ताकि हम अपने आध्यात्मिक संघर्ष को तीव्र कर सकें और उदासीनता की भावना का विरोध कर सकें, जो, जैसा कि एल्डर देख सकते थे, धीरे-धीरे मठवासी जीवन के हृदय में समा रही थी। अपने

¹ एल्डर पैसियों की *वर्ल्ड्स* के खंड I, III, IV और V अब प्रकाशित हो चुके हैं। *वर्ल्ड्स* का खंड VI वर्तमान में प्रकाशन के लिए तैयार किया जा रहा है। – संपादक की टिप्पणी।

संवादों के माध्यम से, एल्डर ने हमें आत्म-प्रेम से मुक्त होने और अपनी कमजोरियों पर काबू पाने में मदद करने का प्रयास किया, ताकि हमारी प्रार्थना में शक्ति आ सके। वे कहते थे, "हमारी कमजोरियों के कारण ही हमारी प्रार्थना कमजोर हो जाती है, और तब हम न तो खुद की मदद कर पाते हैं और न ही दूसरों की। संकेत देने वाले बेकार हो जाते हैं। और अगर संकेत देने वाले काम नहीं करते हैं, तो दुश्मन बाकी लड़ाकों को पकड़ लेता है।"

स्वर्गीय एल्डर के 'वर्ड्स' के खंड 1 की प्रस्तावना में, जिसका शीर्षक 'आधुनिक मानव के लिए पीड़ा और प्रेम के साथ' है, यह बताया गया है कि जिस सामग्री से स्व्यातोगोरस्क के एल्डर पैसयिस का 'वर्ड्स' का संग्रह आकार लेने लगा, वह कैसे अस्तित्व में आई, एकत्र की गई और व्यवस्थित की गई। "शब्द" का यह दूसरा खंड, जिसका शीर्षक "आध्यात्मिक जागरण" है, आज की वास्तविकता से संबंधित विषयों पर वरिष्ठ के वचन समाहित करता है। ये वचन हमें नरितर सतर्क रहने का आह्वान करते हैं और हमें उन कठिनी परिस्थितियों के लिए तैयार करते हैं जिनमें हम खुद को पा सकते हैं। आखिरकार, हमने पहले ही वह देखा है जिसके बारे में एल्डर अक्सर बात करते थे: 'हम तूफानों से गुजरेंगे— एक के बाद एक। अब कई वर्षों तक, चीजें ऐसी ही रहेंगी: हर जगह सामान्य उथल-पुथल।'

यह दूसरा खंड पाँच भागों में विभाजित है। पहला भाग हमारे युग में व्यापक रूप से फैली सामान्य उदासीनता और गैर-जम्मेदारी से संबंधित है, और इस तथ्य से भी कि वर्तमान परिस्थिति में एक वविकी ईसाई का कर्तव्य है कि वह स्वयं को सुधारकर, वविकपूर्ण व्यवहार करके, अपने विश्वास की घोषणा करके और प्रार्थना करके दूसरों की मदद करे। "मैं आपको प्लेकार्ड उठाने के लिए नहीं कह रहा हूँ," एल्डर कहते हैं, "बल्कि ईश्वर के प्रति अपने हाथ उठाने के लिए कह रहा हूँ।" कतिब के दूसरे भाग में, फादर पैसयिस, पाठक को भक्ति के किसी एक कार्य तक सीमिति कएि बनिा, आध्यात्मिक प्रयास के लिए एक उत्साह जगाते हैं, जिसके बाद प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ताकत और उत्साह के अनुरूप एक संघर्ष के लिए छोड़ दिया जाता है, जिसका लक्ष्य एक सांसारिक स्वर्ग में रहना है—अर्थात्, मसीह में जीवन। तीसरे भाग में वरिधी मसीह के अल्पकालिक तानाशाही पर चर्चा की गई है, जो ईसाइयों को पवतिर बपतस्मा के बाद एक बार फिर से, सचेत रूप से मसीह की गवाही देने, विश्वास का एक कार्य करने, और शैतान पर मसीह की वजिय में अग्रिम रूप से आनंद मनाने का एक अनुकूल अवसर देगी। जैसा कि एल्डर ने कहा, स्वयं संत भी ऐसे अवसर से ईर्ष्या करेंगे: "कई संत हमारे युग में जीने के लिए प्रार्थना करते, ताकि वे वीरता का कोई कार्य कर सकें। लेकिन यह अवसर हमें मिला है... हम इसके अयोग्य हैं; कम से कम, आइए हम इसे स्वीकार करें।" ताकि हम ऐसे कठिनी समयों में वैसे ही जी सकें, जैसे हमें जीना चाहिए, हमें अपने भीतर एक विशेष साहस और आत्म-बलदान की भावना को वकिसति करना होगा। इस खंड का चौथा भाग, जो दैवीय प्रबंध, विश्वास, ईश्वर में भरोसे और उनकी दी हुई सहायता को समर्पित है, उस स्रोत पर चर्चा करता है जिससे हमें किसी भी कठिनी पर काबू पाने के लिए शक्ति लेनी चाहिए। अंत में, पुस्तक का पाँचवाँ भाग हृदय से प्रार्थना की आवश्यकता और शक्ति पर जोर देता है, 'जो एक शक्तिशाली हथियार है', जो तेजी से फैल रहे बुराई पर काबू पाने के लिए है। एल्डर भक्तिषुओं से युद्ध के समय सैनिकों की तरह, पूर्ण युद्ध तत्परता की स्थिति बिनाए रखने का आह्वान करते हैं। वे भक्तिषुओं से आग्रह करते हैं कि वे प्रार्थना के माध्यम से दुनिया का अथक समर्थन करें और मठवाद की सच्ची भावना को परिवर्तन से बचाने का प्रयास करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए खमीर सुरक्षित रहे। अंतिम अध्याय जीवन के गहरे अर्थ को परिभाषित करता है और पश्चाताप की आवश्यकता पर जोर देता है।

हमेशा की तरह, तर्क वह कसौटी है जिससे एल्डर अपने शब्दों और कर्मों को परखते हैं। अगले अध्यायों में, हम देखेंगे कि एक अवसर पर पति पैसयिस अपनी प्रार्थना को नहीं रोकते, चाहे तीर्थयात्री कतिनी भी अधीरता से उनकी कोठरी के दरवाजे पर हथौड़े से खटखटाते हुए चिल्लाएँ: 'प्रार्थना करना बंद करो, गैरोंना, ईश्वर को बुरा नहीं लगेगा!' — जबकि एक अन्य अवसर पर, वह दुनिया में नकिल जाते हैं क्योंकि एक सार्वजनिक वरिध प्रदर्शन से उनकी

अनुपस्थितिको गलत समझा जा सकता है और इससे चर्च को नुकसान हो सकता है। एक स्थिति में, धर्मपरायण आक्रोश से भरे हुए, एल्डर ईश्वर-नदि के खिलाफ खड़े होते हैं; दूसरी में, वह केवल ईश्वर-नदि करने वाले के लिए चुपचाप प्रार्थना करते हैं। इसलिए, पाठक को तब तक कोई नषिकर्ष नकालने की जल्दी नहीं करनी चाहिए जब तक कि वह कतिब को शुरू से अंत तक ध्यान से न पढ़ ले। हमें बड़ों की शक्तिओं से उद्धरण देते समय विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि, संदर्भ से हटकर लिए जाने पर, वे हमारे संवाददाताओं को गलत नषिकर्ष पर पहुँचा सकते हैं। यह ध्यान में रखना चाहिए कि पिता पैसियोस ने जो कहा, उसका कारण हमेशा कोई वशिष्ट घटना या प्रश्न होता था, और एल्डर के शब्द किसी वशिष्ट व्यक्ति को संबोधित थे, जिसकी आत्मा का उद्धार वक्ता का अंतिम लक्ष्य था।

जो लोग एल्डर पैसियोस को जानते थे, वे उनके शब्दों से अपने हृदय में उमड़ती कोमलता को याद करते हैं, भले ही वे कभी-कभी कतिने भी कठोर क्यों न रहे हों। ऐसा इसलिए था क्योंकि एल्डर का उद्देश्य हमेशा बुराई को ठीक करना था, न कि उस पर शर्म की मुहर लगाना। उन्होंने अपने संवाददाता के जुनून की नदि नहीं की, बल्कि उसे उससे मुक्त करने में मदद की। इसलिए, यदि संत के उन्हीं शब्दों को उस व्यक्ति के प्रति हार्दिक करुणा और प्रेम के अपने मूल संबंध से अलग कर दिया जाए, जिससे वे बात कर रहे थे, तो उनका प्रभाव अलग—और शायद उपचारात्मक नहीं—हो सकता है। द्रव्य सात्वता और सुरक्षा की भावना के बजाय, वे लोगों के दिलों में संदेह और भय बो सकते हैं, या चरमपंथ की ओर ले जा सकते हैं। लेकिन हमारे एल्डर एकतरफा या चरमपंथी व्यक्ति नहीं थे; उनकी चिंता यह थी कि अच्छाई को दयालुता से साझा किया जाए — ताकि यह लाभदायक हो सके। बेशक, उन्होंने कभी सत्य बोलने में संकोच नहीं किया, लेकिन उन्होंने इसे वक्ता के साथ कहा; पवित्रता के अपमान को देखकर, उनमें दैवीय आक्रोश की ज्वाला भड़क उठती थी; उन्होंने आने वाली उन भयानक घटनाओं की भविष्यवाणी की, फरि भी उनका व्यवहार भय या चिंता पैदा नहीं करता था। इसके विपरीत, उनके शब्दों ने आपको ईस्टर की आशा और आनंद से अवगत कराया; फरि भी यह एक ऐसा आनंद था जो बलिदान के बाद आता है, एक ऐसा आनंद जो व्यक्ति को मसीह के साथ एक करता है। यदि आप मसीह के साथ एक हैं, यदि आप चर्च के रहस्यमय जीवन में सहभागी हैं और उनके आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो आपको किसी बात का डर नहीं है: 'न तो दुष्टात्माओं का, न ही यातनाओं का।' जैसा कि एल्डर स्वयं अपने सामान्य प्रसन्न और उत्साही स्वर में कहते हैं: 'जब आप अपने "स्व" को बाहर निकाल देते हैं, तो मसीह आपके भीतर दौड़ पड़ते हैं।' यह ठीक पूरे आध्यात्मिक जीवन का उद्देश्य है; इसीलिए फादर पैसियोस ईसाई के लिए घात लगाए बैठे खतरों में से एक की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करते हैं: अपने भीतर आत्म-बलिदान की भावना को विकसित किए बिना, मसीह के जीवन में सहभागी बनना असंभव है। आत्म-बलिदान के बिना, कोई केवल एक नाम मात्र का ईसाई बन सकता है, एक ऐसा व्यक्ति जिसमें आंतरिक जीवन का अभाव है। कुछ पाठक इस तथ्य से हैरान हो सकते हैं कि अपने वृत्तांतों में, एल्डर अक्सर अपने स्वयं के जीवन का उल्लेख करते हैं, और ऐसा लगता है कि वे अपने द्वारा अनुभव किए गए चमत्कारी घटनाओं के बारे में आसानी से और स्वाभाविक रूप से बात करते हैं। लेकिन यह ध्यान में रखना चाहिए कि एल्डर के बोले हुए शब्दों को कागज पर उतारते समय, यह व्यक्ति करना असंभव है कि अपने बारे में बात करने में उन्हें कतिनी कठिनाई होती थी, और ऐसा करने के लिए उन पर कतिना दबाव डाला जाता था। कभी-कभी ऐसा होता था कि एल्डर एक ही घटना के बारे में अलग-अलग बहनों को टुकड़ों में और विभिन्न विवरणों के साथ बताते थे; बाद में, जब भी संभव होता, हम बहुत हचिकचाते हुए उनसे जानकारी 'खुंचने' की कोशिश करते थे ताकि उनके विवरण की कमियों को पूरा किया जा सके। इस प्रकार, उन अठ्ठाइस वर्षों के दौरान जब उन्होंने मठ को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया, एल्डर पैसियोस ने हमें (हमारी मदद करने के लिए) अपने जीवन की कुछ चमत्कारिक घटनाएँ बताईं। यह हमारे लिए एक 'आध्यात्मिक उपहार' था। इसलिए, जब उन्हें उस आध्यात्मिक प्रगतिको कोई संकेत नहीं दिखा जिसकी उन्होंने आशा की थी, तो वे बहुत दुखी हो गए, इतने दुखी कि वे कभी-कभी कहते थे: 'मैं रेत में खाद डाल रहा हूँ।'

हम उन सभी का धन्यवाद करते हैं, जन्होंने एल्डर के शब्दों के सम्मान में, नमिनलखिति शकिषाओं को उनके प्रकाशन से पहले पढ़ा और उन पर अपनी टपिपणियाँ दीं, साथ ही उन लोगों का भी धन्यवाद करते हैं, जन्होंने इस बात पर जोर देकर कएिल्डर की शकिषाएँ पूरी कलीसिया के लिए हैं, हमें अपना शुरू किया हुआ काम जारी रखने के लिए प्रेरित किया।

हम प्रार्थना करते हैं कधिन्य एल्डर पैसयिोंस के मध्यस्थता से, जो, कई लोगों की गवाही के अनुसार, दनि-रात हमारी रक्षा करते हैं और अपने दवि्य प्रेम से हमारी सहायता करते हैं, इस ग्रंथ में संकलित उनके शब्द हम में एक सकारात्मक चिंता उत्पन्न करें, ताकि हम उत्साह के साथ परशिरम कर सकें, बुराई दूर हो जाए, और पृथ्वी पर परमेश्वर का शांति-राज्य स्थापित हो। आमीन।

परमेश्वर की अतिपवित्र माता का स्वर्गारोहण, 1999

संत जॉन द एपोस्टल और इवैजेलिस्ट के मठ की प्रमुख

ईश्वरशास्त्री यूहन्ना, बहन फलिथेआ, अपनी बहनों के साथ

मसीह।

— गेरोना, आप कालीवा क्यों छोड़कर जंगल में जा रही हैं?

— सेल में और कहाँ शांति मिलेगी! कोई वहाँ से खटखटाता है, कोई यहाँ से। मैंने ढलानों में से एक पर एक अच्छी जगह ढूँढ़ ली है। अगर मैं स्वस्थ रही, तो मैं वहाँ एक प्रार्थना चौकी, एक रडार, स्थापित करूँगी। यह एक बहुत अच्छी जगह है, गर्मियों के लिए बस यही चाहिए, पेड़ों के साथ... मैं वहाँ अपने पैरों पर खड़ी हो सकूँगी। अगर मैं अपने मठवासी कर्तव्यों को पूरा कर सकूँ तो वही मेरी खुशी है, मेरा सहारा है! कभी जरूर आकर मिलिएगा!...

परचिय (वृद्ध के शब्दों से)

"ईश्वर की परषिद में प्रवेश करने के लिए, व्यक्तिको ईश्वर का 'प्रतनिधि' बनना चाहिए, न कि कोई ऐसा जो अपने लिए आरामदायक पद हासिल करता हो।"

— गेरोंडा, ई², जो हो रहा है, उस पर आपका क्या दृष्टिकोण है?

— आप इसे कैसे देखते हैं?

— हम क्या कहें, जेरोंडा?... यह तो आप ही हमें बता रहे हैं।

— मैं इस प्रचलित आत्मसंतोष से परेशान हूँ। कुछ तो पका-पका रहा है। हमने अभी तक न तो उस समय को ठीक से समझा है जिसमें हम जी रहे हैं और न ही इस तथ्य को कि हम मरेंगे। मुझे नहीं पता कि इस सब का क्या होगा; स्थिति

² गेरोन्डा एक आध्यात्मिक पिता के लिए प्रयुक्त सम्मानजनक संबोधन है। – अनुवादक की टपिपणी

बहुत जटिल है। दुनिया का भाग्य कुछ लोगों पर निर्भर है, लेकिन ईश्वर अभी भी रोक रहे हैं। हमें जो हो रहा है उसमें ईश्वर के हस्तक्षेप के लिए पूरी लगन और गहरे दुख के साथ प्रार्थना करने की आवश्यकता है। आइए हम इसे लगन के साथ आरंभ करें और आध्यात्मिक रूप से जीना शुरू करें। ये बहुत कठिन समय हैं। बहुत सारा राख, कूड़ा और उदासीनता जमा हो गई है — और इस सब को उड़ाने के लिए एक तेज हवा की जरूरत है। बड़ों का कहना था कि एक समय आएगा जब लोग हंगामा करना शुरू कर देंगे। [और अब]—वे बाड़ें गरि रहे हैं, किसी भी बात की परवाह नहीं कर रहे हैं। यह भयानक है! बाबेल की मीनार का अराजकता का समय आ गया है!³ पर तीन युवकों की प्रार्थना पढ़ें और आप देखेंगे कि उन्होंने कतिनी वनिमरता से प्रार्थना की थी।

और भजन संहिता 82 में: 'हे परमेश्वर, तेरा समान कौन है? चुप न रहो...' यही आवश्यक है; अन्यथा, किसी भी अच्छे की उम्मीद न करें। दैवीय हस्तक्षेप आवश्यक है।

कुछ यूरोपीय बुराइयाँ उभर रही हैं और एक लगातार बढ़ती हुई उन्नत रूप धारण कर रही हैं। एक परिवार के मुखिया — इंग्लैंड में रहने वाले एक साइप्रस के व्यक्ति — ने मुझे कहा: "हम आध्यात्मिक खतरे में हैं। हमें पूरे परिवार के साथ इंग्लैंड छोड़कर भाग जाना चाहिए।" देखिए — वहाँ एक पति अपनी बेटी से विवाह कर रहा है, वहाँ एक माँ अपने बेटे से विवाह कर रही है... ऐसी चीजें हैं कि जिनका जिक्र करना भी शर्म की बात है। और हम गलिहरियों की तरह सो रहे हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि हम प्लेकार्ड लेकर निकल पड़ें, बल्कि मैं यह कह रहा हूँ कि हम आने वाले बड़े खतरे की ओर अपना ध्यान मोड़ें और परमेश्वर के सामने अपने हाथ उठाएँ। आइए हम विचार करें कि हम बुराई से अपनी रक्षा कैसे कर सकते हैं। हमें बरेक पर अपना पैर रखना होगा, क्योंकि हिर चीज को सुलझाने [सब कुछ सामान्य करने] की प्रवृत्ति है। अब यह समय है कि हम नबी के शब्दों में प्रार्थना करें: "हे ओरीवा और जीवा, और जेवाया और सलमान... उनके राजकुमारों को दबा दो, जो कहते हैं: 'आओ, हम अपने लिए परमेश्वर के पवित्र स्थान पर कब्जा कर लें!'"⁴

बहुत बड़ा उथल-पुथल है। यह एक बहुत बड़ा अराजकता है; लोगों के मन चकरा रहे हैं। लोग मधुमक्खियों की तरह हैं। अगर आप छत्ते पर वार करते हैं, तो मधुमक्खियाँ बाहर निकलती हैं, 'वू-ऊ-ऊ...' की गुंजन करने लगती हैं और बेचैन होकर छत्ते के चारों ओर चक्कर लगाने लगती हैं। फिर वे हवा के चलने की दिशा के अनुसार किसी एक दिशा में उड़ जाती हैं। अगर यह उत्तरी हवा है, तो वे छत्ते में लौट आएँगी; अगर यह दक्षिणी हवा है, तो वे उड़ जाएँगी। लोगों के साथ भी ऐसा ही है, जिनमें अब 'राष्ट्रीय उत्तरी' और अब 'राष्ट्रीय दक्षिणी' हवा झकझोर रही है, और उनके बेचारे सरि पूरी तरह उलझन में हैं। हालाँकि, इस सारी उथल-पुथल के बावजूद, मुझे अपने भीतर एक तरह का सुकून, एक तरह का आत्मविश्वास महसूस होता है। जैतून का पेड़ भले ही सूख गया हो, लेकिन उसमें नई कलियाँ फरि से निकलेंगी। कुछ ईसाई हैं जिनमें ईश्वर वास करते हैं। ईश्वर के लोग अभी भी हैं, प्रार्थना करने वाले लोग हैं, और दयालु प्रभु हमसे धैर्य रखते हैं और सब कुछ फरि से ठीक कर देंगे। ये प्रार्थना करने वाले लोग हमें आशा देते हैं। डरो मत। हमने, एक लोगों के रूप में, कतिने ही तूफानों का सामना किया है और हम नष्ट नहीं हुए। तो क्या हम उस तूफान से डरेंगे जो आने वाला है? हम अब भी नष्ट नहीं होंगे! ईश्वर हमसे प्रेम करते हैं। जरूरत के समय के लिए एक व्यक्ति के भीतर एक शक्ति छिपी होती है। केवल कुछ कठिन वर्ष होंगे। [बस] एक तूफान।

³ दानियेल 2:21, अजर्याह की प्रार्थना और तीनों युवकों का गीत देखें। (यहाँ और आगे, पवित्र शास्त्र के सभी संदर्भ स्लावोनिक बाइबिल से लिए गए हैं।)

⁴ भजन संहिता 82:12-13। देखें न्यायियों 7 और 8।

मैं आपको यह डराने के लिए नहीं बता रहा हूँ, बल्कि इसलिए बता रहा हूँ कि आप जान सकें कि हिम कसि स्थिति में है। हमारे लिए, यह एक बहुत ही अनुकूल अवसर है; कठिनाई और शहादत जश्न मनाने का कारण है। मसीह के साथ रहो, उनके आज्ञाओं के अनुसार जियो, और प्रार्थना करो कि तुम इन कठिनाइयों का सामना कर सको। अपने जुनूनों को त्याग दो ताकि दैवीय अनुग्रह आ सके। और यदि हिम पर एक सकारात्मक चिंता (इस बारे में कि हिम कहाँ खड़े हैं और आगे क्या है) हावी हो जाती है, तो यह हमें आवश्यक कदम उठाने और खुद को तैयार करने में बहुत मदद करेगी। हमारा जीवन अधिक संयमति हो। आइए हम अधिक आध्यात्मिक रूप से जीएँ, अधिक मलिनसार बनें, पीड़ितों की मदद करें, और गरीबों की मदद प्रेम, करुणा और दया से करें। आइए हम प्रार्थना करें कि अच्छे लोग प्रकट हों।

ईश्वर बाहर निकलने का रास्ता दिखाएगा

सदप्रभु सब कुछ सर्वोत्तम तरीके से व्यवस्थिति करेंगे, लेकिन बहुत धैर्य और सावधानी की आवश्यकता है, क्योंकि अक्सर, गाँठें सुलझाने की जल्दबाजी में, लोग केवल उन्हें और अधिक उलझा देते हैं। ईश्वर उन्हें धैर्य से सुलझाते हैं। जो अब हो रहा है वह लंबे समय तक नहीं चलेगा। भगवान अपना झाड़ू उठा लेंगे! 1830 में, पवित्र पर्वत पर कई तुर्की सैनिक थे, और इसलिए कुछ समय के लिए आइवोरॉन मठ में एक भी भिक्षु नहीं बचा था। पादरी चले गए थे — कुछ पवित्र अवशेषों के साथ, अन्य विद्रोह में मदद करने के लिए। केवल एक भिक्षु दूर से आता था ताकि दीपक जला सके और फर्श झाड़ सके। मठ के अंदर और बाहर दोनों ओर सशस्त्र तुर्कों की भीड़ लगी रहती थी, और यह बेचारा भिक्षु, झाड़ू लगाते हुए, कहता था: 'हे परमेश्वर की माता! आखिर होने क्या वाला है?' एक दिन, जब वह ईश्वर की माता से मन लगाकर प्रार्थना कर रहा था, तो उसने एक महिला को अपनी ओर आते देखा, जिसका चेहरा दमक रहा था और वह तेजस्वी थी। यह ईश्वर की माता थीं। उन्होंने उसके हाथ से झाड़ू ले ली और कहा: 'तुम्हें ठीक से झाड़ू लगाना नहीं आता; मैं खुद झाड़ू लगाऊँगी।' और वह झाड़ू लगाने लगी, और फिर वे वेदी के अंदर गायब हो गईं। तीन दिन बाद, सभी तुर्क चले गए थे! ईश्वर की माता ने उन्हें भगा दिया था। जो कुछ भी सत्य नहीं है, उसे ईश्वर बाहर निकाल देंगे, ठीक वैसे ही जैसे एक आँसू आँख से धूल का कण निकाल देता है। शैतान काम कर रहा है, लेकिन ईश्वर भी काम कर रहे हैं, बुराई को भलाई में बदल रहे हैं, ताकि उससे अच्छा ही हो। उदाहरण के लिए, एक टाइल लें: यह टूटी हुई हो सकती है, लेकिन ईश्वर उसके टुकड़ों से एक सुंदर मोज़ेक बनाता है। इसलिए, थोड़ा भी नरिंश न हों, क्योंकि ईश्वर सभी चीजों और सभी लोगों से ऊपर है; वह जो सब कुछ संचालित करता है, वह सभी को उनके कर्मों का हिसाब देने के लिए न्याय के कटघरे में लाएगा, और इसी के अनुसार, प्रत्येक को उससे अपना प्रतफल मिलेगा। जो भी किसी भी तरह से अच्छाई में योगदान देते हैं, उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, और जो बुराई करते हैं, उन्हें दंडित किया जाएगा। ईश्वर अंततः सब कुछ उसकी सही जगह पर रख देगा, लेकिन इन कठिनाई वर्षों के दौरान हमने जो कुछ भी किया है, उसके लिए हम में से प्रत्येक को अपनी प्रार्थनाओं और दयालुता के कार्यों के माध्यम से जवाब देना होगा।

आज, आस्था को नष्ट करने के प्रयास किए जा रहे हैं, और आस्था की इमारत को गरिने के लिए, पत्थरों को एक-एक करके चुपचाप हटाया जा रहा है। हालाँकि, हम सभी इस वनिश के लिए ज़िम्मेदार हैं: न केवल वे जो पत्थरों को हटाते हैं और वनिश का कारण बनते हैं, बल्कि हिम भी जो [आस्था] के वनिश को देखते हैं और इसे मजबूत करने का कोई प्रयास नहीं करते। जो कोई भी अपने पड़ोसी को बुराई करने के लिए उकसाता है, उसे इसके लिए ईश्वर के सामने जवाब देना होगा। लेकिन वह भी जवाबदेह होगा जो उस समय चुपचाप खड़ा रहा: क्योंकि उसने भी किसी को अपने पड़ोसी के साथ बुरा करते देखा और उसे रोकने के लिए कुछ नहीं किया। लोग आसानी से उस व्यक्ति पर विश्वास कर लेते हैं जो मनाना जानता है।

— लोग, गैरोना, जानवरों की तरह हैं...

— मुझे जानवरों से कोई शिकायत नहीं है। देखिए, जानवर बड़ा बुराई नहीं कर सकते, क्योंकि उनमें विकल्प नहीं होता, जबकि एक व्यक्ति जो ईश्वर से बहुत दूर भटक गया है, वह सबसे क्रूर जानवर से भी बदतर हो जाता है! वे बड़ी बुराई करते हैं। खट्टे शराब से ही मजबूत सरिका बनता है। अन्य, कृत्रिम प्रकार के सरिके उतने मजबूत नहीं होते... यह कहीं अधिक भयानक हो जाता है जब शैतान एक भ्रष्ट व्यक्ति के साथ गठबंधन करता है; तब वह दूसरों पर दोहरा बुरा प्रभाव डालता है, ठीक वैसे ही जैसे कामुक विचार, जब वे शरीर के साथ गठबंधन करते हैं, तो शरीर पर और भी बड़ा बुरा प्रभाव डालते हैं। शैतान के लिए ऐसे व्यक्ति के साथ सहयोग करने के लिए, उसे उन पर भरोसा करना आवश्यक है; इस व्यक्ति को स्वयं बुराई को प्राथमिकता देनी चाहिए और उसे अपने भीतर पालना चाहिए।

परिणामस्वरूप, ईश्वर हमारी रक्षा करें, ये भ्रष्टकर्ता हमारे लिए [जानबूझकर] कठिनाइयाँ पैदा करेंगे, और अन्य लोगों तथा मठों को परेशान करेंगे। वे अपनी योजनाओं को विफल करने के लिए चर्च और मठवाद के प्रति विरोध पालेंगे। वर्तमान स्थिति का मुकाबला केवल आध्यात्मिक रूप से ही किया जा सकता है, सांसारिक तरीके से नहीं। तूफान थोड़ा और तेज होगा, जो टनि, कूड़ा-करकट और हर तरह का कचरा कनारे पर लाकर फेंकेगा, और फिर स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। और आप देखेंगे कि इस स्थिति में, कुछ लोगों को उचित प्रतिफल मिलेगा, जबकि अन्य अपने करज चुकाएंगे। यह सामने आएगा कि पीड़ित लोगों को जो कष्ट हो रहा है, वह उनके लिए सहने के लिए बहुत अधिक साबित नहीं होगा, हालाँकि, बेशक, वे 'तेरा महिमा हो, हे ईश्वर' भी नहीं कहेंगे।

परमेश्वर हमसे कतिना प्रेम करते हैं! यदि आज जो हो रहा है,⁵ और जो वे अब करने की योजना बना रहे हैं, वह बीस साल पहले हो गया होता, जब लोग अधिक आध्यात्मिक अज्ञानता में थे, तो यह बहुत कठिन होता। अब लोग जानते हैं: कलीसिया और मजबूत हो गई है। परमेश्वर मनुष्य से—अपनी सृष्टि से—प्रेम करते हैं और उसकी जड़ों को पूरा करेंगे, बशर्ते कि मनुष्य स्वयं विश्वास करे और उनकी आज्ञाओं का पालन करे।

"शापति हो वह जो प्रभु का कार्य लापरवाही से करता है..."⁶

पहले के दिनों में, यदि कोई भक्तियुक्त भिक्षु दुनिया की परिस्थितियों के बारे में चिंता करने में अपना समय व्यतीत करता, तो उसे एक टावर में बंद कर दिया जाता।⁷ अब इसका उल्टा है: यदि कोई भक्तियुक्त भिक्षु दुनिया में प्रचलित परिस्थितियों में कोई रुचि नहीं लेता, या उनकी परवाह नहीं करता, तो उसे एक मीनार में बंद कर देना चाहिए। क्योंकि अतीत में, जो शासक थे उनके भीतर ईश्वर था, जबकि अब सत्ता में रहने वालों में से कई उस पर विश्वास नहीं करते। आजकल ऐसे कई लोग हैं जो सब कुछ नष्ट करना चाहते हैं: परिवार, युवा, चर्च। इस युग में हमारे लोगों की स्थिति में रुचि लेना और उसके प्रतिचिंति होना आस्था का एक कार्य है, क्योंकि राज्य दैवीय कानून के खिलाफ युद्ध छेड़ रहा है। जो कानून यह बनाता है, वे ईश्वर के कानून के विरुद्ध निर्दिष्ट हैं।

ऐसे लोग भी हैं जो इतने उदासीन हैं कि वे चर्च को एक [द्वितीय] संस्था के रूप में नहीं पहचानते, और अपने ही लोगों के साथ अहंकार से पेश आते हैं; फिर भी, अपनी आलस्य को सही ठहराने के लिए, वे कहते हैं: 'प्रेरित पौलुस कहते हैं कि

⁵ जून 1985 में दिया गया। (इसके बाद, यूनानी प्रकाशकों के नोट्स बिना संदर्भ के दिए गए हैं।)

⁶ यर. 48:10.

⁷ पवित्र पर्वत के मठों की एक उच्च रक्षात्मक संरचना, जिसका उपयोग समुद्री डाकूओं से सुरक्षा के लिए किया जाता था।

किसी को सांसारिक मामलों में नहीं पड़ना चाहिए—और उदासीन बने रहते हैं। लेकिन प्रेरति पौलुस का कुछ और ही अभिप्राय था। उस समय, शक्तिमूर्तपूजक लोगों के हाथ में थी। कुछ लोग राज्य से अलग हो गए और मसीह में विश्वास करने लगे। प्रेरति पौलुस ने ऐसे ही लोगों से कहा था: 'इस संसार के मामलों में अपना मन न लगाओ,' ताकि वे स्वयं को संसार से अलग कर लें, क्योंकि पूरा संसार मूर्तपूजक था।⁸ हालाँकि, जब से महान कॉन्स्टेंटाइन सत्ता में आया और ईसाई धर्म की वजिय हुई, एक महान ईसाई परंपरा धीरे-धीरे आकार लेने लगी, जिसमें चर्च, मठ, कला, धार्मिक अनुष्ठान आदि शामिल थे। और इसलिये, हम इन सबको संरक्षित करने और चर्च के दुश्मनों को इसे नष्ट करने की अनुमति देने के लिए ज़िम्मेदार हैं। मैंने तो आध्यात्मिक पिताओं को यह कहते भी सुना है: 'इसकी चर्चा मत करो!' यद्यपि उनमें महान पवित्रता होती और प्रार्थना के माध्यम से वे उस अवस्था में पहुँच गए होते जहाँ उन्हें किसी और चीज़ में रुचि नहीं रह जाती, तो मैं उनके पैर चूमता। लेकिन अब वे उदासीन हैं, क्योंकि वे सभी के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना चाहते हैं और एक बेफ़िक्र जीवन जीना चाहते हैं।

उदासीनता सामान्य लोगों में भी अस्वीकार्य है, आध्यात्मिक लोगों में तो और भी। एक ईमानदार, आध्यात्मिक व्यक्ति को उदासीनता से कुछ भी नहीं करना चाहिए। *'धक्कार है उस पर जो प्रभु का काम लापरवाही से करता है...'*⁹ — यरिमयाह नबी कहते हैं।

आइए लोगों की आध्यात्मिक रूप से मदद करें

पहले के दिनों में, दस में से छह लोग ईश्वर-भयभीत होते थे, दो मध्यमपंथी और दो उदासीन, लेकिन बाद वालों के भीतर भी आस्था होती थी। आज ऐसा नहीं है। मुझे नहीं पता कि यह कहाँ तक जाएगा। आइए अब हम, अपनी पूरी क्षमता से, लोगों की आध्यात्मिक रूप से मदद करने का प्रयास करें। ताकि— ठीक वैसे ही जैसे महाप्रलय के दिनों में, नूह की कشتी में, वैसे ही अब भी — कुछ लोग बच सकें और आध्यात्मिक रूप से लंगड़े न रहें। इसके लिए बहुत अधिक ध्यान और चर्चा की आवश्यकता है: यह देखने के लिए किया हो रहा है, उसे विभिन्न कोणों से परखना और लोगों की मदद करना। क्या आपको लगता है कि मुझे लोगों के इकट्ठा होने में मज़ा आता है, या मैं इतनी बड़ी भीड़ देखना चाहता था? नहीं, लेकिन जहाँ स्थिति में हम खुद को पाते हैं, इन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों को थोड़ी मदद की जरूरत है। मैं लोगों से कोई लेना-देना न रखने के लिए ही पादरी नहीं बना था, और अंत में मैं खुद को उनसे और भी ज़्यादा नपिटते हुए पाता हूँ। लेकिन ईश्वर मेरे स्वभाव को जानते हैं और मुझे उससे भी ज़्यादा देते हैं, जितना उन्होंने मुझे दिया होता अगर मैंने अपनी मनमानी की होती। मैंने परमेश्वर की माता से कतिनी बार प्रार्थना की है कि वह मेरे लिए एक शांत, एकांत जगह ढूँढ़ दें, ताकि मैं कुछ भी न देखूँ और न सुनूँ और पूरी दुनिया के लिए प्रार्थना करूँ, फिर भी वह मेरी नहीं सुनती; जबकि वह मेरी अन्य, तुच्छ अनुरोधों को अवश्य सुनती हैं। लेकिन देखो, लोगों के आने से पहले ही, ईश्वर मुझे किसी बीमारी के कारण बसितर पर ही सीमाति कर देते हैं ताकि मैं आराम कर सकूँ। वह मुझे वह मधुरता नहीं देते जिसका मैं प्रार्थना में अनुभव करती थी, क्योंकि तब मैं उससे अलग नहीं हो पाती। उस समय, यद्यपि कोई कालीवा में आता था, तो मैं खुद को उस आध्यात्मिक अवस्था से बाहर आने के लिए मजबूर करती थी।¹⁰

⁸ तुलना करें 2 तीमु. 2:4।

⁹ यर. 48:10.

¹⁰ वरिष्ठ द्वारा अनुभव किए गए तीव्र आध्यात्मिक उथल-पुथल की एक अवधि के बाद (उन्हें लगा कि वे ईश्वर और लोगों के प्रतीप्रेम में, गर्मी में एक मोमबत्ती की तरह पघिल रहे हैं), उन्हें ऊपर से एक प्रकटवाणी मिली कि उन्हें लोगों की मदद करने से इनकार नहीं करना चाहिए।

वहाँ, कलवि में, मैं दूसरों के कार्यक्रम के अनुसार रहता हूँ। मैं अंदर भजन संहिता पढ़ रहा होता हूँ, जबकवि बाहर दरवाजे पर धड़ाधड़ दस्तक दे रहे होते हैं। "रुको," मैं कहता हूँ, "पंद्रह मिनट," और वे चलि़लाते हैं: "अरे, फादर, प्रार्थना बंद करो—भगवान को कोई आपत्तनिही होगी!" आप देख सकते हैं कवि कतिनी हद तक जा सकते हैं, है ना? और अगर मुझे बस थोड़ी देर के लिए ही बाधति होना पड़ता तो ठीक होता, लेकिन जैसे ही मैं बाहर कदम रखता हूँ—बस। उस समय तक मैंने जो कुछ भी कर लिया होता, बस वही मेरे बस का होता है। सुबह साढ़े छह या सात बजे तक, बस शांति बिनाए रखने के लिए, मुझे पहले ही वेस्पर्स (सायं प्रार्थना) खत्म कर लेनी होती है। 'हे पवतिर महिमा के प्रातःप्रकाश!' जब तक आप मैटिन्स (प्रभात प्रार्थना) खत्म करते हैं, मैं वेस्पर्स के लिए अपनी माला खत्म कर चुका होता हूँ। अगर मैं सुबह एंटडोर (बचा हुआ पवतिर भोज) खा पाता हूँ तो अच्छा होता है; उसके बाद, और कोई चाय नहीं—मैं एक लाश की तरह ढेर हो जाता हूँ। पहले ऐसा होता था कि ईस्टर और पवतिर सप्ताह दोनों में मैं नववाँ घंटा और त्रदिवितीय प्रार्थना (ट्रडियिम) करता था।¹¹ चाहे आप कर सकें या न कर सकें, आपको यह करना ही होगा। एक बार, मुझे नहीं पता किलोगों को आने से क्या रोक रहा था—शायद समुद्र में तूफान था और जहाज नहीं चला—लेकिन कोई भी कालीवा में नहीं आया। आह, मैंने सनिई पर एक दिन बतिया ठीक वैसे ही जैसे मैंने तब सेंट एपसिटमिया की गुफा में बतिया था!¹² जब समुद्र में तूफान होता है, तो मुझे शांति मिलती है। जब समुद्र में शांति होती है, तो मुझे तूफान होता है।

बेशक, मेरे पास कहीं पीछे हटकर शांति खोजने का विकल्प है। क्या आप जानते हैं ककितने लोगों ने मेरी यात्रा खर्चों का भुगतान करने की पेशकश की है ताकमैं कैलिफ़ोर्निया या कनाडा जा सकूँ? "आओ," वे कहते हैं, "हमारे पास हेसकैसटरीयों हैं।"¹³ अगर मैं खुद को कसिी अनजान जगह पर पाता, तो मुझे ऐसा लगता कि मैं स्वर्ग में हूँ। कोई मुझे नहीं जानेगा; मेरी अपनी दिनचर्या होगी, एक मठवासी जीवन बलिकुल वैसे जैसा मैं चाहता हूँ। लेकिन, देखिए, युद्ध के बाद ही वमिचन होता है। और अभी एक युद्ध चल रहा है—एक आध्यात्मिक युद्ध। मुझे मोर्चे पर रहना होगा। कतिने मार्क्सवादी, कतिने फ्रीमेसन, कतिने शैतानपूजक और हर तरह के दूसरे लोग! कतिनी ही वशीभूत आत्माएँ, अराजकतावादी और भ्रम में पड़े लोग मेरे पास आते हैं ताकमैं उनके भ्रम को आशीर्वाद दे सकूँ। और कतिनों को बनिा खुद सोचने के लिए मजबूर किए मेरे पास भेजा जाता है; कुछ तो बस उनसे छुटकारा पाने के लिए, दूसरे इसलए ताकमिन्हें खुद साँप को उसके बलि से बाहर खींचना न पड़े... काश तुम जान पाते कि मुझे कतिना कुचला जा रहा है, और कतिनी तरफ से! मेरा मुँह मानवीय पीड़ा की कड़वाहट से भरा है। लेकिन अंदर मुझे सुकून महसूस होता है। अगर मैं यहाँ से चला गया, तो मैं इसे मोर्चा छोड़ देने, पीछे हटने के समान मानूँगा। मैं इसे वशिवासघात मानूँगा। मैं इसे इसी तरह देखता हूँ। क्या यही मैं चाहता था जब मैंने इस रास्ते पर पहली बार कदम रखा था, या शायद मैं मठों की मदद करना चाहता था? मैं एक जगह के लिए नकिला था, पर मैं दूसरी जगह आ गया, और अब मैं कतिना संघर्ष कर रहा हूँ! और मैं [हमारे आस-पास जो

उस समय से, उन्होंने अपने दिन उनसे मिलने आने वालों को समर्पति कर दिए, जबकि रात में वे दुनिया की वभिन्न समस्याओं के लिए प्रार्थना करते थे। हालाँकि, जब तीर्थयात्रियों की संख्या में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई, तो एल्डर ने प्रार्थना के लिए अपना सारा समय समर्पति करने के लिए एक अज्ञात स्थान पर चले जाने पर वचार किया। फिर, दूसरी बार, उन्हें सूचित किया गया कि उन्हें अपनी कोठरी, 'पनागुडा' में ही रहना चाहिए और लोगों की मदद करनी चाहिए।

¹¹ बाइजेंटाइन समय के अनुसार रात 9 बजे (दोपहर 3 बजे) तक या तीन दिनों तक भोजन और पानी से उपवास।

¹² 1962–64 में, एल्डर ने माउंट सनिई पर संत एपसिटमिया की मरुस्थलीय कोठरी में एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत किया।

¹³ हेसकैसटरी (ग्रीक ἡσυχία – मौन से) एक वशिष प्रकार का मठ है, जो अक्सर एक मूल मठ पर नरिभर होता है, साथ ही मूल मठ से बहुत दूर नहीं स्थित एक अलग कोठरी भी होती है। – *अनुवादक की टपिपणी*।

हो रहा है] उसके बारे में किसी और को बोलते हुए नहीं सुनता। क्या वे चर्च को नष्ट कर रहे हैं? कोई कहेगा, 'कोई बात नहीं।' फरि भी वे दोनों पक्षों से दोस्ती करते हैं, सिर्फ अपने लिए एक और आरामदायक जगह सुनिश्चित करने के लिए! और क्या आरामदायक जगह है! अंत में, शैतान खुद ही उसे 'ठीक कर देगा'। यह शर्म की बात है! अगर मैं अपनी खुशी के लिए कुछ करना चाहता, तो वह करना बहुत आसान होता—आह, आप जानते हैं कविह कतिना आसान होता! हालाँकि, उद्देश्य मुझे जो पसंद है वह करना नहीं है, बल्कि विह करना है जो दूसरों की मदद करे। अगर मैं अपने लिए एक आरामदायक पद हासिल करने के बारे में सोचता, तो मैं उसे कई जगहों पर पा सकता था। लेकिन ईश्वर की परषिद में प्रवेश करने के लिए, किसी को ईश्वर का 'प्रतनिधि' बनना होगा, न कि कोई ऐसा जो अपने लिए आरामदायक पद हासिल करता हो।

भाग 1. प्रेम की ज़िम्मेदारी

'चर्च प्रेम के माध्यम से काम करता है, न कि वैसा जैसा कि किानून पसंद करते हैं। चर्च सभी चीज़ों को धैर्यपूर्वक देखता है और हर किसी की मदद करने का प्रयास करता है, चाहे उन्होंने कुछ भी किया हो, चाहे वे कतिने भी बड़े पापी क्यों न हों'

अध्याय 1. एक उदासीन पीढ़ी

ईश्वर के प्रतउदासीनता सब कुछ के प्रतउदासीनता की ओर ले जाती है

— वहाँ वह शोर क्या है?

— यह एक हवाई जहाज है, गेरोना।

— खड़िकी बंद कर दो, भगवान के लिए, कहीं उड़ता हुआ सीधा यहाँ आकर न गरि पड़े! दुनिया जसि पागलपन की हालत में पहुँच चुकी है, उसे देखते हुए, ऐसा हो भी सकता है! सब कुछ बखिर गया है: परिवार, शिक्षा, सार्वजनिक सेवाएँ... और उन्हें कोई परवाह नहीं! उनमें कुछ भी नहीं बचा है...

— गेरोना, इस हालत के लिए दोषी कौन है?

— मैं सामान्य तौर पर बात कर रहा हूँ: मैं यह जोर देना चाहता हूँ कि उदासीनता कतिनी चरम पर पहुँच गई है। किसी भी स्कूल में जाइए और आप देखेंगे, उदाहरण के लिए, कि अगर खड़िकियाँ खुली हों और शीशे हवा में खड़खड़ा रहे हों, तो उन्हें बंद करने के लिए कोई बच्चा तैयार मलिना बहुत मुश्किल होता है ताकि काँच टूटकर बखिर न जाएँ। वे बस वहाँ खड़े-खड़े ताकते रहेंगे, खड़िकियों के खड़खड़ाने को देखते रहेंगे, और ऐसे निकल जाएँगे मानो कुछ हो ही नहीं रहा हो।

उदासीनता! डपिों के प्रभारी एक अधिकारी ने मुझसे कहा: "मुझे ईंधन और स्नेहक डपिों,¹⁴ की रखवाली के लिए एक सभ्य सैनिक खोजने में बहुत मुश्किल हो रही है, ताकि दूसरे उसे आग न लगा दें या वह खुद लापरवाही से सगिरेट का टुकड़ा फेंककर आग न लगा दे।"

उदासीनता की भावना; बलिकुल भी साहस नहीं! हम पूरी तरह से बर्बाद हो गए हैं! ईश्वर हमें अभी भी कैसे बर्दाश्त करता है? जबकि पहले, कतिनी गरमा थी, कतिना सम्मान!¹⁵ 1940 के युद्ध के दौरान¹⁶, सीमा पर इतालवी सैनिक कभी-कभी हमारे सीमा रक्षकों से बातचीत करते थे और ग्रीक चौकियों पर उनसे मिलने आते थे। और देखिए ग्रीकों ने कैसे मेहमाननवाजी दिखाई: एक बार जब इतालवी एक ग्रीक चौकी पर आए, तो ग्रीकों ने उनके लिए कॉफी बनाना शुरू कर दिया। तब एक ग्रीक अधिकारी ने उनके सामने पचास और सौ ड्रैक्मा के नोटों का एक गुच्छा निकाला (और उस समय पैसे का कुछ मोल हुआ करता था)—और उन्हें आग में फेंक दिया, ताकि इतालवियों को दिखाया जा सके कि ग्रीक राज्य कतिना समृद्ध था। इतालवियों के होश उड़ गए। यह तो आत्म-बलदान था!

और आज, वही भावना जो साम्यवादी राज्यों में प्रचलित थी, हमारे यहाँ भी पहुँच चुकी है। रूस में, इस तथ्य के बावजूद कि इस साल फसल हुई है, क्या आप जानते हैं कि कैसी अकाल पड़ेगी!¹⁷ उन्होंने समय पर गेहूँ की कटाई नहीं की — इसलिए वे पतझड़ में उसे काटने गए। पतझड़ में कटाई? खैर, अगर गेहूँ उनका अपना नहीं है, तो वे उसकी परवाह कैसे करेंगे और जाकर उसे काटेंगे! उनका जीवन जबरदस्ती की एक लंबी परीक्षा है। उनमें कुछ भी बनाने का कोई उत्साह नहीं है, क्योंकि इतने वर्षों से वे कुछ बना नहीं रहे हैं। और इस पनप चुके लापरवाह रवैये, इस उदासीनता के कारण, पूरा राज्य बर्बाद हो गया है। बारिश हो रही है, और खलहान में फटककर सुखाया गया गेहूँ सूख रहा है। उन्हें बलिकुल भी परवाह नहीं है। क्या जाने का समय हो गया है? वे चले जाते हैं, जबकि बारिश गेहूँ को बर्बाद कर देती है।

अगले दिन वे बचे-खुचे को इकट्ठा करने के लिए नियत समय पर आएँगे! जबकि अगर आपके अपने गेहूँ फटकनी पर पड़े हों और बारिश होने लगे — तो क्या आप उसे बर्बाद होने देंगे? आप उसे बचाने के लिए सोएंगे भी नहीं। और फिर, थकान के बावजूद, आपको खुशी, हर्षोल्लास महसूस होगा।

ईश्वर के प्रति उदासीनता हर चीज़ के प्रति उदासीनता की ओर ले जाती है; यह पतन की ओर ले जाती है। ईश्वर में आस्था एक महान चीज़ है। एक व्यक्ति ईश्वर की सेवा करता है, और फिर अपने माता-पिता, अपने घर, अपने रक्षितदारों, अपने काम, अपने गाँव, अपने क्षेत्र, अपने देश, अपनी मातृभूमि से प्रेम करता है। जो कोई भी ईश्वर या अपने परिवार से प्रेम नहीं करता, वह वास्तव में किसी से भी प्रेम नहीं करता। और स्वाभाविक रूप से, वे अपनी मातृभूमि से भी प्रेम नहीं करते, क्योंकि मातृभूमि एक बड़ा परिवार है। मेरा मतलब यह है कि सब कुछ इसी से शुरू होता है। जो व्यक्ति ईश्वर में विश्वास नहीं रखता, वह बाद में अपने माता-पिता, अपने परिवार, अपने गाँव या अपनी मातृभूमि को कोई सम्मान नहीं करता। यह वही है जसिं वे इस समय तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, और इसीलिए वे इस लापरवाही की स्थिति

¹⁴ ईंधन और स्नेहक। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁵ फिलोतमि (ग्रीक: φιλότιμο)। यह शब्द एल्डर पैसयिोंस की रचनाओं में बार-बार आता है, जो आध्यात्मिक जीवन में फिलोतमि के महत्व पर जोर देते हैं। आधुनिक रूसी में φιλότιμο शब्द के लिए कोई समकक्ष नहीं है। इसे शाब्दिक रूप से 'उदारता' के रूप में अनुवादित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह आत्म-बलदान की प्रवृत्ति, नैतिक या आध्यात्मिक आदर्श के पक्ष में भौतिक चीज़ों की उपेक्षा है। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁶ ग्रीस और फासीवादी इटली के बीच 1940-41 का युद्ध। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁷ 1990 में दिया गया।

को बढ़ावा दे रहे हैं। एक पुलसि अधिकारी ने मुझे लिखा: "मैं नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास काम का पहाड़ है। जलि में हम केवल दो ही बचे हैं, जबकियहाँ आठ होने चाहिए।" क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि क्या हो रहा है! वे दो और नयिकृत कर सकते थे, लेकिन नहीं — वे सिर्फ़ उन दोनों को ही छोड़ रहे हैं!

लेकिन सौभाग्य से कुछ अपवाद हैं। एक दिन एक पति मेरे पास आए और कहा: "एंजेलोस के लिए प्रार्थना करो,¹⁸ नहीं तो वे उसे मार डालेंगे।" मैं उसके बेटे को बचपन से जानता था, और अब वह अपनी अनविष्य सैन्य सेवा कर रहा था। "क्यों," मैंने पूछा, "क्या हुआ?" उन्होंने कहा: "एक दिन उसने कुछ अन्य सैनिकों को अपने कर्तव्यों को नभाने के बजाय ताश खेलते देखा। उसने उन्हें डांटा, लेकिन उन्होंने उसकी नहीं सुनी। फिर उसने उनके खिलाफ़ एक रिपोर्ट दर्ज कराई, जिसके बाद उन खिलाड़ियों में से एक ने उसे जान से मारने की धमकी दी।" — "सुनो," मैंने कहा, "वह वास्तव में उसे नहीं मारेंगे। लेकिन मैं प्रार्थना करूँगा कि एंजेलोस को ताश न खेलने के लिए कोर्ट-मार्शल न किया जाए।"

और जब मैंने एक और घटना सुनी, तो मैंने कहा: "भगवान का शुक्र है, अभी भी कुछ ग्रीक हैं जो अपने देश की परवाह करते हैं।" एक पायलट ने, जब तुर्की के विमानों ने सीमा का उल्लंघन किया, तो वे उनसे थोड़ा आगे निकलकर एक तस्वीर लेने की कोशिश कर रहे थे, ताकियह सबूत मलि सके कि उन्होंने सीमा का उल्लंघन किया है। दूसरे पायलट ने रेडियो पर उन पर चिल्लाया: "उसे जाने दो!" — लेकिन वह डटा रहा, अपनी पूरी कोशिश करता रहा... तुर्की का विमान बड़ा और तेज़ था, और वह बहुत नीचे उड़ रहा था, इसलिए बेचारा ग्रीक समुद्र में क्रैश हो गया! और फिर ऐसे भी लोग हैं जो हवाई जहाज में सिर्फ़ मौज-मस्ती के लिए उड़ान भरते हैं! बस लोग एक-दूसरे से इतने अलग होते हैं!

एक व्यक्तिको अच्छाई के अर्थ को समझने की ज़रूरत है, उसे एक आवश्यकता के रूप में महसूस करना चाहिए; अन्यथा, केवल पूर्ण शथिलिता ही होगी। किसी को जबरदस्ती युद्ध में भेजने की कोशिश करें! वह वहाँ से भागने और यहाँ से निकल भागने की कोशिश करेगा। हालाँकि, एक बार जब उसे यह एहसास हो जाता है कि दुश्मन क्या बुराई लाएगा, तो वह खुद जाकर एक स्वयंसेवक के रूप में भरती हो जाएगा।

आजकल लोग केवल अपने ही इर्द-गर्द घूमते हैं

मेरे वतन, फारस में, कहा जाता था: 'अगर कोई काम करना हो, तो उसे कल पर न टालो। अगर अच्छा खाना मलि, तो उसे कल के लिए बचाकर रखो — कोई मेहमान आ सकता है।' आजकल लोग ऐसा सोचते हैं: 'हम काम छोड़ देंगे; शायद कोई कल आकर हमारी मदद कर दे। लेकिन चलो, आज ही शाम को हम खुद ही उस स्वादुष्ट भोजन का आनंद लेते हैं!' आजकल ज्यादातर लोग स्वार्थी हो गए हैं; वे सिर्फ़ अपने बारे में ही सोचते हैं। मान लीजिए कि भूसलाधार बारिश होने लगे। आप देखेंगे: आप में से ज्यादातर लोग यह सोचेंगे कि क्या आपका कपड़ा बाहर सूखने के लिए टंगा है, और उसे अंदर लेने के लिए दौड़ेंगे। इसमें कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन वे इससे आगे नहीं बढ़ते। भले ही कपड़ा गीला हो जाए, वह फिर से सूख जाएगा। लेकिन उन लोगों का क्या जो ठीक उसी समय फसल कटाई के अड्डे पर काम कर रहे हैं? क्या आपको उन पर कोई दया आती है, या क्या आप उनके लिए प्रार्थना करेंगे? या फिर बजिली गरिने वाली आंधी-तूफान के दौरान, जब बजिली चमकती है, तो यह संदेह है कि क्या खेतों में काम करने वाले उन गरीब आत्माओं के लिए या ग्रीनहाउस की देखभाल करने वालों के लिए पांच या छह आत्माएं भी एक विचार करेंगी। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बारे में नहीं सोचता, अपने 'स्व' से बाहर कदम नहीं रखता, बल्कि लगातार अपने ही चारों ओर घूमता रहता है। हालाँकि, अपने ही चारों ओर घूमते हुए, उनका केंद्र स्वयं होता है, न कि मसीह। वे उस धुरी के बाहर हैं जो मसीह है। यदि कोई

¹⁸ यानी, उसके बेटे के लिए, जिसका नाम एंजेलोस है। — अनुवादक की टिप्पणी।

व्यक्ति अपने पड़ोसी के बारे में सोचने के स्तर तक पहुँचना चाहता है, तो उसका मन पहले मसीह में [स्थिति] होना चाहिए। तब वे अपने पड़ोसी के बारे में सोचते हैं, और बाद में जानवरों और पूरी प्रकृति के बारे में। उनका 'रेडियो' चालू हो जाता है, और जैसे ही कोई संकेत आता है, वे मदद के लिए दौड़ पड़ते हैं। हालाँकि, यदि उनका मन मसीह में नहीं है, तो उनका हृदय काम नहीं करता है, और इसलिए वे न तो मसीह से प्रेम करते हैं, न अपने पड़ोसी से, और न ही, उससे भी बढ़कर, प्रकृति से—जानवरों, पेड़ों, पौधों से। अगर आप अब की तरह ही व्यवहार करते रहेंगे, तो आप जानवरों, पक्षियों से कभी कैसे जुड़ने की उम्मीद कर सकते हैं? अगर कोई पक्षी छत से गरि जाता है, तो आप उसे खाना खिलाएंगे, लेकिन अगर वह नहीं गरिता है, तो आप उसके बारे में दूसरी बार सोचेंगे भी नहीं। मैं पक्षियों को देखता हूँ और कहता हूँ: 'हमें उन बेचारों को खाना खिलाना चाहिए!' — मैं उनके लिए कुछ ब्रेड के टुकड़े बखिरता हूँ और पीने के लिए पानी रखता हूँ। मैं पेड़ों पर बीमार टहनियाँ देखता हूँ, और तुरंत ही मैं उन्हें छाँटना चाहता हूँ ताकि वे दूसरी टहनियों को संक्रमित न करें। या अगर कोई दरवाजा या खड़की जोर से बंद हो जाता है, तो मेरा दमिग सीधे वहीं चला जाता है। अगर मुझे किसी चीज़ की जरूरत हो तो मैं अपने बारे में भूल भी सकता हूँ, लेकिन मैं यह जरूर देखूँगा कि दरवाजा या खड़की टूटी तो नहीं है, या कहीं कोई नुकसान तो नहीं हुआ है। मैं अपने बारे में तो बस यँ ही सोच लेता हूँ। अगर कोई ईश्वर की रचनाओं की इतनी गहराई से परवाह करता है, तो उसे अपने स्रष्टा के बारे में कतिनी ज्यादा सोचना चाहिए! हालाँकि, अगर कोई व्यक्ति इस तरह से व्यवहार नहीं करता है, तो वह ईश्वर के साथ सामंजस्य कैसे बठा सकता है?

और एक बात: जब आप सड़क पर बाहर निकलें, तो चारों ओर देखें। हो सकता है कि किसी ने, या तो लापरवाही से या दुर्भावना से (मुझे उम्मीद है कि कोई कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा), कुछ नीचे फेंका हो और आग लगा दी हो, इसलिए एक नज़र जरूर डालें। यह बात आध्यात्मिक क्षेत्त्र पर भी लागू होती है, क्योंकि इस देखने की क्रिया में ही प्रेम मौजूद है। जब मैं कालीवा से बाहर निकलता हूँ, तो मैं नीचे देखता हूँ, छत पर नज़र डालता हूँ, और यह देखने के लिए सँघता हूँ कि कहीं जलने की गंध तो नहीं आ रही है। यह एक अलग बात है कि अगर आपको ऐसा विश्वास है कि, अगर आग लग जाए और आप प्रार्थना करना शुरू कर दें, तो आग बुझ जाएगी। अगर आपके पास वह विश्वास नहीं है, तो आपको [मानवीय तरीके से] कार्य करना होगा। या, जब दूर से कोई गड़गड़ाहट सुनाई देती है, तो मैं सुनता हूँ कि यह क्या है: कोई तोप है, सैन्य अभ्यास हो रहे हैं, या कुछ उड़ाया जा रहा है? मेरा मन तुरंत उसी पर चला जाता है, और मैं जो हो रहा है उसके लिए प्रार्थना करने लगता हूँ। दूसरों के प्रति प्रेम के कारण जो व्यक्ति अपने प्रति उदासीन रहता है, उस पर ईश्वर की महान कृपा बनी रहती है, और सभी लोग उसकी देखभाल करते हैं।

लेकिन आज की पीढ़ी उदासीनता की पीढ़ी है! ज्यादातर तो सिर्फ परेड के काम आते हैं। अगर कुछ हो जाए, तो उन्हें यह मत कहना, 'अपना बचाव करो!' खैर, आजकल तो वे परेड भी नहीं चाहते! पहले, वे परेड में जाते थे, मार्च सुनते थे, और उनके भीतर कुछ जाग उठता था। आज, हम यूनानियों के बीच अनुशासन की कमी है। बेशक, अन्य राष्ट्र तो और भी बदतर हालत में हैं, क्योंकि उनके पास कोई आदर्श नहीं है। देखिए, यूनानियों में बहुत सारी खामियाँ हैं, लेकिन उनके पास ईश्वर का एक वरदान भी है—मस्ती का प्यार और साहस की भावना। उनके लिए हर चीज़ एक उत्सव है! अन्य राष्ट्रों की शब्दावली में ऐसे शब्द तक नहीं हैं।

हम जमिमेदार हैं¹⁹

एक कट्टर नास्तिक मेरी झोपड़ी में मलिन आया। वह तरह-तरह की बातें करता रहा, और फरि घोषणा की: 'मैं एक मूर्तभिंजनवादी हूँ।' तो उसने शुरुआत में किसी भी चीज़ पर विश्वास नहीं किया, और अंत में मूर्तभिंजन तक पहुँच गया! 'ओह, हे नास्तिक दुर्भाग्यशाली,' मैंने कहा, 'अगर तुम किसी भी चीज़ में विश्वास नहीं करते, तो फरि तुम मुझे क्यों बता रहे हो कि तुम मूर्तभिंजनवादी हो? मूर्तभिंजनवाद के दानों में²⁰ कुछ ईसाई, अत्यधिक उत्साह के कारण, भ्रम में पड़ गए, दूसरे चरम पर चले गए, और फरि चर्च ने सब कुछ फरि से ठीक कर दिया। ऐसा नहीं था कि वे विश्वास नहीं करते थे।' और, वैसे भी, यह नास्तिक वर्तमान परिस्थितियों से सहमत था। हमारी बहस हुई। "ठीक है, अच्छा," मैंने कहा, "आखिर हो क्या रहा है? न्यायाधीश फैसला सुनाने से डरते हैं। लोग अपराधियों के खिलाफ मुकदमे दायर करते हैं, लेकिन फरि वादियों को धमकियाँ दी जाती हैं, और उन्हें अपने दावे वापस लेने पड़ते हैं। और अंत में, यह सब कौन चला रहा है? क्या आपको इस तरह की चीज़ पसंद है? क्या आप इनकी मंजूरी देते हैं? तुम खुद एक अपराधी हो! क्या इसलिए तुम यहाँ आए हो? अब यहाँ से निकल जाओ!" मैंने उसे बाहर निकाल दिया।

— गेरोन्डा, क्या आपको ऐसी बातें कहने में डर नहीं लगता?

— डर किस बात का? मैंने अपनी कब्र खुद ही खोद ली है। अगर मैंने न की होती, तो मुझे चिता होती कि किसी और को इसे खोदने की जहमत उठानी पड़ेगी। लेकिन अब बस ऊपर से कुछ फावड़े मट्टी के डालना बाकी है...

मैं एक और नास्तिक ईश्वर-ननिदक को जानता हूँ जिसने टेलीविजन पर आने की अनुमति है, इस तथ्य के बावजूद कि उसने मसीह और परमेश्वर की माता के खिलाफ सबसे अधिक ईश्वर-ननिदात्मक शब्द बोले हैं। और चर्च चुप रहती है और इन ईश्वर-ननिदकों को चर्च से बहिष्कृत नहीं करती। चर्च को ऐसे लोगों को चर्च से बहिष्कृत कर देना चाहिए। क्या चर्च से बहिष्कृत करना, शायद, एक खेद की बात है?

— गेरोन्डा, अगर उन्हें चर्च से निकासित कर दिया जाए तो वे क्या समझेंगे, क्योंकि वे वैसे भी किसी बात को स्वीकार नहीं करते?

— कम से कम, यह स्पष्ट हो जाएगा कि चर्च अपनी राय व्यक्त कर रही है।

— जेरोन्डा, क्या चुप्पी ऐसे व्यवहार को सहन करने के बराबर नहीं है?

— हाँ। उनमें से एक ने परमेश्वर की माता के बारे में कुछ अपमानजनक लिखा, और सब चुप रहे। मैंने उनमें से एक से कहा: 'क्या तुम नहीं देख सकते कि अमुक क्या लिख रहा है?' — 'ओह,' उसने कहा, 'तुम उससे क्या कर सकते हो? अगर तुम उनसे जुड़ोगे तो तुम्हें खुद परेशानी में पड़ना पड़ेगा।' वे बोलने से डरते हैं।

— वह किस बात से डरता है, जेरोन्डा?

— वह डरता है कि उसके बारे में कुछ लिखा जा सकता है, कि वह सबके सामने बेनकाब हो सकता है, और इसलिए वह ईश्वर की माता के खिलाफ धर्मनिरादी को बर्दाश्त कर लेता है! आइए हम किसी और के साँप को उसके बलि से बाहर

¹⁹ 1992 में प्रस्तुत।

²⁰ मूर्तभिंजन – एक ईसाई विधर्म जिसने बाइजेंटाइन साम्राज्य को सौ से अधिक वर्षों (726–843) तक हिला कर रख दिया और सातवें सार्वभौमिक परिषद (787) के बाद कुछ समय के लिए शांत हो गया। प्रतमि-भिंजन के दूसरे चरण की शुरुआत सम्राट लियो पंचम द आर्मेनियन ने की थी, और 843 में कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट मेथोडियस के अधीन इसका अंत हुआ। प्रतमि-भिंजन के ईसाई हैं जो पवित्र प्रतमियों का सम्मान नहीं करते।

नकिलने का इंतजार न करें ताकहिम चैन से रह सकें। यह प्रेम की कमी है। फरि एक व्यक्तिस्वार्थ से प्रेरति होने लगता है। यही कारण है कि आजकल ऐसा भाव इतनी व्यापक रूप से फैला हुआ है: 'चलो अमुक व्यक्तिके साथ [अच्छे] संबंध बनाए रखें, ताकविह हमारी प्रशंसा करे। और अमुक व्यक्तिके साथ दोस्ती बनाए रखें, ताकविह हमें अपमानति न करे, ताकहिमें मूर्ख न समझा जाए, ताकहिम शक्ति न बन जाएँ।' और कुछ लोग उदासीनता के कारण चुप रहते हैं। वे सोचते हैं, 'मैं चुप रहूँगा, ताकवि मेरे बारे में अखबारों में न लिखें।' दूसरे शब्दों में, बहुमत पूरी तरह से उदासीन है। अब चीजें अभी-अभी थोड़ा बदलना शुरू हुई हैं, फरि भी इतने लंबे समय तक किसी ने कुछ नहीं लिखा। कई साल पहले, मैंने पवतिर पहाड़ पर एक [व्यक्ति] पर चलिलाया था। "तुम्हारे अंदर देशभक्ति बहुत ज्यादा है," उसने मुझसे उस समय कहा था। और हाल ही में वह आया, मुझे ढूँढ़ नकिला और बोला: "तुमने सब कुछ बर्बाद कर दिया: अपना परिवार, अपनी परवरिश..." तब मेरी बारी थी कि मैं उसे उसके ही शब्दों में जवाब दूँ। "देशभक्ति," मैंने कहा, "तुम्हारे अंदर इसकी बहुत ज्यादा है!"

इस पूरी स्थिति ने कुछ बुरा और कुछ अच्छा दोनों दिया है। बुरी बात यह है कि जिने लोगों के भीतर कुछ था, वे भी उदासीन होने लगे और कहने लगे, 'क्या मैं सच में स्थिति बदल सकता हूँ?' और अच्छी बात यह है कि किई लोगों ने आत्म-चिंतन करना और बदलना शुरू कर दिया। कुछ लोग मुझसे मिलने आते हैं और अतीत में किए गए किसी गलत काम के लिए बहाना ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने चीजों पर सोच-समझकर विचार करना शुरू कर दिया है।

— तो, गेरौन्डा, क्या हमें हमेशा अपने विश्वास का प्रचार करना चाहिए?

— हमें अपने विवेक का उपयोग करना चाहिए। ऐसे समय होते हैं जब हमें बोलने की आवश्यकता नहीं होती, और ऐसे समय होते हैं जब हमें साहसपूर्वक अपने विश्वास का प्रचार करना चाहिए, क्योंकि यदि हम चुप रहते हैं, तो हम इसकी ज़िम्मेदारी उठाएंगे। इन कठिन वर्षों में, हम में से प्रत्येक को वह करना चाहिए जो मानवीय रूप से संभव है, और जो मानवीय रूप से असंभव है उसे ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। इस तरह हमारा अंतरात्मा शांत रहेगा, क्योंकि हमने जो कर सकते थे, वह किया। अगर हम इसके खिलाफ नहीं खड़े हुए, तो हमारे पूर्वज अपनी कब्रों से उठ खड़े होंगे। उन्होंने मातृभूमि के लिए बहुत कुछ सहा, और हम इसके लिए क्या कर रहे हैं? स्वयं यूनानी ऑर्थोडॉक्स हेलास, उसकी परंपराओं, उसके संतों और उसके नायकों के खिलाफ युद्ध लड़ रहे हैं, और हम चुप रहते हैं! यह भयावह है! मैंने एक आदमी से कहा: "तुम चुप क्यों हो? तुम उस किसी के किए की बात कैसे सह सकते हो?" उसने जवाब दिया: "कुछ कहने का क्या फायदा? वह तो पूरी तरह से बगिड़ चुका है।" — "अगर वह पूरी तरह से बगिड़ चुका है, तो तुम चुप क्यों हो? उसे अच्छी-खासी फटकार लगाओ!" ऐसा कुछ भी नहीं—वे उसे अकेला छोड़ देते हैं! मैंने एक राजनेता को जमकर फटकार लगाई। मैंने उससे कहा, "कहो, 'मैं इससे सहमत नहीं हूँ।' ईमानदारी इसी में है! क्या तुम सच में चाहते हो कि तुम्हारे लिए सब कुछ सुविधाजनक हो, जबकि बाकी सब कुछ बर्बाद होने दिया जाए?"

²¹ अगर ईसाई शहीद नहीं होते, अगर वे बुराई का विरोध नहीं करते, तो [वनिशकारी] और भी बेधड़क हो जाएँगे। लेकिन अगर ईसाई उनका विरोध करते हैं, तो वे लोग दो बार सोचेंगे। फरि भी आज के ईसाई कोई योद्धा नहीं हैं। शुरुआती ईसाई एक मज़बूत जमात थे: उन्होंने पूरी दुनिया बदल दी। और बाइजेंटाइन युग में—यदि किसी चर्च से एक भी प्रतिमा ले ली जाती, तो लोग विरोध करते थे। मसीह ने हमें पुनरुत्थिति करने के लिए सूली पर चढ़ने का दुख सहा, फरि भी हम

²¹ एल्डर वित्तीय सहायता (या तथाकथित 'मेटोचिया के लिए भुगतान') का उल्लेख कर रहे हैं, यानी धन की एक विशिष्ट राशि जो ग्रीक राज्य ने 1924 से माउंट अथोस के पवतिर मठों को सालाना भुगतान करने का बीड़ा उठाया था। उस समय, माउंट अथोस के मठों ने अपने मेटोचिया—जो तेल, गेहूँ, शराब और अन्य आय के उनके स्रोत थे—एशिया माइनर से आए ग्रीक शरणार्थियों को सौंप दिए।

उदासीन बने रहते हैं! यदचिरच राज्य के साथ संघर्ष में न पड़ने के लिए चुप रहती है, यदमिट्रोपॉलिटिन सभी के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए चुप रहते हैं—क्योंकि उन्हें ' ' मानवीय संगठनों और इसी तरह के संगठनों से समर्थन मिलता है—और यदमाउंट अथोस के भिक्षु भी वित्तीय सहायता से वंचित न होने के लिए चुप रहते हैं, तो फिर कौन बोलेगा? मैंने एक मठाधीश से कहा: "अगर वे आपको बताते हैं कि वे भुगतान बंद कर देंगे, तो आप जवाब दें कि अपनी ओर से, आप आतिथ्य देना बंद कर देंगे,²² ताकि उन्हें सरि खुजलाना पड़े।" धर्मशास्त्र के व्याख्याता भी चुपचाप हैं। "हम," वे कहते हैं, "सविलि सेवक हैं: अगर हमारी तनखाहें बंद हो गईं, तो हम बाद में कैसे जिएंगे?" वैसे, मठों को भी पेंशन के मामले में फटका पड़ा है। और मैं क्षेत्रीय राज्य प्रशासन से यह मामूली पेंशन भी क्यों स्वीकार नहीं करना चाहता?²³ भले ही कोई भिक्षु क्षेत्रीय राज्य प्रशासन की योजना के तहत उनके पास बीमति हो, यह फिर भी अन्यायपूर्ण है। यदविह सीमति साधनों वाले व्यक्तियों के रूप में उनके पास बीमति है—तो हाँ, यह उसकी प्रशंसा का विषय है, लेकिन क्षेत्रीय राज्य प्रशासन के माध्यम से उसका बीमा कराने का क्या मतलब है? एक भिक्षु ने बड़ी पेंशन छोड़ दी है, संसार त्याग दिया है, मठ में प्रवेश कर लिया है—और फिर भी उसे पेंशन दी जा रही है! हम एक पेंशन के लिए मसीह का विश्वासघात कर देंगे!

— गेरोन्डा, मान लीजिए कि एक नन ने कई सालों तक शिक्षिका के रूप में काम किया है और अब वह पेंशन की हकदार है, तो?

— यह इतना बुरा नहीं है। लेकिन मैं आपको यह बताता हूँ: अगर वह वह पेंशन किसी को दे देती है, तो मसीह उसे एक अच्छी पेंशन देंगे!

मैं देख सकता हूँ कि हमारे लिए आगे क्या है, और इसलिए मुझे दर्द हो रहा है।

साल बीतते जा रहे हैं, और ये कतिने कठिने साल हैं! कठिनाइयाँ अभी खत्म नहीं हुई हैं। कड़ाई उबल रही है। और अगर कोई दृढ़ नहीं है, तो मुश्किल परिस्थितियों का सामना करते समय वह कैसा व्यवहार करेगा? ईश्वर ने ऐसे लोगों को नहीं बनाया जो सफल नहीं हो सकते। हमें अपने भीतर धैर्य का संवर्धन करना चाहिए। और अगर, ईश्वर न करे, कोई उथल-पुथल मच जाए, तो कतिने लोग खड़े रहेंगे? 1940 के युद्ध से पहले, कोनिका में²⁴ के पास, मेरी बढई की कार्यशाला के बगल में एक बाजार था जहाँ गाँव के लोग मक्का, गेहूँ आदि लाते थे। जब गरीब किसान मक्का बेचने के लिए बाजार लाते थे, तो कुछ 'अमीर'—और वे सच में कतिने अमीर थे? बस इतना कि बैंकों से थोड़ा ब्याज कमा सकें—उस पर पैर मारते और पूछते, 'कतिने का?' जब युद्ध आया और उन्हें खुद ही सब कुछ बेचना पड़ा, तो उनमें से एक मुस्करा कर कहता: 'शुभ दिन!' — जबकि कोई दूसरा वनिम्रता से पूछता: 'क्या आपके पास कोई मक्का है?' तो अब, हर चीज के लिए ईश्वर का धन्यवाद करें। साहसी बनने की कोशिश करें। खुद को थोड़ा संभालें। मैं देख सकता हूँ कि हमारे लिए आगे क्या है, और इसलिए मुझे दर्द होता है। और क्या आप जानते हैं कि अन्य देशों में ईसाई क्या झेल रहे हैं?²⁵ रूस में — दंडात्मक श्रम शिविरों में! ऐसी कठिनाइयाँ! आध्यात्मिक कतिबों की तो बात ही क्या करें! हम तो अल्बानिया को भी ध्यान में नहीं रख

²² माउंट अथोस के सामुदायिक मठ तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को मुफ्त रात्रि आवास प्रदान करते हैं। — अनुवादक की टिप्पणी।

²³ ओजीए (Όργανισμός Γεωργικών Ασφαλίσεων) — कृषिगत विधियों में लगे लोगों के लिए एक बीमा संगठन। — अनुवादक की टिप्पणी।

²⁴ कोनटिसा — उत्तरी-पश्चिमी ग्रीस का एक छोटा शहर, जहाँ एल्डर ने अपना बचपन और युवावस्था बिताई। — अनुवादक की टिप्पणी।

²⁵ मई 1987 में दिया गया।

रहे हैं! खाने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने न तो चर्च बचे रहने दिए और न ही मठ। उन्होंने लोगों के नाम भी बदल दिए, क्योंकि वे ईसाई नाम सुनना नहीं चाहते थे। यहाँ तक कि अमेरिका में भी: वहाँ बहुत कम ऑर्थोडॉक्स ईसाई हैं, वे अलग-अलग जगहों पर बखिरे हुए हैं और, क्या आप जानते हैं कि वे कैसे कष्ट सहते हैं? अगर [नज्दीक में] कोई ऑर्थोडॉक्स समुदाय नहीं है, तो वे सरिफ एक प्रार्थना सभा में शामिल होने के लिए घंटों ट्रेन में सफर करके किसी दूर की जगह जाते हैं। किसी समस्या पर सलाह लेने के लिए, वे पवित्र पर्वत पर आते हैं! [इसीलिए] ग्रीस में जो यह सुस्त भावना प्रचलित है, वह एक बड़ी कृतघ्नता है।

पूर्व साम्यवादी देशों में ईश्वर कतिने संत खड़े करेंगे! शहीद! वे मरने के लिए तैयार थे। वे उच्च पदों पर थे, फरि भी जब कानून ईश्वर के वधान के विपरीत थे तो उनका पालन करने से इनकार कर दिया। वे कहते थे, 'मैं सहमत नहीं हूँ; मुझे मार डालो, मुझे जेल में डाल दो', ताकि दूसरे भटक न जाएँ। फरि भी यहाँ, कई लोग बना किसी जबरदस्ती के ऐसी उदासीनता दिखाते हैं। काश उन्हें पता होता कि किठनाई, युद्ध या बुरे समय कैसा होता है, तो वे चीजों को अलग नज़र से देखते। क्योंकि इस समय, ऐसा लग रहा है जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है। ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति मान ली जाए, गर्मियों के लिए ऑस्ट्रेलिया से ग्रीस जाए, और फरि पतझड़ में वापस आ जाए, जब ऑस्ट्रेलिया में वसंत आता है। वसंत से वसंत तक, बना सरदियाँ देखे। वे यह भी नहीं जानते कि सरदियाँ कैसी होती हैं; वे खराब मौसम या इस तरह की किसी भी चीज़ के बारे में कुछ नहीं जानते।

— गेरोंडा, एक उदासीन व्यक्ति की मदद कैसे की जा सकती है?

— आपको उन्हें धीरे से रुचिलेने के लिए प्रेरित करना चाहिए, उन्हें इसके बारे में सोचने के लिए कहना चाहिए, ताकि वे खुद ही अपनी मदद करना चाहें। किसी को पानी देने के लिए, उन्हें प्यास लगनी चाहिए। किसी ऐसे व्यक्ति को खाने के लिए मजबूर करने की कोशिश करें जैसी भूख नहीं है — वह उसे उगल देगा। अगर कोई दूसरा व्यक्ति [कुछ] नहीं चाहता, तो मैं उन्हें उनकी स्वतंत्रता, उनकी स्वतंत्र इच्छा से वंचित नहीं कर सकता।

अज्ञानता का कोई बहाना नहीं है

— शायद, जेरोंडा, कुछ लोग अज्ञानता के कारण उदासीन रहते हैं?

— आप किस अज्ञानता की बात कर रहे हैं! मैं आपको अज्ञानता के बारे में बताता हूँ: चाल्कडिकी का एक भाषाविद नहीं जानता था कि पवित्र पर्वत क्या था।²⁶ एक जर्मन शक्तिषक ने उसे पवित्र पर्वत के बारे में बताया, और वे एक साथ आए। वह जर्मन, भले ही वह एक प्रोटेस्टेंट था, जानता था कि पवित्र पर्वत पर कतिने मठ थे, और यहाँ तक कि कुछ पवित्र अवशेष कहाँ रखे गए थे। क्या ऐसी अज्ञानता के लिए कोई बहाना हो सकता है? चाल्कडिकी के एक अन्य निवासी को अमेरिका से उसके एक परिचित ने मुझसे मदद लेने के लिए कहा। अमेरिका से! मैं आपको थोड़ी देर में और बताऊँगा: फ्लोरिना का एक आदमी मेरे कालीवा में मुझसे मिलने आया।²⁷ "क्या आप खुद फ्लोरिना से हैं?" मैंने पूछा। "हाँ," उसने जवाब दिया, "खुद फ्लोरिना से।" — "तुम्हारे पास वहाँ एक अच्छा मेट्रोपॉलिटन है," मैंने कहा। — "वह किस

²⁶ चाल्कडिकी उत्तरी-पूर्वी ग्रीस में एक प्रायद्वीप और एक प्रशासनिक इकाई है, जो 2,995 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। चाल्कडिकी प्रायद्वीप के तीन अग्रभागों में से एक माउंट अथोस है। चाल्कडिकी के एक छोर से दूसरे छोर तक गाड़ी चलाने में दो घंटे लगते हैं; दूसरे शब्दों में, एक ग्रीक भाषाविद की अज्ञानता की तुलना मॉस्को क्षेत्र के उस भाषाविद से की जा सकती है जो यह नहीं जानता कि ट्रिनिटी-सर्गीय लाव्रा क्या है। दुर्भाग्यवश, ऐसे मामले सामने आते हैं। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

²⁷ फ्लोरिना उत्तरी-पश्चिमी ग्रीस का एक शहर है। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

टीम के लिए खेलता है?" उसने पूछा। उसे लगा कविह एक फुटबॉल खिलाड़ी है! वह फुटबॉल का इतना दीवाना था कविह अपने ही बशिप को नहीं जानता था। नश्चिति रूप से हर कोई कम से कम कंडयोटसि,²⁸ को तो जानता ही है। ऐसी अज्ञानता का कोई बहाना नहीं है।

नहीं, आज की दुनिया में अज्ञानता का कोई बहाना नहीं है। जो कमी है वह है एक इच्छुक हृदय, ईश्वर के प्रती प्रेम। जिस किसी के पास मसीह को जानने का इच्छुक हृदय है, वह उन्हें जान लेगा और [उनकी ओर] मुड़ जाएगा। और भले ही उसके पास न कोई धर्मशास्त्री हो और न ही कोई संन्यासी, और वह परमेश्वर का वचन न सुने, फिर भी यदि उसका हृदय इच्छुक है, तो उसके परिवर्तन का कारण या तो एक साँप होगा, या कोई जानवर, या बजिली की कड़क, या बाढ़, या कोई अन्य घटना होगी। ईश्वर उसकी मदद करेगा। ग्रीस का एक युवा अराजकतावादी जर्मनी गया। वहाँ उसे एक सुधार गृह में भेज दिया गया क्योंकि वह नशीली दवाओं और इसी तरह की चीजों में फँस गया था। उससे कुछ भी मदद नहीं कर पाया। सुधार गृह में किसी ने उसे एक सुसमाचार दिया। उसने उसे पढ़ा और तुरंत बदल गया। उसने नरिणय लिया, 'मैं ग्रीस जाऊँगा; वहाँ ऑर्थोडॉक्स है।' वह अपने गाँव लौट आया, और उसके रश्तेदारों ने उस पर शादी करने के लिए दबाव डाला। उसने शादी कर ली, और एक बच्चा हुआ। उस युवा पति ने सुसमाचार पढ़ा, चर्च जाता था, और परव के दिनों में काम नहीं करता था। दूसरों ने, यह देखते हुए कविह कैसे रहता था, कहा: 'सुसमाचार पढ़-पढ़कर उसका दमिग खराब हो गया है; वह पागल हो गया है।' जल्द ही उसकी पत्नी बच्चे को लेकर उसे छोड़कर चली गई। जब उसकी पत्नी चली गई, तो वह अपने पास जो कुछ भी था, सब कुछ गाँव में छोड़कर चला गया: अपनी खेती, अपना ट्रैक्टर—जो कुछ भी उसके पास था—और एक तपस्वी की तरह गुफाओं में रहने चला गया। एक आध्यात्मिक पति ने उससे कहा: "तुम्हें पहले अपनी पत्नी को ढूँढना होगा, उसके साथ सब कुछ सुलझाना होगा, और फिर तय करना होगा कि क्या करना है।" तो वह अपनी पत्नी को खोजने के लिए थ्रेसलॉनीकी के लिए निकल पड़ा। वह मानता था कि, चूँकि आध्यात्मिक पति ने उससे ऐसा कहा था, मसीह उसे उसकी पत्नी का पता बता देंगे। थ्रेसलॉनीकी में, मसीह ने उसे उसकी पत्नी का पता नहीं बताया। संयोग से, वह कुछ जर्मनों से मिला, उन्हें आस्था के बारे में बताया, और उनमें से एक का बपतिस्मा हुआ। इन जर्मनों ने उसे एथेंस का एक टिकट खरीदकर दिया, लेकिन उसकी पत्नी वहाँ भी नहीं मिली। जर्मनों ने उसे एक और टिकट खरीदकर दिया, और वह क्रीट चला गया। वहाँ उसे कुछ काम मिला गया और वह एक आध्यात्मिक पति से मिलने गया। उसकी समस्या सुनकर, पादरी ने कहा: "क्या आपकी पत्नी और बच्चा, संयोग से, कुछ ऐसा देखते हैं? हाल ही में एक महिला आई है और यहीं आसपास कहीं काम कर रही है।" और उन्होंने आगंतुक को उसकी पत्नी का सटीक विवरण दिया। "यह वही होगी," उस आदमी ने कहा। आध्यात्मिक पति ने अपनी पत्नी को बताया। जैसे ही उसने अपने पति को देखा, वह सन्न रह गई। उसने कहा, 'तुमने मुझे ढूँढ लिया है, जादू-टोने से। तुम एक जादूगर हो।' वह एक शब्द कहने से पहले ही उसे छोड़कर भाग गई, और एक बार फिर वह उसे खो बैठा। उसे मेरे बारे में पता चल गया और वह मेरे कालीवा में आया। उसने एक बार दस्तक दी और इंतजार किया; जब मैं दरवाजा खोल रही थी, वह एक तरफ हट गया और बार-बार झुका। उसके कपड़े फटे-पुराने थे। उसने मुझे सब कुछ बता दिया। मेरे पास कुछ सूखी अंजीरें थीं, और मैंने उन्हें उसे दे दिया। उसने कहा, "मेरे दाँत नहीं हैं।" "मैं," मैंने कहा, "मेरे भी नहीं हैं।" — "और आप," उसने पूछा, "क्या दर्द होता है? मुझे होता है। दर्द से मसीह का आनंद आता है।" — "क्या मैं आपको एक टी-शर्ट या कुछ और दे दूँ?" मैंने पूछा। उसने कहा, "मेरे पास दो हैं। जब गर्मी बढ़ेगी, तो मैं एक दे दूँगा।" मैंने कहा: "देखो, जब तक तुम सब कुछ सुलझा नहीं लेते और

²⁸ ऑगस्टीन (कैडयोटसि) (जन्म 1907) – 1967 से 1999 तक फ्लोरिडा के मेट्रोपॉलिटन। इस उत्साही आर्चपास्टर, कई आध्यात्मिक पुस्तकों के लेखक और एक जोशीले उपदेशक का नाम पूरे ग्रीस में व्यापक रूप से जाना जाता है। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

अपनी पत्नी से समझौता नहीं कर लेते, तब तक अपना ख्याल रखना, क्योंकि तिम बच्चे के लिए भी ज़िम्मेदार हो।" क्या आत्म-बलदान है! क्या आस्था! और फिर भी वह सत्ताईस साल का भी नहीं था। और उसने भिक्षु जीवन के बारे में कहाँ से सीखा होगा? वह पूरी तरह से अनजान था, लेकिन उसका स्वभाव अच्छा था; ईश्वर ने उसकी मदद की, और वह गहराई से सुसमाचार-जैसे तरीके से फल-फूल उठा।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि आज अज्ञानता किसी भी चीज़ के लिए कोई बहाना नहीं है। केवल एक मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति एक छोटे बच्चे को ही उनके अज्ञानता के लिए माफ़ किया जा सकता है। लेकिन आजकल छोटे बच्चे भी पल भर में चीज़ें सीख जाते हैं! तो, अगर कोई व्यक्ति चाहे, तो सत्य को जानने के लिए बहुत सारे अवसर हैं।

अध्याय 2. एक ईसाई की उपस्थितिके तथ्य पर अपने आप में विश्वास की एक घोषणा है

— गैरोना, क्या ईसाइयों द्वारा आयोजित विभिन्न विरोध आंदोलनों से कोई लाभ प्राप्त हो सकता है?

— एक ईसाई की उपस्थिति स्वयं में ही विश्वास की एक घोषणा है। हो सकता है कि कोई प्रार्थना के माध्यम से अधिक मददगार हो, लेकिन उनकी चुप्पी का फायदा उठाया जाएगा, और लोग कहेंगे: 'अमुक ने कोई विरोध नहीं जताया; इसलिए, वे हमारे पक्ष में हैं, वे हमसे सहमत हैं।' यदि कोई भी बुराई के खिलाफ लड़ना शुरू नहीं करता — यानी, जो विश्वासियों को गुमराह करते हैं, उनकी नंदा करना शुरू नहीं करता — तो बुराई और भी बढ़ जाएगी। लेकिन इस तरह, विश्वासियों को कुछ हद तक प्रोत्साहन मिलेगा। और जो चर्च के खिलाफ युद्ध छेड़ते हैं, उनके लिए यह और भी कठिन हो जाएगा। चर्च उनकी मनोरंजन नौका नहीं है; यह मसीह का जहाज है। ये लोग नंदा के पात्र हैं। उनकी एकमात्र रुचि एक अच्छी तनखाह, एक महंगी कार और मनोरंजन के पीछे भागने में है... और फिर वे नागरिक साझेदारी,²⁹ पर कानून बनाते हैं और गर्भपात को वैध कर देते हैं। बेशक, ईश्वर बुराई को विजय प्राप्त करने नहीं देंगे, लेकिन यहाँ मुद्दा यह नहीं है।

और वे मसीह का मज़ाक उड़ाने के लिए ये अपमानजनक फलितें दिखाते हैं। वे ऐसा यह कहने के लिए करते हैं:

"देखो, मसीह कुछ ऐसे थे! मसीहा अब आ रहे हैं!" — और फिर अपना "मसीहा" पेश करने के लिए। वे इसी के लिए काम कर रहे हैं।

— और लोग, गैरोन्डा, इस पर विश्वास करते हैं और पथभ्रष्ट हो रहे हैं!

— दुष्ट और भी अधिक दुष्ट होते जा रहे हैं। और वे ऐसा इसलिए मानते हैं क्योंकि वे उस चीज़ को सही ठहराना चाहते हैं जिससे सही नहीं ठहराया जा सकता, और अपनी अंतरात्मा को शांत करना चाहते हैं। इस सारी ईश्वरनंदा के माध्यम से, वे नैतिक पतन को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। वे पहले ही हर हद पार कर चुके हैं। विश्वासियों ने एक

²⁹ 1980 के दशक के मध्य तक, ग्रीस में केवल चर्च विवाहों को ही आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त थी। — अनुवादक की टिप्पणी।

मुकदमा दायर किया है क्योंकि फिल्म *द लास्ट टेम्पटेशन ऑफ़ क्राइस्ट*³⁰ विश्वास का अपमान करती है, फरि भी अभियोजक कहते हैं: 'यह कोई बड़ी बात नहीं है।' हमने पहले कभी ऐसी ईश्वरनंदा के बारे में सुना भी नहीं है! हमारे लिए, इस धर्मनंदा करने वाली फिल्म के खिलाफ वरिध करना हमारे विश्वास की घोषणा करने का एक कार्य था। लेकिन, बेशक, इस सारी धर्मनंदा से कुछ अच्छा भी निकलता है: भूखी अनाज से अलग हो जाती है; दुनिया को एक चलनी से छान लिया जाता है।

— गेरुनडा, क्या किसी को कुछ मामलों में, चाहे व्यक्तिगत रूप से हो या सामूहिक रूप से, अपनी रक्षा नहीं करनी चाहिए, जबकि अन्य मामलों में चुप रहना चाहिए? उदाहरण के लिए, जब आपको विधर्मी कहा गया था, तो आपने जवाब दिया, फरि भी आप अन्य आरोपों के सामने चुप रहे।

— यह पवित्र पतिओं का कहना है, मेरा नहीं। कोई भी अन्य आरोप मेरे आध्यात्मिक जीवन में मेरी मदद करता है, जबकि विधर्म का आरोप मुझे मसीह से अलग कर देता है।³¹

वे लोगों को आत्मसंतोष में डुबाने की कोशिश कर रहे हैं

— गेरुना, दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, उसे देखते हुए लोग अपनी आदतों को कैसे सुधार सकते हैं?

— जो कोई भी खुद को सुधारना चाहता है, वह तुच्छ मामलों को छोड़कर ऐसा करता है। उदाहरण के लिए, एक दीपक हल सकता है, या भूकंप के दौरान उन्हें एक जोरदार झटका लग सकता है, और इस तरह वह व्यक्ति होश में आ जाता है। लेकिन अविश्वासी, यह सुनकर कथिदुध या कोई आपदा आने वाली है, और भी बुरे हो जाते हैं और कहते हैं: 'चलो, कुछ मजा करें; आखिर हमें तो मरना ही है।' और वे पूरणतः व्यभिचार में लपिट जाते हैं। जबकि पुराने दनों में, उदासीन लोग भी, यह जानकर कथिदुध होगा, होश में आकर अपना जीवन बदल लेते थे। आजकल, ऐसे बहुत कम लोग हैं। अतीत में, हमारे लोग आध्यात्मिक रूप से रहते थे, इसीलिए ईश्वर ने उन पर आशीर्वाद दिया, और संतों ने चमत्कारिक रूप से हमारी मदद की। और हमने अपने दुश्मनों को हराया, जो संख्या में हमेशा हमसे अधिक थे। अब हम कहते हैं कि हम ऑर्थोडॉक्स हैं, फरि भी, दुर्भाग्य से, हम अक्सर केवल 'ऑर्थोडॉक्स' का नाम ही धारण करते हैं, जबकि वास्तव में ऑर्थोडॉक्स जीवन नहीं जीते।

मैंने एक आध्यात्मिक पति से पूछा, जो अपने कई आध्यात्मिक बच्चों के साथ सामुदायिक कार्य में लगे हुए हैं: 'क्या आप एक धर्मनंदा करने वाली फिल्म के बारे में कुछ जानते हैं?' उन्होंने जवाब दिया: 'मुझे कुछ नहीं पता।' उन्हें कुछ भी नहीं पता था, भले ही वे खुद एक बड़े शहर में सेवा करते हैं। वे लोगों को आत्मसंतोष में सुला देते हैं ताकि वे चतिति न हों और उनका मनोरंजन होता रहे। देखिए, किसी भी परिस्थिति में आपको यह नहीं कहना चाहिए कथिदुध होगा या दूसरा आगमन हो रहा है, और इसलिए हमें खुद को तैयार करना चाहिए; सुनिश्चित करें कि लोग किसी भी परिस्थिति में उत्तेजित न हों! यह बिल्कुल उन बूढ़ी औरतों की तरह है, जो मानो मौत उनका बिल्कुल भी इंतजार ही नहीं कर रही हो, विलाप करती हैं: 'मौत की बात मत करो, सिर्फ छुट्टियों और नामकरण की बात करो'—और इस तरह वे आनंद की एक

³⁰ मार्टिन स्कोरसेज़ की धर्मनंदा करने वाली फिल्म *द लास्ट टेम्पटेशन ऑफ़ क्राइस्ट*, जो 1988 में रिलीज़ हुई थी, को एथेंस के सनिमाघरों में थोड़े समय के लिए दिखाया गया था और इसने चर्च ऑफ़ ग्रीस के श्रद्धालुओं में वरिध का तूफ़ान खड़ा कर दिया, जिनोंने इसकी स्क्रीनिंग पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। उस समय हरनया से होने वाले दर्द के बावजूद, एल्डर माउंट एथोस के अन्य भिक्षुओं के साथ थेससालोनिकी की यात्रा पर गए, जहाँ उन्होंने एक वरिध रैली में भाग लिया और अपनी उपस्थिति से ही श्रद्धालुओं को प्रेरित किया।

³¹ *सेंट इग्नाटियस (ब्रायनचाननिक)* देखें / कृतियाँ। खंड V। द फादर्स बुक। मॉस्को: प्रावलि वेरी। पृ. 42-43।

झूठी भावना का अनुभव करती हैं। लेकिन अगर वे इस तथ्य पर विचार करें कि पास में रहने वाला एक बूढ़ा आदमी कल मर गया, कि कोई और भी मृत्युशय्या पर है और वह भी मर जाएगा, और परसों उनसे कहीं छोटे किसी व्यक्ति के लिए एक स्मरण सभा होगी, तो वे मृत्यु के बारे में सोचेंगे और कहेंगे: 'मुझे पाप-स्वीकार के लिए जाना चाहिए; मुझे आध्यात्मिक रूप से खुद को तैयार करना चाहिए, क्योंकि शायद मसीह मुझे जल्द ही अगले जीवन के लिए बुला लेंगे।' अन्यथा, मृत्यु आती है और उन्हें बेखबर ले जाती है। अन्य लोग, दया की एक भ्रामक भावना से कहते हैं: "अपनी नष्टि को त्यागने का दिखावा करो" — और इस तरह वे हर चीज़ को बराबर मान लेते हैं। अगर वे ईसाई धर्म के शुरुआती वर्षों में रहते, तो हमारे पास एक भी संत नहीं होता! उस समय ईसाइयों से कहा गया था: "बस आग पर थोड़ी सी धूप डाल दो, लेकिन मसीह को नकारो मत।" ईसाई इसे स्वीकार नहीं करते थे। 'बस डालने का दिखावा करो।' वे इसे स्वीकार नहीं करते थे। 'मसीह के बारे में मत बोलो और एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह जहाँ चाहो वहाँ जाओ।' ईसाई इसे भी स्वीकार नहीं करते थे। लेकिन आज आप देखते हैं कि लोग पानी मिलाते हैं। खमीर सही नहीं है।

— गेरोन्डा, जब प्रेरित पौलुस कहते हैं: '*आत्मा का फल प्रेम, आनंद...*'³² क्या उनका मतलब यह है कि आनंद एक धर्मी जीवन का प्रमाण है?

— हाँ, क्योंकि सांसारिक आनंद होता है और द्रव्य आनंद होता है। जब कोई चीज़ अध्यात्मिक नहीं या अशुद्ध होती है, तो हृदय में सच्चा आनंद या शांति नहीं हो सकती। एक आध्यात्मिक व्यक्ति द्वारा अनुभव की गई आनंद वह प्रकार का आनंद नहीं है जिसका आज बहुत से लोग पीछा कर रहे हैं। हमें विभिन्न चीज़ों को भ्रमति नहीं करना चाहिए। क्या संतों ने उस रूप में आनंद का अनुभव किया जिसकी हम तलाश करते हैं? क्या परमेश्वर की माता ने ऐसा आनंद अनुभव किया? मसीह—क्या उन्होंने हँसा? संतों में से कसिने इस जीवन को बना दर्द के दिया? कसि संत के पास उस तरह की खुशी थी जिसकी हमारे समय के कई ईसाई आकांक्षा करते हैं—वे जो कुछ भी अप्रिय सुनना नहीं चाहते, कहीं वे परेशान न हो जाएँ या अपनी शांति खो दें? यदि मैं आनंदमय रहने के लिए, अपनी शांति भंग न होने देने के लिए, सौम्य रहने के लिए कलह से बचता हूँ, तो मैं उदासीन हूँ! आध्यात्मिक नम्रता एक बात है, लेकिन उदासीनता से उत्पन्न सौम्यता बिल्कुल दूसरी बात है। कुछ लोग कहते हैं: 'मैं एक ईसाई हूँ और इसलिए मुझे आनंदति और शांत रहना चाहिए।' लेकिन ये ईसाई नहीं हैं। क्या आप समझते हैं? यह उदासीनता है; यह सांसारिक आनंद है। जिस किसी में ये सांसारिक सदिधांत मौजूद हैं, वह एक आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति वह है जो दर्द से भरा होता है; अर्थात्, जो हो रहा है उससे वह दुखी होता है, वह लोगों के लिए दुखी होता है। लेकिन इस दर्द के लिए उसे द्रव्य सांतवना से पुरस्कृत किया जाता है। वह दर्द महसूस करता है, फिर भी वह अपने भीतर ' ' और द्रव्य सांतवना महसूस करता है, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग से उसकी आत्मा में आशीर्वाद डालते हैं, और वह व्यक्ति द्रव्य प्रेम में आनंदति होता है। यही आनंद है, आध्यात्मिक आनंद — जो अभिव्यक्ति से परे है और हृदय को भर देता है।

उदाहरण स्वयं ही सब कुछ कहता है

— गेरोन्डा, क्या दुनिया में आध्यात्मिक जीवन जीने वाले लोगों को अवशिवासियों को यह दिखाना चाहिए कि वे उपवास कर रहे हैं?

— यदि हम हमारे चर्च द्वारा स्थापित उपवासों — बुधवार, शुक्रवार और बहु-दिवसीय उपवासों — की बात कर रहे हैं, तो उन्हें ऐसा करना चाहिए, क्योंकि यह विश्वास की घोषणा है। हालाँकि, मसीह के प्रति प्रेम के कारण या किसी

³² गलातियों 5:22।

वशिष याचना के लिए हमारी प्रार्थना सुनी जाए, इस उद्देश्य से की जाने वाली अन्य तपस्या के रूप में कए गए उपवासों का पालन गुप्त रूप से किया जाना चाहिए।

लक्ष्य ऑर्थोडॉक्स तरीके से जीना है, न कि केवल ऑर्थोडॉक्स तरीके से बोलना या लिखना। इसीलिए आप देखते हैं कि यदि एक उपदेशक के पास व्यक्तिगत अनुभव नहीं है, तो उसका प्रवचन न तो दिल को छूता है और न ही लोगों को बदलता है।

— लेकिन अगर, गेरोंडा, श्रोता या पाठक की प्रवृत्ति अच्छी हो तो क्या?

— आह, तो उनमें पहले से ही दैवी कृपा है और वे ठीक उसी के कारण लाभान्वित होते हैं। हालाँकि, जिनमें अनुकूल प्रवृत्ति नहीं है, वे उपदेशक ने जो कहा है उसका विश्लेषण करना शुरू कर देंगे और उन्हें बिल्कुल भी लाभ नहीं होगा। ऑर्थोडॉक्स तरीके से सोचना आसान है, लेकिन ऑर्थोडॉक्स तरीके से जीने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है।

एक बार, एक धर्मशास्त्री ने अपने प्रवचन में लोगों से खून देने के लिए कहा, क्योंकि इसकी आवश्यकता थी। और वास्तव में: उसके प्रवचन से कई लोग प्रेरित हुए और उन्होंने बहुत सारा खून दिया। हालाँकि, उसने खुद एक बूँद भी नहीं दी, जबकि, सीधे शब्दों में कहें तो, उसके पास खून की कोई कमी नहीं थी। लोग भटक गए। उस समय धर्मशास्त्री ने उनसे कहा, "मैंने, अपने प्रवचन के माध्यम से, लोगों को खून देने के लिए प्रेरित किया है, और यह ठीक वैसा ही है जैसे मैंने किसी और से ज्यादा खून दिया हो!" इस तरह उसने अपने अंतरात्मा को शांत किया। फिर भी, उसके लिए प्रवचन देना बेहतर होता, बजाय इसके कि वह खुद जाकर चुपचाप थोड़ा सा खून दे देता!

महत्व किसी के जीवन जीने का तरीका है। चर्च से बिल्कुल भी संबंध न रखने वाले एक व्यक्ति ने मुझसे कहा: 'मैं "दाहनि हाथ वालों" में से एक हूँ।' — 'लेकिन चूँकि आप क्रॉस का चहिन नहीं बनाते, तो इसका क्या मतलब है?' — मैंने जवाब दिया। 'अगर कोई हाथ क्रॉस का चहिन नहीं बनाता है तो उसे "दाहनि हाथ वाला" माना जाने का क्या मतलब है? यह बाएँ हाथ से कैसे अलग है, जो क्रॉस का चहिन नहीं बनाता है? आखिरकार, आप इसे जसि भी नज़रिए से देखें, वह भी ऐसा नहीं करता है। यदि आप 'दाहनि हाथ वालों' में से हैं लेकिन क्रॉस का चहिन नहीं बनाते हैं, तो आप 'बाएँ हाथ वालों' से कैसे अलग हैं? बात यह है कि आपको एक आध्यात्मिक व्यक्ति बनना है, मसीह के करीब रहना है। तब आप दूसरों की भी मदद करेंगे।'

यदि कोई व्यक्ति धार्मिक जीवन जीता है, तो उसके कर्म स्वयं बोलते हैं। एक शहर में एक प्रोटेस्टेंट रहता था जो सभी की नदि करता था: दोनों पुरोहितों और बशिषों की। और पास के एक मठ में, एक नश्चिती भिक्षु तपस्या का जीवन जी रहा था। एक दिन, एक नास्तिक ने उस प्रोटेस्टेंट से पूछा: "ठीक है, तो आप सभी बशिषों और सभी पुरोहितों की नदि करते हैं। लेकिन इस भिक्षु के बारे में आप क्या कहते हैं?" — "जहाँ तक इस भिक्षु की बात है," उसने कहा, "मैं उसका सम्मान करता हूँ, क्योंकि वह उन लोगों जैसा नहीं है।" एक विश्वासी दूसरों की मदद कैसे करता है, वह कहीं भी हो, बशर्ते वह स्वयं एक धर्मी जीवन जिए! मुझे एक पुलिस वाला याद है जसि मैं जानता था, जो [यूगोस्लाविया के साथ] सीमा पर तैनात था। [दूसरी तरफ] सर्बियाई कम्युनिस्ट थे—और कोई आम कम्युनिस्ट नहीं, बल्कि सबसे अधर्मी, पार्टी के सबसे भरोसेमंद सदस्य। जब पादरी सीमा पार करते, तो यह पुलिस वाला उनके हाथ चूमता था। कम्युनिस्टों ने यह देखा। "एक ग्रीक पुलिस वाला, और वह सर्बियाई पादरियों के हाथ चूम रहा है!" इससे कम्युनिस्टों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, और इसने उन्हें आस्था के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।

और जो लोग ईसाई सिद्धांतों के प्रतिविफादार रहते हुए ज़िम्मेदारी के पदों पर हैं, वे दूसरों की मदद कैसे करते हैं! यही कारण है कि, जब कुछ 'महत्वपूर्ण' लोग आते हैं, तो मैं उनकी मदद करने के लिए उनसे मिलने की कोशिश करता हूँ, क्योंकि अपने उदाहरण से वे दूसरों पर बहुत लाभकारी प्रभाव डाल सकते हैं। यहाँ एक मार्शल है जसि मैं जानता हूँ—

वह एक आदर्श है। वह जो कुछ भी करते हैं, वह भीतर से, दिल से आता है, न कबिहारी दिखावे से। दूसरे, उन्हें देखकर, अपने व्यवहार पर विचार करते हैं और उसे सुधारते हैं।

और बीते दिनों में, यहाँ तक कि स्थानीय कुलीनों के भी अच्छे सदिधांत थे और उनमें आस्था थी। क्या आप जानते हैं कि एक कुलीन महिला ने एक शहर में एक सांसद से क्या कहा? वह अपने पतिके साथ एक दावत में थीं। यह डॉर्मशिन फास्ट का समय था, फरि भी वे मांस और मछली परोस रहे थे... उस कुलीन महिला ने उपवास किया था और इसलिए कुछ नहीं खाया। सांसद ने यह देखा और कहा: 'कमजोर और यात्रियों को उपवास नहीं करना चाहिए।' — 'हाँ, बिल्कुल,' उसने जवाब दिया, 'और, विशेष रूप से जो गाड़ी से यात्रा करते हैं।' और इसलिए उसने उपवास-विरही भोजन को हाथ तक नहीं लगाया। भोज में, अन्य लोगों के बीच, एक पादरी भी था जिसने स्वागत भाषण देते हुए उनसे कहा: 'आपके साथ यहाँ होना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है,' और इसी तरह; वह बोलता ही गया, और उन पर तारीफों की बौछार कर दी। तब उस महिला के पति ने उसे बीच में टोककर कहा: *"राजकुमारों पर अपना भरोसा मत करो, मनुष्यों के पुत्रों पर, जनिमें कोई उद्धार नहीं है..."*³³ क्योंकि यह पादरी उनसे अनुकूलता हासिल करना चाहता था। एक अन्य अवसर पर, उसी महिला ने धर्मशास्त्र के एक विश्वविद्यालय प्रोफेसर से कहा: "तुच्छ बातों पर बारीकी से बहस मत करो और पुरोहितों को उनकी परीक्षाओं में फेल मत करो। यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करें कि वे उत्तीर्ण हों, क्योंकि धर्मप्राप्तों में पुरोहितों की कमी है!" मेरा मतलब यह है कि, अतीत में, स्थानीय अभिजात वर्ग चर्च के प्रति प्रतिबद्ध थे और लोगों के लिए आदर्श के रूप में काम करते थे।

आज, लोगों पर सकारात्मक प्रभाव हमारी अपनी ईसाई मसाल और हमारा ईसाई जीवन ही डालेंगे। ईसाइयों को आध्यात्मिक साहस, कुलीनता और आत्म-बलदान से प्रतिष्ठित होना चाहिए। इसीलिए मैं धर्मनिरपेक्ष लोगों से कहता हूँ: 'मसीह से प्रेम करो, वनिम्व रहो, अपना कर्तव्य पूरा करो — और मसीह तुम्हारे गुणों को दूसरों के सामने प्रकट करेंगे।' सद्गुण का एक नियम है: किसी व्यक्ति को 'प्रकट' करना, चाहे वह कहीं भी हो। भले ही वे छिपे जाँ या, ईश्वर के लिए, खुद को एक पवित्र मूर्ख के रूप में छिपा लें, सद्गुण उन्हें प्रकट कर देगा, भले ही यह बाद में ही क्यों न हो। और जो खजाना उन्होंने इकट्ठा किया है, जो तब अपनी पूरी भरमार के साथ प्रकट होगा, वह एक बार फिर कई आत्माओं की मदद करेगा, और शायद तब वह उनकी और भी अधिक मदद करेगा।

ईश्वर हमसे धैर्य रखता है

वर्तमान में, ईश्वर जो हो रहा है उसे होने देता है। वह ऐसा इसलिए होने देता है ताकि दुष्ट व्यक्ति स्वयं को सही साबित न कर सके। कुछ मामलों में, ईश्वर स्वयं हस्तक्षेप करता है और तुरंत; अन्य मामलों में, वह प्रतीक्षा करता है और तुरंत कोई रास्ता नहीं दिखाता। वह लोगों से धैर्य रखने, प्रार्थना करने और संघर्ष करने की अपेक्षा करता है। ईश्वर में कतिनी महानता है! उदाहरण के लिए किसी दूसरे आदमी को लें: उसने [नागरिक] युद्ध में कतिने लोगों का कत्ल किया,³⁴ और फिर भी वह आज भी जीवित है! अगले जन्म में ईश्वर उससे कहेगा: 'मैंने तुम्हें धर्मात्माओं से अधिक समय तक जीवित रहने दिया है।' ऐसे आदमी के लिए कोई भी शमनकारी परिस्थितियाँ नहीं होंगी।

— गेरोन्डा, ऐसा क्यों है कि कभी-कभी ऐसे लोग, गंभीर रूप से बीमार होने पर भी, मरते नहीं हैं?

³³ भजन संहिता 145:3।

³⁴ 1946–1949 के बीच ग्रीक सरकारी सेना और साम्यवादी विद्रोहियों के बीच गृहयुद्ध। — अनुवादक की टिप्पणी।

— जाहरि है, उनके गंभीर पाप हैं, और इसलिए वे मरते नहीं हैं। ईश्वर शायद उनके पश्चात्ताप करने का इंतज़ार कर रहे हैं।

— लेकिन जनि लोगों को वे सताते हैं, उनका क्या?

— जो नरिदोष होते हुए भी पीड़ति हैं, वे अपने 'बचत खाते' में अंक जमा कर रहे हैं। जो दोषी हैं, वे अपने कर्ज चुका रहे हैं।

— जेरोंडा, इसका क्या मतलब है: '*लेकनि दुष्ट और जादूगर अपनी दुष्टता में फलेंगे- फूलेंगे, धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए*'?³⁵

— देखो: कुछ लोग होते हैं जनिमें स्वार्थ की एक नश्चिति मात्रा होती है, और ईश्वर उन्हें एक थप्पड़ मारता है ताकि वे एक पायदान नीचे आ जाएँ। दूसरे लोगों में थोड़ा और स्वार्थ होता है, और ईश्वर उन्हें एक थप्पड़ मारता है ताकि वे और भी नीचे आ जाएँ। हालाँकि, ईश्वर उन लोगों को छूता भी नहीं है जनिमें शैतानी घमंड होता है। ऐसा लग सकता है कि ये लोग समृद्धिप्राप्त कर रहे हैं, लेकिन यह किस प्रकार की समृद्धि है? यह एक अंधकारमय समृद्धि है। और फरि वे न केवल नीचे गरिते हैं, बल्कि सिधे गर्त में जा गरिते हैं। ईश्वर न करे!...

धर्मी लोगों की सुरक्षा

— जेरोंडा, एक स्टचिरा कहता है: 'धर्मनषिठ क्रोध से उत्तेजति।'³⁶ सबसे धर्मनषिठ क्रोध या रोष किस प्रकार का होता है?

³⁷— जब दूसरों के साथ अन्याय हो रहा हो तो वास्तविकि दर्द से चलिलाना और क्रोधति होना — यही 'सबसे धर्मी क्रोध' है। जब आपके साथ स्वयं अन्याय हो रहा हो तो क्रोधति होना — यह अशुद्ध क्रोध है। यदि आप देखते हैं कि कोई पवतिर लोगों के लिए पीड़ति है, तो इसका मतलब है कि उनमें ईश्वर के प्रति उत्साह है। और मसीह के लिए एक पवतिर मूर्ख को इस प्रकार पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आप एक प्रतिमा लेते हैं और उसे उसके सामने उल्टा रख देते हैं, तो मसीह के लिए पवतिर मूर्ख तुरंत क्रोध पड़ेगा! यह पवतिर मूर्खों के लिए एक तरह की 'परीक्षा' है। तो, ईश्वर के अनुसार, एक पवतिर आक्रोश होता है, और ईसा मसीह के लिए एक पवतिर मूर्ख को इस प्रकार पहचाना जा सकता है। यदि, उदाहरण के लिए, आप एक प्रतिमा लेते हैं और उसे उसके सामने उल्टा रख देते हैं, तो ईसा मसीह के लिए पवतिर मूर्ख तुरंत क्रोध पड़ेगा! यह पवतिर मूर्खों के लिए एक तरह की 'परीक्षा' है। प्रधान पुरोहित हारून के पोते फनिहास ने दो हत्याएँ कीं, फरि भी ईश्वर ने आज्ञा दी कि इस्राएल के पुरोहित उसकी वंश से ही आएँ! जब फनिहास ने इस्राएली जमिरी को मूसा और सभी इस्राएलियों की दृष्टि में मदियानी स्त्री को जूबी के साथ अनैतिक कृत्य करते देखा, तो वह खुद को रोक नहीं सका। सभा से उठकर उसने उन्हें मार डाला, और ईश्वर का क्रोध शांत हुआ। यदि उसने उन दोनों को नहीं मारा होता, तो ईश्वर का क्रोध पूरे इस्राएल के लोगों पर पड़ जाता।³⁸ कतिना भयानक! जब भी

³⁵ 2 तीमुथियुस 3:13.

³⁶ प्रथम सार्वभौमिक परषिद के पवतिर पतिओं की स्तुति सेवा के लिए स्टचिरा।

³⁷ नरिग. 32:1–20 देखें।

³⁸ गनिती 25:1–15 देखें।

मैं भजन संहिता में यह पद पढ़ता हूँ, 'और फनिहास ने उन्हें शांत किया, और हत्या करना बंद कर दिया'³⁹, मैं उनके नाम को कई बार चूमता हूँ। और मसीह ने, जब उन्होंने मंदिर के प्रांगण में बैलों, भेड़ों और कबूतरों को बेचते देखा, और मुद्रा-वनिमय करने वालों को पैसे बदलते देखा, तो उन्होंने एक चाबुक उठाई और उन्हें बाहर निकाल दिया।⁴⁰

जब कोई आध्यात्मिक व्यक्ति, आक्रोश की स्थिति में, व्यक्तिगत मामले में अपनी रक्षा करने का प्रयास करता है, तो यह पूर्णतः स्वार्थी है; यह शैतान का काम है। ऐसा व्यक्ति बाहरी दृष्टि से दैवीय प्रभावों के आगे झुक रहा होता है। यदि किसी के साथ अन्याय हो रहा हो या उसका मजाक उड़ाया जा रहा हो, तो दूसरों को उसके पक्ष में खड़ा होना चाहिए—और ऐसा न्याय की खातिर करना चाहिए, न कि अपनी व्यक्तिगत लाभ के लिए। अपने लिए बहस करना अनुचित है। गंभीर आध्यात्मिक मामलों—जो हमारे विश्वास, अर्थोडॉक्सी से संबंधित हैं—की रक्षा के लिए अपराधियों का सामना करना एक बिल्कुल अलग मामला है। यह आपका कर्तव्य है। दूसरों के बारे में सोचना और उनकी रक्षा के लिए खड़ा होना शुद्ध है, क्योंकि यह प्रेम से किया जाता है।

जब मैं माउंट सनिई गया, तो मैं हर एक या दो सप्ताह में एक बार मठ में पवित्र संस्कार प्राप्त करने के लिए जाता था।⁴¹ डाइकोस⁴² वहाँ एक बहुत ही साधारण व्यक्ति थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा: "नहीं, हर सप्ताह नहीं। भिक्षुओं को वर्ष में चार बार पवित्र संस्कार प्राप्त करना चाहिए।" उस समय, उनकी परंपरा थी कि वे पवित्र संस्कार केवल दुर्लभ अवसरों पर ही प्राप्त करते थे। "और कुकोल भी मत पहनना," उन्होंने मुझसे कहा। मैं कुकोल को अपने कामेलौकिक के ऊपर पहनता था, जबकि वे केवल गंभीर अवसरों पर ही कुकोल पहनते थे। "जैसा आप चाहें," मैंने जवाब दिया, और कुकोल को स्कार्फ की तरह अपने कंधे पर लपेट लिया। मैंने इस बात पर और कोई विचार नहीं किया। आखिरकार, क्या मुझे इस पर बहस करनी चाहिए थी? लेकिन मैं हर बार पवित्र Communion के लिए खुद को तैयार करती थी और चर्च जाती थी। जब पुरोहिता ने घोषणा की: 'ईश्वर के भय और विश्वास के साथ, आगे आओ...' — मैंने अपना सर झुकाया और कहा: 'हे मेरे मसीह, आप जानते हैं कि मुझे आपके परम पवित्र रहस्यों की कतिनी अधिक आवश्यकता है।' और मैंने अपने भीतर इतना [स्पष्ट] बदलाव महसूस किया कि मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि अगर मैंने संस्कार ग्रहण किया होता तो क्या मैंने यह अनुभव किया होता। कुछ महीने बीत गए, और चार या पाँच युवक मेरे लिए सनिई तक की यात्रा करने का प्रयास करके मठ में आए। उन्हें भी कहा गया कि वे संस्कार ग्रहण न करें। तब मैंने इस बारे में आवाज़ उठाई, और मामला सुलझ गया।

अपमान करने वालों का सामना करना

— जेरोंडा, पवित्र शास्त्र कहते हैं कि पवित्र आत्मा के विरुद्ध ननिंदा अक्षम्य है।⁴³ यह किस प्रकार की ननिंदा है?

³⁹ भजन संहिता 105:30.

⁴⁰ देखें यूहन्ना 2:14–15.

⁴¹ टपिपणी 12 देखें।

⁴² सनिई पर्वत पर स्थित सेंट कैथरीन मठ में, 'डाइकोस' शब्द वरिष्ठों की पवित्र परिषद के अध्यक्ष सदस्य को संदर्भित करता है, जो उनकी अनुपस्थिति में आर्चबिशप के प्रतिनिधिक रूप में कार्य करता है।

⁴³ मत्ती 12:31 देखें।

— पवतिर आत्मा के वरिद्ध ननिदा, सामान्य रूप से, दैवीय चीजों के प्रतितरिस्कार है (बशरते, बेशक, कविह व्यक्तीहोश-हवास में हो)। उस स्थितिमें, वे दोषी हैं। उदाहरण के लिए, जब किसी ने मुझसे कहा, 'नर्क में जाओ, तुम और तुम्हारे देवता...' — मैंने उसे धक्का दिया और अच्छी तरह से हिला दिया, क्योंकि यह ननिदा थी। या, उदाहरण के लिए, दो पुरुष एक चर्च के पास से गुजर रहे हैं। एक व्यक्ति क्रॉस का चहिन बनाता है और दूसरे से कहता है: 'मेरे दोस्त, तुम भी क्रॉस का चहिन बना लो...', लेकिन दूसरा पलटकर जवाब देता है: 'हट जाओ, तुम किसी तरह के दखलंदाज की तरह व्यवहार कर रहे हो, मुझे बता रहे हो कि मुझे क्रॉस का चहिन कहाँ बनाना है।' ऐसा तरिस्कार ईश्वरनदि है। परणामस्वरूप, एक धर्मपरायण व्यक्ति ईश्वरनदि का दोषी नहीं हो सकता। और नरिलज्जता भी ईश्वर-नदि है। अपने पतन को सही ठहराने के लिए, नरिलज्ज व्यक्ति किसी सत्य को तोड़-मरोड़ता है या उस पर पाँव रखता है—उदाहरण के लिए, सुसमाचार का कोई सत्य। वह सत्य का सम्मान नहीं करता, वह वास्तविकता का सम्मान नहीं करता; वह जानबूझकर उसे कुचल देता है; वह पवतिर को कीचड़ में रौंदता है। और धीरे-धीरे यह ही उसकी जीवन-शैली बन जाती है। तब परमेश्वर का अनुग्रह उससे हट जाता है, और वह व्यक्ति शैतानी प्रभावों का शिकार हो जाता है। और अगर वह पश्चाताप नहीं करता, तो यह कहाँ ले जाएगा, !... ईश्वर न करे!... यदकिई, गुस्से की आवेश में, पवतिर आत्मा का भी अपमान कर दे, तो ऐसा अपमान अक्षम्य नहीं है, क्योंकि उस व्यक्तिने अपने द्वारा कही गई अपमानजनक बात पर विश्वास नहीं किया था। उन्होंने यह इसलिए कहा क्योंकि उस क्षण, अपने गुस्से में, वे अपने आप पर काबू खो बैठे थे। और वे तुरंत पश्चाताप भी करते हैं। लेकिन वह नरिलज्ज व्यक्ति अपने पतन को सही ठहराने के लिए झूठ का सहारा लेता है। जो अपना पतन सही ठहराता है, वह शैतान को सही ठहराता है।

— और कैसे, गेरोन्डा, वह अपने पतन को सही ठहराता है?

— वह शायद दस साल पहले किसी अलग संदर्भ में कही गई किसी बात को याद कर उसे अपने पक्ष में तर्क देने के लिए उदाहरण के रूप में इस्तेमाल कर सकता है। उस क्षण तो शैतान—जो सबसे बड़ा वकील है—भी ऐसा कुछ नहीं सोच सकता था।

— और ऐसा व्यक्ति कैसा महसूस करता है?

— वह कैसा महसूस करता है? उसे कभी शांति नहीं मिलती। भले ही कोई व्यक्ति सिही हो और खुद को सही ठहराने की कोशिश कर रहा हो, उसे कोई शांति नहीं मिलती। और भी ज्यादा अगर वह गलत है और सबसे नरिलज्ज तरीके से खुद को सही ठहराता है। इसलिए, हमें, जहाँ तक संभव हो, नरिलज्जता और तरिस्कार से बचना चाहिए—न केवल दवि्यता के प्रति, बल्कि अपने पड़ोसी के प्रति भी, क्योंकि हमारा पड़ोसी ईश्वर की प्रतिमा है। नरिलज्ज लोग पवतिर आत्मा के वरिद्ध ननिदा के प्रथम चरण में होते हैं। दूसरे चरण में वे हैं जो दवि्यता का तरिस्कार करते हैं। तीसरे चरण में शैतान है।

— गेरोन्डा, जब लोग चर्च या मठवाद आदि के खिलाफ बोलते हैं तो क्या करना चाहिए?

— आइए यह कहकर शुरू करें कि यदकिई किसी व्यक्ति के रूप में, उदाहरण के लिए, आपके बारे में बुरा बोलता है, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। इस पर विचार करें: मसीह, जो मसीह थे, की नदि की गई, और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया; तो मैं, एक पापी, किस लायक हूँ? यदकि मुझे व्यक्तिगत रूप से अपमानित करना चाहते थे, तो यह मुझे बिल्कुल भी परेशान नहीं करेगा। लेकिन जब एक भिक्षु के रूप में मेरा अपमान किया जाता है, तो संपूर्ण भिक्षुत्व संस्था का अपमान होता है, क्योंकि एक भिक्षु के रूप में मैं उससे अवभाज्य हूँ। उस स्थितिमें, मुझे चुप नहीं रहना चाहिए। ऐसी परिस्थितियों में, अपमान करने वालों को कुछ समय के लिए अपनी बात कहने देना चाहिए, और फिर उन्हें कुछ शब्द कहने चाहिए। एक बार, बस में, एक महिला पादरियों के खिलाफ गरिया रही थी। मैंने उसे बोलने दिया, और जब वह बोल चुकी, तो मैंने

कहा: 'हमें पादरयियों के खिलाफ कई शिकायतें हैं, लेकिन ईश्वर ने उन्हें पैराशूट से आसमान से नहीं गिराया, है ना? वे मानवीय कमजोरियों वाले लोग हैं। लेकिन मुझे यह बताओ: तुम्हारी जैसी माँ, जो मेकअप करती है और जिसके नाखून बाज जैसे हैं, वह किस तरह का बच्चा जन्म देगी, और उसे कैसे पाल-पोस कर बड़ी करेगी? और अगर वह पादरी या भिक्षु बना भी, तो कैसा बनेगा?' मुझे एक और बार की याद है, जब मैं एथेंस से इओआननि बस से यात्रा कर रहा था, एक आदमी ने पूरी यात्रा मेट्रोपॉलिटन की नदिा करते हुए बताई, जिसने उस समय कुछ न कुछ किया था। मैंने उसे एक-दो शब्द कहे, और फिर मैंने प्रार्थना की। वह पहले की तरह ही बोलता रहा। जब हम इओआननि पहुँचे और बस से उतरे, तो मैं उसे एक तरफ ले गया और कहा: 'क्या तुम जानते हो मैं कौन हूँ?' — 'नहीं,' उसने जवाब दिया। 'तो फिर,' मैंने कहा, 'तुम वहाँ ऐसे शब्द क्यों बोल रहे हो? शायद मैं उस व्यक्ति से कई गुना बदतर हूँ जिसे तुम गाली दे रहे हो, या शायद मैं कोई संत हूँ? तुम मेरे सामने बैठकर ऐसी बकवास कैसे कर सकते हो—ऐसी बातें जो मैं आम लोगों को करते हुए कल्पना भी नहीं कर सकता? अपने रास्ते सुधारने की कोशिश करो, वरना तुम्हें ईश्वर से एक अच्छी-खासी पट्टाई मिल सकती है! बेशक, यह तुम्हारी भलाई के लिए ही है।' मैंने देखा कि वह कांपने लगा था। लेकिन यह बात दूसरों तक भी पहुँच गई थी, जैसा कि वहाँ मची हलचल से मैं समझ सकता था।

[कभी-कभी] आप देखते हैं कि पवित्रता का अपमान हो रहा है, जबकि आसपास के लोग चुप रहते हैं। एक बार, पवित्र पर्वत से निकलते समय, मुझे नाव पर एक बेचारा मिला जो पवित्र पर्वत के एक मनोरोग अस्पताल से भागा था। वह बना रुके चलिा रहा था और सभी को कोस रहा था: इस दुनिया के ताकतवरों को, सरकार को, डॉक्टरों को... "इतने सालों से," वह चलिाया, "उन्होंने मुझे बजिली के झटकों और गोलियों से यातना दी। लेकिन तुम्हारी तो चल रही है! तुम्हारे पास जो चाहिए, सब कुछ है, तुम्हारे पास गाड़ियाँ हैं! लेकिन जब मैं बारह साल का था, तो मेरी माँ ने मुझे किसी द्वीप पर भेज दिया, और तब से—अब पच्चीस साल हो गए—मैं एक पागलखाने से दूसरे पागलखाने में घूम रहा हूँ!" उसने सभी राजनीतिक दलों के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया, और फिर मसीह और परमेश्वर की माता के बारे में अपमानजनक बातें करने लगा। मैं खड़ा हो गया और कहा, "बस करो! क्या यहाँ अधिकारियों का एक भी प्रतिनिधि नहीं है?" मैं देख सकता था कि उसका साथी—जो सबसे अधिक संभावना एक पुलिस वाला था—बेचैन हो गया था और उसे थोड़ा रोक रहा था। वह बेचारा, चलिाते और अपमानजनक बातें करते हुए, अपनी सारी पीड़ा बयां कर रहा था। और मुझे उस पर तरस आया। फिर वह पास आया, उसने मेरा हाथ चूमा, और मैंने भी उसका हाथ चूमा। वह सही था। हम सब—कुछ अधिक, कुछ कम—इसके लिए ज़िम्मेदार हैं। और मैं भी, इस गरीब आदमी की ईश्वरनदिा का कारण था। अगर मैं पादरी वर्ग का होता, तो मैं उसे सही राह पर ला देता।

फरीसियों को कतिनी नरिशा हुई होगी,⁴⁴ जब,⁴⁵ के दौरान, वे ग्रीस जा रहे एक जहाज पर सवार थे! दो नावकि आपस में झगड़ रहे थे और मसीह तथा परमेश्वर की माता के विरुद्ध ईश्वर-नदिा कर रहे थे। फरीसियों को यह बलिकूल भी पसंद नहीं आया। ग्रीक, ईसाई — और फिर भी वे मसीह और परमेश्वर की माता का अपमान कर रहे थे! उन्होंने उन अपमान करने वालों को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया। सौभाग्य से, वे तैरना जानते थे और बच गए। अगर कोई किसी व्यक्ति का अपमान करता है, तो भी हमें उसका बचाव करना चाहिए, मसीह का तो और भी ज्यादा! एक बार

⁴⁴ फारास के नविासी – कैपाडोसिया (एशिया माइनर, अब तुर्की का हिस्सा) का एक बड़ा गाँव। यह पूजनीय कैपाडोसिया के आर्सेनयिस और धन्य एल्डर पैसियोस का जन्मस्थान है। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

⁴⁵ यह 1924 के जनसंख्या आदान-प्रदान को संदर्भित करता है, जिसके दौरान एशिया माइनर के यूनानी ग्रीस में बसाए गए, जबकि ग्रीस में रहने वाले तुर्क तुर्की लौट गए। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

एक लड़का मेरे कालीवा में आया—उसको लकवा था, लेकिन उसका नन्हा सा चेहरा खलि रहा था। मैंने सोचा, 'यह कोई साधारण बात नहीं है, अगर दैवी कृपा इतनी चमक रही है।' मैंने पूछा, 'तुम्हारी तबीयत कैसी है?' और उसने मुझे बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। एक दरदि, जो छत जतिना लंबा था, मसीह और परमेश्वर की माता का अपमान कर रहा था, और यह लड़का उसे रोकने के लिए उस पर टूट पड़ा। उस दरदि ने उसे ज़मीन पर पटक दिया, रौंदा, उसकी टाँगें बेकार कर दीं, और उसके बाद वह बेचारा लड़का लंगड़ा हो गया। एक स्वीकारकर्ता! और स्वीकारकर्ताओं और शहीदों ने क्या-क्या नहीं सहा!

— गेरोना, सेना में कुछ धर्मपरायण युवकों को गाली-गलौज करने वालों से नपिटना मुश्किल लगता है। उन्हें क्या करना चाहिए?

— उन्हें तर्क और धैर्य की आवश्यकता है। ईश्वर मदद करेंगे। एक रेडियो ऑपरेटर जिसके साथ हमने सेवा की, जो एक पूर्व डॉक्टर था, एक अवशिवासी और ईश्वरननिन्दक था। वह हर दिन मुझे मसतृष्क-धोवन करने के लिए प्रशासन विभाग में आता था। वह मुझे डार्विन के सिद्धांत और इसी तरह की बकवास के बारे में बताता था — जो पूरी तरह से ईश्वरननिंदा से ओत-प्रोत थी। लेकिन एक घटना के बाद, उसे कुछ एहसास हुआ। हम एक साथ एक मशिन पर थे। हमारे पास एक बड़ा गधा था जिस पर एक रेडियो और एक स्ट्रेचर लादा हुआ था। एक बहुत ही फसिलन भरी ढलान पर, मैं गधे की पूंछ पकड़े हुए था, जबकि डॉक्टर उसे लगाम से खींच रहा था। और फिर, पलक झपकते ही, स्ट्रेचर खचकर के कानों से टकरा गया, और वह—धम्म!—मुझे अपने पछिले खुरों से जोर से लात मार गया, और मैं उछल गया। मैं जल्द ही होश में आया और महसूस किया कि मैं चल रहा था! मुझे बस इतना याद था कि मैं चलिला पाया था: 'मेरी लेडी!' और कुछ भी नहीं। मुझ पर खुरों के निशान थे, ठीक यहीं—मेरी पूरी छाती काली पड़ गई थी, खुर ने मुझे इतनी जोर से मारा था। जब डॉक्टर ने देखा कि मैं चल रहा हूँ, तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। हम अपने रास्ते पर आगे बढ़े। थोड़ा आगे चलकर, डॉक्टर एक पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ा और उठ नहीं सका। तब वह चलिलाने लगा: 'मेरी मालकनि, मेरे ईश्वर!' उसे डर था कि उसके दुश्मन उसे पकड़ लेंगे: 'अब हर कोई मुझे छोड़ देगा, बस, सब खत्म हो गया, और मेरा क्या होगा, और मेरी मदद कौन करेगा!' — 'चिंता मत करो,' मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। अगर वे मुझे पकड़ लेंगे, तो तुम्हें भी पकड़ लेंगे।' फिर उस बेचारे ने सोचना शुरू किया: "आर्सेनी⁴⁶ को एक खचकर ने लात मारी थी, और उसे कुछ नहीं हुआ, लेकिन मैं तो बस ठोकर खाई ही है और अब चल भी नहीं पा रहा हूँ!" जल्द ही वह खड़ा हो गया, लेकिन वह लंगड़ा रहा था, और मैं उसे सहारा देकर चलने में मदद कर रहा था। बाकी आगे निकल गए थे। उसने अपना सबक सीख लिया था और उसके बाद होश में आ गया। वह हर दिन ईश्वर का अपमान किया करता था, लेकिन जैसे ही खतरा आया, वह चलिलाने लगा: 'मेरी लेडी, मेरी लेडी!' उसे तुरंत ही लेडी का ध्यान आ गया। लेकिन एक और आदमी था जो सेना में मोटरसाइकिल चलाने वाला था; उसकी टांग दो बार टूट चुकी थी और फिर भी वह ईश्वर का अपमान करता रहा।

— क्या आपने उनसे कुछ नहीं कहा, गेरोना?

— उससे कहने के लिए क्या था? मैंने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन वह जानबूझकर, सिर्फ मुझे चोट पहुँचाने के लिए, मसीह और परमेश्वर की माता के खिलाफ गालियाँ बकता रहा। मुझे यह बाद में एहसास हुआ और मैंने बस प्रार्थना की। और देखिए — जहाँ पहले वह और दूसरे लोग बना किसी कारण के गाली देते थे, उसके बाद, जब उनकी बात नहीं बनती और वे गालियों की बौछार करना चाहते, तो वे अपनी जीभ काट लेते! यदि कोई नरिंजक व्यक्ति गाली-गलौज या ईश्वर की निंदा करता है, तो बेहतर है कि आप यह दिखावा करें कि आप किसी काम में व्यस्त हैं और उसे सुन नहीं सकते,

⁴⁶ एल्डर का सांसारिक नाम।

और साथ ही मन ही मन प्रार्थना करें। क्योंकि यदि उसे पता चल गया कि आप उसे देख रहे हैं, तो वह लगातार गाली-गलौज कर सकता है। और इस तरह, आप उसके एक अशुद्ध आत्मा द्वारा ग्रस्त होने का कारण बन जाएंगे। हालाँकि, यदि गाली-गलौज करने वाला कोई नरिलज्ज व्यक्ति नहीं है, बल्कि कोई वविकशील व्यक्ति है, और वह बुरी आदत के कारण गाली दे रहा है, तो आप उसे कुछ कह सकते हैं। लेकिन अगर उसमें वविक के साथ-साथ स्वार्थ की भी अच्छी-खासी मात्रा है, तो सतर्क रहें। उससे कठोरता से बात न करें, बल्कि जितना हो सके नम्रता और दुख के साथ बात करें। संत आइजैक कहते हैं: "जो आपसे झगड़ते हैं, उनकी नदि अपने सदगुणों की शक्ति से करें ... और अपने होठों की नम्रता और शांति से उनका मुँह बंद कर दें। अनुशासनहीनों की नदि अपने सदाचारी आचरण से करें, और कामुक रूप से नरिलज्जों की नदि अपनी आँखों के संयम से करें।"⁴⁷

अध्याय 3. "क्योंकि शुद्ध लोगों के लिए सब कुछ शुद्ध है..."⁴⁸

एक आध्यात्मिक व्यक्ति वह जो आग पर जीवित रहता है

— गेराना, आज के समाज में एक ईसाई के रूप में सही तरीके से कैसे जिया जाए, उन लोगों से भटकने के बिना जो ईश्वर से दूर रहते हैं?

— ईश्वर के निकट न रहने वालों से कोई क्यों भटक जाए? यदि छिह या आठ भाई-बहनों के परिवार में एक या दो शैतान के बहकावे में आ गए, तो क्या उनका पापी जीवन सचमुच बाकी लोगों को भी भटका देगा?

— नहीं, वे उनके लिए दुखी होंगे, क्योंकि वे भाई-बहन हैं।

— खैर, देखिए, बुराई हमारे भीतर ही है। हममें प्रेम की कमी है, और यही कारण है कि हम सभी लोगों को अपने भाई-बहन नहीं मानते और उनके पापी जीवन से भटक जाते हैं। हम सभी एक बड़ा परिवार हैं और एक-दूसरे के भाई और बहन हैं, क्योंकि सभी लोग ईश्वर की संतान हैं। यदि हम सचमुच यह महसूस करें कि हम सभी लोगों के भाई और बहन हैं, तो हमें पाप में जीने वालों के लिए दर्द होगा। और फिर उनका पापी जीवन हमें लुभाएगा नहीं, बल्कि हम उनके लिए प्रार्थना करेंगे।

तो, अगर हम भटक जाते हैं, तो बुराई हमारे बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर है। जब कोई हमें भटकाता है, तो आइए हम खुद से कहें: 'और तुम कतिनों को भटका रहे हो? और ईश्वर के नाम पर, क्या तुम अपने भाई को सहन नहीं करते? और ईश्वर तुम्हें, तुम जो कुछ भी करते हो, उसे सहन कैसे करते हैं?' ईश्वर के बारे में सोचो, ईश्वर की अतिपवित्र

⁴⁷ "नम्रता और सौम्यता से बोलकर, नरिलज्ज और अवज्जाकारियों के मुँह बंद कर दो, और उन्हें चुप करा दो। अश्लील लोगों का सामना अपने जीवन की पवित्रता से करो, और उनकी भावनाएँ लज्जाहीन हैं – उन्हें अपनी दृष्टि की संयमशीलता से वश में करो।" तुलना करें: *बाबा इसाक सीरियाई* कृतियाँ। सेर्गीव पोसाद, 1911। वचन 56। पृ. 281।

⁴⁸ तीतुस 1:15.

माता के बारे में, उन स्वर्गदूतों के बारे में जो पृथ्वी पर सभी लोगों को देखते हैं। ऐसा है जैसे वे किसी बालकनी पर खड़े हों और चौक की ओर नीचे देखते हुए, वहाँ इकट्ठा हुए सभी लोगों को देख रहे हों। वे देखते हैं कि कुछ लोग चोरी कर रहे हैं, कुछ गाली-गलौज कर रहे हैं, कुछ कामुक पाप कर रहे हैं, और इसी तरह। वे उनसे कैसे धैर्य रखते हैं? वे दुनिया के सभी बुराइयों और पापों को सहन करते हैं, फरि भी हम अपने भाई से धैर्य नहीं रख सकते! यह भयानक है!..

— गेरोन्डा, प्रेरति पौलुस के इन शब्दों का क्या अर्थ है: *'क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है'*?⁴⁹

— यदि आप कागज या कचरा भट्टी में फेंकते हैं, तो क्या वे जल नहीं जाएँगे? एक आध्यात्मिक व्यक्तिके साथ भी ऐसा ही है: शैतान जो कुछ भी उस पर फेंकता है, वह जलकर राख हो जाता है। *'एक भस्म करने वाली आग'*! जब एक व्यक्तिके भीतर दविय ज्वाला प्रज्वलति हो जाती है, तो सब कुछ भस्म हो जाता है। दुष्ट विचार अब उस पर चपिके नहीं रहते। यानी, शैतान उस पर दुष्ट विचार फेंकना बंद नहीं करता, लेकिन आध्यात्मिक व्यक्ति 'आग है' और उन्हें जला देता है। और फरि शैतान थक जाता है और अपना [हमला] बंद कर देता है। इसीलिए प्रेरति पौलुस कहते हैं: *'पवित्र लोगों के लिए सब कुछ पवित्र है'*। शुद्ध लोगों के लिए, सब कुछ शुद्ध है; कुछ भी अशुद्ध नहीं है। भले ही शुद्ध लोगों को दलदल में फेंक दिया जाए, वे शुद्ध ही रहेंगे, ठीक वैसे जैसे सूर्य की करिणों, जो जसि पर भी पड़ती हैं, उज्ज्वल और शुद्ध ही रहती हैं।

एक आध्यात्मिक व्यक्ति एक संत के संपर्क में आकर रूपांतरित हो जाता है—शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में—लेकिन एक सांसारिक व्यक्तिके संपर्क से वह उत्तेजित नहीं होता। वह उसे देखता है, उसके लिए दुख उठाता है, लेकिन स्वयं को कोई हानि नहीं पहुँचने देता। एक मध्यवर्ती आध्यात्मिक अवस्था में व्यक्ति एक आध्यात्मिक व्यक्तिके संपर्क में आने से बेहतर के लिए परिवर्तित होता है, और एक कामुक व्यक्ति से भी परिवर्तित होता है, लेकिन बुरे के लिए। एक कामुक व्यक्ति संत को नहीं समझता और एक कामुक व्यक्ति से प्रज्वलति हो जाता है। और जहाँ एक भूतग्रस्त व्यक्ति संत को देखकर भाग जाता है, वहीं एक कामुक व्यक्ति उसे बहकाने और फुसलाने के लिए संत के पास जाता है। जो सोदोमियों की अवस्था में पहुँच गया है, वह तो स्वर्गदूतों द्वारा भी बहकाया जाता है।⁵⁰ एक वनिमर व्यक्ति, भले ही वह आध्यात्मिक रूप से अनुभवहीन हो, परमेश्वर के स्वर्गदूत को एक राक्षस से अलग पहचान सकता है, क्योंकि उसमें आध्यात्मिक पवित्रता होती है और वह स्वर्गदूत के समान होता है। लेकिन एक स्वार्थी और कामुक व्यक्ति केवल चालाक शैतान द्वारा आसानी से धोखा खा जाता है, बल्कि वह स्वयं भी उस चालाकी को फैलाता है, अपनी कामुकता के माध्यम से दूसरों में इसे भड़काता है और कमजोर आत्माओं को अपने आध्यात्मिक कीटाणुओं से संक्रमित करता है।

— जेरोन्डा, कोई उस अवस्था को कैसे प्राप्त कर सकता है जिसमें सब कुछ शुद्ध दिखाई देता है?

— हृदय को शुद्ध किया जाना चाहिए ताकि ईश्वर की कृपा उसमें वास कर सके। *'हे ईश्वर, मुझमें एक नरिमल हृदय सृजति कर...'*⁵¹ — क्या भजन यही नहीं कहता? जब हृदय — चाहे वह पुरुष का हो या महिला का — शुद्ध हो जाता है, तो मसीह उसमें वास करते हैं। और फरि लोग न तो किसी को लुभाते हैं और न ही लुभावते हैं, बल्कि दूसरों को अनुग्रह और श्रद्धा प्रदान करते हैं। एक व्यक्ति जो चौकस रहता है और अपनी आध्यात्मिक पवित्रता की रक्षा करता है,

⁴⁹ इब्रानियों 12:29.

⁵⁰ उत्पत्ति 19:1-5 देखें।

⁵¹ भजन संहिता 50:12.

वह दैवीय अनुग्रह को भी संरक्षित करता है; न केवल वह सब कुछ शुद्ध देखता है, बल्कि वह अशुद्ध को भी भलाई के लिए उपयोग करता है। यहाँ तक कि जो अशुद्ध है, वह भी उनके उत्कृष्ट आध्यात्मिक प्रयास में कुछ उपयोगी में बदल जाता है। वह अवांछित कागज को साफ नैपकनि, गोंद और अभ्यास की किताबों में बदल देता है; कांस्य के टुकड़ों को मोमबत्ती के स्टैंड में, और इसी तरह। इसके विपरीत, एक व्यक्ति जो धोखे को अपनाता है और धोखे से सोचता है, वह अच्छे को भी बुरा बना देता है, जैसे कोई फैक्ट्री जो गोला-बारूद बनाती हो—वह सोने से भी गोलियाँ और गोले के खोल बना देगी, क्योंकि उस फैक्ट्री की मशीनरी को इस तरह से बनाया गया है।

यदि कोई पाप के आगे झुकना शुरू कर देता है, तो वह भीतर से काला हो जाता है; उसकी आत्मा की आँखें धुंधली हो जाती हैं, और उसकी दृष्टि भ्रष्टा जाती है। तब वह पाप से पहले ही कलंकित हो जाता है, और पाप उसे उलझा लेता है। वह तो शुद्ध को भी अशुद्ध के रूप में देख सकता है। ऐसे लोग हैं जो, उदाहरण के लिए, यह विश्वास नहीं कर सकते कि ऐसे युवक और युवतियाँ हैं जो संयमी, पवित्र जीवन जीते हैं। वे कहते हैं, "आजकल यह असंभव है।" ये दुखी आत्माएँ पाप में इतनी डूब गई हैं कि वे हर चीज को पापी ही देखती हैं। जो सींग वाले जीवों,⁵² के साथ मेलजोल रखते हैं, वे यह भी कल्पना नहीं कर सकते कि ऐसे अन्य लोग भी हैं जो परमेश्वर के स्वर्गदूतों के मतिर हैं। लेकिन किसी को यह मांग नहीं करनी चाहिए कि सूअर लिली के फूलों का सम्मान करें। क्योंकि मसीह स्वयं ने कहा: '*... अपना मोती सूअरों के सामने न डालो, कहीं वे उन्हें पैरों तले न कुचल दें...*'⁵³ इसलिए, जो कोई भी आध्यात्मिक, पवित्र जीवन जीता है, उसे बहुत सावधान रहना चाहिए, न केवल सांसारिक लोगों के साथ अपने व्यवहार में कभी भी लापरवाह होने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने की भी अनुमति नहीं देनी चाहिए, ताकि वे स्वयं को या दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ, क्योंकि सांसारिक लोगों का आचरण-संहिता अलग होती है, एक अलग 'कैनोआर्क'⁵⁴, और वे पवित्र जगत और इतर में अंतर नहीं कर सकते।

— गेरोन्डा, क्या बाहरी प्रलोभन किसी ऐसे व्यक्ति को रोक सकते हैं जो मसीह के करीब रहना चाहता है?

— नहीं। केवल हमारा अलौकिक जीवन ही हमें मसीह से अलग कर सकता है। यही सींग वाला करता है — वह प्रलोभनों को बढ़ाता है और द्वेष बोता है, लोगों के खिलाफ युद्ध छेड़ता है, कभी क्रूरता से, कभी चालाकी से।

मसीह हमसे प्रेम करते हैं, और जब हम उनकी इच्छा के अनुसार जीते हैं, तो वह हमारे निकट होते हैं। इसलिए, जब आप प्रलोभनों को उत्पन्न होते देखें, तो डरो नहीं और घबराओ नहीं। यदि कोई व्यक्ति हो रही घटनाओं को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नहीं देखता है, तो वह एक भी दनि का आनंद नहीं अनुभव करेगा, क्योंकि शैतान उनकी कमजोर कड़ी पर प्रहार करेगा और उन्हें परेशान करने के लिए लगातार प्रलोभन पैदा करेगा — एक आज, दूसरा कल, और तीसरा परसों।

आइए हम स्वयं प्रलोभन न पैदा करें

आइए हम यथासंभव सतर्क रहें और ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होने का कारण न दें जो लोगों के लिए प्रलोभनपूर्ण हों। आइए हम दुष्ट के लिए कोई दरार न खोलें, क्योंकि भ्रष्ट विचारों वाली आत्माएँ और भी अधिक भ्रष्ट हो जाती हैं

⁵² तांगलाशका (ग्रीक: ταγκαλάκι) – यह वह उपनाम है जो वृद्ध ने शैतान को दिया था। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

⁵³ मत्ती 7:6 देखें।

⁵⁴ एक कैनोआर्क एक गायक होता है जो यह घोषणा करता है कि गायन मंडली को क्या गाना है। यहाँ, वृद्ध का तात्पर्य है कि पाप के मामलों में 'कैनोआर्क' शैतान है, जो किसी व्यक्ति को यह निर्देश देता है कि उन्हें क्या करना है।

और फरि स्वयं को सही ठहराने के लिए कोई बहाना ढूँढती हैं। और इस मामले में, एक ओर तो हम नरिमाण करेंगे, और दूसरी ओर, वनिश।

एक बार, कुछ युवा—आधुनिक लड़के—मेरे कलवि में आए। हमने उनसे बातचीत की। उसी दनि, मुझे पवित्र पर्वत छोड़ना पड़ा। यह जानकर, वे भी जाने की तैयारी करने लगे। जहाज पर, वे मेरे पास आए और मेरे बगल में बैठ गए। उन्होंने बड़ी रुचि से मुझसे विभिन्न आध्यात्मिक प्रश्न पूछे। हालाँकि, हमारे कुछ साथी यात्रियों ने जो हो रहा था, उसे गलत समझ लिया और हमें बड़ी शंका से देखा। अगर मुझे पहले पता होता कि हमारी बातचीत को गलत समझा जाएगा, तो मैं आवश्यक सावधानियाँ बरतता।

दुनिया धोखेबाज है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम प्रलोभन पैदा न करें। हम उन मामलों के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं जहाँ हम उचित कदम नहीं उठा सकते, या उन मामलों के लिए जिनमें हमारा अनुभव कम है। लेकिन अगर हम लापरवाही से समस्याएँ पैदा करते हैं तो हमें ईश्वर से पुरस्कार की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हमें तब पुरस्कार मिलेगा जब हम सतर्क रहेंगे और समस्याएँ दुश्मन द्वारा पैदा की गई होंगी। उदाहरण के लिए, कोई कहता है कि मैं जादू-टोने के प्रभाव में हूँ। सबसे पहले, मैं यह जाँचूँगा कि मैं जादू-टोने के प्रभाव में हूँ या नहीं। 'चूँकि विह ऐसा कह रहा है, इसका मतलब है कि उसने कुछ देखा है। वह यँ ही ऐसी बात नहीं कह सकता; उसने ज़रूर कुछ गलत समझा होगा,'—मैं इसी तरह तर्क करता हूँ, और मैं यह पता लगाने की कोशिश करता हूँ कि मुझमें ऐसा क्या हो सकता है जसि गलत समझा गया हो, ताकि मैं उसे सुधार सकूँ। अगर लोग कहते हैं कि मुझ पर जादू-टोना है, कि मैं एक जादूगर हूँ—तो यह मेरे पक्ष में काम करता है, क्योंकि भीड़ नहीं जुटेगी और मेरा जीवन एक भिक्षु की तरह शांत हो जाएगा। लेकिन वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति जिसने ये अफवाहें फैलाई, वह नरक में होगा, क्योंकि विह चर्च को नुकसान पहुँचा रहा है। क्या यह [उसके लिए] अफ़सोस की बात नहीं है? और दोष मेरा होगा, क्योंकि मैं लापरवाह था। उदाहरण के लिए, कुछ गृहस्थ मेरे पास हाथ चूमने आते हैं, और मैं उनके सरि पर हल्की थपकी मारता हूँ। कोई यह देखकर कह सकता है: 'वह तो सरिफ एक भिक्षु है, फरि भी आशीर्वाद दे रहा है—क्या वह पादरी है?' और उसकी गलती नहीं होगी; यह मुझ पर नरिभर है कि मैं ऐसा दोबारा न करूँ।

— गेराना, जब कोई व्यक्ति लापरवाही से किसी प्रकार का प्रलोभन पैदा करता है, तो कुछ लोग कहते हैं: 'उसे रहने दो; वह ठीक दमिग का नहीं है।' इसे कैसे देखा जाना चाहिए?

— अस्थिरचित्त वह होता है जो सोच नहीं सकता, न कि विह जो असावधान है। एक असावधान व्यक्ति आग जलाता है और यह नहीं सोचता कि जहाँ उसने आग जलाई है, वहाँ आग का भड़कना स्वाभाविक है। जब ऐसे लोग आग जलाते हैं और दूसरों की आत्माओं को झुलसाते हैं, तो हमें प्रार्थना करनी चाहिए और कम से कम एक बाल्टी पानी डालकर आग बुझानी चाहिए। फरि कुछ ऐसे लोग हैं जो एक आंधी की तरह हैं: उनमें धार्मिकता तो है, लेकिन उनका दमिग ठीक नहीं है, और अगर वे कुछ ऐसा सुनते हैं जसिसे वे असहमत हों, तो यह विचार कि बिना कि विह सही है या गलत, वे सब कुछ चीर-फाड़ देते हैं। ऐसे मामलों में, हमें उन्हें धीरे से धीमा करना चाहिए, और एक बार जब वे रुक जाएँ, तो फरि से धीरे से उनके पहिये के नीचे एक पत्थर रखना चाहिए, क्योंकि वे पीछे लुढ़क सकते हैं और दूसरों को भी अपने साथ खींच सकते हैं।

कुछ लोग प्रलोभन पैदा करना कतिना पसंद करते हैं

जो आप सुनते हैं उस पर बहुत जल्दी विश्वास न करें, क्योंकि कुछ लोग केवल अपनी समझ की हद तक ही बोलते हैं। एक बार, एक आदमी हाज फेंदी⁵⁵ के पास आया और उससे कहा: 'मेरे लिए दुआ करें, हाज फेंदी। सौ साँप वहाँ ऊपर रेंग गए हैं।' — 'सौ साँप!? कहाँ से?' — संत आर्सेनयिस ने आश्चर्य से पूछा। "ओह, सटीक रूप से सौ नहीं, लेकिन पचास तो पक्के!" — "पचास साँप?" — "खैर, कम से कम पच्चीस तो थे!" — "क्या आपने कभी पच्चीस साँपों को एक साथ रेंगते हुए सुना है?" — संत ने पूछा। उस आदमी ने फिर उससे कहा कि वहाँ नश्चिती रूप से दस थे। "अरे, अब तो मान जाओ," संत ने कहा, "क्या सच में दस साँप एक साथ सरसराते हुए ऊपर आ सकते हैं? अरे, यह तो नामुमकिन है!" — "पाँच थे," उस आदमी ने जोर देकर कहा। "पाँच?" — "ठीक है, दो थे।" फिर संत ने उससे पूछा: "क्या तुमने उन्हें देखा?" — "नहीं," वह कहता है, "लेकिन मैंने उन्हें टहनियों में फुफकारते हुए सुना: श-श-श!..." मेरा मतलब है, शायद वह कोई छपिकली ही होगी! मैं बर्ना पहले जाँच-पड़ताल किए जो कुछ भी सुनता हूँ, उससे कभी कोई नष्टिकर्ष नहीं निकालता। एक व्यक्ति निंदा करने के लिए कुछ कह सकता है, दूसरा बस यूँ ही कह सकता है, और तीसरे के मन में कोई खास मकसद हो सकता है।

कुछ लोग कतिनी लालच पैदा करना पसंद करते हैं! कोनटिसा में दो दोस्त थे, बहुत करीबी दोस्त। त्योहारों और रविवारों के दिनों में वे शहर में इधर-उधर नहीं घूमते थे, बल्कि मठ, स्टोमयिन (⁵⁶) आते थे और गायक मंडली में भी गाते थे, और फिर पहाड़ पर चढ़ते थे, 'द कैमल' तक।⁵⁷ एक बार, एक दुष्ट व्यक्ति ने उन्हें लालच में डालने के लिए एक जाल बछिया। वह एक दोस्त के पास गया और बोला: 'क्या तुम्हें पता है तुम्हारे दोस्त ने तुम्हारे बारे में क्या कहा? ऐसा-वैसा।' फिर वह दूसरे दोस्त के पास गया और उससे कहा: 'क्या तुम्हें पता है तुम जनिके साथ दोस्त हो, उन्होंने तुम्हारे बारे में क्या कहा?' "फलाना-ढीला।" वे दोनों तुरंत क्रोधित हो उठे और वहीं मठ में झगड़ा शुरू कर दिया। इस बीच, जिसने आग में घी डाला था, वह चुपके से निकल गया, जबकि वे आपस में बहस करते रहे! छोटा वाला थोड़ा तनाव में था और उसने बड़े वाले का अपमान करना शुरू कर दिया।

मैंने मन ही मन सोचा: "अब मैं क्या करूँ? ज़रा देखो तो यह शरारती क्या कर रहा है!" तो मैं वहाँ गया और बड़े वाले से कहा: "सुनो, वह जवान है, और ऊपर से थोड़ा चड़िचड़ा भी है, इसलिए उस पर बुरा मत मानना; उससे माफी माँग लो।" — "पतिाजी," वह कहता है, "माफी क्या मांगनी? क्या आप नहीं देख रहे कि वह मेरा अपमान कैसे कर रहा है? और मैं पहली बार सुन रहा हूँ कि वह मुझ पर क्या आरोप लगा रहा है।" तो मैं उस जवान आदमी के पास गया और उससे कहा: 'सुनो, वह तुमसे बड़ा है, और बातें वैसी नहीं हैं जैसी तुम सोच रहे हो। चलो, जाओ और उससे माफी माँग लो।' वह आग-बबूला हो गया और चलिलाने लगा: 'पादरी, हमसे भी झगड़ा कर लेना!' — 'ठीक है,' मैंने कहा, 'ठीक है, पैटेलसि, चल झगड़ते हैं—बस मुझे तैयार होने के लिए एक पल दे दो।' मैंने यह कहा और चल दिया। मठ से लगभग चार सौ मीटर पीछे, मैंने बगीचे की बाड़ के लिए कुछ मोटे डंडे जमा कर रखे थे। मैं वहाँ गया, लगभग पाँच मीटर लंबा एक डंडा उठाया और उसे खींचकर मठ तक ले आया। मैं मुश्किल से ही उसे घसीट पा रहा था, बस उसे हँसाने के लिए। उसे मेरी खींचने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि मैं क्या करने वाला था? मैंने उसे आँगन में घसीट कर चर्च के प्रवेश द्वार के

⁵⁵ हाजेफेन्दी – यह नाम फारस के नविसयियों द्वारा कैपाडोसिया के संत आर्सेनयिस को दिया गया था।

⁵⁶ 1958–60 में, धन्य एल्डर पैसयिस कोनटिसा के पास स्थित स्टोमयिन मठ में एक भिक्षु के रूप में रहे। – अनुवादक की टिप्पणी।

⁵⁷ माउंट पापगो का शखिर – टमिफ़ी – एक महिला ऊँट की सलिहूट जैसा दिखता है।

सामने रोक दिया। "अरे," मैंने कहा, "पैंटेलीस, बंद करो ये सब, नहीं तो हम एक-दूसरे से पटिंगे।" जब उन्हें एहसास हुआ कि मुझे उस डंडे की जरूरत क्यों पड़ी थी, तो वे दोनों ठहाका मारकर हँस पड़े। बस, बर्फ पघिल गई। शैतान हार गया। मैंने कहा, "तुम्हारे होश-ठिकाने तो हैं?" "आखिरि तुम करना क्या चाहते हो?" और वे फरि से दोस्त बन गए।

— क्या यह घटना ठीक उसी दनि हुई थी?

— हाँ, और उनकी जमकर लड़ाई हुई! क्या आप देख रहे हैं कि शैतान क्या करता है? वह तीसरा शायद उनसे ईर्ष्या करता था, क्योंकि वे भाईयों की तरह करीब थे। उसने एक को दूसरे के खिलाफ कर दिया और भाग गया। कलह बोना एक बहुत ही बुरी बात है। इसीलिए दुश्मन को शैतान कहा जाता है।⁵⁸ वह माहौल खराब करता है: वह एक व्यक्ति से एक बात कहता है, दूसरे से दूसरी। और वह प्रलोभन पैदा करता है। और उन बेचारे आत्माओं ने उस पर विश्वास कर लिया और अंततः लड़ पड़े।

— क्या उसने जानबूझकर ऐसा किया?

— हाँ, उनके बीच दरार डालने के लिए। उसने यह, बेशक, 'प्यार से' किया—यानी ईर्ष्या से।

पापों का प्रचार

जब हम कुछ बुरा देखते हैं, तो हमें उसे ढक देना चाहिए और उसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए। जब नैतिक कमियाँ सबके सामने आ जाती हैं, तो यह गलत है। मान लीजिए कि सिड़क पर गंदगी पड़ी है। एक समझदार व्यक्ति, गुजरते हुए, कुछ उठाकर उसे ढक देगा ताकि लोगों को उससे घृणा न हो। दूसरी ओर, एक मूर्ख व्यक्ति, उसे ढकने के बजाय, उसे खोदकर बदबू को और भी बदतर कर देगा। इसी तरह, दूसरों के पापों को लापरवाही से सार्वजनिक करके, हम और भी अधिक हानि पहुँचाते हैं।

सुसमाचार में कहा गया है, 'चर्च को बताओ' (⁵⁹), इसका यह मतलब नहीं है कि हर बात सार्वजनिक होनी चाहिए, क्योंकि आज चर्च ही सब कुछ नहीं है। चर्च उन विश्वासियों से मलिकर बनी है जो मसीह की इच्छानुसार जीते हैं, न कि उन लोगों से जो चर्च के खिलाफ युद्ध छेड़ते हैं। ईसाई धर्म के शुरुआती वर्षों में, जब पाप-स्वीकृति चर्च के सभी सदस्यों के सामने की जाती थी, तब प्रभु के वचन, 'चर्च को बताओ', का शाब्दिक अर्थ था। हालाँकि, हमारे अपने समय में, जब एक पूरे परिवार का एक ही पाप-स्वीकारकर्ता के सामने पाप-स्वीकृति करना दुर्लभ हो गया है, तो आइए हम दुश्मन को हमें इस 'चर्च को बताओ' से भ्रमति करने की अनुमति न दें / क्योंकि उदाहरण के लिए, किसी नैतिक अपराध को सार्वजनिक करने से, हम इसे चर्च के शत्रुओं को बता रहे हैं और उन्हें इसके खिलाफ युद्ध छेड़ने का बहाना दे रहे हैं। और इस तरह, कमजोर आत्माओं में विश्वास डगमगाता है।

यदि किसी माँ की बेटी वेश्या है, तो वह दूसरों के सामने उसकी नंदा या अपमान नहीं करती, बल्कि उसकी अच्छी-खासी प्रतिष्ठा बहाल करने के लिए हर संभव प्रयास करती है। वह अपना सब कुछ, यहाँ तक कि अपनी आखिरी चीज़ तक बेच देगी; वह अपनी बेटी को लेकर किसी दूसरे शहर में चली जाएगी, उसका विवाह करने का प्रयास करेगी, और इस तरह उसके पछिले जीवन को सुधारने की कोशिश करेगी। चर्च भी बिल्कुल इसी तरह काम करता है। दयालु ईश्वर प्रेम

⁵⁸ Διάβολος (ग्रीक) – बदनाम करने वाला; διαβάλλω (ग्रीक) – बदनाम करना, बुरा-भला कहना, किसी के बारे में बुरा बताना। – अनुवादक की टिप्पणी

⁵⁹ मत्ती 18:17.

में हमारे प्रति सहनशील हैं और किसी का भी उपहास नहीं करते, भले ही वे, जो हृदयों को जानने वाले हैं, हमारी दयनीयता से अवगत हैं। और संतों ने कभी भी किसी पापी का सारी दुनिया के सामने अपमान नहीं किया, बल्कि प्रेम, आध्यात्मिक संवेदनशीलता और एक रहस्यमय तरीके से बुराई को सुधारने में मदद की। लेकिन हम स्वयं, पापी होने के नाते, इसके विपरीत करते हैं — हम पाखंडियों की तरह व्यवहार करते हैं। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम गलतफहमियों का आसान शिकार न बनें और दूसरों के कामों को बुरा न समझें।

— गेरोन्डा, आपने नैतिक अपराधों को सार्वजनिक करने के विषय को छुआ है। लेकिन क्या दूसरों को पापों या किसी अन्य प्रकार की अस्वास्थ्यकर अवस्थाओं के बारे में सूचित करना आवश्यक है?

— देखिए: मैं अपने कुछ परिचितों के साथ ऐसा करता हूँ। उदाहरण के लिए, मैं किसी को बुरा व्यवहार करते और दूसरों को गुमराह करते हुए देखता हूँ। मैं उसे अपनी आदतें सुधारने की सलाह देता हूँ: एक बार, पाँच बार, दस, बीस, तीस बार, लेकिन वह अपनी आदतें नहीं सुधारता। हालाँकि, बार-बार याद दिलाने के बाद, उसके पास बुरा व्यवहार जारी रखने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि दूसरे भटक रहे हैं और उसकी नकल कर रहे हैं। देखिए, लोग बुराई की नकल करने में जल्दी करते हैं, लेकिन अच्छाई की नहीं। और इसलिए एक समय आता है जब मुझे इस दुर्व्यवहार को देखने वाले दूसरों से इस बारे में बोलने के लिए मजबूर होना पड़ता है, ताकि उनकी रक्षा की जा सके।

⁶⁰दूसरे शब्दों में, जब मैं कहता हूँ: 'मुझे ऐसा-वैसा करने वाले का यह काम पसंद नहीं है,' मैं यह उसकी नदि करने के लिए नहीं कहता, क्योंकि मैं खुद उसे यह बात पाँच सौ बार पहले ही बता चुका हूँ, बल्कि इसलिए कहता हूँ क्योंकि दूसरे, उसकी कमजोरी को देखकर, उससे प्रभावित हो जाते हैं, उसकी नकल करते हैं और, इसके अलावा, कहते हैं: 'चूँकि एल्डर पैसियोस उसे कुछ नहीं कहते, इसका मतलब यह होगा कि उसके व्यवहार में कुछ भी गलत नहीं है।' और अगर मैं यह विचार व्यक्त नहीं करता कि मुझे यह पसंद नहीं है, तो यह धारणा बनेगी कि मैं इसका समर्थन करता हूँ, कि मुझे भी यह पसंद है। और इस तरह पूरा संतुलन बिगड़ जाता है, क्योंकि कोई यह तय कर सकता है कि उस दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति की रणनीति सही है और वह खुद भी उनका अनुसरण करना शुरू कर सकता है। और इसका क्या परिणाम होगा? और वैसे भी, लोग सोचते हैं कि मैंने उससे बात नहीं की है, क्योंकि वे नहीं जानते कि उसने इस पूरे समय मुझे कतिना सताया है। और शैतान भी वहीं मौजूद है, जो कहता है: "तुम्हारे ऐसा करने में कुछ भी गलत नहीं है। देखो, कोई और भी यही कर रहा है, और एल्डर पैसियोस उसे कुछ नहीं कह रहे हैं।" तो, जब मैं देखता हूँ कि कोई अपनी ही 'टपिकॉन' (नियम-पुस्तिका) के अनुसार जीना जारी रखता है, लापरवाही से काम करता रहता है, भले ही मैंने उन्हें अपनी आदतें सुधारने की सलाह दी हो, तो उस व्यक्ति को जानने वाले किसी से बातचीत में, मैं कहता हूँ: 'मुझे फलाने का काम करना पसंद नहीं है,' ताकि उन्हें नुकसान से बचाया जा सके। यह नदि नहीं है; विभिन्न चीजों को एक-दूसरे के साथ भ्रमति नहीं किया जाना चाहिए।

और फिर कुछ लोग आकर मुझसे कहने लगते हैं: 'तुमने यह बात किसी और को क्यों बताई? आखिर यह एक राज था।' — 'कौन सा राज?' मैं कहता हूँ। 'मैंने तुम्हें हजारों बार समझाया है, लेकिन तुमने अपनी आदतें नहीं सुधारीं। तुम्हें दूसरों को यह सोचने का कोई अधिकार नहीं है कि मैं तुम्हारे कामों को मानता हूँ।' जैसे कि मैं पहले से ही काफी चुप नहीं था, और वह जाकर दूसरों को गुमराह करता है! खासकर जब मेरे जानने वाले किसी परिवार का कोई बच्चा आता है, और मैं देख सकता हूँ कि उसका व्यवहार उस परिवार को तोड़ रहा है, तो मैं उससे कहता हूँ: 'सुनो, अगर तुम अपनी आदतें नहीं सुधारोगे, तो मैं तुम्हारी माँ को इस बारे में बता दूँगा। किसी ने तुम्हें यह अधिकार नहीं दिया कि तुम मेरे पास आकर मुझे यह सब बताओ और फिर अपनी मनमानी करते रहो। मैं तुम्हारे परिवार को बचाने के लिए तुम्हारी माँ को बताऊँगी।' अगर

⁶⁰ टायपिकॉन (ग्रीक) – एक विधान, एक आदर्श; यहाँ: जीवन का तरीका, रीति-रिवाज। – अनुवादक की टिप्पणी।

वह पछतावा दिखाता है, तो बात अलग है। लेकिन अगर वह अपना यही व्यवहार जारी रखता है, तो मुझे उसकी माँ को इसके बारे में बताना ही होगा, क्योंकि इसकी ज़िम्मेदारी मेरी है।

अध्याय 4. कार्रवाई की आवश्यकता वैक और प्रेम के साथ

अपने ऊपर काम करना

यदि आप चर्च की मदद करना चाहते हैं, तो दूसरों को सुधारने के बजाय खुद को सुधारने का प्रयास करें। यदि आप खुद को सुधारते हैं, तो चर्च का एक हिस्सा तुरंत ठीक हो जाएगा। और यह स्पष्ट है कि यदि हर कोई इस तरह से काम करे, तो चर्च पूरी तरह से सुव्यवस्थित हो जाएगा। लेकिन आजकल लोग स्वयं को छोड़कर हर चीज़ की चिंता करते हैं, क्योंकि दूसरों की चिंता करना आसान है, जबकि स्वयं पर काम करने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है।

यदि हम आत्म-सुधार की ओर बढ़ें और मुख्यतः दैवीय सहायता पर भरोसा करके बाहरी कर्मों की अपेक्षा आंतरिक गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करें, तो हम दूसरों की अधिक सहायता कर पाएंगे और आत्म-सुधार को अधिक प्रभावी ढंग से साध पाएंगे। इसके अलावा, हम आंतरिक शांति प्राप्त कर सकेंगे, जो हम जिन आत्माओं से मिलते हैं, उन्हें चुपचाप सहायता प्रदान करेगी, क्योंकि हमारी आंतरिक आध्यात्मिक अवस्था हमारे नैतिक गुणों को प्रकट करती है और दूसरों की आत्माओं को परिवर्तित करती है। जब कोई व्यक्ति शुद्ध आंतरिक आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त करे, तो वह किसी प्रकार का आध्यात्मिक संघर्ष कर सकता है, लेकिन साथ ही वह कष्ट और पीड़ा का अनुभव करता है; उसमें ईश्वर के प्रति विश्वास की कमी होगी, और वह अक्सर अपनी शांति खो देगा। यदि वे स्वयं को अच्छा नहीं बनाते हैं, तो वे यह दावा भी नहीं कर सकते कि सामान्य भलाई के लिए उनकी चिंता शुद्ध है। अपने पुराने स्व और सभी सांसारिक चीज़ों से मुक्त होकर, उनके पास पहले से ही दैवी कृपा होगी। इस प्रकार, उसे स्वयं मानसिक शांति प्राप्त होगी, और वह किसी भी स्वभाव के लोगों की मदद करने में सक्षम होगा। लेकिन यदि उसमें ईश्वर की कृपा नहीं है, तो वह न तो स्वयं पर काबू पा सकता है और न ही दूसरों की इस तरह से मदद कर सकता है जो ईश्वर को प्रसन्न करे। पहले, उसे स्वयं कृपा में डूबना होगा, और केवल तभी उसकी शक्तियाँ, जो अब पवित्र हो चुकी हैं, दूसरों के मोक्ष के लिए उपयोग की जा सकती हैं।

अच्छा काम अच्छे तरीके से किया जाना चाहिए

— जेरोडा, जब आप किसी समस्या का सामना करते हैं तो आप क्या सोचते हैं?

— मैं इस बारे में सोचता हूँ कि मानवीय दृष्टिकोण से क्या किया जा सकता है और क्या नहीं किया जा सकता। मैं मामले को हर पहलू से देखता हूँ: 'अगर मैं इसे इस तरह से करूँ तो उसका उस स्थिति और उस पर क्या असर पड़ेगा? ... इससे क्या बुरा हो सकता है, और क्या अच्छा? ...' मैं हमेशा समस्या को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखने की

कोशिश करता हूँ, ताकि मेरा लयिया गया नरिणय, जहाँ तक संभव हो, सबसे सही हो। क्योंकि लापरवाही कई गलतियों का कारण बन सकती है। और जब, बाद में सोचने पर, आपको एहसास होता है कि आपको क्या करना चाहिए था, तो कोई फायदा नहीं होता — जैसा कि कहा जाता है, बहुत देर हो चुकी होती है, पंछी already उड़ चुका होता है!... मान लीजिए, उदाहरण के लिए, किसी ने गलती से घर में आग लगा दी। खैर, आप क्या कर सकते हैं? आप उन्हें मौत की सज़ा तो नहीं दे सकते। लेकिन — नुकसान तो पहले ही हो चुका होता है...

[एक समय की बात है] एक संगठन में एक समस्या उत्पन्न हुई। वहाँ का प्रबंधक मेरे पास आया और कहा: "खैर, सब कुछ सुलट गया है। मैं अमुक जगह गया, अमुक-अमुक लोगों को ढूँढ़ निकाला, उन्हें यह-वह कह दिया, और समस्या का समाधान हो गया।" — "समस्या," मैंने कहा, "तो अभी-अभी शुरू हुई है। पहले जो हुआ वह कोई समस्या नहीं थी। शुरुआत में बस कुछ अंगारे थे; वे अपने आप बुझ जाते, लेकिन अब आग की लपटें भड़कने लगी हैं।" उसे लगा कि उसने अपने कामों से सब कुछ सुलझा लिया है, और वह चाहता था कि हिम उसकी प्रशंसा भी करें। लेकिन असल में, उसके कामों से काफी हलचल मच गई और समस्या और जटिल हो गई।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि अच्छे काम सही तरीके से किए जाएँ और लाभ पहुँचाएँ, बहुत अधिक ध्यान, वक्त और सही नरिणय की आवश्यकता होती है; अन्यथा, मदद करने के बजाय, वे केवल दूसरों को क्रोधित करेंगे। और एक और बात है: जो आप करने की योजना बना रहे हैं, उसे पूरा होने देना बेहतर है। क्योंकि यदि आप किसी चीज़ में इसके तैयार होने से पहले 'जल्दबाजी' करते हैं—यानी, जल्दबाजी में नरिणय लेते हैं—तो आपको बाद में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और आप पीड़ित हो सकते हैं। जब गंभीर मामलों को थोड़ा सा रोका जाता है, तो वे फरि जल्दी और सही ढंग से पूरे होते हैं। हो सकता है आप एक प्रतभाशाली व्यक्ति हों, लेकिन यदि आपके कार्य अहंकार और स्वार्थ से प्रेरित हैं—जिसका आपको एहसास भी न हो—तो भी यह एक समस्या होगी। उदाहरण के लिए, शक्ति करते समय, यदि एक कुत्ता संकर नस्ल का हो लेकिन ध्यान से खोज करे, तो वह खरगोश के निशान ढूँढ़ लेगा। जबकि दूसरा कुत्ता, जो शुद्ध नस्ल का हो, जिसमें सभी बेहतरीन कुत्ते जैसी खूबियाँ हों, जब वह जल्दबाजी में होता है, तो व्यर्थ ही दाईं-बाईं इधर-उधर दौड़ता रहता है। सोचे बिना काम करना अहंकार है। इसलिए, किसी को भी जल्दबाजी में काम नहीं करना चाहिए, बल्कि पहले सब कुछ ध्यान से विचार करना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। जब प्रार्थना पहले आती है, तो यह तर्क या तुच्छता का ज्ञान नहीं होता है जो काम कर रहा होता है, बल्कि एक पवित्र मन होता है।

हम, आध्यात्मिक लोग, अक्सर ऐसा व्यवहार करते हैं मानो ईश्वर का कोई अस्तित्व ही न हो — हम उन्हें कार्य करने की अनुमति नहीं देते। फरि भी ईश्वर अपने काम को जानते हैं। मेरा मतलब यह है कि जब आध्यात्मिक रूप से कठिनाइयों को हल करने के साधन उपलब्ध हों, तो हम सांसारिक तरीके से काम करना चाहते हैं। जब मैं सनाई परवत पर था, तो एक निश्चित होजा⁶¹ हर शुक्रवार को मठ में आता था, अंदर जाता था, वहाँ खड़ी मस्जिद की मीनार पर चढ़ता था, और चलिलाना शुरू कर देता था! और क्या आवाज़ थी उसकी! वह संत एपिस्टिमिया की गुफा तक भी सुनाई देती थी। फरि मठ ने एक उपाय निकाला: शुक्रवार को, जब होजा आता, तो वे मठ का दरवाज़ा बंद कर देते ताकि वह अंदर न आ सके। मुझे इस बारे में पता नहीं था। एक दिन मैं नीचे गया और होजा को गुस्से में देखा। "अभी," वह कहता है, "मैं उन्हें दिखाता हूँ कि मेरे मुँह पर दरवाज़ा कैसे बंद किया जाता है!..." मैं कहता हूँ: "उन्होंने इसे ऊँटों के अंदर न आने के लिए बंद कर दिया है। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने तुम्हारे अंदर आने से रोकने के लिए इसे बंद किया है।" फरि मैंने मठ के भिक्षुओं को इसके बारे में बताया। एक सचिव कहता है: "मैं उसे दिखाता हूँ, उस होजा को! मैं उसे अपनी बात सुनाऊँगा! मैं सरकार को लिखूँगा

⁶¹ हुज्जत – एक मुस्लिम धार्मिक न्यायाधीश और शिक्षक। – अनुवादक की टिप्पणी।

कहोजा हमें परेशान कर रहा है!" — "सुनो," मैंने उससे कहा, "ऑर्थोडॉक्सी कोई गोली नहीं है। आइए हम सनिई और सेंट कैथरीन के पूजनीय पतिओं के लिए जागरण करें, और इस मामले को ईश्वर के हाथों में छोड़ दें। मैं भी ऊपर जाकर प्रार्थना करूँगा।" मैंने कुछ भाइयों से भी प्रार्थना करने को कहा, और होजा को नश्चिती रूप से उसकी सजा मलि गई! उसने अपना सामान बांधा, चला गया और गायब हो गया! और अगर उन्होंने दरवाजा बंद भी रखा होता, तो भी सरकार को यह पता चल जाता कयिह सच नहीं था कहोजा हम पर अत्याचार कर रहा था, और एक बड़ा वविद खड़ा हो जाता। होजा यह दावा करता कदिरवाजा इसलएि बंद रखा जा रहा था क्योकविह हर शुक्रवार को आता था, और वह मठ को नुकसान पहुँचाता। और उससे भी पहले, एक [अमीर आदमी] ने [सनिई परवत] को देखा और सेंट कैथरीन के शखिर पर अपना एक ग्रीष्मकालीन घर बनाना चाहता था। वह कसी बीमारी से ग्रस्त हो गया और मर गया। और हाल ही में, कसी और ने भी वहाँ कुछ बनाना चाहा — और वह भी मर गया। इसलएि, केवल अपनी मानवीय कोशिशों पर भरोसा न करना बेहतर है, बल्कि प्रार्थना करना और ईश्वर को कार्य करने देना चाहएि।

व्यवहार और तरक

— गेरोन्डा, जब हम कसी को बुरा व्यवहार करते हुए देखते हैं, तो क्या हमें उन्हें कुछ कहना चाहएि?

— यह इस बात पर नरिभर करता है कवि कसि तरह के व्यक्ती हैं। आज के युग में, बहुत अधकि वविक और दैवीय ज्ञान की आवश्यकता है। आपके प्रश्न का उत्तर देना इतना सरल नहीं है। मैंने देखा है कहिर एक मामले में लगभग पाँच सौ 'उप-मामले' होते हैं। कुछ लोग सुधारने में सक्षम होते हैं, जबकि अन्य सुधार नहीं करते हैं और हमारी बातों पर नकारात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं। जो लोग स्वार्थी होते हैं, वे वशिष रूप से तब बुरा प्रतिक्रिया देते हैं जब उनका अहंकार आहत होता है। भले ही वे अक्सर यह महसूस कर लें कवि गलत हैं, ऐसे लोग अपनी स्वार्थपरता के आगे नहीं झुकते। और जब हमारे इरादे पूरी तरह से नरिदोष नहीं होते—दूसरे शब्दों में, जब दूसरे व्यक्ती की चिता के साथ-साथ हमारे भीतर अहंकार भी होता है, जब हमारा प्यार शुद्ध नहीं होता—तो वे बहुत जोरदार तरीके से वरिध करते हैं।

यदहिम कसी को प्रेम से, पीड़ा के साथ फटकारते हैं, तो चाहे वे हमारे प्रेम को समझें या न समझें, उनके हृदय में परिवर्तन होता है, क्योकहिम शुद्ध प्रेम से प्रेरति होते हैं। लेकिन बनिा प्रेम के, पक्षपात से की गई फटकार, फटकारे जाने वाले व्यक्ती को एक जानवर में बदल देती है, क्योकहिमारी द्वेषपूर्ण भावना, उनकी स्वार्थपरता को चोट पहुँचाकर चगिरयिँ उड़ाती है, ठीक वैसे ही जैसे लाइट की धार चकमक पत्थर से चगिरयिँ निकालती है। यदहिम प्रेम के कारण अपने भाई के साथ धैर्य रखते हैं, तो वह इसे समझता है। और वह हमारी द्वेषभावना को भी समझ जाता है, भले ही वह आंतरिक हो और कसी भी तरह से बाहरी रूप से व्यक्ती न हो, क्योकहिमारी द्वेषभावना उसे चिता देती है। इसी तरह शैतान, भले ही वह प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में प्रकट हो, चिता लाता है, जबकि एक सच्चा स्वर्गदूत कोमल, अकथनीय आनंद लाता है।

— तो, गेरोन्डा, जब हम कुछ कहते हैं और कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया होती है, तो क्या इसका मतलब यह है कि हमारे कार्यों का आरंभिक बिंदु स्वार्थ है?

— अक्सर कई गलतफहमयिँ होती हैं। एक व्यक्ती [मामले को] एक तरह से समझता है, दूसरा अलग तरह से। लेकिन हमें हमेशा अपने आप की जाँच करनी चाहएि: 'मैं यह क्योँ कहना चाहता हूँ? मेरा उद्देश्य क्या है? क्या मैं अपने पड़ोसी के लिए दर्द महसूस कर रहा हूँ, या क्या मैं यह खुद को अच्छी रोशनी में दिखाने, दिखावा करने के लिए कहना चाहता हूँ?' यदकि कोई व्यक्ती खुद को शुद्ध कर चुका है, तो भले ही वह गुस्सा हो जाए, चलिाए, या कसी को डांटे, उसके इरादे शुद्ध होंगे। और फरि सब कुछ ठीक हो जाता है, क्योकविह वविक से काम लेता है। तरक पवतिरता है; यह

दविय ज्ञान, आध्यात्मिक स्पष्टता है; और फरि, स्वार्थ उसके साथ, भीतर, कैसे सह-अस्तित्व में रह सकता है? और जब किसी के इरादे शुद्ध होते हैं, तो उसका दिल शांत रहता है। इस तरह, आप अपने हर काम को समझ सकते हैं—चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

आप अक्सर यह महसूस नहीं कर पाते कि आप किसी दूसरे व्यक्ति से हुक्म चलाने वाले लहजे में बात कर रहे हैं: 'यह काम ऐसे और ऐसे तरीके से किया जाना चाहिए।' स्वार्थ सामने आता है, और आप अपने पड़ोसी को अपने खिलाफ कर लेते हैं। यदि इरादे शुद्ध हों और वनिम्रता हो, तो वह बात दूसरे व्यक्ति की मदद करती है। अन्यथा, स्वार्थ सामने आता है और इसका विपरीत परिणाम होता है। यदि आप अपने कार्यों से अपना 'स्व', यानी अपने स्वार्थ को हटा दें, तो आपके कार्यों के पीछे की मंशा हर तरह से शुद्ध होगी। अविवेकी व्यवहार अक्सर पागलों के व्यवहार से भी अधिक नुकसान पहुँचाता है, जो वक्षिप्त होते हैं और [अपने और दूसरों के] सरि तोड़ देते हैं। क्योंकि विचारहीन लोग अपने तीखे शब्दों से संवेदनशील आत्माओं को घायल कर देते हैं और अक्सर उन्हें नरिशा की ओर धकेल देते हैं, जिससे जानलेवा घाव लगते हैं।

और कुछ लोग सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करते हैं। लेकिन आप थम्बल में उतनी मात्रा नहीं डाल सकते जतिनी बैरल में डाल सकते हैं, और न ही आप बैल पर उतना माल लाद सकते हैं जतिना घोड़े पर लाद सकते हैं। एक बैल हल जोतने के लिए होता है; उस पर काठी डालना या उसे बोझ लादना सही नहीं है। इसी तरह, एक घोड़े को हल से जोड़ना उचित नहीं है, क्योंकि वह भार ढोने के लिए बना है। एक का काम एक तरह का होता है, दूसरे का दूसरी तरह का। किसी को पूरी दुनिया को अपने ही मानदंडों के अनुसार ढालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हर किसी का काम करने का अपना तरीका होता है। और अगर कोई नुकसान न हो, तो कुछ मामलों पर आँख मूंद ली जा सकती है। अगर सभी लोग इसी जीवन में अपना सही स्थान प्राप्त कर सकें, तो सारी अव्यवस्था समाप्त हो जाएगी, और पृथ्वी पर भी स्वर्ग का राज होगा। इसलिये, हम दूसरों से अत्यधिक मांग न करें।

आध्यात्मिक ईमानदारी का लक्षण प्रेम है

आजकल दुनिया की हालत खराब है, क्योंकि हर कोई 'महान' सच्चाइयाँ बोलता है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाती। मीठे शब्दों और महान सच्चाइयों का मूल्य केवल तभी होता है जब वे सत्यवादी होठों से निकलते हों। वे केवल सद्भावना और शुद्ध मन वाले लोगों में ही जड़ें जमाते हैं।

— गेरोन्डा, क्या सांसारिक और आध्यात्मिक ईमानदारी जैसी कोई चीज़ होती है?

— हाँ, बिल्कुल। सांसारिक ईमानदारी में वविक की कमी होती है।

— क्या यह तब होता है जब कोई व्यक्ति उचित और अनुचित दोनों तरह से बोलता है?

— सरिफ इतना ही नहीं। सच तो सच है, लेकिन अगर आप बनिा वविक के सच बोलते हैं, तो वह सच नहीं रहता। उदाहरण के लिए, यह सच है कि कोई व्यक्ति ठीक से दमिगी रूप से सही नहीं है। लेकिन अगर आप इस सच को बोलने की कोशिश करते हैं, तो इसका कोई फायदा नहीं होता। कोई और कह सकता है: 'ईमानदार होने के लिए, मैं चौक पर जाऊँगा और वहाँ सबके सामने पाप करूँगा।' यह ईमानदारी नहीं है। जो व्यक्ति अत्यधिक सूक्ष्मदर्शी होता है, उसमें उदार प्रेम, आत्म-बलदान और वनिम्रता होती है। ऐसा व्यक्ति एक कड़वी सच्चाई को भी बड़ी सहजता से कहता है, और उसकी दयालुता उसे मीठा बना देती है। परिणामस्वरूप, मीठे शब्दों से यह अधिक लाभ पहुँचाता है, ठीक वैसे ही जैसे कड़वी दवाएँ मीठे शरबत के साथ लेने पर अधिक लाभदायक होती हैं।

बना वविक के इस्तेमाल किया गया सत्य, गलत कार्यों को जन्म दे सकता है। कुछ लोग सत्य के नाम पर कार्य करते हुए गलत कार्य करते हैं। जो भी बना वविक के ईमानदारी रखता है, वह दोहरा बुराई कर सकता है: पहले अपने लिए, और फिर दूसरों के लिए। क्योंकि ऐसी ईमानदारी में कोई करुणा नहीं होती। जो कोई भी वास्तव में ईमानदार होना चाहता है, उसे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से अपने प्रति ईमानदार होकर शुरुआत करनी चाहिए, क्योंकि आध्यात्मिक ईमानदारी वहीं से शुरू होती है। यदि कोई अपने साथ कपटी है, तो वह केवल स्वयं को ही धोखा देता है और केवल स्वयं का ही मजाक उड़ाता है। लेकिन दूसरों के प्रति कपटी व्यवहार करके, वह एक घातक पाप करता है, क्योंकि वह दूसरों का मजाक उड़ाता है।

— गेरोन्डा, क्या केवल सादगी के कारण ही ऐसा हो पाना संभव है?

— आप किस सादगी की बात कर रहे हैं! आपने ऐसे व्यक्ति में सादगी कभी देखी है! अगर वह बच्चा है, तो उसमें सादगी होगी। अगर वह संत है, तो उसमें सादगी होगी। लेकिन अगर कोई वयस्क जो मानसिक रूप से अक्षम नहीं है, ऐसा व्यवहार करता है, तो वह शैतान है!

— और उसे कैसा लगता है?

— शुद्ध नरक। एक प्रलोभन के बाद दूसरा आता है। अंतहीन प्रलोभन।

— हालाँकि, गेरोन्डा, मुझे बताइए, क्या किसी को स्पष्टवादिता से व्यवहार नहीं करना चाहिए?

— स्पष्टवादिता, जिस तरह से कई लोग इसे समझते और इस्तेमाल करते हैं, उसमें एक कानूनीवादी भावना होती है। वे कहते हैं: 'मैं एक स्पष्टवादी व्यक्ति हूँ, मैं "छतों से" उपदेश देता हूँ'⁶² — और वे दूसरों का मजाक उड़ाते हैं। लेकिन अंत में, वे खुद ही मजाक बन जाते हैं।

'वधिका अक्षर मार डालता है'⁶³

एक बार मैंने एक आदमी से पूछा: 'तुम कौन हो? मसीह के सपिाही या दुष्ट के सपिाही? क्या तुम जानते हो कि दुष्ट के भी सपिाही होते हैं?' एक ईसाई को कट्टर नहीं होना चाहिए; उसमें सभी लोगों के लिए प्रेम होना चाहिए। जो कोई भी बना सोचे-समझे शब्द उछालता है, भले ही वे सही हों, वह बुराई करता है। मैं एक लेखक को जानता था। वह एक बहुत धार्मिक व्यक्ति था, फिर भी वह सांसारिक लोगों से इतनी कठोरता से बात करता था कि उनके आत्मा के मर्म तक चोट पहुँचा देता था और उन्हें भीतर तक हिला देता था। एक बार उसने मुझसे कहा: 'एक विशेष सभा में, मैंने एक विशेष महिला से ऐसा-वैसा कहा।' हालाँकि, उसने यह इस तरह कहा कि उसने उसे कुचल दिया। उसने सभी के सामने उसका अपमान किया। मैंने उससे कहा, 'सुनो, तुम लोगों पर हीरे जड़े सोने के मुकुट फेंक रहे हो; फिर भी, उन्हें इस तरह फेंककर, तुम उनके सरि फोड़ रहे हो—सरिफ कमजोरों के ही नहीं, बल्कि मिजबूतों के भी।' आइए हम लोगों पर 'ईसाई तरीके से' [उद्धरण चहिनो में] पत्थर न फेंकें। जो कोई भी किसी पापी की नदिा दूसरों के सामने करता है या किसी विशेष व्यक्ति के बारे में पक्षपात से बात करता है, वह परमेश्वर की आत्मा से नहीं, बल्कि किसी अन्य आत्मा से प्रेरित होता है। कलीसिया प्रेम के द्वारा काम करती है, न कि वैसा जैसा कि विधिविादी करते हैं। कलीसिया सभी बातों को धीरज के साथ

⁶² लूका 12:3 देखें।

⁶³ तुलना करें 2 क्रिन्थियों 3:6।

देखती है और सभी की मदद करने का प्रयास करती है, चाहे उन्होंने कुछ भी किया हो, चाहे वे कतिने भी बड़े पापी क्यों न हों।

मैं देखता हूँ कि कुछ लोगों की एक अजीब तरह की तरक्कशक्ति होती है। उनकी धार्मिकता एक अच्छी बात है, अच्छाई की ओर उनका झुकाव भी एक अच्छी बात है, लेकिन आध्यात्मिक वविक और उदार सोच भी आवश्यक हैं, ताकि धार्मिकता के साथ संकीर्णता न हो, ताकि मन इतना कठोर और जदीदी न हो जाए कि उसमें से एक खंभा भी तराशा जा सके। पूरी नींव एक आध्यात्मिक अवस्था को धारण करने में नहिती है, ताकि एक व्यक्ति में आध्यात्मिक वविक हो। अन्यथा, वे 'कानून के अक्षर' का पालन करते हैं, और 'कानून का अक्षर मारता है'। जसि व्यक्ति में नम्रता होती है, वह कभी खुद को शक्तिषक नहीं बनाता; वह दूसरों की सुनता है, और जब उससे अपनी राय पूछी जाती है, तो वह नम्रता से बोलता है। वह कभी 'मैं' नहीं कहता, बल्कि 'यह वचिर मेरे मन में आया' और 'पतिजी ने कहा है' कहता है। दूसरे शब्दों में, वह एक शक्ति की तरह बोलता है। जो कोई भी यह मानता है कि वह दूसरों को सुधारने में सक्षम है, वह आत्म-महत्व से भरा होता है।

— गेरान्डा, जब कोई व्यक्ति अच्छे इरादों से कुछ करने निकलता है, लेकिन [फरि] चरमपंथ की ओर मुड़ जाता है, तो क्या इसका मतलब यह है कि उनमें सही नरिणय की कमी है?

— उस कार्य में स्वार्थपरता होती है। और ऐसा व्यक्ति स्वयं को न जानते हुए, इसे महसूस नहीं करता, और इसीलिए वह चरमपंथ पर दौड़ पड़ता है। अक्सर, कुछ लोग शरद्धा से शुरुआत करते हैं, और देखो कि वे कहाँ पहुँचते हैं! उदाहरण के लिए, प्रतमि पूजकों और प्रतमि भंजकों को लें। दोनों ही चरमपंथी हैं। कुछ लोग तो मसीह की प्रतमि को खुरचकर हटा देने तक पहुँच गए और 'सुधारने' के लिए, इस धूल को पवित्र प्याले में डाल दिया! दूसरों ने आइकन जला दिए और उन्हें पैरों तले रौंद दिया... इसीलिए चर्च को आइकन को ऊँचाई पर रखने के लिए मजबूर होना पड़ा, और जब यह वविद शांत हो गया, तो उसने उन्हें नीचे उतार लिया ताकि हम उनकी पूजा कर सकें और उन पर चतिरति लोगों का सम्मान कर सकें।

जो कुछ भी कोई व्यक्ति करता है, उसे वह ईश्वर की खातिर करना चाहिए

— गेराना, मैं आमतौर पर दूसरों को नाराज करने या उनकी नजरों में अपनी इज्जत खोने के डर से प्रेरित रहता हूँ; मैं ईश्वर को नाराज न करने के बारे में नहीं सोचता। ईश्वर का भय कैसे बढ़ता है?

— सतर्कता आवश्यक है। जो कुछ भी व्यक्ति करे, उसे ईश्वर की प्रसन्नता के लिए करना चाहिए। हम ईश्वर को भूल जाते हैं, और फरि यह वचिर मन में आता है कि हम कुछ महत्वपूर्ण कर रहे हैं। लोगों को खुश करने की इच्छा भी जागृत होती है, और हम दूसरों की नजरों में अपनी इज्जत खोने से बचने की कोशिश करते हैं। यदि कोई यह सोचकर कार्य करता है कि ईश्वर उसे देख रहा है और उसकी देखभाल कर रहा है, तो वह जो कुछ भी करता है वह सुरक्षित होता है। अन्यथा, दूसरों की नजरों में अच्छा दिखने के लिए कुछ करके, वह सब कुछ खो देता है; वह सब कुछ व्यर्थ में बर्बाद कर देता है। एक व्यक्ति को हर कर्म के बारे में खुद से पूछना चाहिए: 'ठीक है, मुझे जो कर रहा हूँ वह मुझे पसंद हो सकता है, लेकिन क्या ईश्वर को यह पसंद है?' और उन्हें यह वचिर करना चाहिए कि यह ईश्वर को प्रसन्न करता है या नहीं। यदि वे ऐसा करना भूल जाते हैं, तो वे बाद में ईश्वर को भी भूल जाएँगे। इसीलिए लोग कहा करते थे: 'ईश्वर के लिए' या 'आह, वह एक अधर्मी व्यक्ति है, वह ईश्वर से नहीं डरता।' या वे कहते थे: 'यदि ईश्वर चाहें,' 'यदि ईश्वर दें।' बुजुर्ग हर जगह ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करते थे; वे हमेशा ईश्वर को अपने सामने रखते थे और सचेत रहते थे। उन्होंने भजन में वर्णित उस अवस्था का अनुभव किया: 'मैंने प्रभु को हमेशा अपने सामने स्थापित किया है... ताकि मैं

उगमगाऊँ नहीं।⁶⁴ यही कारण है कि उन्होंने [अपना आपा खोया नहीं] बल्कि दृढ़ बने रहे। लेकिन अब आप देखते हैं कि कैसे यूरोपीय 'टपिकिऑन' धीरे-धीरे प्रचलन में आ रहा है, और कई लोग केवल सांसारिक शिष्टाचार के लिए अच्छा व्यवहार करते हैं। एक व्यक्ति जो कुछ भी करता है, उसे वह केवल मसीह के लिए करना चाहिए, यह महसूस करते हुए कि मसीह उन्हें देख रहे हैं और उन पर नज़र रख रहे हैं। इसमें कोई मानवीय तत्व नहीं होना चाहिए। हर मानव क्रिया के केंद्र में मसीह का होना चाहिए। यदि हम लोगों को खुश करने के उद्देश्य से कुछ करते हैं, तो उससे हमें कोई लाभ नहीं होता। बड़ी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। हमें लगातार ईमानदारी से जांच करनी चाहिए कि कौन से उद्देश्य हमें कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। जैसे ही मुझे एहसास होता है कि मुझे लोगों को खुश करने की इच्छा से प्रेरित किया जा रहा है, मुझे तुरंत इसे रोक देना चाहिए, क्योंकि अगर मैं कुछ अच्छा करना चाहता हूँ और लोगों को खुश करने की इच्छा बीच में आ जाती है—तो, मैं छेदों वाली बाल्टी से कुएँ का पानी खींच रहा हूँ।

अधिकांश प्रलोभन अक्सर हमारे 'स्व' द्वारा बनाए जाते हैं, जब हम दूसरों के साथ अपनी बातचीत में अपने भीतर आत्म-महत्व की भावना पालते हैं—अर्थात्, जब हम स्वार्थ से प्रेरित होते हैं, जब हम खुद को ऊँचा उठाना चाहते हैं और अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि की तलाश करते हैं। कोई सांसारिक आरोहण से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अवरोहण से स्वर्ग पहुँचता है। जो नम्रता से चलता है, वह हमेशा आत्मवश्वास के साथ चलता है और कभी नहीं गरिमा। इसलिए, आइए हम, जहाँ तक संभव हो, अपने भीतर से सांसारिक आत्म-बढ़प्पन और सांसारिक सफलता को जड़ से उखाड़ फेंकें, जो आध्यात्मिक विफलता है। आइए हम छपि और खुले स्वार्थ दोनों से और दूसरों को खुश करने की इच्छा से घृणा करें, ताकि हम मसीह से सच्चे मन से प्रेम कर सकें। हमारे युग की विशेषता मौन नहीं, बल्कि सिनसनीखेजता और खोखला कोलाहल है। लेकिन आध्यात्मिक जीवन वनिम्र होता है। यह अच्छा होगा यदि हम वह करें जो हमारी शक्ति में है, जैसा कि हमें करना चाहिए: वनिम्रता से, अपनी क्षमताओं की सीमाओं से परे के लक्ष्यों का पीछा किए बिना; क्योंकि अन्यथा, यह हमारे आत्मा और शरीर के लिए, और अक्सर चर्च के लिए भी हानिकारक होगा।

अपने पड़ोसी की सच्ची सेवा में मसीह की सेवा भी नहिती है। हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए: अपने पड़ोसी की सेवा को शुद्ध कैसे बनाया जाए, यानी, इससे लोगों को खुश करने की इच्छा को कैसे हटाया जाए, ताकि यह मानवीय भेंट (अर्थात् अपने पड़ोसी की सेवा) मसीह की ओर निर्देशित हो सके। यदि कोई व्यक्ति चर्च की समस्याओं को कथित तौर पर रूढ़िवादी तरीके से 'सुलझाने' का प्रयास करता है, जबकि उसका वास्तविक उद्देश्य खुद को थोड़ा बेहतर 'सुधारना' है—अर्थात्, वह अपने नज़ी लाभ को ध्यान में रखता है—तो ऐसे व्यक्ति पर ईश्वर कैसे आशीर्वाद देंगे? हमें, जहाँ तक संभव हो, अपना जीवन इस तरह जीना चाहिए कि हम ईश्वर के और करीब आ सकें। हमें हमेशा अपने हृदय की परीक्षा करनी चाहिए और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर की इच्छा को पूरा करके, एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ एकता में रहता है, और फिर, परमेश्वर से पूछे बिना ही, वह लगातार झरने से पानी खींचते हुए प्राप्त करता है।

हमें आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता है

पवित्र आत्मा एक ही स्थान पर एक तरह का और दूसरे स्थान पर दूसरे तरह का नहीं है; वह एक है और उन पास कई उपहार हैं। वह भ्रम का आत्मा नहीं, बल्कि प्रेम और शांति का आत्मा है। जब आध्यात्मिक लोग एक-दूसरे पर हमला करते हैं, तो इसका मतलब है कि वे कई अन्य आत्माओं के प्रभाव में हैं जिनका पवित्र आत्मा से कोई लेना-देना

⁶⁴ भजन संहिता 15:8.

नहीं है। अतीत में, पवतिर आत्मा ने ज्ञान प्रदान किया और मार्गदर्शन किया। कतिनी बड़ी बात है! आज, उन्हें अवतरति होने का कोई आधार नहीं मिला। पुराने नियम का बाबेल का मीनार एक मासूम खेल था। उदाहरण के लिए, आप मट्ठी माँगते, और वे आपको पुआल ला देते। अब हमारे पास वासनाओं से भरा बाबेल का एक मीनार है। आप मट्ठी माँगते हैं, और वे आपके सर पर ईंट फेंकते हैं। लेकिन यदि कोई व्यक्ति हर कर्म से अपना 'स्व' हटा देता है और अपनी इच्छा को अलग रख देता है, तो वह सही ढंग से कार्य कर रहा है। ऐसा व्यक्ति अनिवार्य रूप से दिव्य ज्ञान प्राप्त करेगा, और उसमें अपने पड़ोसी के साथ पारस्परिक समझ की भावना भी होगी। क्योंकि जब कोई व्यक्ति अपने विचारों को स्वयं से हटा देता है, तो दिव्य विचार उसके पास आते हैं।

दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए, किसी को आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता प्राप्त करनी चाहिए। यह वह मौलिक बात है जो लोगों को कुछ भी समझने के लिए करनी चाहिए, खासकर हमारे युग में। परिस्थितियाँ बस हमें ऐसा करने के लिए मजबूर करती हैं। इस पर विचार करें: उस समय एशिया माइनर में, उन कठिन वर्षों के दौरान, परिस्थितियों ने यूनानियों को अपने दमिग का इस्तेमाल करने के लिए मजबूर कर दिया। दो यूनानी, अर्मेनियाई और तुर्कों से घेरि होने पर भी एक-दूसरे को समझ सकते थे, जबकि बाद वाले कुछ भी नहीं समझते थे। और एक और बात है: आज, हमारे जीवन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, आध्यात्मिक लोगों को अपने बीच आपसी समझ बनानी चाहिए। कठिन वर्ष आने वाले हैं। हमें अपने दमिग का इस्तेमाल करना होगा। यदि कोई व्यक्ति अपने दमिग का इस्तेमाल नहीं करता है और उसमें दिव्य ज्ञान की कमी है, तो हर एक मामले में उसे यह मार्गदर्शन मांगनी पड़ेगी कि कैसे काम किया जाए। यह उम्मीद न करें कि आपको सब कुछ बता दिया जाएगा। कुछ बातें ऐसी हैं जिनमें आपको खुद ही समझना होगा, किसी के बताने का इंतजार किए बिना। मुझे याद है: एक बार कोनस्टा में, जब मैं सेना में शामिल होने वाला था, हमें पता चला कि विद्रोही आ रहे हैं।⁶⁵ हम चार थे: मैं और तीन मुसलमान। हम शहर के बाहरी इलाके में एक तुर्की घर में घुस गए। एक पाँच साल के तुर्की लड़के को समझ आ गया कि क्या हो रहा है और वह चहचहाने लगा: 'आओ, यहाँ आओ, इस तरफ—मेरी रसोई से होकर भागो!' हम रसोई से होते हुए गए, घर के पीछे से बाहर निकला और नीचे कुछ गोदामों में छपिने में कामयाब रहा। जब विद्रोही आए, तो वह छोटा लड़का घर से बाहर निकला, उसने उन्हें बताया कि अंदर कोई नहीं है, और भाग गया। एक पाँच साल का बच्चा, बस एक नन्हा-सा जीव, जो ठीक से बोल भी नहीं पाता था - और देखो उसने कतिनी समझदारी से काम लिया। बस सोचिए, उसने मौके पर ही सब कुछ समझ लिया! देखिए: वह सब कुछ समझ गया, उसने प्रेम किया, जबकि कोई और, एक वयस्क, जल्दबाजी में बुरा कर सकता था। तो आइए हम, बपतस्मा पाए हुए, पवतिर अभिषिक्त से अभिषिक्त, शक्ति और विद्वान, शिशुओं की तरह अपरपिक्व की स्थिति में न रहें! पंखों वाले बनो! क्या आप जानते हैं कि पंखों वाले कौन हैं? छह-पंखों वाले सेराफिम! उनके छह पंख हैं और वे उन्हें फड़फड़ाते हुए गाते हैं: 'पवतिर, पवतिर, पवतिर!' तो उड़ो, फरि; छह पंखों वाले बनो!

दिव्य ज्ञान ही सब कुछ है

मैं अक्सर कुछ लोगों से कहता हूँ: 'जैसा ईश्वर तुम्हें प्रकाशित करे, वैसा ही करो।' जब मैं कहता हूँ, 'जैसा ईश्वर तुम्हें प्रकाशित करे', तो मेरा मतलब होता है कि व्यक्ति चीजों को मानवीय तरीके के बजाय दिव्य प्रबोधन से देखे। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि जो कुछ भी उसे पसंद आता है, वह ईश्वर की ओर से प्रबोधन है।

— गेरोन्डा, बताइए, दिव्य प्रबोधन कैसे होता है?

⁶⁵ अर्थात्, साम्यवादी विद्रोही। - अनुवादक की टिप्पणी।

—यदि आप तारों से जंग हटा दें, तो एक घसि-पटि व्यक्ति एक अच्छा चालक बन जाता है। फिर वे अपने माध्यम से ईश्वर की कृपा का संचालन करते हैं और द्रव्य, कृपा-पूर्ण प्रकाश प्राप्त करते हैं। अन्यथा, शॉर्ट सर्किट हो जाते हैं और कृपा कार्य नहीं करती है। पूरा मर्म यह है: एक व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि ईश्वर की कृपा उससे दूर न हो, और तब उसे द्रव्य ज्ञान की प्राप्ति होगी। क्योंकि यदि द्रव्य ज्ञान न हो, तो सारा प्रयास व्यर्थ है।

शषियों पर कृपा के अवतरति होने से पहले, मसीह को उनके साथ कतिना संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि वे दुर्बल थे! पेंटेकोस्ट से पहले, शषियों को दुनिया की मदद करने के लिए ईश्वर से शक्ति दी गई थी। हालाँकि, उनके पास वह द्रव्य ज्ञान नहीं था जो उन्हें पेंटेकोस्ट पर प्राप्त हुआ। जब मसीह उन्हें यह बता रहे थे कि वह यरूशलेम जाएँगे, मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और इसी तरह की बातें, तो उन्होंने सोचा कि जब वह यरूशलेम जाएँगे, तो उन्हें राजा बना दिया जाएगा। वे मानवीय दृष्टिकोण से सोच रहे थे। इसीलिए वे इस बात में उलझे हुए थे कि मसीह के दाहिने और बाईं ओर कौन बैठेगा। जेबेदी के बेटों की माँ उनके पास यह पूछने आई कि उनके राज्य में, वह उनके एक बेटे को अपने दाहिने और दूसरे को अपने बाएँ हाथ की ओर बठाएँ! हालाँकि, पेंटेकोस्ट के दिन से, जब मसीह ने उन्हें परम-आत्मा—पवित्र आत्मा—भेजा, तो प्रेरितों के पास द्रव्य अनुग्रह लगातार बना रहा। पहले, उन्हें द्रव्य ज्ञान केवल समय-समय पर ही प्राप्त होता था, जैसे कि उनकी बैटरी चार्ज हो रही हो और फिर से उसकी शक्ति खत्म हो रही हो। उन्हें इसे फिर से चार्ज करने के लिए इसे सॉकेट में लगाना पड़ता था। जब यह फिर से खत्म हो जाती थी—तो फिर से सॉकेट में! जब उन्होंने उन्हें सांत्वनादाता भेजा, तो 'सॉकेट' की अब और आवश्यकता नहीं थी। मैं यह नहीं कह रहा कि हम अब उनसे बेहतर स्थिति में हैं। लेकिन हम अनुग्रह के युग में रहते हैं और इसलिए हमारे पास कोई बहाना नहीं है। हम बपतिस्मा ले चुके हैं; हमारे पास सांत्वनादाता है; हमारे पास सब कुछ है। उस समय, मसीह को अभी तक सूली पर नहीं चढ़ाया गया था, और शैतान, एक तरह से, सत्ता में था और आसानी से लोगों को बहका देता था। क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद, मसीह ने सभी लोगों को द्रव्य ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया। मसीह ने स्वयं को बलिदान कर दिया और हमें मुक्त कर दिया। हमें उनके नाम पर बपतिस्मा दिया गया। उन्होंने हमें 'सॉकेट' से स्थायी रूप से जोड़ दिया है। अब हम स्वयं द्रव्य अनुग्रह के प्रवाह में बाधा बन जाते हैं, क्योंकि हम अपनी तारों को जंग लगने देते हैं।

— गेरोन्डा, किसी व्यक्ति के भीतर पवित्र आत्मा के वास करने के लिए कनि पूर्व शर्तों की आवश्यकता है?

— तपस्या, वनिमृता, प्रेम, उदारता और आत्म-बलिदान की भावना आवश्यक हैं। पवित्र आत्मा की कृपा के बिना, एक व्यक्ति कुछ भी नहीं है। पवित्र आत्मा प्रकाश है, द्रव्य प्रकाश। यही पूरी नींव है। यदि कोई व्यक्ति देख नहीं सकता, तो वह किसी खड़की से टकरा सकता है, किसी चट्टान से गरि सकता है, किसी गड्ढे या गंदगी में ठोकर खा सकता है, या तो किसी खाई में भी जा सकता है। वह नहीं देख सकता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि वह प्रकाश से वंचित है। हालाँकि, यदि वह थोड़ा भी देख सकता है, तो वह सावधानी बरतता है। यदि वह और भी स्पष्ट रूप से देख सकता है, तो वह इन सभी खतरों से बचता है और अपने रास्ते पर सुरक्षित चलता है। प्रकाश के आने के लिए, व्यक्ति को अंधकार से बाहर निकलने की इच्छा करनी चाहिए। यदि लोग देख सकते हैं, भले ही धुंधली रोशनी में ही क्यों न हो, तो वे फिर गरिगे नहीं, और ईश्वर दुखी नहीं होंगे। यदि एक सांसारिक पिता अपने बच्चों के कीचड़ में, काँटों में या चट्टान से गरिने पर दुखी होता है, तो ईश्वर कतिनी अधिक दुखी होंगे!

दुनिया में सारी बुराइयाँ दैवीय प्रबोधन की अनुपस्थिति से उत्पन्न होती हैं। जब दैवीय प्रबोधन नहीं होता, तो व्यक्ति अंधकार में होता है। फिर एक कहता है, 'चलो इस रास्ते चलते हैं,' दूसरा कहता है, 'नहीं, मैं बेहतर जानता हूँ: चलो इस रास्ते चलते हैं,' तीसरा कहता है, 'उस तरफ,' और चौथा कहता है, 'इस तरफ।' हर कोई सोचता है कि वह सही है और वहीं जा रहा है जहाँ उसे जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हर कोई अच्छा चाहता है, लेकिन वे भ्रम की स्थिति में हैं और एक आम सहमतितक नहीं पहुँच सकते। अगर कोई भ्रम न होता, तो वे झगड़ते नहीं: वे स्पष्ट रूप से देख लेते कि कौन सा

रास्ता बेहतर है और एक साथ उसकी ओर बढ़ते। मेरा मतलब यह है कहिर कोई भले इरादों से काम कर सकता है, लेकिन इस भ्रम के कारण, समाज और चर्च दोनों में कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं। कम से कम चर्च में, बहुमत के कोई बुरे इरादे नहीं होते हैं, लेकिन उनमें दविप्रबोधन की कमी होती है। वे भलाई के लिए प्रयास करते हैं, लेकिन अंत में उन्हें क्या मिलता है?... इसलिए, आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे हमें कम से कम थोड़ी दविप्रज्ज्ञा प्रदान करें, अन्यथा हम अंधों की तरह ठोकर खाते रहेंगे। दविप्र लटिर्जी में, जब पुरोहिता 'तेरा ही तेरे लिए' की घोषणा करते हैं, तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे संसार को ज्ञान प्रदान करें, ताकि वह देख सके। ईश्वर इसे थोड़ा सा भी प्रबुद्ध कर दे, ताकि अंधकार दूर हो जाए, ताकि लोग आध्यात्मिक रूप से अपंग न हो जाएँ! और, दूसरा भजन पढ़ते हुए, जैसा कापाडोसिया के संत आर्सेनियस पढ़ा करते थे, 'कि ईश्वर उन लोगों को प्रबुद्ध करे जो सभाओं में जाते हैं', मैं कहता हूँ: 'ईश्वर सभी शासकों को प्रबुद्ध करे; फिर वह पुरोहितों और चर्च के सभी पतिओं को प्रबुद्ध करे, ताकि वे संसार की सहायता करने के लिए पवित्र आत्मा प्राप्त करें।' यदि ईश्वर किसी एक व्यक्ति को थोड़ा सा भी प्रबुद्ध कर दे, और दूसरों को ग्रहणशील बना दे, तो क्या आप जानते हैं कि इससे कतिना भला हो सकता है? एक शासक को बस एक शब्द कहना होता है और सब कुछ बदल जाता है। लोगों को दविप्रबोधन की आवश्यकता है।

दयालु ईश्वर अपनी दविप्रज्ज्ञा उन लोगों को प्रदान करते हैं जिनकी नीयत अच्छी होती है। एक बार एक न्यायाधीश ने मुझे एक ऐसी घटना के बारे में बताया जिसका उन्होंने स्वयं सामना किया था। एक मठ ने एक भिक्षु को पाँच सौ सोने की लीर के साथ जमीन का एक टुकड़ा खरीदने के लिए भेजा। भिक्षु एक विशेष व्यापारी के पास पहुँचा, जिसने उससे कहा: "इन्हें मेरे पास छोड़ दो; तुम इन्हें अपने साथ क्यों ढो रहे हो?" भिक्षु ने पैसे उसके पास छोड़ दिए और उस आदमी के बारे में अच्छा सोचते हुए मन में कहा: "यह कतिना अच्छा आदमी है, जिसने मेरा बोझ हल्का कर दिया!" जब वह वापस आया, तो न केवल व्यापारी ने उसे पाँच सौ लीरा वापस देने से इनकार कर दिया, बल्कि उसने यह भी दावा किया कि भिक्षु पर उसका आठ मिलियन का करज है! बेचारा भिक्षु यह सोचकर हक्का-बक्का रह गया कि अब वह मठ में कैसे लौटेगा?! उसने पाँच सौ सोने के सिक्के सौंप दिए थे, कुछ भी नहीं खरीदा था, और उस पर आठ मिलियन और चुकाने की माँग की जा रही थी! मामला अदालत में गया। आत्मा से प्रेरित होकर, न्यायाधीश ने कई सवाल पूछे, और यह साबित हुआ कि व्यापारी ने न केवल भिक्षु को कुछ भी उधार नहीं दिया था, बल्कि उससे पैसे भी लिए थे। मैंने इस न्यायाधीश में भविष्यवक्ता दानयिल जैसी ही मानसिकता देखी।⁶⁶

उसमें ईश्वर का भय था, और इसलिए ईश्वर ने उसे ज्ञान प्रदान किया, और उसके कार्य सही थे।

हर चीज़ की नींव दविप्रबोधन है। यदि यह प्राप्त हो जाए, तो एक व्यक्ति अपने आसपास के लोगों को सांत्वना देता है और स्वयं आध्यात्मिक रूप से विकसित होता है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि दीपक और झूमर—[मानव] मन की आविष्कारें—अच्छी चीज़ें हैं, लेकिन ईश्वर की कृपा की दविप्र ज्योति, जो एक व्यक्ति को प्रबुद्ध करती है, उनसे [अतुलनीय रूप से] श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति दविप्रबोधन प्राप्त कर लेता है, वह चीज़ों को बहुत स्पष्ट रूप से देखता है, उसे बिना किसी संदेह के मार्गदर्शन मिलता है, और न केवल वह स्वयं कभी थकता नहीं है, बल्कि वह दूसरों की भी बहुत सफलतापूर्वक मदद करता है।

⁶⁶ देखें दानयिल 13:45–62।

भाग 2। तपस्या और धार्मिकता पर

"जो अपनी आत्मा के उद्धार के लिए गंभीरता और लगन से प्रयत्न करता है, वह प्रयास करता है, फलता-फूलता है, फल देता है, आध्यात्मिक रूप से पोषित होता है और एक स्वर्गदूत की तरह आनंदित होता है।"

अध्याय 1. 'एक पुण्य कर्म'

आत्मा के पवित्रिकरण के लिए संघर्ष

मनोरंजन से भरी इस दुनिया में सतर्क और प्रयासरत आत्माओं को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। ईश्वर, जो दयालु और न्यायप्रिय है, ने हम सभी को उपयुक्त वरदान दिए हैं: उदाहरण के लिए, पुरुषों को साहस और महिलाओं को प्रेम। उन्होंने हमें ये इसलिए दिए हैं ताकि हम द्रव्य अनुग्रह की मदद से, आध्यात्मिक सीढ़ी पर चढ़ने का प्रयास करें और उस सृष्टिकर्ता के और करीब आएँ जो हमारे रचयिता हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि आध्यात्मिक रूप से हमारी मदद कर सकने वाले लोगों के अलावा, हमारे पास स्वयं मसीह, जो हमारी मदद करते हैं, परमेश्वर की अर्ति पवित्र माता, करूब, सेराफिम और सभी संतों का साथ है। तो, हौसला रखो! मसीह बहुत शक्तिशाली है, मसीह सर्वशक्तिमान है; वह हमें अपनी द्रव्य शक्ति प्रदान करेगा ताकि हम दुष्ट के 'सींग तोड़ सकें'। वह नरितर अदृश्य रूप से हमारी देखभाल कर रहा है; यद्विहमारी अच्छी इच्छा हो और हम अपनी क्षमताओं के अनुसार छोटे-छोटे कार्य करें, तो वह हमें मजबूत बनाएगा।

आओ, हम यथासंभव पाप के अवसरों से बचें। आओ, हम अपनी भावनाओं के प्रतिसिंचित रहें, क्योंकि हिर चीज की शुरुआत उन्हीं से होती है। और यदि कभी यह हमारे लिए कठिन हो, तो कम से कम हम जिज्ञासा से बचें, ताकि हमारी आँखें पापपूर्ण दृश्यों को न देखें और राक्षस बाद में हमारे सामने तमाशा न करें। यदि आप एक जलती हुई अंगीठी को हाथ में कस लें, तो वह स्वाभाविक रूप से आपको जला देगी। लेकिन अगर आप इसे अपनी उंगलियों के बीच घुमाएँ — बेशक, बहुत देर तक नहीं — तो यह कोई नुकसान नहीं करेगी। दुष्ट चतुरों के साथ भी ऐसा ही है: जब वे तेजी से झलकते हैं, तो आँखें उन्हें थामती नहीं हैं, बल्कि केवल हल्के से उन पर से गुजरती हैं, और ये चतुर बाद में आत्मा को नहीं जलाते।

जो लोग अपने सांसारिक जीवन में असावधान रहे और बुरी आदतें डाल बैठे, उन्हें अपने धर्म-परिवर्तन के बाद, दुश्मन के हमलों को नम्रतापूर्वक सहना चाहिए, बशर्ते वे बुरी इच्छाओं को मन में न पालें। यदि वे इस प्रकार प्रयास करते हैं, तो वे शुद्ध हो जाएँगे और पवित्र लोगों की अवस्था प्राप्त करेंगे, जिन्होंने गंभीर पाप नहीं किए हैं, बुरी आदतें नहीं अपनाई हैं, फरि भी जो कठोर उत्पीड़न का शिकार नहीं होते। जो लोग अपनी पछिली गलतियों को सबक के रूप में उपयोग करते हैं, वे बहुत उन्नत करेंगे। भू-भाग को जाने बनि खदान से गुजरने वाला व्यक्ति, खुद को टुकड़े-टुकड़े होने से बचाने के लिए बहुत धीरे और सावधानी से आगे बढ़ने के लिए मजबूर होता है। लेकिन अगर कोई उस भू-भाग को जानता

है, तो प्राप्त अनुभव के साथ, वह घायल होने पर भी आत्मवश्वास और तेजी से आगे बढ़ सकता है। जो कोई भी अपने आत्मा के अछूते क्षेत्र को विकसित करने का प्रयास करता है, वह उसमें से जुनून की सभी कांटों को उखाड़ फेंकेगा और उनकी जगह सदगुणों को रोपेगा। हालाँकि, यह एक बहुत ही कठिन कार्य है, जिसके लिए महान इच्छाशक्ति और धैर्य की आवश्यकता होती है।

— गेरोन्डा, क्या आप हमें इस प्रयास के व्यावहारिक पक्ष के बारे में बता सकते हैं?

— हर दिन प्रयास करना चाहिए कि अपने भीतर कुछ ऐसा आध्यात्मिक गुण स्थापित किया जाए जो सांसारिक और पापी चीजों का प्रतिकार करे, और इस प्रकार, धीरे-धीरे पुराने स्वरूप को त्यागकर आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से आगे बढ़े। अपनी स्मृति में पापी चित्रों को पवित्र चित्रों से; सांसारिक गीतों को चर्च के भजनों से; और सांसारिक पत्रिकाओं को आध्यात्मिक पुस्तकों से बदलें। यदि कोई व्यक्ति सांसारिक और पापी सभी चीजों से खुद को अलग नहीं करता है, मसीह, परमेश्वर की माता, संतों, वज्रिणी कलीसिया के साथ उसका संबंध नहीं है, और वह खुद को पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में नहीं सौंपता है — तो वह आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्राप्त नहीं कर पाएगा।

— गेरोना, आध्यात्मिक स्वास्थ्य क्या है?

— आध्यात्मिक स्वास्थ्य का अर्थ है शुद्ध विचार, एक प्रबुद्ध मन और एक शुद्ध हृदय, जो नरितर मसीह और परमेश्वर की परम पवित्र माता को अपने भीतर बसाए रखता है। पूर्ण ध्यान, आत्म-परीक्षण और प्रार्थना आत्मा के स्वास्थ्य को प्राप्त करने में बहुत सहायक हैं। आत्मा के शुद्धिकरण के लिए प्रार्थना आवश्यक है, और एक सुदृढ़ आध्यात्मिक स्थिति बिना रखने के लिए अविक आवश्यक है।

बेशक, जीवन कोई अवकाश स्थल नहीं है: इसमें सुख हैं, लेकिन दुख भी हैं। पुनरुत्थान से पहले क्रूस पर चढ़ाया जाना होता है। परीक्षाओं के प्रहार हमारी आत्मा के उद्धार के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि वे इसे शुद्ध करते हैं। यह ठीक कपड़ों की तरह है: हम उन्हें धोते समय जितना अधिक रगड़ते हैं, वे उतने ही अधिक साफ हो जाते हैं। यही बात एक ऑक्टोपस पर भी लागू होती है: हम उसे जितना अधिक पीटते हैं, वह उतना ही साफ और नरम हो जाता है। और एक मछली तब सुंदर लगती है जब वह समुद्र में जीवित तैरती है, और तब भी जब वह बाजार में पड़ी होती है—अभी भी अपनी सुलियों में और बना खोले हुई। लेकिन वह खाने के लिए तभी उपयुक्त होती है जब उसे साफ कर लिया जाता है—जैसे वह देखने में भद्दी हो जाती है—और फिर पकाया जाता है। एक व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही है: जब वह सभी सांसारिक चीजों को त्याग देता है, तब—जीवन और सांसारिक जीवन्तता के बाहरी प्रतीत होने वाले नुकसान के बावजूद—उसकी परतें—वे सब अनावश्यक चीजों को रगड़कर हटा देती हैं, 'खुद को पका लेती हैं', और तभी वे खाने के योग्य बनती हैं।

जो आध्यात्मिक रूप से समृद्धि लाने में मदद करता है

जनि लोगों को ईश्वर ने (या तो उन्हें धीमा करने के लिए, या शैतान की ईर्ष्या के कारण) उत्तरी हवाओं की ठंड—अर्थात् परीक्षाओं—से पीड़ित होने दिया है, उन्हें बाद में सूर्य की प्रचुर गर्माहट और आध्यात्मिक ताजगी की आवश्यकता होती है, ताकि वे खलि सकें और फल दे सकें। ठीक वैसे ही जैसे वे पेड़, जिनोंने भरोसे से सर्दियों की पघिलती बर्फ की धोखाधड़ी वाली गर्मी में अपनी कलियाँ खोल दीं, और बाद में बर्फली उत्तर की हवा से बेरहमी से पीटे गए, उन्हें बाद में अपनी रस-धार को फिर से बहाने और फूल-फल देने के लिए वसंत की भरपूर धूप और बारिश की आवश्यकता होती है।

— गेरोन्डा, आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए क्या आवश्यक है?

— प्रेम का शर्म, जिसके साथ ईश्वर में आशा और विश्वास जुड़ा हो। प्रेम के शर्म के साथ संयम, आंतरिक शांति और आत्मविश्वास लाता है, और फिर आत्मा आशा और आनंद से भर जाती है। सफलता का ताज पहनने के लिए संघर्ष करने वाले के लिए धैर्य, प्रेम और आध्यात्मिक साहस आवश्यक हैं। साहस एक प्रेमपूर्ण हृदय से प्रवाहित होता है, और यदि कोई मसीह के लिए हृदय से कुछ करता है, तो वह न तो थकाऊ होता है और न ही दर्दनाक, क्योंकि मसीह के लिए पीड़ा सहना एक आध्यात्मिक भोज है। थोड़ी सी प्रेमपूर्ण लगन और आत्म-परीक्षा से, कोई बहुत कम समय में आध्यात्मिक रूप से बढ़ सकता है। तब आत्मा को मसीह, परमेश्वर की परम पवित्र माता, स्वर्गदूतों और संतों से सहायता प्राप्त होगी। पढ़ना, प्रार्थना करना और अपना ध्यान अंदर की ओर लगाना भी बहुत मददगार होता है। और थोड़ी सी खामोशी भी मदद करती है।

हमारे प्रभु मसीह 'नेक लड़ाई' (67) में प्रयास करने वालों को शक्ति प्रदान करते हैं, जो सभी संतों ने शरीर को आत्मा के अधीन करने के लिए लड़ी है। भले ही हमें घाव लगें, हमें अपना आपा नहीं खोना चाहिए, बल्कि ईश्वर से मदद मांगनी चाहिए और साहस के साथ संघर्ष जारी रखना चाहिए। सच्चे चरवाहे हमें सुनेंगे और तुरंत [हमारी सहायता के लिए] दौड़ पड़ेंगे, ठीक वैसे ही जैसे एक चरवाहा एक मेमने की सहायता के लिए दौड़ता है जब वह घाव से या भेड़िया या कुत्ते के काटने से कराहता हुआ उसकी पुकार सुनता है। जनि लोगों ने [पहले] शोक के योग्य जीवन जिया, और [अब] विश्वास में प्रयास करते हैं, उनके प्रतिमिरा अधिक प्रेम है; मैं उन्हें लगातार अपने विचारों में रखता हूँ और उन लोगों की तुलना में उनके लिए अधिक शोक महसूस करता हूँ जो वासनाओं से पीड़ित नहीं हैं। जैसे एक चरवाहा एक घायल या बीमार मेमने के लिए दूसरे मेमनों की तुलना में अधिक दर्द महसूस करता है, और तब तक उसकी विशेष देखभाल करता है जब तक वह ठीक नहीं हो जाता।

और कभी-कभी इसका कारण यह है कि सिही प्रयास करने पर भी हमें कोई प्रगति दिखाई नहीं देती: राक्षस ने, चूँकि हमने उस पर युद्ध घोषित कर दिया है, सैतान से मदद माँगी है। और अगर एक साल पहले हम एक राक्षस से लड़ रहे थे, तो अब हम पचास से लड़ रहे हैं, और एक साल में वे और भी अधिक होंगे, और इसी तरह। ईश्वर हमें यह देखने की अनुमति नहीं देते, कहीं हम घमंडी न हो जाएँ। हम इसे नहीं समझते, लेकिन ईश्वर, हमारी अच्छी प्रवृत्तियों को देखकर, हमारी आत्मा पर कार्य करते हैं।

— गेरोन्डा, अगर कोई प्रयास करता है लेकिन सफल नहीं होता है तो इसका क्या कारण है?

— शायद वे अहंकार से प्रयास कर रहे हैं। लेकिन क्या मैं आपको बताऊँ कि कुछ लोग क्यों असफल होते हैं और सफल नहीं होते? [आध्यात्मिक विकास के लिए] आवश्यक पूर्व शर्तें होने के बावजूद, वे उन्हें तुच्छ बातों पर बर्बाद कर देते हैं, और फिर उनमें आध्यात्मिक संघर्ष के लिए आवश्यक शक्त की कमी हो जाती है। मान लीजिए हम दुश्मन के खिलाफ एक आक्रमण शुरू करते हैं और, आवश्यक सब कुछ इकट्ठा करने के बाद, लड़ाई की तैयारी करते हैं। हालाँकि, दुश्मन, हार के डर से, हमें विभाजित करने और तोड़फोड़ तथा मोर्चे पर कहीं और हमलों के माध्यम से हमारा ध्यान भटकाने की कोशिश करता है। हम अपना ध्यान वहाँ मोड़ देते हैं, और दायें-बायें सैनिक भेज देते हैं। समय बीतता जाता है, गोला-बारूद और राशन कम पड़ने लगता है, और हम सैनिकों को पुरानी वस्त्रियाँ देते हैं। सैनिकों के बीच बड़बड़ाहट शुरू हो जाती है। परिणामस्वरूप, हमारी सारी शक्ति क्षीण हो जाती है, और हम दुश्मन से लड़ने में असमर्थ हो जाते हैं। और आध्यात्मिक संघर्ष में, कुछ लोग इसी तरह का व्यवहार करते हैं।

— गेरोन्डा, क्या आसपास का वातावरण भी आध्यात्मिक प्रगति में योगदान नहीं देता?

⁶⁷ देखें 1 तिमोथी 6:12।

— हाँ, इससे मदद मिलती है, लेकिन कभी-कभी कोई संतों के बीच रहकर भी सफल नहीं हो पाता। क्या यीशु के साथ नरितर रहने वाले यहूदा की परस्थितियाँ इससे भी अधिक अनुकूल हो सकती थीं? यहूदा में वनिमरता और अच्छे स्वभाव की कमी थी। अपने विश्वासघात के बाद भी उसने स्वयं को नम्र नहीं किया; क्रोध और स्वार्थ में उसने चाँदी के टुकड़े फेंक दिए और चालाकी से जाकर खुद को फाँसी लगा ली। और फरीसियों ने शैतानी तरीके से काम किया। एक बार उनका काम हो जाने पर, उन्होंने यहूदा से कहा: 'तू देख लेगा'।⁶⁸ ईश्वर किसी व्यक्तिकी अवस्था के अनुसार कार्य करता है। पवित्र आत्मा को कुछ भी बाधति नहीं कर सकता। और यही मैंने समझा है: कोई भी व्यक्ति जहाँ भी हो, यदि वह सच्ची लगन से प्रयास करे, तो वह वह प्राप्त कर सकता है जिसकी वह कामना करता है, अर्थात् अपनी आत्मा का उद्धार। लूत सदोम और गमोरा में रहता था, फिर भी वह कतिनी आध्यात्मिक अवस्था में था।⁶⁹ अब, चाहे हमें यह पसंद हो या न हो, हमें बेहतर इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए ताकि दैवीय अनुग्रह हमारे भीतर कार्य कर सके। वर्तमान घटनाएँ हमें – और हमें मजबूर करती रहेंगी – ईश्वर के और भी करीब आने के लिए, ताकि हम दैवीय शक्ति प्राप्त कर सकें और किसी भी स्थिति में सही ढंग से कार्य कर सकें। और, बेशक, दयालु प्रभु हमें कभी नहीं छोड़ेंगे; वे हमें अपनी सुरक्षा प्रदान करेंगे।

हमें यह भी समझना चाहिए कि अपनी आध्यात्मिक स्थिति में सुधार करके हम स्वयं बेहतर महसूस करते हैं और मसीह को आनंदित करते हैं। कौन कल्पना कर सकता है कि मसीह कतिनी महान खुशी महसूस करते हैं जब उनके बच्चे समृद्ध प्राप्त करते हैं? मैं चाहता हूँ कि सभी लोग आध्यात्मिक रूप से समृद्ध प्राप्त करें और मसीह के साथ एक हो जाएँ, जो आरंभ और अंत हैं। जब हमारा पूरा जीवन आरंभ और अंत पर निर्भर करता है, तो सब कुछ पवित्र हो जाता है।

आध्यात्मिक पठन

— गेरोन्डा, कनि कतिबों से उन लोगों की मदद हो सकती है जिनमें एक स्वस्थ चिंता जाग रही है?

— उन्हें पहले सुसमाचार पढ़ने दो, ताकि वे समझ सकें कि मसीह का क्या अर्थ है। [एक बार जब वे] कुछ हद तक पश्चातापी हो जाएँ, तो उन्हें पुराना नियम पढ़ने दें। क्या आप जानते हैं कि यह कतिना मुश्किल होता है जब कुछ भी न पढ़े-लिखे लोग आपकी मदद माँगते हैं? यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे कोई प्राथमिक विद्यालय का छात्र किसी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के पास जाकर उससे कहे, 'मेरी मदद करें।' और तब प्रोफेसर क्या कहेगा? कष्ट और एक दो होते हैं?

ऐसा भी होता है कि लोग आते हैं जिनके भीतर कोई वास्तविक चिंता नहीं होती, और कहते हैं: 'फादर, मुझे कोई समस्या नहीं है, सब कुछ ठीक है; मैं तो बस आपसे मिलने आ गया।' लेकिन कोई व्यक्ति भी यह नहीं कह सकता कि उसे बिल्कुल कोई समस्या नहीं है। हमेशा कुछ न कुछ होता है। आध्यात्मिक जीवन के लिए संघर्ष कभी समाप्त नहीं होता। या, जैसा कि कुछ लोग मुझसे कहते हैं: 'हमें कुछ आध्यात्मिक बताइए।' यह बिल्कुल करिने की दुकान पर जाकर यह कहने जैसा है: 'हमें कुछ सामान दे दीजिए।' तब तो करिने वाला भी हैरान रह जाएगा। वे कुछ खास नहीं माँगते: जैसे इतना चावल, इतनी चीनी, वगैरह, बल्कि कहते हैं: 'हमें कुछ सामान दे दीजिए।' या यह किसी केमिस्ट के पास जाकर यह कहने जैसा है, 'हमें कुछ दवा दीजिए।' यह बताए बना कि उन्हें क्या हुआ है, क्या उन्होंने डॉक्टर को दिखाया है, या

⁶⁸ मत्ती 27:4.

⁶⁹ उत्पत्ति 19:1-38 देखें।

डॉक्टर ने उन्हें क्या कहा है। इसकी समझ बनाने की कोशिश करें! लेकिन आध्यात्मिक चिंता रखने वाला व्यक्ति समझता है कविह क्या खो रहा है, उसे खोजता है, और उससे लाभान्वित होता है। जब मैं एक नौसखिया था और कोई कतिब पढ़ता था, तो मैं उसे भूल न जाऊँ, इसलिए उसे लिख लिया करता था, और मैंने जो पढ़ा था उसे व्यवहार में लाने की कोशिश की। मैं सर्फ़ समय को सुखद तरीके से बताने के लिए नहीं पढ़ता था। मुझमें सच्ची चिंता की भावना थी, और जब कोई ऐसी बात होती थी जसि मैं समझ नहीं पाता था, तो मैं [सही अर्थ जानने के लिए] सवाल पूछता था। मैं कम पढ़ता हूँ लेकिन मैंने जो पढ़ा है, उसके आधार पर मैंने खुद की पूरी तरह से परीक्षा ली: 'मैं कहाँ हूँ? मैं क्या कर रहा हूँ?' मैंने खुद को कटघरे में खड़ा किया; मैंने जो पढ़ा उसे बर्ना चुनौती दिए मुझसे गुज़र जाने नहीं दिया [एक कान से गया और दूसरे से बाहर हो गया]।

आजकल लोग इतनी अधिक पढ़ते हैं कि वे टेप रिकॉर्डर की तरह हो जाते हैं, और अपनी 'टेप' को अनावश्यक चीजों से भर लेते हैं। हालाँकि, सेंट आइज़ैक के अनुसार, 'कर्म के बर्ना सीखना शर्म की बात है।'⁷⁰ ठीक उसी तरह, खेल में रुचि रखने वाले कई लोग सोफे पर बैठे-बैठे खेल पत्रिकाएँ और समाचार-पत्र पढ़ते हैं — जबकि वे खुद बछड़ों की तरह कमजोर हो सकते हैं, फरि भी वे एथलीटों की प्रशंसा करते हैं। "वाह," वे कहते हैं, "क्या अद्भुत खिलाड़ी है, शाबाश," जबकि वे खुद पसीना तक नहीं बहाते और अपना एक भी कल्लो वजन नहीं घटाते। वे सोफे पर आराम से बैठे-बैठे खेल के बारे में पढ़ते रहते हैं, और इससे उन्हें क या कोई लाभ नहीं मलित, बल्कि केवल पढ़ने का आनंद ही मलित है। साधारण लोगों में, कुछ अखबार पढ़ते हैं, कुछ रोमांचक उपन्यास पढ़ते हैं, और कुछ स्टेडियम में मैच देखते हैं; और इसी तरह ये सभी लोग अपना समय बर्नाते हैं। जो लोग आध्यात्मिक कतिब पढ़ते हैं, उनमें से कुछ भी बलिकुल ऐसा ही करते हैं। वे पूरी रात जागकर इन कतिबों को पढ़ते हुए आनंद ले सकते हैं। वे एक आध्यात्मिक कतिब उठाते हैं, आराम से बैठते हैं और पढ़ते हैं। उनमें से कोई एक कह सकता है, 'मुझे लाभ हुआ है।' आपको यह कहना बेहतर होगा कि आपने आनंद लिया है, कि आपका समय सुखद रहा है। क्योंकि कविह लाभ नहीं है। आपको तब ही लाभ होता है जब आप यह समझते हैं कि कतिब कसि बारे में है, आप अपनी जांच करते हैं, और जो आपने पढ़ा है उसे अपने जीवन में लागू करने के लिए खुद को मजबूर करते हैं। यह पाठ जसिके बारे में मैं पढ़ रहा हूँ, वह कसि बारे में बात कर रहा है? मैं आध्यात्मिक रूप से कहाँ खड़ा हूँ? मुझे क्या करना चाहिए? और फरि, कोई जतिना अधिक सीखता है, उसकी जम्मेदारी उतनी ही बढ़ जाती है। मैं यह नहीं कह रहा कि आपको बहुत कुछ जानने और [उसके लिए] जवाबदेह होने से बचने के लिए पढ़ना ही नहीं चाहिए। पढ़ने के प्रती ऐसा रवैया कपटपूर्ण होगा। मेरा मतलब यह है कि आपको केवल आनंद के लिए ही नहीं पढ़ना चाहिए। यह एक बुरी बात है अगर पाठक की याददाश्त अच्छी हो और वह बहुत कुछ याद रखता हो।

वे बहुत बातें भी कर सकते हैं और खुद को यह धोखा दे सकते हैं कि वे जो पढ़ रहे हैं उसे अपने जीवन में लागू कर रहे हैं। इस तरह, वे खुद में और दूसरों में दोनों जगह गलत धारणाएँ पैदा करते हैं। इसलिए, बहुत अधिक पढ़कर अपने मन को आत्मसंतोष में न डुबोएँ। [जो आपने पढ़ा है] उसे व्यवहार में लाने के लिए लग जाएँ। क्या बहुत अधिक पढ़ने से विश्वकोशीय शक्ति मलित है—क्या वे ऐसा कहते हैं?

—हाँ, गेरोन्डा।

⁷⁰ "लेकिन कर्म के साथ जुड़ा एक शब्द आशा का खजाना है; जबकि कर्म के बर्ना ज्ञान शर्म की गारंटी है।" तुलना करें: *अबा इसाक द सीरियन*, कृतियाँ, सेरगीव पोसाद, 1911, पृ. 7

— लेकिन उद्देश्य ईश्वर-केंद्रित तरीके से स्वयं को शक्ति कराना है। मेरा विश्वविद्यालय का प्रोफेसर बनने का कोई इरादा नहीं है और मुझे बहुत कुछ जानने की कोई बाधता नहीं है। हालाँकि, ईश्वर-केंद्रित शिक्षा प्राप्त करने के बाद, आवश्यकता पड़ने पर मैं किसी अन्य क्षेत्र से भी आसानी से कुछ सीख सकूँगा। क्या यह स्पष्ट है?

— जब मन भटकता हो, तो पढ़ने पर ध्यान केंद्रित करना मददगार होता है?

— हाँ, किसी को कुछ बहुत ही शक्तिशाली पढ़ना चाहिए, ताकि आत्मा को गरमाहट मिले। पढ़ी हुई बातें आपकी चर्चाओं और फकिरों पर हावी हो जाएँगी, और मन दवि्य लोक में पहुँच जाएगा। अन्यथा, मन उन बातों पर भटक जाता है जिनमें वह ज्यादातर समय व्यस्त रहता है।

— गेरोन्डा, अगर कोई थका हुआ या परेशान है और कुछ हल्का-फुल्का पढ़ना चाहता है: एक लघु कथा, एक उपन्यासिका, या कुछ इसी तरह का?

— क्या वास्तव में ऐसे अवसर के लिए कोई आध्यात्मिक पुस्तक उपयुक्त नहीं है? उद्देश्य किसी व्यक्ति को उसकी पीड़ा भूलना नहीं है, बल्कि उससे मुक्त होना है। काल्पनिक साहित्य कोई मुक्ति नहीं देता। न तो उपन्यास, न समाचार पत्र, और न ही टेलीविजन आध्यात्मिक जीवन में किसी काम के हैं। यहाँ तक कि आध्यात्मिक पत्रिकाएँ भी अक्सर ईसाइयों को नुकसान पहुँचाती हैं, मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या को भड़काती हैं और भ्रम पैदा करती हैं। सावधान रहें: अपने खाली समय में अनावश्यक चीजें न पढ़ें। कुछ प्रकार की कतिबें पढ़ना अपने पेट को पतले कद्दू के सूप से भरने जैसा है; यह एक अनाज के दाने की तलाश में भूसे के ढेर को खंगालने जैसा है। कुछ लोग कहते हैं, 'हाँ, लेकिन इस तरह की पढ़ाई मुझे आराम करने में मदद करती है।' लेकिन आप आराम कैसे कर सकते हैं, मेरे प्रिय मित्र, जब यह 'पढ़ने की सामग्री' आपके सरि को चकरा देती है और आपकी आँखों में चुभन पैदा करती है? आपके लिए ठीक रहेगा कि आप ठीक से आराम करने के लिए कुछ नींद ले लें। किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति इस बात से जानी जा सकती है कि वह क्या पढ़ता है। एक बहुत ही सांसारिक व्यक्ति अनैतिक पत्रिकाएँ पढ़ेगा। कोई कम सांसारिक व्यक्ति ऐसी पत्रिकाएँ पढ़ेगा जो इतनी गंदी नहीं हैं, या समाचार पत्र। कोई जो चर्च जाता है, वह आध्यात्मिक प्रकाशन, समकालीन आध्यात्मिक पुस्तकें, या पवित्र पत्रिकाओं की रचनाएँ, आदि पढ़ेगा।

— गेरोन्डा, कौन सी आध्यात्मिक पुस्तकें सबसे अधिक सहायक हैं?

⁷¹— पवित्र पत्रिका-पुरुषों की विभिन्न पुस्तकों से बहुत लाभ उठाया जा सकता है, जिनमें, ईश्वर की कृपा से, अब हजारों की संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है। इन पुस्तकों में आप वह पा सकते हैं जिसकी आप तलाश कर रहे हैं और जिसकी आपको आवश्यकता है। ये सच्चा आध्यात्मिक पोषण हैं; ये आपको आध्यात्मिक मार्ग पर सुरक्षित रूप से मार्गदर्शन करती हैं। हालाँकि, इनसे लाभान्वित होने के लिए, इन्हें विनिमय और प्रार्थना के साथ पढ़ना चाहिए। चर्च फादर्स के कार्य एक सीटी स्कैन की तरह हैं;⁷² जैसे एक सीटी स्कैन किसी व्यक्ति की शारीरिक स्थिति को प्रकट करता है, वैसे ही आध्यात्मिक पुस्तकें उनकी आध्यात्मिक स्थिति को प्रकट करती हैं। चर्च फादर्स के ग्रंथों में हर वाक्य में केवल एक नहीं, बल्कि कई अर्थ होते हैं, जिनमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक स्थिति के अनुसार

⁷¹ इस मामले में, एल्डर प्राचीन ग्रीक में पैट्रिस्टिक ग्रंथों और उनके आधुनिक ग्रीक में अनुवादों का उल्लेख कर रहे हैं। रूसी आध्यात्मिक साहित्य में, पुराने चर्च स्लावोनिक में पैट्रिस्टिक ग्रंथों और उनके आधुनिक रूसी में अनुवादों के बीच इसी तरह का संबंध मौजूद है। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

⁷² टोमोग्राफी — एक परत-दर-परत रेडियोग्राफिक परीक्षा है जिसमें विभिन्न गहराइयों पर स्थिति किसी वस्तु की व्यक्तिगत परतों की छाया छवि प्राप्त करना शामिल है (मेडिकल एनसाइक्लोपीडिया देखें)। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

समझता है। अनुवादों के बजाय मूल ग्रंथों को पढ़ना सबसे अच्छा होगा, क्योंकि अनुवादक मूल की व्याख्या अपनी आध्यात्मिकता के अनुसार करता है। लेकिन किसी भी स्थिति में, पवित्र पतिओं को समझने के लिए, व्यक्तियों को स्वयं पर अनुशासन रखना होगा, मन को एकाग्र करना होगा और आध्यात्मिक रूप से जीना होगा, क्योंकि पवित्र पतिओं की आत्मा केवल आत्मा द्वारा ही महसूस की जाती है। अब्बा इसाक सीरियाई के तपस्वी लेख विशेष रूप से सहायक हैं, लेकिन उन्हें थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ना चाहिए ताकि पोषण अवशोषित हो सके। 'एवरगेटनिस'⁷³ एक बड़ी कृपा है, क्योंकि [इसके माध्यम से] कोई भी पवित्र पतिओं की संपूर्ण आत्मा को जान सकता है। यह पुस्तक सहायक है क्योंकि यह पवित्र पतिओं के सभी भावों के वरिद्ध कर्मबद्ध संघर्ष का वर्णन करती है; आत्मा यह समझ पाती है कि पतिओं ने कैसे परश्रम किया और इससे लाभान्वित होती है। यही बात संतों के जीवन पर भी लागू होती है: ये पवित्र इतिहास हैं, और इसलिए वे बहुत मददगार हैं, विशेष रूप से बच्चों के लिए। लेकिन उन्हें इस तरह नहीं पढ़ना चाहिए जैसे वे परी कथाएँ हों।

भक्तिप्राप्त करने के लिए, बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। यद्यपि उस थोड़े से ज्ञान पर भी मनन करें जो हमें पता है, तो हृदय स्पंदित हो उठेगा। कुछ लोगों के लिए, एक ही ट्रांsparयिन उनका पूरा अस्तित्व ही बदल देता है, जबकि अन्य सब कुछ कंठस्थ जानते हैं फिर भी कुछ महसूस नहीं करते, क्योंकि वे आध्यात्मिक वास्तविकता से परे कार्य कर रहे होते हैं। इसलिए, चर्च के पति-पुरुषों को पढ़ें, भले ही दैनिक में केवल एक या दो पंक्तियाँ ही क्यों न हों। वे विटामिन की तरह हैं, बहुत ऊर्जा देने वाले।

"सच्चे उपासक..."⁷⁴

"इस छोटे और आकर्षक चर्च में," कुछ लोग कहते हैं, "मैं दैवीय लटिर्जी का अनुभव करता हूँ, लेकिन किसी बड़े चर्च में नहीं। अगर चर्च प्लास्टर किया हुआ और पुता हुआ है, तो मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता; लेकिन एक ऐसे चर्च में जो चिंतित है, जिसमें एक सुंदर आइकनोस्टास (प्रतमि-पटल) है और इसी तरह की चीजें हैं, मैं दैवीय लटिर्जी का अनुभव करता हूँ।" यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी की भूख न लगने पर उसकी भूख बढ़ाने के लिए उसके भोजन में नमक और काली मरिच डालना।

— तो, गेरोन्डा, क्या आपने जो बताया है, उसका कोई महत्व नहीं है? क्या यह मदद नहीं करता?

— मैं यह नहीं कह रहा। यह मदद तो करती है, लेकिन किसी को इस पर अटका नहीं रहना चाहिए। अन्यथा, कोई व्यक्ति मिसीह का अनुभव किसी जादुई तरीके से करने का प्रयास करेगा; वह एक अंधेरी कोठरी, एक धुंधला तेल का दीपक, एक ऐसा चर्च जो श्रद्धा जगाता हो, खोजेगा और इन चीजों के बिना प्रार्थना नहीं कर पाएगा। लेकिन किसी को भी जहाँ कहीं भी हो, वही महसूस करना चाहिए: चाहे वह ट्रेन में हो, गुफा में हो, या सड़क पर। ईश्वर ने हर व्यक्तियों को एक छोटा सा चर्च बनाया है, और कोई भी उसे जहाँ कहीं भी जाए, अपने साथ ले जा सकता है।

⁷³ 'एवरगेटनिस' – चार खंडों में पैट्रिस्टिक शक्तिशाली का एक व्यवस्थित संग्रह, जिसे बाइजेंटाइन काल के दौरान कॉन्स्टेंटिनोपल के एवरगेटस मठ के भिक्षु पॉल ने संकलित किया था और जिसे पहली बार 18वीं शताब्दी के अंत में माउंट अथोस के पूजनीय निकोडेमस द्वारा प्रकाशित किया गया था।

⁷⁴ यूहन्ना 4:23 देखें।

हर कोई शांति की तलाश करता है, लेकिन शांति में भीतर से मिलती है। और ये बेचारे प्राणी, जो एक पवित्र स्थल से दूसरे पवित्र स्थल की तीर्थयात्रा करते हैं, मसीह को खोजने की इच्छा रखते हैं, जबकि मसीह उनके ठीक बगल में ही होते हैं। बनिा किसी कठिनाई के उन्हें खोजने का अवसर होने के बावजूद, वे खुद को थका देते हैं और अंततः उन्हें खोजने में असफल रहते हैं। एक सच्चा आध्यात्मिक व्यक्ति धीमे-धीरे और विभिन्न दृश्यों की प्रशंसा करने में शांति नहीं पाता है। ये उन लोगों के लिए हैं जो कष्ट झेल रहे हैं, क्योंकि ये उन्हें थोड़ी देर के लिए अपनी पीड़ा भूलने में मदद करते हैं। एक आध्यात्मिक व्यक्ति जिसके पास द्रव्य सात्वता हो, उसे ऐसी चीजों की कोई आवश्यकता नहीं होती। यद्यपि, हालांकि, उनमें द्रव्य सात्वता का अभाव है, तो वे सांसारिक लोगों से अलग नहीं हैं। उनकी आकांक्षाएं और रुचियां भी आध्यात्मिक होने के बजाय सांसारिक होंगी। ऐसा व्यक्ति किसी सांसारिक चीज के माध्यम से शांति प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

कई लोग पवित्र पर्वत पर आते हैं, विभिन्न संतों से मिलते हैं, प्रत्येक से जो सुनते हैं उससे प्रेरित होते हैं, उसे अपनी तरह से व्याख्यायित करते हैं और कही गई बात के अर्थ को भ्रमति कर देते हैं, और उस पर यह भी कहते हैं: 'हमारा समय बहुत अच्छा बीता!' लेकिन अगर वे सिर्फ एक वृद्ध से मिलते, उनकी सलाह लेते और जो वे कहते हैं उसे करने का प्रयास करते, तो उन्हें वास्तविक मदद मिलती। जो वे अभी कर रहे हैं उसे 'आध्यात्मिक पर्यटन' कहा जाता है। वे अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, व्यर्थ में परिश्रम कर रहे हैं और उन्हें कोई लाभ नहीं हो रहा है। और यह कतिना आसान हो जाता अगर वे एक ही आध्यात्मिक पति के साथ बने रहते और जो कुछ उन्होंने सुना था उसे व्यवहार में लाते! क्योंकि तब वे अपनी आंतरिक थकान को दूर होता हुआ महसूस करते, जबकि अब वे एक जगह से दूसरी जगह भटकते हैं और, इस दुनिया के लोगों की तरह, पवित्र पर्वत के परिदृश्यों की हरियाली की प्रशंसा करते हुए आराम करते हैं।

ऐसे भी हैं जो कहते हैं: 'मैं एक माता-ईश्वर के पास जाऊँगा, दूसरी माता-ईश्वर के पास।' ईश्वर की केवल एक ही माता है। फिर भी वे ऐसा भक्त के लिए नहीं, बल्कि डिराइव पर जाने और कुछ मज्ज करने की इच्छा से करते हैं। यह दर्शाता है कि उनकी आत्मा बेचैन है। जो कोई भी श्रद्धा और विनिमृता से रहति है—भले ही आप उन्हें स्वयं परम पवित्र सेपल्चर के क्यूवेलिया के अंदर बठा दें—वह कुछ भी नहीं देख पाएगा। लेकिन अगर किसी में श्रद्धा है, तो वह गोलगोथा में भी पवित्र अग्नि देख सकता है। एक बार, सेंट सावा की लावरा का एक नवसखिया महा शनचिर को अपने मठ के लिए पवित्र अग्नि लेने के लिए पवित्र सेपल्चर आया। आमतौर पर, पड़ोसी मठ पवित्र अग्नि लेने के लिए भिक्षुओं को भेजते हैं। उस नवसखिए ने एक युक्ति अपनाई: उसने अपना कासक (पादरी का चोगा) पहना, आम लोगों को धक्का देकर अलग किया और सबसे आगे पहुँच गया। लेकिन बाद में, जब पुरोहित आए, तो उसे खुद पीछे धकेल दिया गया, क्योंकि पहले से ही तय हो चुका था कि किस कहां खड़ा होना है। तब उस नवसखिए ने खुद को डाँटना शुरू कर दिया: "ओह, तुम नीच पापी, ओह, तुम खोई हुई आत्मा, तुम अपनी सारी दुष्टता से आगे बढ़ गए! अब यहाँ से निकल जाओ, भाग जाओ! तुम चर्च में रहने के भी योग्य नहीं हो!" और वह खुद से जो कह रहा था उस पर विश्वास करने लगा। वह चर्च से बाहर निकल गया और मसीह से विनिती करने लगा: 'हे मेरे मसीह, मैं आपसे विनिती करता हूँ, मुझसे घृणा न करें और मुझे किसी अन्य पवित्र स्थान पर जाने दें।' फिर वह गोलगोथा पर चढ़ा और वहाँ उसने फिर से खुद को कोसा: 'सोचो तो, तुमने क्या धोखाधड़ी की है! तुम, जो कोई नहीं हो, एक पादरी का चोगा पहनते हो और उसी कारण से दूसरों को—तुमसे बेहतर लोगों को—एक तरफ धकेल दिया है...' और एक ही क्षण में, जब वह इस प्रकार स्वयं को कोस रहा था, पवित्र गोलगोथा से एक शक्तिशाली प्रकाश निकला, जिसने उसके पूरे अस्तित्व को भेद दिया। "पवित्र अग्नि अवतरति हुई है!" — तब उस दिन प्राणी ने कहा; वह गया और गोलगोथा से पवित्र अग्नि की कुछ मात्रा अपनी लालटेन में लेकर चल दिया।

— तो, गेरोन्डा, तीर्थयात्राएँ, उदाहरण के लिए पवित्र भूमि की, क्या बेकार हैं?

— देखिए: आजकल, जब आप थोड़ा सा लाभ पाने के लिए यात्रा करते हैं, तो ट्रेनों, हवाई जहाजों और होटलों में आपको बहुत अधिक हानि होने की संभावना होती है। सब कुछ सांसारिक हो गया है। कोई आध्यात्मिक स्थान की यात्रा करके और वहाँ महान सांसारिक विलासिता को देखकर क्या लाभ प्राप्त कर सकता है? इन सबका कोई लाभ होने के लिए, व्यक्तियों को बहुत मजबूत होना चाहिए। और वह दूर गाइड जो समूह में यात्रा करते समय वर्णन और व्याख्या करता है—उसके लिए कभी-कभी चुप रहना बेहतर होगा! क्योंकि वह अनादरपूर्वक बोलता है, उदाहरण के लिए: 'यह गेथ्सेमनी है, यह पवित्र सेपल्चर है,' और फिर बकबक करने लगता है: 'यह यह है, वह वह है; अब हम बेथलहम जा रहे हैं, जहाँ फारस के मगसिसे आए थे' — और चुपचाप तीर्थयात्रियों को... [लगभग] कुवैत ले जाता है! जो कोई भी पवित्र शास्त्र पढ़ चुका है और जानता है कि यह पवित्र सेपल्चर है और वह गेथ्सेमनी है, उसके लिए ऐसा गाइड ध्यान केंद्रित करने और प्रार्थना करने से रोकता है। ये कहानियाँ केवल उन लोगों के लिए आवश्यक हैं जिन्होंने पवित्र शास्त्र नहीं पढ़े हैं, लेकिन जो पवित्र भूमि की तीर्थयात्रा पर जाते हैं, उन्होंने उन्हें पढ़ा होता है। और इस प्रकार, अनुभव से लाभ उठाने के बजाय, लोगों का मन उलझन में रह जाता है। इससे भी अधिक, वे एक पवित्र स्थल से सीधे दूसरे पवित्र स्थल की ओर दौड़ते हैं — जो उन्होंने सुना है वह उनके साथ नहीं रहता। यह एक अलग बात है जब तीर्थयात्रा पर साथी तीर्थयात्री और नेता आध्यात्मिक लोग हों, और जब उचित तैयारी पहले से की गई हो।

फारस से आए एक शरणार्थी, जो यानटिसा में बस गया था, ने कहा: "क्या इसे ही तुम हज कहते हो?"⁷⁵ यरूशलेम जाने में आधा घंटा लगता है और वापस आने में आधा घंटा। क्या यह हज है?" पहले के दिनों में, गरीब महिला तीर्थयात्री पवित्र स्थलों पर ठहरती थीं और वहाँ जागरण रखती थीं, ताकि उन्हें आध्यात्मिक लाभ हो और आवास व दान पर खर्च न करना पड़े। यदि तीर्थयात्रा से लौटने पर कोई आध्यात्मिक रूप से किसी भी तरह से नहीं बदला था, तो उसे कहा जाता था: "आप लहसुन बनकर निकले और प्याज बनकर लौटे।" कैपाडोसिया के संत आर्सेनियस हर दस साल में यरूशलेम की तीर्थयात्रा करते थे और वहाँ जहाज पकड़ने के लिए पांच दिनों तक पैदल मर्सिनी तक जाते थे। आजकल ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है। मुझे याद है जब व्लादिवोस्तोक का एक रूसी व्यक्ति मेरे आश्रम में आया था। यह जापान के सामने है। उसने पवित्र भूमि तक पैदल चलने का व्रत लिया था। जब वह आशीर्वाद के लिए बशिप के पास गया, तो बशिप ने उससे कहा: 'तुम पागल हो - आखिर तुम कहाँ तक पैदल जाओगे?' तो पहले वह मॉस्को के पास ज़ागोर्स्क में एक मठ में गया, और एक एल्डर से आशीर्वाद प्राप्त किया। ईस्टर पर वह ज़ागोर्स्क से पैदल चल पड़ा और अक्टूबर में यरूशलेम पहुँचा। वह पैदल एक दिन में सत्तर किलोमीटर तय करता था। फिर, यरूशलेम से, वह पवित्र पर्वत (होली माउंटेन) तक पैदल गया और फिर से यरूशलेम के लिए निकलने की तैयारी कर रहा था। उसमें वास्तव में एक द्रव्य आह्वान था;⁷⁶ वह एक दूसरी दुनिया में रहता था। वह थोड़ी-बहुत ग्रीक जानता था, और हम एक-दूसरे को समझ जाते थे। "मैंने सोचा था," उन्होंने मुझसे कहा, "कि मैं वहाँ वरिधी मसीह से मिलूँगा और शहीद हो जाऊँगा, कि वह मेरा सरि काट देगा! लेकिन वह वहाँ नहीं था! अब मैं फिर से यरूशलेम जाऊँगा और आपके लिए पवित्र सेपल्चर के सामने सजदा करूँगा, और आपको मेरा नाम याद रखना है।" वह झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया और मुझे दखाने के लिए ज़मीन पर लोट गया कि वह यह कैसे करेगा, और कैसे वह अपना सरि पत्थर से टकराएगा! आप उसके भीतर जलती हुई एक ज्वाला देख सकते थे। जहाँ तक अन्य

⁷⁵ हज्जी (शाब्दिक रूप से 'तीर्थयात्री') – पूरव में, किसी ऐसे व्यक्तिके नाम से पहले रखा जाने वाला एक सम्मानजनक उपाधि जो पवित्र स्थलों की तीर्थयात्रा कर चुका हो – अनुवादक की टिप्पणी।

⁷⁶ Θείος ἄρως (ग्रीक) – अनुवादक की टिप्पणी।

लोगों के पवतिर भूमि की यात्रा करने का सवाल है—पर्यटन के लिए और बिना श्रद्धा के—तो वहाँ बिल्कुल भी न जाना ही बेहतर है।

पवतिर भूमि में मसीह की उपस्थितिकितिनी ठोस रूप से महसूस होती है! उदाहरण के लिए, गोलगोथा के रास्ते में, आपको एहसास होता है कि कुछ बदल रहा है। यह जाने बिना भी कि यह रास्ता कहाँ जाता है, जब आप उस पर चलते हैं, तो आप गहराई से प्रभावित महसूस करते हैं। वहाँ लैटिनि में 'Via Dolorosa' शब्द अंकित एक संकेत भी है।⁷⁷ और पवतिर सेपलचर पर, लोगों की बहुत विविधता है। पुरोहिता और आम लोग; कुछ सादगी से पहने हुए हैं, कुछ अश्लील रूप से; कुछ लंबे परिधान में, कुछ छोटे; कुछ लगभग नग्न; कुछ ने सरि मुंडवा रखा है, कुछ के बाल लंबे... विभिन्न लोग, विभिन्न व्यक्तित्व, विभिन्न जनजातियाँ। और विभिन्न धर्मों के: एक रोमन कैथोलिक, दूसरा अर्मेनियाई... लेकिन हर कोई वहाँ आता है और पवतिर स्थल की पूजा करता है। इसने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा। यह हृदयस्पर्शी है। लेकिन यह सब कुछ एक दयालु मानसिकता के साथ देखा जाना चाहिए ताकि यह हृदय को छू सके और आत्मा को ऊँचा उठा सके।

— गेरोना, अगर किसी को तीर्थयात्रा पर जाने की इच्छा नहीं है, तो क्या इसका मतलब है कि उसमें श्रद्धा की कमी है?

— नहीं। मैं पवतिर पर्वत पर सभी मठों में नहीं गया हूँ, न ही मैंने कई पवतिर स्थलों का दौरा किया है। उदाहरण के लिए, मैं संत जॉन द रशियन को देखने के लिए यात्रा नहीं किया हूँ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं उस संत का सम्मान नहीं करता। किसी विशेष संत के प्रति श्रद्धा रखना अच्छा है [जिनकी अवशेष किसी पवतिर स्थान पर रखे गए हैं], लेकिन किसी को विशेष रूप से उसे देखने के लिए नहीं जाना चाहिए। हम तब जाएँगे जब कोई अनुकूल अवसर आएगा या ऐसा करने का कोई कारण होगा। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि मसीह ने सामरी स्त्री से क्या कहा: *'... सच्चे उपासक आत्मा और सत्य में पति की उपासना करेंगे'*।

हमारी आत्मा का उद्धार

— गेरोन्डा, कुछ लोग आश्वस्त हैं कि वे बच जाएँगे, जबकि अन्य को संदेह है। कौन सा दृष्टिकोण अधिक सही है?

— उद्देश्य यह है कि व्यक्ति ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करे। एक आध्यात्मिक व्यक्ति को ऐसी अवस्था में पहुँचना चाहिए कि भले ही ईश्वर उन्हें स्वर्ग में न भी स्वीकारें, तो भी उन्हें कोई कष्ट न हो। हमें यह पूरी तरह से समझना चाहिए कि हम आज जीवित हैं लेकिन कल चल भी सकते हैं, और मसीह तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। जिन लोगों ने, ईश्वर की कृपा से, इस जीवन की क्षणभंगुरता को समझ लिया है, उन्हें सबसे बड़ा वरदान मिला है। उन्हें दूरदर्शिता का वरदान प्राप्त करने या भविष्य देखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह पर्याप्त है कि वे आगे की सोचें, अपनी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखें, और अपने उद्धार को सुनिश्चित करने के लिए यथासंभव सर्वोत्तम आध्यात्मिक उपाय करें। मसीह स्वयं ने कहा: 'सम्पूर्ण संसार एक आत्मा के बराबर भी नहीं है।'⁷⁸ तो, आत्मा का मूल्य क्या है! अतः आत्मा का उद्धार एक महान विषय है।

— तो, गेरोना, क्या किसी को मोक्ष की आशा भी नहीं करनी चाहिए और न ही यातनाओं से डरना चाहिए?

⁷⁷ दुखों का मार्ग (लैटिनि)।

⁷⁸ मत्ती 16:26 देखें।

— यदमोक्ष की आशा है, तो यातना का भय नहीं है। चूँकि एक व्यक्तिको मोक्ष की आशा है, इसलिए वह कमोबेश ठीक रहता है। ईश्वर उस व्यक्तिको नहीं छोड़ेंगे जो प्रेम से, अपनी पूरी क्षमता से प्रयास करता है, जो विलासता की ओर झुकाव नहीं रखता, और जो अपने संघर्ष में कभी पराजति और कभी वजियी होता है। जो कोई भी ईश्वर को दुखी न करने की ओर थोड़ा भी झुका हुआ है, वह 'अपने गालोश में' ही स्वर्ग चला जाएगा। ईश्वर, जो स्वभाव से ही दयालु हैं, उन्हें स्वर्ग में 'धकेल' देंगे; वह उन्हें उनके हक से कहीं ज्यादा देंगे; वह सब कुछ इस तरह व्यवस्थिति करेंगे कि उनकी आत्मा को ठीक उसी क्षण ले लें जब वह पश्चात्ताप की अवस्था में हों। वह अपने पूरे जीवन संघर्ष कर सकता है, लेकिन ईश्वर उसे कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे; वह उसे सबसे उपयुक्त समय पर अपने पास बुला लेगा।

ईश्वर भला है; वह चाहता है कि हम सभी का उद्धार हो। यदुद्धार केवल कुछ लोगों के लिए ही होता, तो मसीह को सूली पर क्यों चढ़ाया गया? स्वर्ग के द्वार संकरे नहीं हैं;⁷⁹ वे उन सभी लोगों के लिए खुले हैं जो नम्रता से अपना सरि झुकाते हैं और घमंड से नहीं फूलते। बशर्ते वे पश्चात्ताप करें—अर्थात् अपने पापों का भार मसीह पर डालें—वे उस द्वार से स्वतंत्र रूप से गुजरेंगे। इसके अलावा, हमारे पास एक शमनकारी तरक है: हम मांस और रक्त हैं; हम केवल आत्मा नहीं हैं, जैसे स्वर्गदूत। हालाँकि, यदहम पश्चात्ताप नहीं करते और वनिम्रता से अपने उद्धारकर्ता के पास नहीं आते, तो हमारे पास कोई बहाना नहीं है। क्रूस पर चढ़ा चोर ने केवल एक शब्द कहा, 'मुझे क्षमा कर', और वह उद्धार पा गया।⁸⁰ किसी व्यक्तिको उद्धार एक मिनट पर नहीं, बल्कि एक क्षण पर निर्भर करता है। एक व्यक्तिको वनिम्र वचन से उद्धार पाता है; लेकिन एक घमंडी वचन को पालने से वह सब कुछ खो देता है।

हमारे लिए केवल आत्म-प्रेम से मुक्त होना ही उपयुक्त है, और कुछ नहीं। क्योंकि प्रेमेश्वर के लिए, किसी व्यक्तिको पीड़ा में देखना उससे बड़ी पीड़ा कोई नहीं है। मैं मानता हूँ कि ईश्वर की अनेक कृपाओं के लिए केवल धन्यवाद देना, उनकी प्रतमाओं—हमारे पड़ोसियों—के साथ वनिम्रता और प्रेम से व्यवहार करना, और एक छोटे से आत्म-त्याग के कार्य के साथ, यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है कि हमारी आत्मा को इस जीवन और अगले जीवन में शांति मिले।⁸¹

अध्याय 2. शैतान कैसे काम करता है

⁷⁹ इन शब्दों के साथ, एल्डर निश्चित रूप से स्वर्ग के द्वारों की संकीर्णता के बारे में सुसमाचार के प्रसिद्ध कथन (देखें मत्ती 7:13-14 और लूका 13:24) पर विवाद करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, बल्कि इस बात पर जोर दे रहे हैं कि उद्धार की संभावना व्यापक है और हर व्यक्तिको के लिए खुली हुई है। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

⁸⁰ लूका 23:40-43 देखें।

⁸¹ स्वाभाविक रूप से, वृद्धजन के शब्द उन ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों को संबोधित हैं जो विश्वास में प्रयासरत हैं और कलीसिया के संस्कारों में भाग ले रहे हैं।

शैतान तपस्वी को नष्टिक्रयि करने की कोशिश करता है

— गेराना, कभी-कभी प्रलोभन एक के बाद एक आ जाते हैं, और मुझमें अब कोई ताकत नहीं बची...

— मैं तुम्हें सखाऊँगा कि प्रलोभनों से कैसे बचना है। क्या तुम मेरी बात मानोगे?

— हाँ।

— प्रलोभन से बचने का एकमात्र तरीका है... शैतान का सहयोगी बन जाना! तुम हँस क्यों रहे हो? क्या तुम्हें यह तरीका पसंद नहीं है? खैर, तो सुनो।

जब तक कोई व्यक्ति सिंघरष कर रहा है, उसे प्रलोभनों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। और वे जतिना अधिक प्रलोभनों से बचने की कोशिश करते हैं, शैतान उतनी ही जोरदार हमला करता है। कभी-कभी हमारा जीवन सुसमाचार के जीवन-मार्ग के विपरीत होता है, और इसलिए प्रलोभनों के माध्यम से—यदि हम उनका बुद्धिमानी से उपयोग करें—हमें अपने जीवन को सुसमाचार के अनुरूप लाने का अवसर मिलता है।

— लेकिन मैं, गेराना, तुच्छ बातों में उलझ जाता हूँ, और बाद में मुझमें कुछ भी ऊँचा पाने के लिए प्रयास करने की इच्छा नहीं रहती।

— यह ठीक वैसा ही है जैसे दुश्मन सेना को नष्टिक्रयि करने के लिए जाल बछिता है। तांगलाशका संन्यासी को तुच्छ बातों से नष्टिक्रयि करने की कोशिश करता है, जब वह देखता है कि वह उसे किसी अन्य तरीके से नुकसान नहीं पहुँचा सकता। लेकिन जान लो कि छोटे तांगलाशका भी होते हैं, जो फरि भी कम नुकसान नहीं पहुँचाते। एक बार, एक छोटे तांगलाशका से पूछा गया: 'तो, तुम क्या कर सकते हो?' 'मैं क्या कर सकता हूँ?' उसने पलटकर पूछा। 'मैं दर्जियों और मोची के पास जाता हूँ— मैं उनके धागों को उलझा देता हूँ और उन्हें पागल कर देता हूँ।' सबसे बड़ी प्रलोभन छोटी-छोटी बातों से उत्पन्न होती है, और यह केवल हमारे बीच ही नहीं, बल्कि कभी-कभी राष्ट्रों के बीच भी होती है। आध्यात्मिक लोगों के पास प्रलोभन के लिए कोई गंभीर आधार नहीं होता, और इसलिए शैतान तुच्छ बातों को बहाने के रूप में इस्तेमाल करता है। वह किसी व्यक्ति की मूर्खता और बचकानेपन पर उसकी हमीमत तोड़ देता है; शैतान मानव हृदय को अपनी इच्छानुसार ढालता है, और बाद में वह व्यक्ति सिन हो जाता है और एक ठूँठ की तरह स्थिर खड़ा रहता है।

— गेराना, ऐसा क्यों है कि अपनी आध्यात्मिक जीवन के लिए एक दिनचर्या और व्यवस्था स्थापति करने, और शुरू में प्रयास करने के लिए इच्छुक होने के बाद भी, मैं जल्द ही अपने आप पर नियंत्रण खो देता हूँ और अपनी पुरानी आदतों पर वापस आ जाता हूँ?

— क्या तुम खुद को नहीं जानते? तांगलाशका, यह महसूस करते हुए कि हम आध्यात्मिक रूप से काम कर रहे हैं, हमारे 'प्रोग्राम' को किसी और चीज़ पर 'स्वचि' कर देता है। अपने लिए एक निश्चित व्यवस्था स्थापति करने और एक मार्ग पर चलना शुरू करने के बाद, हम खुद को किसी और रास्ते पर पाते हैं। और अगर हम ध्यान नहीं दे रहे हैं, तो हमें इसका एहसास कई दिनों बाद ही होता है। इसीलिए तपस्वी को हर बात में (बेशक, वविक के साथ) शैतान के खिलाफ जाना चाहिए और [इसके अलावा] एक अनुभवी आध्यात्मिक पति की देखरेख में रहना चाहिए।

— क्या शैतान उस व्यक्ति के खिलाफ युद्ध छेड़ता है जो अपने ऊपर सूक्ष्म कार्य नहीं करता?

— शैतान औसत दर्जे के लोगों के पास नहीं आता; वह तपस्वी के पास आता है: उसे बहकाने और रास्ते से भटकाने के लिए। दुश्मन किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सूक्ष्म काम करने में समय बर्बाद नहीं करेगा जो स्वयं अपने ऊपर सूक्ष्म काम नहीं करता है। जसिने जप्सी की सुई से सलाई की है, उसके पास वह एक जप्सी की सुई वाला दानव भेजेगा। जो सूक्ष्म कढ़ाई का अभ्यास करता है, उसके पास वह एक ऐसे राक्षस को भेजेगा जो सूक्ष्म कढ़ाई का अभ्यास करता

है। सबसे कुशल कढ़ाई करने वाले के पास — बहुत सूक्ष्म काम में माहरि एक राक्षस; जो लोग अपने ऊपर मोटे तौर पर काम करते हैं — उनके पास एक मोटा राक्षस। नौसखियों के पास, वह एक नौसखिया राक्षस भेजता है।

नाजुक आत्मा वाले लोग, जो बहुत स्नेही और संवेदनशील होते हैं, उन्हें सावधान रहना चाहिए, क्योंकि शैतान अपनी पूँछ हिलाता है और उन्हें और भी संवेदनशील बना देता है, ताकि वे नरिशा में डूब जाएँ या ईश्वर न करे, आत्महत्या कर लें। हालाँकि शैतान हमें मनुष्यों को अपने पड़ोसी के खिलाफ जाने और झगड़ा करने के लिए उकसाता है, वह स्वयं कभी किसी के खिलाफ नहीं जाता। वह लापरवाह व्यक्तियों और भी अधिक लापरवाह बना देता है; वह उसे इस तरह के विचार से आश्वस्त करता है: 'तुम्हारे सरि में दर्द है, तुम ठीक महसूस नहीं कर रहे हो; अगर तुम प्रार्थना के लिए नहीं उठते तो कोई बड़ी बात नहीं है।' शैतान एक भक्त व्यक्तियों और भी अधिक भक्त बना देता है, ताकि उसे अहंकार में डुबो सके, या उसे उसकी क्षमता से परे किसी काम के लिए उकसाता है, ताकि भी का उत्साही तपस्वी थक जाए, बाद में अपने सभी आध्यात्मिक हथियार डाल दे और हार मान ले। शैतान कठोर-हृदय वाले को और भी कठोर-हृदय बना देता है, और भावुक व्यक्तियों अत्यधिक संवेदनशील बना देता है।

कतिने लोग, कुछ अपनी संवेदनशीलता के कारण, तो कुछ अपनी तनावग्रस्त नसों के कारण, अनिद्रा से पीड़ित हैं, गोलियाँ नगिल रहे हैं या अस्पतालों में व्यर्थ में कष्ट झेल रहे हैं! आजकल, कोई संतुलित व्यक्ति शायद ही देखा जाता है। लोग बैटरियों की तरह हो गए हैं; अधिकांश लोग वदियुत्-आवेशित प्रतीत होते हैं। और जो लोग पाप-स्वीकृति के लिए नहीं जाते, वे भी शैतानी प्रभावों के अधीन होते हैं; उनमें एक तरह का शैतानी आकर्षण होता है, क्योंकि शैतान उन पर राज करता है। बहुत कम लोगों का स्वभाव शांत होता है, चाहे वे युवक हों, युवतियाँ हों या बुजुर्ग। शैतानी आधिपत्य! क्या आप जानते हैं कि शैतानी आधिपत्य क्या है? यह तब होता है जब लोगों के साथ आपसी समझ तक पहुँचना असंभव हो जाता है।

शैतान हमें दर्द नवारक इंजेक्शन देता है

मैंने सर्जिकल ऑपरेशन के दौरान एनेस्थीसिया के विषय पर चर्चा कर रहे कुछ डॉक्टरों से कहा: 'शैतान की एनेस्थीसिया एक व्यक्ति के लिए गंभीर परिणाम लाती है, जबकि आप जो एनेस्थीसिया देते हैं वह वास्तव में उस व्यक्ति की मदद करती है।' शैतान की संज्ञाहरण उस जहर की तरह है जिसका उपयोग साँप पक्षियों या खरगोशों को पंगु बनाने के लिए करता है ताकि वह उन्हें बिना किसी प्रतिरोध के खा सके। जब शैतान किसी व्यक्ति पर काबू पाना चाहता है, तो वह पहले उस व्यक्ति को सुन्न करने के लिए अपने आगे एक छोटे राक्षस को भेजता है—एक 'संज्ञाहरण विशेषज्ञ'। फिर शैतान खुद आता है और उस व्यक्ति को चीर-फाड़ देता है, और उसके साथ अपनी मनमर्जी करता है। हालाँकि, इसकी शुरुआत 'बेहोश करने वाले' से होती है, जो हमें एक बेहोशी का इंजेक्शन देता है, और हम अपना होश खो देते हैं। उदाहरण के लिए, संन्यासी के रूप में, हम 'उकसावे और ताने सहने' का वादा करते हैं और अन्य पवित्र संकल्प लेते हैं, फिर भी बाद में ऐसा होता है कि शैतान हमें भ्रमति कर देता है, और हम अपने वादे के विपरीत करते हैं। हम एक काम से शुरू करते हैं और दूसरे पर समाप्त करते हैं; हम एक जगह के लिए निकलते हैं लेकिन दूसरी जगह पहुँच जाते हैं। हम असावधान हैं। क्या मैंने आपको पहले ऐसे उदाहरण नहीं दिये हैं?

कोनिका में पहले कोई बैक नहीं था। जब लोग कर्ज लेना चाहते थे, तो वे जननि जाते थे। आसपास के कई गाँवों के लोग एक साथ मलिकर सत्तर-दो किलोमीटर पैदल चलकर पैसा उधार लेने जाते थे, उदाहरण के लिए एक घोड़ा खरीदने के लिए। उन दानों, घोड़ों का मालिक होना इस बात का मतलब था कि आप अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकते थे: आप अपने घोड़ों को दूसरे के घोड़ों के साथ जोड़कर एक जोड़ी बनाते और खेत जोतते थे। इसलिए, एक दिन एक किसान

घोड़ा खरीदने के लिए पैसा उधार लेने यननि के लिए नकिल पड़ा, ताकविह उससे जमीन जोत सके और कुदाल चलाने की थकाऊ मेहनत से बच सके। उसे बैंक से कर्ज मलि गया, और फरि वह यहूदी दुकानों में घूमने नकिल पड़ा। एक यहूदी दुकानदार ने उसे देख लिया और खींचकर अंदर ले गया। "अंदर आओ, बूढ़े दोस्त, इस खूबसूरत सामान पर एक नज़र डालो!" वह कसिन दुकान में गया, और यहूदी ने अलमारियों से कपड़े की रोलें लेना शुरू कर दिया, एक को उठाते हुए और दूसरी को एक तरफ फेंकते हुए। "लो इसे," उसने कहा, "यह अच्छी क्वालटी का है, और तुम्हारे बच्चों के लिए मैं इसे और भी सस्ते में दे दूँगा!" वह भोला-भाला एक दुकान से भागकर दूसरी दुकान पर गया। "तो चलिए फरि, बूढ़े जी," एक दूसरे यहूदी ने उससे कहा, "अंदर आ जाइए; मैं तो आपको और भी सस्ते में बेच दूँगा!" उसने उसके सामने शेल्फ से कपड़े के रोल उतारे, उन्हें खोला, फैलाया... अंत तक, हमारे बेचारे साथी का सरि चकराने लगा था। ऊपर से, वह थोड़ा भावुक भी था। "खैर, क्या कर सकते हो," उसने कहा, "जबकि उसने तो पहले ही रोल शेल्फ से उतार लिए थे और उन्हें खोल दिया था... और बच्चों के लिए छूट भी दे रहा था..." उसने उस यहूदी को बैंक से नकिले हुए पैसे दे दिए और कपड़े का एक रोल खरीद लिया, लेकिन वह भी सड़ा हुआ नकिला! और आखिर उसने कपड़े का एक पूरा -रोल क्यों खरीद लिया? अमीर लोग भी तो रोल के हिसाब से कपड़ा नहीं खरीदते थे; वे सरिफ उतना ही लेते थे जतिनी उन्हें ज़रूरत होती थी। आखिर में, वह सड़े हुए कपड़े के एक रोल के साथ घर लौटा। उन्होंने उससे पूछा, "और घोड़ा कहाँ है?" "अरे," उसने कहा, "मैंने लड़कों के लिए कुछ कपड़ा लाया हूँ!" लेकिन वे इतने सारे कपड़े का क्या करते? उसने बैंक से कर्ज ले लिया था, उसने घोड़ा नहीं खरीदा था – बस सड़े हुए कपड़े का एक रोल! तो वह अपने पुराने ढर्रे पर वापस चला गया: ज़मीन जोतना, कड़ी मेहनत करना, अपना कर्ज चुकाना! काश उसने घोड़ा ही खरीद लिया होता, तो वह सवार होकर वापस आता, घर के लिए भी कुछ चीज़ें खरीद लेता, और अब उसे खुरपी से खेतों में इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन देखो, अपनी बड़ी ज़बान की वजह से उसे उन यहूदी दुकानों में क्या मलि! शैतान भी बलिकुल इसी तरह काम करता है। एक चालाक धोखेबाज़ की तरह, वह तुम्हें पहले इस तरफ खींचता है, फरि उस तरफ; वह तुम्हें ठोकर मारता है, और अंततः यह सुनिश्चित करता है कि तुम ठीक उसी जगह पहुँचो जहाँ वह तुम्हें चाहता है। और अगर तुम सावधान नहीं हो, तो तुम एक जगह के लिए नकिलते हो और किसी दूसरी जगह पहुँच जाते हो। शैतान आपको धोखा देता है, और आप अपने जीवन के सबसे अच्छे साल बर्बाद कर देते हैं।

शैतान किसी व्यक्ति को लाभान्वित होने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करता है

शैतान धोखे का माहरि है। उदाहरण के लिए, यदि किसी आध्यात्मिक व्यक्ति के सामने द्रव्य प्रार्थना सभा के दौरान कोई बुरा वचिार आता है, तो वे उसे पहचान लेंगे, उससे बाहर नकिलेंगे और उसे दूर भगा देंगे। इसीलिए शैतान उनके सामने एक आध्यात्मिक वचिार प्रस्तुत करता है। वह कहता है, 'अमुक कतिाब में लिखा है कि...' फरि वह उनका ध्यान, उदाहरण के लिए, झूमर की ओर मोड़ देता है, और वह व्यक्ति यह सोचने लगता है कि इसे कसिने बनाया होगा। या शैतान उन्हें याद दलिा सकता है कि उन्हें किसी बीमार व्यक्ति से मलिने जाना चाहिए। वह व्यक्ति किहेगा, 'अरे, मैं तो कभी नहीं जाऊँगा! द्रव्य लतिर्जी के दौरान कतिनी प्रेरणा!' — जबकि वास्तव में, शैतान पहले से ही उनके भीतर हस्तक्षेप कर रहा होता है। वह व्यक्ति अपने ही वचिारों में खो जाता है, और जब उसे पुरोहिती की यह घोषणा सुनाई देती है, 'ईश्वर के भय और वशिवास से, आगे आओ!' — तब उसे एहसास होता है कि दैवीय अनुष्ठान समाप्त हो गया है, जबकि उसने स्वयं इसमें बलिकुल भी भाग नहीं लिया है। लेकिन यहाँ चर्च में भी, जब कोई नन झूमर पर मोमबत्तियाँ जलाने जाती है, तो मैं देखती हूँ कि प्रलोभी बड़ों का ध्यान भी उसी की ओर मोड़ देता है, और वे बहन के मोमबत्तियाँ जलाने तक घूरते रहते हैं। यह तो बलिकुल बचकानापन है! ऐसी चीज़ें तो केवल छोटे बच्चों के लिए ही आनंद का स्रोत होती हैं। "उसने जला दी!" —

वे कहते हैं। छोटे बच्चों के लिए इसका एक बहाना हो सकता है, लेकिन वयस्कों का क्या? या, जबकि दैवीय अनुष्ठान के दौरान हलिना-डुलना टाला जाना चाहिए, प्रलोभी किसी बहन को एक पवित्र क्षण पर वेदी पर रखी कतिब के पन्ने पलटने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे आवाज होती है और अन्य उपासकों का ध्यान भटक जाता है, जो यह सरसराहट सुनकर पूछते हैं: "यह क्या है?" उनका मन ईश्वर से भटक जाता है, जबकि शैतान प्रसन्न होता है। अतः हमें सावधान रहना चाहिए कि हम सेवा के दौरान दूसरों का ध्यान न भटकाएँ। हम अनजाने में लोगों को नुकसान पहुँचाते हैं। या चर्च में एक पाठ देखें: जैसे ही पाठक सबसे पवित्र क्षण पर पहुँचता है, जिससे लोगों को लाभ होगा, तुरंत कुछ न कुछ हो जाता है: या तो हवा दरवाज़ा जोर से बंद कर देती है, या कोई खाँसी शुरू कर देता है... लोगों का ध्यान भटक जाएगा, और वे पढ़े जा रहे पवित्र शब्दों से कोई लाभ नहीं उठा पाएंगे। तांगलाशका इसी तरह अपना काम करता है।

ओह, काश आप देख पाते कि शैतान कैसे काम करता है! आपने उसे नहीं देखा है, इसीलिए आप कुछ बातें नहीं समझ पाते। वह यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करता है कि किसी व्यक्ति को कोई लाभ न हो। मैं यह अपने ही कालीवा में लोगों से बात करते समय देखता हूँ। जैसे ही मैं उस बटु पर पहुँचता हूँ जहाँ मुझे अपने श्रोताओं की मदद करने के लिए बातचीत के चरम पर पहुँचना होता है, तुरंत या तो कोई शोर हो जाता है, या कोई अंदर आ जाता है, और मेरा ध्यान टूट जाता है। शैतान या तो उनमें पहले से ही सामने वाले स्केट⁽⁸²⁾ को घूरते हुए बेमतलब की बातें करने की इच्छा पैदा कर देता है, या फिर उन्हें कुछ मनोरंजक दिखा देता है और ऐसा समय चुनता है कि वे बातचीत के सबसे महत्वपूर्ण क्षण पर ही आ पहुँचें; तब तक मैं विषय बदल चुका होता हूँ, और मेरे श्रोताओं को कोई लाभ नहीं होता। शैतान, जो बातचीत की शुरुआत में ही जानता है कि इसका अंत कैसे होगा, और यह देखकर कि उसे नुकसान होगा, सबसे महत्वपूर्ण क्षण पर मुझे बीच में टोकने के लिए किसी को भेजता है। 'अरे,' नया व्यक्ति चिल्लाता है, 'फादर, यहाँ प्रवेश द्वार कहाँ है?' — "यहाँ," मैं जवाब देता हूँ, "थोड़ी लजीज़ मठाई और कुछ पानी लो, और उस तरफ से आ जाओ," लेकिन उसी पल दूसरे लोग आ जाते हैं और मुझे बीच में टोक देते हैं, क्योंकि मुझे उठकर उनका अभिवादन करना पड़ता है। थोड़ी ही देर बाद, एक तीसरा समूह आ जाता है; एक बार फिर मुझे उठना पड़ता है, और वे बातचीत शुरू कर देते हैं: "आप कहाँ से हैं?" — और इसी तरह, तो मुझे फिर से सब कुछ शुरू से शुरू करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, उदाहरण के लिए, उस तुलना को दोहराते हुए जो मैं पहले ही कर चुका था। जैसे ही मैं शुरू करता हूँ, नीचे से कोई और चिल्लाता है: "हे, फादर पैसयिस! आप कहाँ रहते हैं? क्या दरवाज़ा यही है?" मैं फिर से शुरू हो जाता हूँ।

धक्कार है इस प्रलोभन पर! एक ही दिन में, शैतान ने मुझ पर यह करतब छह या सात बार किया, और मुझे तो पहरेदार भी तैनात करने पड़े! 'तुम वहाँ बैठो और ध्यान रखना कि उस तरफ से कोई न आए। और तुम तब तक वहाँ बैठो जब तक मैं अपना काम खत्म न कर लूँ।' तो छह या सात बार ऐसा होता है कि आप एक पूरी कहानी सुनाना शुरू करते हैं, उस मुकाम पर पहुँचते हैं जहाँ लोग उससे लाभान्वित हो सकते हैं, और फिर वे शरारती लोग आपके लिए फिर से तमाशा शुरू कर देते हैं।

ओह, यह प्रलोभन—शत्रु क्या-क्या करता है! वह लगातार हमारे ध्यान को एक अलग तरंग पर ले जाता है। ठीक उसी समय जब कोई भक्तियोग व्यक्ति किसी बात से भक्तिकी ओर बढ़ने वाला होता है, वह 'क्लिक!' कर देता है—उनका ध्यान ऐसी चीज़ पर मोड़ देता है जो उन्हें भटका सकती है। क्या फिर से किसी आध्यात्मिक बात के बारे में सोच

⁸² यह सेंट पैटेलमोन द ग्रेट मार्टायर के कुटलुमुश हर्मटिज (तपस्थल) को संदर्भित करता है, जिसके सामने 'पनागुडा' सेल स्थित है। — अनुवादक की टिप्पणी।

रहे हो? 'क्लकि!' — वह दमिग में कुछ और ले आता है। [इसी तरह] दुश्मन लगातार ईसाई को भ्रमति करता है। अगर कोई व्यक्ति समझ जाए कि शैतान कैसे काम करता है, तो वह कई चीजों से मुक्त हो जाएगा।

— गेरोन्डा, कोई इसे कैसे समझ सकता है?

— अवलोकन करें। अवलोकन करके, आप सीखते हैं। सबसे अच्छे मौसम विज्ञानी कौन हैं? चरवाहे। [क्यों?] क्योंकि वे बादलों पर नज़र रखते हैं और हवा पर नज़र बनाए रखते हैं।

[मानव] की इच्छा का पंख

लोग आसानी से प्रभावित हो जाते हैं, चाहे अच्छा हो या बुरा। बुरा प्रभाव जल्दी पड़ता है, क्योंकि वहाँ शैतान काम कर रहा होता है। उदाहरण के लिए, किसी से कहें कि उन्हें धूम्रपान छोड़ देना चाहिए क्योंकि यह हानिकारक है। जैसे ही वे छोड़ने का फैसला करते हैं, शैतान तुरंत उनके पास आकर कहेगा: 'इन सिगरेट्स में निकोटीन कम है, और इनमें शुद्ध करने वाला फिल्टर है, इसलिए इन्हें पियें — ये तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।' दूसरे शब्दों में, शैतान उस व्यक्ति के लिए धूम्रपान छोड़ने का कोई बहाना ढूँढ़ लेगा; वह उनके लिए एक 'निकास का रास्ता' खोज लेगा! आखिरकार, शैतान हमारे लिए बहानों का एक पूरा ढेर ढूँढ़ सकता है। और वे सिगरेट जो वह पेश करता है, वास्तव में और भी अधिक नुकसान पहुँचा सकती हैं। इसीलिए हमारे पास इच्छाशक्ति होनी चाहिए। और यदि आप अपनी कमजोरियों पर तब काबू नहीं पाते जब आप अभी जवान हैं, तो बाद में उन पर काबू पाना मुश्किल होगा, क्योंकि जैसे-जैसे कोई व्यक्ति बूढ़ा होता जाता है, उसकी इच्छाशक्ति कमजोर होती जाती है।

यदि किसी व्यक्ति में इच्छाशक्ति की कमी है, तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। सेंट जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं: 'सब कुछ "चाहने" और "न चाहने" पर निर्भर करता है।'⁸³ दूसरे शब्दों में, सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति कुछ चाहता है या नहीं। कतिनी बड़ी बात है! ईश्वर स्वभाव से अच्छा है और हमेशा हमारे लिए वही चाहता है जो सबसे अच्छा है। हालाँकि, हमें भी इसे चाहना चाहिए। एक व्यक्ति दो पंखों की सहायता से आध्यात्मिक रूप से ऊँचा उड़ान भरता है: ईश्वर की इच्छा और उसकी अपनी इच्छा। ईश्वर ने एक पंख—अपनी इच्छा—हमेशा के लिए हमारे एक कंधे से जोड़ दिया है। लेकिन आध्यात्मिक रूप से ऊँचा उड़ान भरने के लिए, हमें भी अपना पंख—मानवीय इच्छा—दूसरे कंधे से जोड़ना होगा। यदि किसी व्यक्ति की इच्छाशक्ति मजबूत है, तो उसके पास एक मानवीय पंख होता है जो द्रव्य पंख को संतुलित करता है, और वह उड़ान भरता है। लेकिन यदि किसी व्यक्ति की इच्छाशक्ति कम विकसित है, तो वह उड़ान भरना चाहता है, लेकिन [इसके बजाय] वह सरि के बल लुढ़क जाता है। वह फरि से कोशिश करता है—और वही बात फरि से होती है!

— गेरोना, क्या किसी की इच्छाशक्ति विकसित करना संभव है?

— क्या हमने पहले ही नहीं कहा है कि हर चीज़ को विकसित किया जा सकता है? सभी लोगों में इच्छाशक्ति होती है — कुछ में कम, दूसरों में अधिक। जब कोई व्यक्ति तपस्या की ओर झुकता है, जब वे प्रार्थना करते हैं और ईश्वर से अपनी इच्छाशक्ति बढ़ाने के लिए कहते हैं, तो ईश्वर उनकी मदद करते हैं। एक व्यक्ति को यह महसूस करना चाहिए कि यदि वह सफल नहीं हो रहा है, तो इसका मतलब है कि या तो वह अपनी इच्छाशक्ति को बिल्कुल भी प्रयोग नहीं कर

⁸³ 'तो... ईश्वर विश्वसनीय है, और आपको बचाने का वचन देकर, वह नसिंसदेह आपको बचाएगा; लेकिन — जैसा उसने वचन दिया था। और उन्होंने कैसे वादा किया? यदि हम स्वयं ऐसा चाहें, यदि हम उनकी आज्ञा का पालन करें, और केवल इतना ही नहीं, जब हम पत्थरों और पेड़ों की तरह नष्टिर्गि बने रहें।' तुलना करें: *सेंट जॉन क्राइसोस्टोम*, कृतियाँ। खंड 11। पुस्तक 2। सेंट पीटर्सबर्ग, 1905। पृ. 607।

रहा है, या वह इसका अपर्याप्त रूप से प्रयोग कर रहा है, और, इसके अलावा, यह कमजोर हो गई है, इसलिए इसमें फरि से कोई लाभ नहीं है। मान लीजिए कएक पक्षी का एक पंख मजबूत है, जबकदूसरे की उपेक्षा की गई है। उस पंख के पंख गरिने लगते हैं, और अंततःपक्षी ठीक से उड़ नहीं पाता है। उसका एक पंख अच्छी तरह काम करता है, लेकिन दूसरा टूटे हुए कंधी की तरह है। पक्षी इस पंख को फड़फड़ाता है, लेकिन हवा सीधे उसमें से होकर गुजर जाती है, और वह उड़ नहीं पाता। वह थोड़ा हलिता है और उल्टा-पुल्टा उड़ जाता है। उड़ान भरने के लिए, दूसरे पंख का भी सही होना जरूरी है।

मेरा मतलब यह है कि, उसी तरह, यदकि कोई व्यक्ति हिमेशा, आध्यात्मकि रूप से सही ढंग से उड़ना चाहता है, तो उसे सचेत रहना चाहिए और अपनी मानवीय इच्छा को अनदेखा नहीं करना चाहिए। टंगलाशका क्या करता है? वह चुपके से आता है और पहले मानव के पंख से एक छोटा सा पंख खींच लेता है, फिर थोड़ा बड़ा, और फिर, अगर व्यक्ति लापरवाह हो, तो वह एक बड़ा पंख भी खींच लेता है, जिससे वह व्यक्ति उड़ान भरना चाहता है लेकिन नहीं भर पाता। और यदकि दुश्मन ने कई पंख उड़ा दिए हों, तो व्यक्ति उड़ने का प्रयास करते हुए उल्टा-पुल्टा उड़ता है, क्योंकि उसकी इच्छा-शक्ति के उड़े हुए पंखों वाली शाखा से हवा बेरोकटोक बहती है। दवि पंख लगातार पंखों से भरा रहता है; यह 'पूर्ण' है; शैतान इस दवि पंख को नहीं उड़ा सकता। एक व्यक्ति कि ध्यान इस बात पर केंद्रति होना चाहिए कि वह थके नहीं और शैतान को अपने [मानवीय] पंख से एक भी पंख न उखाड़ने दे। जब कोई व्यक्ति धीरे-धीरे किसी न किसी तरह से आलसी या उदासीन होने लगता है, तो उसकी इच्छाशक्ति अपनी ताकत खो देती है। और अगर व्यक्ति [खुद] [आध्यात्मकि रूप से काम] नहीं करना चाहता, तो ईश्वर क्या कर सकते हैं? ईश्वर हस्तक्षेप नहीं करना चाहते, क्योंकि वे मानवीय स्वतंत्रता का सम्मान करते हैं। इस प्रकार, एक व्यक्ति ईश्वर के पंख को भी बेकार बना देता है। हालाँकि, जब किसी व्यक्ति में इच्छाशक्ति होती है—यानी, जब उसके अपने पंख को कोई नुकसान नहीं पहुँचा होता—तो जो ईश्वर चाहते हैं, वही व्यक्ति भी चाहता है। और फिर वह व्यक्ति उड़ता है।

— गैरोना, यह 'उड़ान' वास्तव में क्या है? क्या आप आध्यात्मकि प्रगतिकी इच्छा, मोक्ष की इच्छा का अर्थ ले रहे हैं?

— क्यों, जरूर, मेरे भाई! जब मैं 'उड़ान' कहता हूँ, तो मेरा मतलब आध्यात्मकि आरोहण से है; मेरा मतलब किसी सड़ के पेड़ पर उड़कर जाने से नहीं है!

— जैरोडा, आपने पहले कहा था कि कोई व्यक्ति ज़मीन जोत और बो सकता है, आवश्यक सब कुछ कर सकता है, और फिर भी उसे एक भी दाना नहीं मलिता।

— हाँ, यह सच है। शैतान लापरवाहों की मेहनत लूट लेता है। लेकिन जो व्यक्ति सचेत है और अपनी आत्मा के उद्धार के लिए गंभीरता से प्रयास करता है — वह परशिरम करता है, फलता-फूलता है, फल देता है, आध्यात्मकि रूप से पोषति होता है और एक देवदूत की तरह आनंदति होता है।

अध्याय 3. सद्भावना से प्राप्त लाभों पर

भाईचारे के संबंध

— गैरोन्डा, जब आप कहते हैं कि हिमारे सामने कठनि वर्ष आने वाले हैं, तो मुझे चति होती है।

— एक-दूसरे के प्रतिमैत्रीपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण रहो, आध्यात्मिक रूप से तैयार और साहसी रहो, एक शरीर बनो, और किसी से न डरो। ईश्वर भी मदद करेंगे। आध्यात्मिक प्रेम का संवर्धन करें; इसे एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम जैसा होने दें। आपके संबंध भाईचारे वाले हों; आपके बीच त्याग की भावना बनी रहे। और हम इन कठिनीय दानों से धीरे-धीरे निकल आएँगे।

हम संन्यासी, बेशक, दुनिया से अलग हो जाते हैं और दोस्तों और परिवार को पीछे छोड़ देते हैं ताकि हम आदम और ईश्वर के महान परिवार में प्रवेश कर सकें। लेकिन गृहस्थों को अपने आध्यात्मिक रूप से समान विचारधारा वाले दोस्तों और परिचितों के साथ संबंध बनाए रखना चाहिए ताकि वे एक-दूसरे की मदद कर सकें। यदि संसार में रहने वाला एक ईसाई आध्यात्मिक विचारधारा वाले लोगों के संपर्क में रहता है, तो उसके पास सहारा लेने के लिए कोई होता है। आप चाहे कतिनी भी आध्यात्मिक रूप से क्यों न जाएँ, दोस्तों का एक अच्छा दायरा (विशेषकर आज के समय में) आवश्यक है। आध्यात्मिक विचारधारा वाले लोगों के साथ संबंध एक ईसाई के लिए बहुत मददगार होता है (आध्यात्मिक पठन से भी अधिक), क्योंकि इस आध्यात्मिक सान्निध्य का आनंद उनमें आध्यात्मिक प्रयासों के लिए एक मजबूत उत्साह जगाता है। यह भी अच्छा है कि काम पर या कार्यस्थल पर, आध्यात्मिक विचारधारा वाले लोग एक-दूसरे को जानते हों ताकि वे एक-दूसरे की मदद कर सकें। उदाहरण के लिए, सहकर्मियों के बीच कोई समस्या उत्पन्न हो सकती है और पारस्परिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है। यदि आध्यात्मिक विचारधारा वाले लोग एक-दूसरे को नहीं जानते हैं, तो वे एक-दूसरे से बात करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

— गेरौन्डा, मान लीजिए कि किसी ने [एक बार] किसी काम में हमारी मदद करने से इनकार कर दिया था, और अब हम उनसे फिर से मदद मांगने में हिचकिया रहे हैं। क्या यह सही है?

— नहीं, नहीं। शायद वह पहले मदद करने की स्थिति में नहीं था। यह ठीक वैसा ही है जैसे आप मुझसे एक क्रॉस मांगते हैं और मैं आपको दे देता हूँ। दूसरी बार आप मांगते हैं, लेकिन मेरे पास नहीं होता, और [जाहिर है] मैं आपको नहीं देता। फिर मैं कुछ क्रॉस खरीद लेता हूँ ताकि मेरे पास देने के लिए कुछ हों, लेकिन आप आकर मांगते नहीं, जबकि मैं उन्हें बांटने के अवसर का इंतजार कर रहा होता हूँ।

आजकल लोग एक ही फ्लैट ब्लॉक में रहते हैं और एक-दूसरे को नहीं जानते। लेकिन अतीत में समुदाय की भावना थी जो लोगों को एक-दूसरे को जानने में मदद करती थी, और वे जरूरत के समय एक-दूसरे का साथ देते थे। उदाहरण के लिए, अगर कोई गाड़ी में कहीं यात्रा कर रहा होता और रास्ते में किसी परिचित से मिलता, तो वह पूछता: 'तुम कहाँ से आ रहे हो, और कहाँ जा रहे हो?' मैं भी वहीं जा रहा हूँ।' 'अंदर आओ, हम साथ चलेंगे।' या अगर कोई घोड़े पर कहीं जाना चाहता, तो वह पड़ोसी के पास जाता और पूछता, 'कहाँ जा रहे हो?' अगर तुम इंतजार कर सकते हो, तो मैं तीन घंटे में घोड़े पर निकल रहा हूँ और तुम्हें अपने साथ ले जा सकता हूँ।' या वे कहते, 'मैं कल अमुक जगह जा रहा हूँ। आओ और हमारे यहाँ रात बिताओ, ताकि हम सुबह साथ में चल सकें।' लोग अपने पड़ोसियों के बारे में सोचते थे, और जब भी वे किसी भी तरह से मदद कर सकते थे, तो वे पीछे नहीं हटते थे। लोगों को एक-दूसरे की सच्ची चिंता होती थी, और वे बस पूछ ही लेते थे, ताकि वे मदद कर सकें। उनके दूसरे गांवों में भी अच्छे दोस्त थे।

— जेरौन्डा, लोगों का एक-दूसरे से आध्यात्मिक रूप से जुड़ा होने का क्या लाभ है?

— आजकल, भले ही आध्यात्मिक लोग एक-दूसरे से बंधना न चाहें, शैतान उन्हें इस बंधन में बाँध देता है। आज, अपनी अधिकांश दुष्टता के माध्यम से, शैतान लोगों के लिए सबसे बड़ा भला करता है। उदाहरण के लिए, यदि एक विश्वासी पति अपने बच्चों के लिए एक नजी शक्तिषक ढूँढना चाहता है, तो वह एक अच्छा और धार्मिक शक्तिषक ढूँढने के लिए बाध्य होगा, क्योंकि वह उस व्यक्ति को अपने घर में लाने वाला है। दूसरी ओर, एक धर्मनिरपेक्ष शक्तिषक जसिने

अभी तक कोई पद नहीं पाया है और जो बच्चों को नज्दी पाठ देना चाहता है, वह एक अच्छे परिवार की तलाश करेगा ताकि वह सुरक्षित महसूस कर सके। या एक धार्मिक जीवन जीने वाला कारीगर—चाहे वह एक चित्रकार हो या एक इलेक्ट्रीशियन—एक अच्छे परिवार के साथ काम की तलाश करेगा ताकि वह निश्चित महसूस कर सके, क्योंकि एक सांसारिक घर में वह अपने लिए परेशानी लाएगा। एक ईसाई घर का मालिक भी अपने घर में काम करने के लिए एक अच्छे कारीगर और एक आस्थावान व्यक्तिको ढूँढेगा। दोनों ही एक ऐसे आध्यात्मिक व्यक्तिकी तलाश करेंगे जिसके साथ वे सहयोग कर सकें। और इस प्रकार, धीरे-धीरे, सभी व्यवसायों और ज्ञान के सभी क्षेत्रों के आध्यात्मिक लोग एक-दूसरे को जानने लगेंगे।

अंततः शैतान, अनजाने में ही, अपनी दुर्भावना से अच्छा काम करता है: वह भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है। भेड़ों को बकरियों से अलग कर दिया जाएगा और वे एक ही चरवाहे के साथ एक ही झुंड के रूप में रहेंगी।⁸⁴ अतीत में, गाँवों में, किसान चरवाहे को भेड़ें और बकरियाँ देते थे—कुछ पाँच, कुछ दस—और भेड़ें बकरियों के साथ चरा करती थीं, क्योंकि उन दोनों बकरियाँ समझदार होती थीं और अपने सींगों से भेड़ों को नहीं सींगती थीं। आजकल बकरियाँ उग्र हो गई हैं और उन्होंने मसीह के भेड़ों को दर्दनाक रूप से घायल कर दिया है। भेड़ें एक अच्छे चरवाहे की प्रतीक्षा कर रही हैं और केवल भेड़ों का झुंड चाहती हैं। क्योंकि यह संसार अब केवल पाप में जीने वालों के लिए ही उपयुक्त रह गया है। इसलिए लोग विभाजित हो जाएंगे। भेड़ें और बकरियाँ दोनों अपने-अपने हिस्से में रहेंगी। जो लोग एक आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते हैं, उन्हें धीरे-धीरे इस दुनिया में रहना असंभव लगेगा; वे अपने जैसे अन्य विश्वासियों को खोजने, एक आध्यात्मिक पति खोजने और पाप से और भी अधिक दूर रहने का प्रयास करेंगे। ठीक यही अच्छा काम है जो शैतान अब कर रहा है, बना ऐसा करना चाहेको। और अब, न केवल शहरों में बल्कि गाँवों में भी, आप देख सकते हैं कि कुछ लोग मनोरंजन केंद्रों की ओर भागते हैं और उदासीनता से जीवन जीते हैं, जबकि अन्य जागरण, प्रार्थना सभाओं और आध्यात्मिक सभाओं की ओर भागते हैं, और ये लोग एक साथ बंधे हुए हैं।

कठिनी समय में भाईचारे के बहुत मजबूत बंधन बनते हैं। युद्ध के दौरान, हम—एक ही अर्ध-बटालियन के सैनिक—दो साल तक साथ रहे और भाई से भी अधिक घनिष्ठ रूप से जुड़े थे, क्योंकि हमने साथ में कठिनाइयों और खतरों को सहा। हम इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे कि हम एक-दूसरे को 'भाई' कहते थे। वे सांसारिक लोग थे, जनिकी सोच भी सांसारिक थी; वे न तो सुसमाचार पढ़ते थे और न ही आध्यात्मिक किताबें, और फिर भी हम में से कोई भी एक-दूसरे से अलग नहीं होना चाहता था। उन लोगों की सामान्य, सांसारिक शिक्षा थी—शब्द के सकारात्मक अर्थ में—लेकिन उनके पास उससे कहीं बड़ी चीज थी: प्रेम और भाईचारा। हाल ही में हमारे एक साथी का निधन हो गया, और हमारे बाकी साथी उसके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए देश के कोने-कोने से आए। और कुछ दिनों पहले, मेरे एक साथी मुझे देखने के लिए यहाँ आए थे। उन्होंने मुझे कतिनी कसकर गले लगा लिया था! मैं छूट ही नहीं पा रहा था!

अब हम शैतान से लड़ रहे हैं। इसलिए, एक-दूसरे के और करीब आने की, एक-दूसरे के और भी भाई बनने की कोशिश करें। इस तरह, हम सब मिलकर उस रास्ते पर चलेंगे जिससे हमने चुना है, और साथ मिलकर मीठे गोलगोथा के ऊँचे रास्ते पर चढ़ेंगे।

⁸⁴ देखें यूहन्ना 10:16।

आध्यात्मिक बंधुत्व पर

— गैरोना, कल आपने हमें बताया कि आपको ऐसा लगा कि हाल के दिनों में जिन सभी लोगों से आप मिले, वे आपको भाई थे। आध्यात्मिक भाईचारा क्या है?

— हम सभी लोगों के साथ देह में भाई हैं। हम सभी भाई हैं, और हम सभी ईश्वर के सेवक हैं। इसके अलावा, हम विश्वासी, अनुग्रह से, ईश्वर की संतान भी हैं, जिनमें हमारे मसीह के दिव्य रक्त द्वारा छुटकारा मिला है। आध्यात्मिक जीवन में, हम देह में आदम के माध्यम से संबंधी हैं, और आध्यात्मिक रूप से, मसीह के माध्यम से संबंधी हैं। जो लोग आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, वे अपने बीच इस आध्यात्मिक संबंध को महसूस करते हैं। वे एक जैसी बातों के बारे में सोचते हैं, वे एक जैसी चीजों के लिए प्रयास करते हैं, वे एक ही लक्ष्य का पीछा करते हैं। लेकिन अगर, उदाहरण के लिए, आपकी खून की कोई बहन होती जो अपनी मनमर्जी से, सांसारिक तरीके से जीती, तो आपको उसके साथ कोई आध्यात्मिक संबंध महसूस नहीं होता।

— क्या एक आध्यात्मिक रिश्ता कभी टूट सकता है?

— जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन जीना बंद कर देता है, तो आध्यात्मिक रूप से जीने वाले दूसरे व्यक्ति के साथ उसका संबंध भी समाप्त हो जाता है। यह दूसरे व्यक्ति, जो आध्यात्मिक रूप से रहता है, नहीं है जो अलग हो जाता है, बल्कि वह है जिसने आध्यात्मिक रूप से जीना बंद कर दिया है जो खुद को दूसरे से अलग कर लेता है; जैसे कोई व्यक्ति परमेश्वर के अनुसार जितना अधिक जीता है, वह उतना ही परमेश्वर के करीब आता है, वैसे ही वह परमेश्वर के अनुसार जीवन से जितना अधिक दूर होता है, वह उतना ही उनसे दूर होता जाता है। और जैसे दिव्य अनुग्रह एक शक्ति है जो दूरी से कार्य करती है और लोगों तक पहुँचती है, वैसे ही शैतान की दुष्ट ऊर्जा भी एक शक्ति है जो दूरी से कार्य करती है और संचारित होती है। यदि, उदाहरण के लिए, दो आत्माएँ आध्यात्मिक अवस्था में हैं और उनमें से एक दूसरे के बारे में सोचती है, तो उनके बीच एक आध्यात्मिक संबंध बनता है और एक आत्मा दूसरी को दिव्य शक्ति संचारित करती है। इसी तरह, पाप में जीवन यापन करने वाली दो आत्माएँ जिनके बीच किसी प्रकार का मेल-जोल हो: उनमें से एक दूसरे से दूर से एक राक्षसी प्रभाव प्राप्त करती है; एक से दूसरे के लिए एक 'टेलीग्राम' भेजा जाता है।

— गैरोन्डा, जब ऐसे दो लोगों में से एक, जिनके बीच एक दैवीय संबंध था, बेहतर हो जाता है, तो क्या वह दूसरे की मदद करता है?

— हाँ। उसे कोई जवाब नहीं मिलता, क्योंकि जो व्यक्ति बेहतर के लिए बदल गया है, वह, ऐसा कह सकते हैं, [अपने आध्यात्मिक] टेलीफोन का रसीवर नहीं उठाता। लाइन कट जाती है, और संपर्क अब मौजूद नहीं रहता। इस प्रकार, यह संभावना है कि बिना जवाब के छोड़ा गया व्यक्ति इस पर विचार करेगा, और, यदि वह चाहे, तो यह उसे मदद कर सकता है।

— जब हम किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बातचीत करते हैं जिसके अंदर वासनाएँ हैं, और ये वासनाएँ हम पर हानिकारक प्रभाव नहीं डालती, तो क्या इसका मतलब यह है कि हम उसके चरित्र को प्रभावित करते हैं?

— यदि हम एक आध्यात्मिक अवस्था, पवित्रता रखते हैं, तो हम उन पर बहुत बड़ा प्रभाव डालते हैं, क्योंकि [उस स्थिति में] वे ईश्वर की कृपा से प्रभावित होते हैं, और इस तरह हमारे पड़ोसी को लाभ होता है। जब हम प्रेम के कारण अपने भाई के साथ धैर्य रखते हैं, तो वह इसे समझता है। यह बात द्वेष पर भी लागू होती है: यदि हम इसे पालते हैं, तो वह भी इसे महसूस कर लेता है, भले ही यह बाहरी रूप से स्पष्ट न हो। आत्मा के पास जो कुछ भी होता है, वह वही [दूसरी आत्मा को] संप्रेषित करती है। एक जुनून दूसरे जुनून को, चड़िचड़ाहट चड़िचड़ाहट को, और क्रोध क्रोध को संप्रेषित

करता है। लेकिन अनुग्रह से परंपूरण आत्मा का अनुग्रह-युक्त उपहार अपने पड़ोसी को एक अनुग्रह-युक्त उपहार देगा।

— तो क्या सदाचारी लोगों के साथ मेलजोल करने से मदद मिलती है?

— बेशक, मदद तो करती ही है। अगर आप एक ऐसे कमरे में जाएँ जहाँ लगातार धूप जलती रहती हो, तो जब आप उससे बाहर निकलेंगे, तो आप पर खुद ही धूप की महक चढ़ जाएगी। अगर आप एक अस्तबल में जाएँ, तो आप पर अस्तबल की बदबू चढ़ जाएगी। सांसारिक घर में जाने के बाद, आप पर सांसारिक खुशबू चढ़ जाएगी। [मुझे याद है] कब्जे के दौरान हमने पाँच हेक्टेयर में वभिन्न कस्मों के खरबूजों के पौधे लगाए थे: कृषि विद्यालय से आई एक अमेरिकी कस्म—सफेद खरबूजे, जो इतने बड़े और बहुत मीठे थे—साथ ही 'अर्ग' खरबूजे, जो एक स्थानीय कस्म थी, और अन्य कस्में भी। अगर अमेरिकी खरबूजे के पास ही जुकनी उग रही होती, तो खरबूजे की मठिस जुकनी में चली जाती। जुकनी और मीठी हो जाती, जबकि खरबूजे का स्वाद चला जाता। यह परागण के माध्यम से होता है, जब मधुमक्खियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ती हैं। यदि आप एक ऐसे खरबूजे को देखें जिसके 'नाभि' (belly button) का आकार बड़ा हो, तो आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वह जुकनी के पास उगा था।

यदि एक 'अर्ग' खरबूजा एक अच्छे खरबूजे के पास उगता है, तो वह अच्छे वाले से मठिस छीन लेगा। अच्छा खरबूजा अपनी मठिस खो देगा, लेकिन कम से कम इस मामले में, वह भी एक खरबूजे में बदल जाएगा। लेकिन अगर एक जुकनी एक अच्छे खरबूजे के पास आ जाए, तो वह और मीठी हो जाएगी, और फिर उसे पकाते समय एक मुट्ठी भर नमक डालना पड़ेगा। खरबूजा अपनी मठिस खो देता है, और जुकनी को भी इससे कोई फायदा नहीं होता। हालाँकि, अगर एक खरबूजा दूसरे खरबूजे के पास हो, तो अच्छा वाला अपनी मठिस खो देता है, लेकिन दूसरा और मीठा हो जाता है। मेरा मतलब यह है कि यदि कोई ऐसा ईसाई जो आध्यात्मिक रूप से अधिक उन्नत नहीं है, किसी आध्यात्मिक रूप से उन्नत व्यक्ति के पास रखा जाए, तो बाद वाला थक सकता है, या कुछ हानि झेल सकता है, लेकिन पहले वाले को लाभ होगा। हालाँकि, यदि कोई सांसारिक, अवशिवासी व्यक्ति किसी आध्यात्मिक व्यक्ति के पास रखा जाए, तो पहले वाले की मेहनत और समय बर्बाद हो जाएगा। यदि कोई और कुछ कहता है जो एक सांसारिक व्यक्ति को छूता है, तो बस इतना ही संभव होगा। लेकिन यदि वह कही गई बात की व्याख्या [अपने ही] सांसारिक दर्शन के संदर्भ में करता है—अर्थात्, यदि वह इसे एक सांसारिक आत्मा से देखता है—तो उसे कोई लाभ नहीं होगा। दूसरे शब्दों में, वह एक कदम ही रहेगा, भले ही वह थोड़ा मीठा स्वाद दे।

संवाद में वक्त

सेना में, सिग्नल कोर में, हमारे पास एक पहचान चार्ट था जिसमें कुछ विशेष विशेषताएं सूचीबद्ध थीं जो यह स्पष्ट कर देती थीं कि कौन सा रेडियो स्टेशन हमारा है और कौन सा दुश्मन का; हम अपने रेडियो स्टेशनों को जानते थे। कुछ समय के लिए, रेडियो रसिप्शन तकनीकों पर विशेष प्रशिक्षण सत्रों के दौरान, हम एक मध्यवर्ती रेडियो स्टेशन स्थापित करते थे और किसी दुश्मन स्टेशन के संबद्धता का पता लगाने की कोशिश करते थे। हम पूछते, 'यह क्या है?' — या कहते, 'एक!' — और उन्हें बेनकाब करने के लिए जवाब सुनते थे। दूसरे शब्दों में, अगर हम किसी रेडियो स्टेशन की पहचान निश्चित रूप से नहीं कर पाते थे, तो हम उस पर भरोसा नहीं करते थे और उसकी पहचान करने की कोशिश करते थे। आध्यात्मिक जीवन में भी ऐसा ही है: जब हम देखते हैं कि कोई विशेष 'रेडियो स्टेशन' हमारा नहीं है, तो हम अपने आप से कहना चाहें: 'मुझे इस स्टेशन के साथ काम क्यों करना चाहिए? मानो क्या!' जब कोई रेडियो ऑपरेटर यह जानते हुए कि एक रेडियो स्टेशन किसी और का है, उसका संचालन करना चाहता है — तो यह एक गंभीर अपराध है।

लेकिन उसका अपराध तब और भी गंभीर हो जाता है जब वह जानता है कि वह रेडियो स्टेशन न केवल किसी और का है, बल्कि शत्रु का भी है — और वह दुश्मन के साथ काम करना चाहता है! मेरा आशय यह है कि दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंधों से जुड़े मामलों में, हमें सोच-समझकर और सावधानी से काम लेने की ज़रूरत है। और सबसे भरोसेमंद तरीका यह है कि हर कोई अपने आध्यात्मिक पिता से सलाह ले।

बातचीत में भी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि अक्सर यह किसी आध्यात्मिक विषय से शुरू होकर गपशप पर समाप्त हो जाती है। न केवल समय बर्बाद होता है, बल्कि निर्णय लेने से हम अपनी आत्मा का भी नाश करते हैं, क्योंकि किसी को भी आँकने का हमें कोई अधिकार नहीं है। हमारे पास यह अधिकार भी नहीं है कि हम दुनिया में हो रही घटनाओं का न्याय करें। यदि हम ऐसा कर सकते हैं, तो भारी मन से किसी विषय पर बात करने के बाद हमें परिस्थितियों की खराब स्थिति को सुधारने में मदद करनी चाहिए। हमें मृतकों का भी न्याय नहीं करना चाहिए, क्योंकि सौभाग्य से सभी लोगों की आत्माएँ ईश्वर के हाथों में हैं।

मैं देखता हूँ कि कई लोगों के लिए, एक ही लापरवाह शब्द अक्सर उनके विचारों को भ्रष्ट करने के लिए काफी होता है। क्या आप यह महसूस करते हैं कि अगर हम जो शब्द बोलते हैं उन पर कर लगाया जाए तो हम कतिने सावधान रहेंगे? अगर हमें बताया जाए, 'आप इतने शब्द बोलेंगे, आप इतनी राशिका भुगतान करेंगे,' तो हम अपने शब्दों को गनिंगे। टेलीफोन पर, हम यह सोचते हैं कि क्या कहना है और कतिना कहना है, क्योंकि हम अपनी कॉलों के लिए भुगतान करते हैं। आजकल शब्दों पर बहुत समय बर्बाद होता है।

— गेरोंडा, *द लैडर* में लिखा है कि निदा घृणा की संतान है। लेकिन क्या साधारण गपशप में प्रेम हो सकता है?

— हाँ। यदि आप किसी विशेष आत्मा से गहराई से प्रेम करते हैं और देखते हैं कि दूसरे उनसे ईर्ष्या करते हैं, तो आप उनके बारे में कुछ ऐसा कह सकते हैं ताकि दूसरे उनसे ईर्ष्या न करें। हर चीज़ की परीक्षा होनी चाहिए। हालाँकि, एक दोषपूर्ण या क्षतिग्रस्त व्यक्ति जो यह मानता है कि उसके साथ अन्याय हो रहा है, और जो इसलिए दुखी या चिड़चिड़ा है और किसी मामले पर अपना आक्रोश व्यक्त करता है, वह अन्य आत्माओं को इतना नुकसान पहुँचा सकता है जतिना कि शैतान भी नहीं पहुँचा सकता। यहूदा, मुर्र लाई महिला द्वारा मुर्र बहाने की बर्बादी पर नाराज़ था, और उसने कहा कि इस मुर्र को बेचकर उसका पैसा गरीबों में बाँटा जा सकता था। अन्य प्रेरति, जिनके पास अनुग्रह था, वे भी यहूदा के प्रभाव में आ गए।⁸⁵ उन्होंने यहूदा की बात में बाहरी सच्चाई देखी और उसके प्रभाव में आ गए, क्योंकि वे उसके धन-प्रेमी दिल को नहीं जानते थे। और मसीह ने अपने जुनून को संतुष्ट करने के लिए धन का बक्सा भी यहूदा को सौंप दिया, और उसने *'एक ऐसा बोझ उठा लिया जो उसके लिए बहुत भारी था'*⁸⁶

— गेरोंडा, जब दो लोग असहमत हों और किसी तीसरे व्यक्ति से अपनी राय पूछें, तो उस व्यक्ति को क्या रुख अपनाना चाहिए?

— यदि वह ऐसे लोगों से नपिट रहा है जिनका मतभेद किसी व्यक्तिगत बात को लेकर है, तो उसके लिए बेहतर है कि वह दोनों की उपस्थिति में अपनी राय व्यक्त करे। अन्यथा, प्रत्येक व्यक्ति अपने शब्दों का उपयोग अपने फायदे के लिए करेगा। हालाँकि, यदि उस व्यक्ति के शब्द जनिसे राय ली गई है, का वजन है, तो वरिधी का उपयोग करेंगे और जो उन्होंने कहा है, उसे भारी तोपखाने की तरह इस्तेमाल करके एक-दूसरे पर नरिदयता से बमबारी शुरू कर देंगे। और ये गोले वक्ता को ही लगेंगे, हालाँकि वह इसकी उम्मीद नहीं करेगा। इसलिए, उसे यथासंभव ऐसे लोगों से बचना चाहिए, ताकि

⁸⁵ देखें मत्ती 26:6 आदि; मरकुस 14:3 आदि; यूहन्ना 12:3 आदि।

⁸⁶ यूहन्ना 12:6.

वह अपनी आंतरिक शांति बिना रख सके और इन लोगों के बीच — और वास्तव में [पूरे] विश्व में शांति के लिए प्रार्थना कर सके। यदि वह प्रलोभन पैदा करने वाले ऐसे लोगों से पूरी तरह बच नहीं सकता, तो कम से कम उसे बहुत अधिक बोलने से बचना चाहिए, ताकि प्रलोभन कम हों। यह कि कुछ लोगों में कोई द्वेष नहीं होता, बल्कि वे केवल सतही होते हैं, इसका कोई महत्व नहीं है, क्योंकि वे भी अपनी सतहीपन के कारण ही प्रलोभन पैदा करते हैं।

एक माँ का प्रार

— गैरोना, यदि किसी व्यक्ति में प्रेम और विचारशील व्यवहार दोनों हों, तो क्या इसका मतलब है कि उसके हृदय में पवित्रता है?

— यह अलग-अलग होता है। अक्सर यह केवल सांसारिक शिष्टाचार होता है। हाँ, कई लोग दयालु और विनिम्र होते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उनमें आध्यात्मिक कुलीनता या आत्म-बलिदान की भावना होती है। उनका स्वभाव अच्छा हो सकता है, लेकिन यहाँ मुद्दा यह नहीं है। कोई व्यक्ति जो सांसारिक विनिम्रता दिखाता है और पाखंडी है, वह बहुत अधिक नुकसान पहुँचा सकता है। क्योंकि दूसरा व्यक्ति धोखा खा जाता है, अपना दिल उसके लिए खोल देता है, और अंततः अपनी श्रद्धा को एक सांसारिक व्यक्ति पर बर्बाद कर देता है जो यह नहीं जानता कि श्रद्धा का क्या मतलब है। यह उन लोगों को सोने के ड्राक्मा देने जैसा है जो पीतल के सिक्कों के अलावा कुछ नहीं जानते। न ही किसी को अपना समय व्यर्थ में उन लोगों को आध्यात्मिक सलाह देकर बर्बाद करना चाहिए जो सांसारिक बातचीत और स्वार्थी ढंग से अपनी राय व्यक्त करने में आनंद लेते हैं।

— गैरोन्डा, अगर किसी को कोई समस्या हो, वह आपके पास आए और उस पर अंतहीन रूप से बात करे, जबकि उस समय तक समस्या कुछ हद तक पहले ही हल हो चुकी हो, तो ऐसे में क्या करना चाहिए?

— जब वे पहली बार आते हैं, तो उनका एक बहाना होता है: उन्हें अपना मन हल्का करना है और उन्हें आपका बहुत समय लेने का अधिकार है। उस स्थिति में, आपको उनकी बात सुननी चाहिए। यदि आप नहीं सुनते हैं, तो वे यह सोचने लगेंगे कि आप उनसे तंग आ चुके हैं या आप उन्हें समझते नहीं हैं। हालाँकि, यदि उसके बाद भी वे बार-बार वही बात दोहराते रहते हैं, तो उनसे कहें: "ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हारी बात नहीं सुन सकता, बल्कि यह तुम्हारे किसी काम का नहीं है। तुम गर्मियों को सर्दी बना रहे हो। लेकिन अब हालात पहले से बेहतर हो रहे हैं; अब वसंत है। जल्द ही गर्मी आ जाएगी। फिर भी गर्मी में तुम सर्दियों की ठंड और [अपने ही विचारों से] कांपने के बारे में सोचते रहोगे।" हालाँकि, कभी-कभी आध्यात्मिक लोगों के बीच के रश्तों में भी यह होता है: एक व्यक्ति अपने दुख के बारे में दूसरे को बताने जाता है, लेकिन दूसरा अपनी खुशी खोने के डर से सुनना नहीं चाहता। वे शांति बिना रखने के लिए यह दिखावा कर सकते हैं कि उन्हें जल्दी है या विषय बदल सकते हैं। यह पूरी तरह से शैतानी है। ऐसा है मानो कोई मेरे ठीक बगल में मर रहा हो, और मैं थोड़ी दूर जाकर गाने गाने लगूँ। लेकिन 'रोने वालों के साथ रोना' का क्या? चर्च के गंभीर मामलों में तो और भी अधिक। यदि कोई ईसाई [तब भी] दूसरे की पीड़ा से सहानुभूति नहीं रखता, तो वह चर्च के शरीर का हसिसा नहीं है।

— और अगर मैं दूसरों की बुराइयों के लिए कोई बहाना नहीं ढूँढ पाता, तो क्या इसका मतलब है कि मैं कठोर-हृदय हूँ?

⁸⁷ रोमियों 12:15.

— आप दूसरों के लिए कोई बहाना नहीं ढूँढते, लेकिन अपने लिए एक बहाना ढूँढ लेते हैं? तो यह बहुत जल्द होगा कि मसीह आपके लिए कोई बहाना नहीं ढूँढ पाएंगे। यदि कोई व्यक्ति असावधान है, तो उसका हृदय एक क्षण में पत्थर की तरह कठोर हो सकता है। और एक क्षण में यह [फिर से] कोमल हो सकता है। एक माँ का हृदय प्राप्त करें। आप जानते हैं कि एक माँ कैसा महसूस करती है: वह सब कुछ माफ कर देती है और कभी-कभी कुछ शरारतों पर ध्यान न देने का नाटक करती है। धैर्यवान और क्षमाशील बनें; दूसरों के प्रति उदारता दिखाएँ, ताकि मसीह भी आपके प्रति उदारता दिखाएँ।

— गेरोन्डा, हृदय कैसे वसितृत होता है?

— यह तब वसितृत होता है जब आप लगातार दूसरों के कुकर्माँ, कमियों और चूकों को क्षमा करते हैं और उन्हें आईने की तरह देखते हैं। बेशक, दुष्ट कभी-कभी दूसरों के बारे में विचार उत्पन्न कर सकता है, खासकर जब इसके लिए कोई वास्तविक कारण हो। हालाँकि, इन विचारों को स्वीकार करना या अस्वीकार करना हमारे ऊपर है। अपने आप को दूसरे व्यक्ति की जगह रखकर, हम उनके साथ करुणा से पेश आएँगे और उन्हें माफ कर देंगे। इसके अलावा, यदि कोई काम द्वेष से नहीं बल्कि लापरवाही से किया गया है, तो वह समझने योग्य () है और [हममें] नकारात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करता। यह तथ्य कि मानवीय कमजोरियाँ मौजूद हैं, स्वाभाविक है और सभी लोगों में आम है। बुराई लोगों में दुर्भावनापूर्ण स्वभाव की उपस्थिति है।

— यदि कोई बुरी स्थिति में है और मैं अच्छी स्थिति में हूँ, तो क्या मैं उन पर प्रभाव डाल सकता हूँ?

— और क्या होगा अगर प्रलोभक आपको यह मामला इस तरह से पेश करे? आपको ऐसा क्यों लगता है कि आप बेहतर स्थिति में हैं? जसि क्षण मैं यह मानना शुरू कर देता हूँ कि मैं दूसरे से बेहतर हूँ, और उस पर तरस खाने लगता हूँ, तो मुझे अब उस पर नहीं, बल्कि खुद पर तरस खाना चाहिए। यहाँ तक कि जब [एक ईसाई] देखता है कि उसका पड़ोसी वास्तव में बुरी हालत में है, तो वह उसे बख्श देता है और उसके लिए कमियाँ ढूँढता है। वह केवल अपने लिए बहाने नहीं ढूँढता; वह खुद को दूसरों से भी बदतर पाता है, और अपनी ही दुष्टता से पीड़ित होता है। वह स्वीकार करता है कि ईश्वर ने उसे जो कुछ भी दिया है, उसके बदले में उसने कुछ भी नहीं दिया है, और कहता है: 'मेरे ईश्वर, मुझे अपने हिसाब में मत रखना; मुझे अलग कर दो। मैंने कुछ भी नहीं किया है। किसी और की मदद करो।' जो वास्तव में समृद्धि प्राप्त करते हैं, वे यह महसूस नहीं करते कि उन्होंने कोई बड़ी प्रगतिकी है, बल्कि वे केवल महान पश्चाताप, वनिम्रता और दिव्य प्रेम के साथ अकथनीय आनंद का अनुभव करते हैं।

अध्याय 4.

आदर के माध्यम से ईश्वर की करुणा कैसे जागृत होती है

सम्मान क्या है?

— गेरोना, श्रद्धा क्या है?

— श्रद्धा ईश्वर का भय, आंतरिक वनिम्रता और आध्यात्मिक संवेदनशीलता है। एक श्रद्धालु व्यक्ति शिर्मीला हो सकता है, लेकिन यह शिर्मीलापन उनके हृदय में मधु घोलता है; यह उनके जीवन में कष्ट नहीं बल्कि आनंद लाता है। एक श्रद्धालु व्यक्ति की गतिविधियाँ कोमल और सटीक होती हैं। वह स्पष्ट रूप से ईश्वर, स्वर्गदूतों और संतों की

उपस्थितिको महसूस करता है; वह अपने रक्षक स्वर्गदूत की उपस्थितिको महसूस करता है जो उस पर नजर रखता है। अपने मन में, वह लगातार यह ध्यान रखता है कि उसका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है।⁸⁸ और वह एक सरल, शुद्ध और पवित्र जीवन जीता है। एक भक्तमय व्यक्ति हर जगह सावधानी और वनिम्रता से व्यवहार करता है; वह हर पवित्र वस्तु को तीव्रता से महसूस करता है। उदाहरण के लिए, वह ध्यान रखता है कि वह आइकन (चित्रों) की ओर पीठ न करे; वह सुसमाचार, किसी आध्यात्मिक पुस्तक या किसी पवित्र वस्तु को उस जगह नहीं रखेगा जहाँ लोग बैठते हैं, जैसे सोफे या कुर्सी पर; यदि वह कोई आइकन देखता है, तो उसका हृदय आनंद से भर जाता है और उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। यहाँ तक कि किहीं भी लिखित मसीह के नाम को देखकर ही, वह उसका आदरपूर्वक चुंबन करता है, और उसकी आत्मा भीतर से आनंदित हो उठती है। भले ही वह जमीन पर पड़े अखबार के एक टुकड़े को देख ले, जिस पर, उदाहरण के लिए, मसीह का नाम या 'पवित्र त्रिमूर्तिकी पवित्र चर्च' शब्द छपे हों, वह झुकता है, उस टुकड़े को उठाता है, उसका आदरपूर्वक चुंबन करता है और इस बात से दुखी होता है कि उसे जमीन पर फेंक दिया गया था।

— तो, गेरोंडा, भक्त एक चीज़ है और श्रद्धा दूसरी?

— भक्ति⁸⁹ इत्र की तरह है, जबकि श्रद्धा धूप की तरह है। मेरे लिए, श्रद्धा सबसे बड़ा गुण है, क्योंकि एक श्रद्धालु व्यक्ति अपने ऊपर ईश्वर की कृपा को आकर्षित करता है; वह कृपा का पात्र बन जाता है, और यह स्वाभाविक रूप से उसके साथ बनी रहती है। फिर, जब उनकी कृपा उसके माध्यम से 'प्रकट होती है', तो हर कोई उसका सम्मान करता है और उसके प्रति सिद्धाभावना रखता है, जबकि एक नरिलज्ज व्यक्ति वियस्कों और बच्चों दोनों में घृणा उत्पन्न करता है।

तुम्हें महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक श्रद्धावान होना चाहिए। स्वभाव से ही एक महिला को श्रद्धावान होना चाहिए। यदि पुरुषों में श्रद्धा की कमी होती है, तो वे बस उदासीन होते हैं। लेकिन यदि महिलाएँ अपनी श्रद्धा खो देती हैं, तो वे गंभीर अपराध करने लगती हैं। एक आदमी ने मुझसे कहा: "मेरी पत्नी और मैं पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा पर थे और यॉर्डन नदी गए। जब मैं उसके पानी में गया और उसमें स्नान किया, तो वह कनारे पर बैठी रही और अपने पैर यॉर्डन के पानी में लटकाए हुए थीं! 'अरे,' मैंने कहा, ' , तुम! तुम यहाँ आखिर कर क्या रही हो? क्या तुम यॉर्डन नदी सिर्फ अपने पैर धोने आई थीं?" मैं गुस्से में आ गया और उसे खूब डाँटा। ऐसा लगता है कि उसकी पत्नी एक पूरी तरह से उदासीन व्यक्ति थी जिसे [मूल बातें] समझ ही नहीं आती थीं, जबकि वह बेचारा खुद बहुत धार्मिक था।

धार्मिकता के संचरण पर

— गेरोंडा, धार्मिकता कैसे प्राप्त की जाती है?

— संत कहते हैं कि धर्मपरायणता प्राप्त करने के लिए, मनुष्य को ऐसे लोगों के बीच रहना या उनका संग करना चाहिए जिनमें यह गुण हो और यह देखना चाहिए कि वे स्वयं का आचरण कैसे करते हैं। जब किसी ने पैसियोंस महान से पूछा कि कोई ईश्वर का भय कैसे प्राप्त कर सकता है, तो उन्होंने उत्तर दिया: "ऐसे लोगों के साथ मल्लो-जुलो जो ईश्वर से प्रेम करते हैं और ईश्वर का भय रखते हैं, ताकि तुम भी ईश्वर का भय प्राप्त कर सको।" बेशक, इसका यह मतलब नहीं है कि कोई केवल यह देखे कि वे क्या करते हैं और उन कार्यों के अर्थ को भीतर से महसूस करके बना बाहरी रूप से

⁸⁸ 1 कुरिन्थियों 3:16 और 6:19 देखें।

⁸⁹ 'धर्मपरायणता' शब्द से, एल्डर का तात्पर्य भक्तिके बाहरी रूपों के पालन से है जिनमें अनुरूप आंतरिक अवस्था का अभाव होता है।

उसकी नकल करे, क्योंकि उस स्थिति में यह भक्त नहीं, बल्कि झूठी भक्त होगी। जो झूठा है वह विकरषति करता है। धार्मिकता एक व्यक्तिके भीतर ईश्वर की कृपा है। एक धार्मिक व्यक्ति विहीन करता है जो वह महसूस करता है। बेशक, हमारे भीतर एक स्वाभाविक श्रद्धा होती है, लेकिन यदि हम इसे विकसित नहीं करते हैं, तो टंगलाशका, वसिष्ठ पैदा करके, हमें असंवेदनशीलता और अनादर में धकेल देता है। हालाँकि, एक श्रद्धालु व्यक्तिके व्यवहार को देखकर श्रद्धा फिर से जागृत होती है।

— लेकिन, गेरोन्डा, पवतिर पति केवल श्रद्धा के बारे में ही क्यों बात करते हैं, यह कहते हुए कि यदि आप इसे प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको किसी ऐसे व्यक्तिके साथ मलिना-जुलना चाहिए जिसके पास यह गुण हो? वे अन्य गुणों के बारे में भी ऐसा क्यों नहीं कहते?

— क्योंकि श्रद्धा संक्रामक होती है। एक श्रद्धालु व्यक्तिकी गतिविधियाँ और व्यवहार, एक सुगंध की तरह, दूसरों में फैल जाते हैं; बशर्ते, बेशक, कि दूसरे व्यक्ति में अच्छा स्वभाव और वनिम्रता हो। मैं आपको यह बताऊँगा: यदि किसी व्यक्ति में श्रद्धा नहीं है, तो उसके पास कुछ भी नहीं है। एक श्रद्धालु व्यक्ति चाहे वह कतिना भी अनपढ़ क्यों न हो, हर पवतिर चीज को स्पष्ट रूप से देखता है, उसे वैसा ही देखता है जैसा वह वास्तव में है। वे द्रव्य अर्थों से संबंधित किसी भी बात में कोई गलती नहीं करते। एक भक्त व्यक्ति उस बच्चे की तरह होता है जो अपने माता-पति के प्रति कोई बुरा विचार नहीं रखता, क्योंकि वह अपने माता-पति से प्रेम करता है और उनका सम्मान करता है और उनके द्वारा किए गए हर काम को अच्छा और शुद्ध देखता है। तो फिर, परमेश्वर का, जो हर तरह से अतुलनीय और पूर्ण है, सम्मान करना कतिना अधिक आवश्यक है! जो व्यक्ति श्रद्धाहीन है, वह सदिधांतों के संबंध में त्रुटियाँ करता है और भटक जाता है। मैं देखता हूँ कि श्रद्धाहीन लोग पवतिर धर्मग्रंथों और पवतिर पतियों की कृतियों पर व्याख्याएँ या टीकाएँ लिखते समय क्या-क्या गलतियाँ करते हैं।

सभी आध्यात्मिक मामलों में, श्रद्धा और हृदय आवश्यक हैं। श्रद्धा से जो कुछ भी उत्पन्न होता है वह पवतिर हो जाता है। विशेष रूप से, किसी विशेष संत के लिए एक सेवा रचने के लिए, व्यक्तिको उस संत से प्रेम करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए; केवल तभी सेवा हृदय से रची जाएगी और उसमें श्रद्धा की सुगंध व्याप्त होगी। और यदि कोई द्रव्य प्रेरणा, द्रव्य पागलपन की अवस्था प्राप्त कर ले, तो छंद अपने आप भीतर से प्रवाहित होंगे।

— गेरोना, श्रद्धा प्राप्त करने के लिए और क्या मदद करता है?

— इससे सभी पवतिर चीजों का मन से अध्ययन करने और उनमें गहराई से उतरने, साथ ही हमें दिए गए अनुकूल अवसरों का उपयोग करने में मदद मिलती है। यह सब धीरे-धीरे एक व्यक्तिके भीतर श्रद्धा को जगाता है। उदाहरण के लिए, यदि भुझे थोड़ी देर के लिए चर्च में जाकर प्रार्थना करने का एक अनुकूल अवसर मिलता है, और मैं उसका उपयोग नहीं करता, तो मैं स्वयं को अनुग्रह से वंचित कर देता हूँ। लेकिन जब मैं अंदर जाना चाहता हूँ और किसी बाधा के कारण ऐसा नहीं कर पाता, तो मैं अनुग्रह नहीं खोता, क्योंकि ईश्वर मेरे अच्छे इरादे को देखता है। आदर-सम्मान को विकसित करने में, अपने क्षेत्र, अपने देश के संतों से परिचित होना, उनसे प्रेम करना और खुद को उनके साथ जोड़ना भी बहुत मददगार होता है। जब हम संतों का सम्मान करते हैं और उनसे प्रेम करते हैं तो ईश्वर प्रसन्न होते हैं। और जब हम संतों के प्रति सम्मान रखते हैं, तो ईश्वर के प्रति हमारा सम्मान कतिना अधिक होगा!

— गेरोन्डा, चर्च में श्रद्धापूर्ण व्यवहार हमें कैसे मदद करता है?

— जब आप चर्च जाएँ, तो अपने आप से कहें: 'मैं कहाँ जा रहा हूँ? मैं अब ईश्वर के घर में प्रवेश कर रहा हूँ। मैं क्या कर रहा हूँ? मैं प्रतिमाओं की, ईश्वर की पूजा कर रहा हूँ।' आप अपनी कोठरी से या आज्ञाकारिता में चर्च जाते हैं। तो चर्च से स्वर्ग और उससे भी आगे — ईश्वर तक जाएँ।

— और यह कैसे होता है?

— चर्च ईश्वर का घर है। और हमारा सच्चा घर स्वर्ग में है। यहाँ बहनें गाती हैं। वहाँ स्वर्गदूत, संत हैं... यद्यपि किसी सांसारिक घर में जाते समय, हम दरवाजा खटखटाते हैं, अपने पैर पोंछते हैं और वनिम्रता से बैठते हैं, तो फरि हमें ईश्वर के घर में, जहाँ मसीह को बलदान के रूप में अर्पित किया जाता है, अपना आचरण कैसा रखना चाहिए? अपने द्रव्य रक्त की एक बूंद से, उन्होंने हमें पाप से मुक्ति दिली; और उसके बाद, हमारे उपचार के लिए, वे [अपने अमूल्य] रक्त की नदियाँ बहाते हैं और हमें अपने परम पवित्र शरीर से पोषित करते हैं। इस प्रकार, जब हम इन सभी वसिम्पकारी और द्रव्य घटनाओं को याद करते हैं, तो वे हमें चर्च में श्रद्धापूर्वक व्यवहार करने में मदद करती हैं। फरि भी, दैवीय अनुष्ठान में मैं यह देखता हूँ कि ठीक उसी क्षण जब पुरोहित उद्घोषणा करते हैं, 'आओ, हम अपने हृदय उठाएँ'—और हम उत्तर देते हैं, 'प्रभु की ओर उठाते हैं'—तब भी कतिने कम लोगों का मन वास्तव में प्रभु की ओर मुड़ता है! इसलिये, हमारे लिए यह कहना बेहतर होगा कि हम मन में कहें: 'हमारे हृदय प्रभु की ओर मुड़ें,' क्योंकि हमारा मन और हृदय लगातार नीचे की ओर सरकते रहते हैं। इसके अलावा, हम झूठ भी बोल रहे होते हैं, जब हम कहते हैं 'हमारे हृदय प्रभु की ओर हैं,' जबकि हमारा मन वहाँ [ऊँचे] नहीं होता। यह स्पष्ट है कि यदि हम अपने हृदयों को 'ऊपर की ओर' मोड़े रखें, तो बाकी सब कुछ भी 'ऊपर की ओर' मुड़ जाएगा।

— जेरोडा, अगर कोई चर्च में खूबसूरती से गाता है, तो उसका क्या फायदा?

— [गायक] को अपना मन द्रव्य अर्थों पर केंद्रित रखना चाहिए और श्रद्धा की भावना बनाए रखनी चाहिए। इसके अलावा, किसी को ट्रोपारिया और स्टचिरा को साहित्यिक कृतियों के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि उनके द्रव्य अर्थ को हृदय से समझना चाहिए। श्रद्धा एक बात है, जबकि चर्च गायन की कला और वज्जान दूसरी। भक्तिके बिना कला केवल रंग की एक बाहरी परत है। जब एक गायक भक्तिके साथ अपना कर्तव्य निभाता है, तो भजन-गायन उसके हृदय से निकलता है और वह मार्मिक रूप से गाता है। जब कोई व्यक्ति आंतरिक रूप से अच्छी आध्यात्मिक स्थिति में होता है तो सब कुछ ठीक हो जाता है। इसलिये, मार्मिक रूप से गाने के लिए, मन से शांत और श्रद्धा के साथ हृदय से गाना आवश्यक है। यदि किसी गायक के मन में अशुद्ध विचार हैं, तो उसका भजन कैसा होगा? तब वह हृदय से गाने में असमर्थ होगा। क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है: *'यदि कोई प्रसन्नचित्त है, तो वह गाए'*⁹⁰ एक बार, जब संत जॉन कुकुजेलसि अपनी बकरियों की देखभाल कर रहे थे और उन्होंने गाना शुरू किया, तो बकरियाँ अपने पैरों पर खड़ी हो गईं। इससे, उन्हें देखने वालों को एहसास हुआ कि यह शाही दरबार के गायक, कुकुजेलसि ही थे। इसलिये, मसीह के लिए, आप जो कुछ भी करें, उसे पूरे दिल से करें। और अपनी कढ़ाई में श्रद्धा डालो, क्योंकि इसका उपयोग पवित्र वस्तुओं को ढकने के लिए होगा, यहाँ तक कि वे आवरण भी जिन्हें तुम कास्सोक के लिए सलाते हो।⁹¹ जब किसी व्यक्ति में श्रद्धा होती है, तो उसकी आत्मा की सुंदरता उसके हर काम में झलकती है: पढ़ने में, गाने में, और यहाँ तक कि उसकी गलतियों में भी।

— उनकी गलतियों में भी?

— हाँ। देखिए, श्रद्धा और वनिम्रता उनकी गलतियों में भी मौजूद होती हैं।

⁹⁰ याकूब 5:13.

⁹¹ कथिया एक बड़े हैंडल वाले धूपदान को कहते हैं, जिसे सेवा के दौरान कुछ वशिष्ट क्षणों पर चर्च में सेवा करने वाला भिक्षु (अकोलाइट) धूप जलाने के लिए उपयोग करता है; अकोलाइट अपने दाहिने कंधे पर कढ़ाई किया हुआ चोगा पहनता है। कथिया के हैंडल के ऊपर चारकोल पाउडर और लोहबान के लिए कक्ष होते हैं, जबकि इसके सरि से घंटियाँ लटकी होती हैं, जो धूप जलाते समय लयबद्ध खनक उत्पन्न करती हैं।

बाहरी धार्मिकता पर

जनिके पास महान विश्वास और सच्ची श्रद्धा होती है, वे उच्चतम, आध्यात्मिक, उस अकथनीय से पोषित होते हैं। हालांकि, ऐसे भी लोग हैं जनिके पास केवल शुष्क, बाहरी श्रद्धा का रूप होता है। ऐसे लोग अपने आप से रूखेपन से कहते हैं: 'ठीक है, अब मैं चर्च में प्रवेश कर रहा हूँ, इसलिए मुझे ठीक से बैठना चाहिए, मुझे हलिना नहीं चाहिए, मुझे सरि झुकाना चाहिए, और मुझे इस तरह से क्रॉस का चिन्ह बनाना चाहिए!' ऐसे भी हैं जो अपने विश्वास में डगमगा सकते हैं, फरि भी पूरी प्रार्थना के दौरान खड़े रहते हैं।

— क्या वे, गेरोन्डा, किसी बात से परेशान हैं, या कुछ खोज रहे हैं? वे ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं?

— उनके भीतर कुछ है... [यह सब] अच्छा है, लेकिन इसे भीतर से महसूस किया जाना चाहिए। ये कार्य केवल बाहरी रूप से नहीं किए जाने चाहिए। चर्च में प्रवेश करते समय श्रद्धा से अपनी स्कूपिया उतारना एक बात है, और सरि ठंडा करने के लिए इसे उतारना बिल्कुल दूसरी बात है। श्रद्धा इस बात से स्पष्ट होती है कि हम पवतिर Communion कैसे ग्रहण करते हैं, हम एंटडोरॉन कैसे लेते हैं, और इसी तरह।

— गेरोन्डा, क्या कोई व्यक्ति दूसरे के श्रद्धा दिखाने के तरीके से भटक सकता है?

— मैं आपको यह बताऊंगा: यदि आप एक चौड़ा क्रॉस का चिन्ह बनाते हैं, लेकिन इसे सादगी और वनिम्रता से करते हैं, तो यह दूसरों को परेशान नहीं करेगा। लेकिन अगर कोई व्यक्ति लगातार यह सोचता रहता है कि क्या दूसरे उसे देख रहे हैं और बिना रुके क्रॉस का चिन्ह बनाता रहता है, तो लोग उस पर हँसेंगे। या अगर वह चर्च के पास से गुजरता है और यह देखने के लिए इधर-उधर देखता है कि आस-पास कोई है, या शायद तब तक 'थोड़ी देर रुकता' है जब तक कि एक बड़ी भीड़ इकट्ठा नहीं हो जाती, और तभी वह खुद को क्रॉस करने और झुकने लगता है ताकि वह देखा जा सके, तो दूसरे उसका मजाक उड़ाने में सही हैं। आप देख सकते हैं कि सांसारिक भावना को स्वीकार नहीं किया जाता। जब सच्ची श्रद्धा होती है, तो वह स्पष्ट होती है। लेकिन सच्ची श्रद्धा के बिना, ⁹² ' (काम ठीक से करना) 'bezoobrazno' (काम गलत तरीके से करना) में बदल जाता है।

'पवतिर वस्तु कुतों को मत डालो'⁹³

जब लोग आपको आशीर्वाद के लिए पवतिर अवशेषों पर रखने हेतु बीमारों के कपड़े देते हैं, तो सावधानी बरतें कि ये केवल बनियान ही हों, न कि अंडरवियर की कोई अन्य वस्तु। कुछ भी और अनुपयुक्त है — यह अनादर है। यह स्पष्ट है कि आप सूर्य को अपवतिर नहीं कर सकते, न ही आप ईश्वर को अपवतिर कर सकते हैं। तथ्य यह है कि इस तरह के अनादर के माध्यम से, एक अशुद्ध आत्मा हम पर हावी हो जाती है।

पहले, जब लोग बीमार पड़ते थे, तो वे अपने ही दीपक का तेल निकालकर उससे अपने शरीर पर लेप लगाते थे और ठीक हो जाते थे। आजकल, दीपक केवल औपचारिकता के लिए, सरि रोशनी के लिए जलाया जाता है, और दीपक की सफाई करते समय तेल को सकि में डाल दिया जाता है। एक बार, मैं एक घर में था और मैंने घर की महिला को सकि में तेल का दिया धोते हुए देखा। मैंने उससे पूछा, 'यह पानी कहाँ जाता है?' उसने जवाब दिया, 'नाली में।' "अच्छा," मैंने कहा, "तो एक तरफ आप दीपक का तेल लेकर अपने बच्चे पर बीमारी के समय क्रॉस का निशान लगाती हैं, और दूसरी तरफ इस

⁹² रोमियों 13:13. 1 कुरिन्थियों 14:40. 1 थिमोथी 4:12.

⁹³ मत्ती 7:6.

छोटे से काँच के बर्तन का सारा तेल नाली में बहा देती हैं? आप इसके लिए क्या बहाना दे सकती हैं? और ईश्वर का आशीर्वाद आपके घर पर कैसे आएगा?"

आधुनिक घरों में, किसी पवित्र वस्तु का नपिटान करने के लिए कोई जगह नहीं है, जैसे कविह कागज का टुकड़ा जिसमें एंटीडोर लपेटा गया था। लेकिन मुझे याद है कि हमारे घर में, जिस पानी से हम बर्तन धोते थे, वह भी नाली में नहीं जाता था। उसे कहीं और फेंका जाता था, क्योंकि यहाँ तक कि ब्रेड के टुकड़े भी पवित्र होते हैं, क्योंकि हम भोजन से पहले और बाद में प्रार्थना करते हैं। आज वह सब कुछ चला गया है, और साथ ही दैवीय अनुग्रह भी चला गया है, और लोग बेकाबू हो रहे हैं।

आइए हम हर चीज़ के बारे में यथासंभव सावधानी बरतें। पवित्र सहभाग, एंटीडोरन या अभिषेक के बाद, अपने हाथों को अल्कोहल से गीले कपास के पैड से पोंछना और फिर उसे जला देना अच्छा होगा। जब हम वेदी की सफाई करते हैं, तो सफाई के बाद एकत्र की गई हर चीज़ को समुद्र में फेंक दिया जाना चाहिए या किसी साफ जगह पर जला दिया जाना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि एंटीडोरन या पवित्र देह का कोई कण फर्श पर गिर गया हो। बेशक, अगर पवित्र देह का एक छोटा सा कण फर्श पर गिर जाए, तो मसीह को पैरों तले कुचला नहीं जाता, बल्कि दिव्य अनुग्रह हमसे दूर हो जाता है।

वदिशों में, चर्चों में विशेष नालियाँ तक नहीं होती हैं। प्रोस्कोमडिया का पानी बारिश के पानी के साथ ही बहा दिया जाता है। [वदिशों में पादरी] कहते हैं, 'हमें विशेष नालियाँ लगाने से मना किया गया है ताकि कीटाणु न बढ़ें।' लोग शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के कीटाणुओं से घरि हुए हैं, और फिर भी, अगर पवित्र रहस्यों की एक बूंद उनके सरि पर गिर जाए, तो वे कहते हैं: 'कीटाणु बढ़ जाएँगे!' तो फिर ईश्वर की कृपा कैसे आ सकती है? दुनिया का पागलपन यहीं से शुरू होता है। सौभाग्य से, अभी भी युवा और वृद्ध, दोनों तरह की धर्मनष्ट महिलाएँ हैं, और उनके लिए ही ईश्वर इस दुनिया को बनाए रखता है।

— गेरोन्डा, एक महिला ने हमसे सेंट आर्सेनयिस का एक आइकन बनाने को कहा है, जिससे वह अपने बैठक कक्ष में लटका सके।

— क्या वहाँ केवल आइकॉन ही होंगे? क्या वहाँ अन्य तस्वीरें या फोटो नहीं होंगी? और साथ ही: क्या वे उस बैठक में धूम्रपान नहीं करेंगे? उसके लिए बेहतर होगा कविह इस आइकॉन को किसी दूसरे कमरे में, अन्य आइकॉनों के साथ आइकनोस्टेसिस में रखे, और वहाँ प्रार्थना करे। एक घर में जहाँ मैं कभी गया था, उन्होंने सीढ़ियों के नीचे एक आइकनोस्टेस लगा रखा था, जबकि वहाँ बहुत जगह थी। और एक दूसरे घर में, उस घर की महिला ने अपना आइकनोस्टेस एक नाली की पाइप के सामने लगा रखा था। "खैर," मैंने उससे पूछा, "आपको ऐसी जगह पर आइकनोस्टेस रखने का विचार आखिर कैसे आया?" "खैर," उसने कहा, "मुझे यहाँ अच्छा लगता है।" और यह तो पूर्व की ओर भी मुँह नहीं कर रहा था—नहीं, यह उत्तर की ओर मुँह कर रहा था! तो फिर, उसके बाद कृपा कैसे आएगी? *"क्योंकि जिस के पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुत होगा; परन्तु जिस के पास नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।"*⁹⁴ हमें लगता है कि हमारे पास है, लेकिन जो कुछ हमारे पास है, वह भी हमसे ले लिया जाता है।

सम्मान धीरे-धीरे खोता जा रहा है, और जो बुराई हम देखते हैं, वह इसी से उत्पन्न होती है। लापरवाही से कोई भी व्यक्ति भूत-प्रेत की चपेट में आ सकता है। एक महिला थी—भगवान उसे माफ करें, वह अब नहीं रही—जो इस वजह से भूत-प्रेत की चपेट में आ गई क्योंकि उसने पवित्र जल सकि में डाल दिया था। उसकी बोतल में थोड़ा सा पवित्र जल बचा

⁹⁴ मत्ती 13:12.

था। "आह," उसने कहा, "यह पवतिर जल खराब हो गया है; मुझे इसे फेंक देना चाहिए, और वैसे भी मुझे बोतल चाहिए।" उसने पवतिर जल फेंक दिया और बोतल भी धो दी, क्योंकि उसमें तुलसी के नशान थे, और फरि वह एक भूतहा व्यक्ती की तरह व्यवहार करने लगी। अनुग्रह चला गया, क्योंकि अनुग्रह एक अनादरपूर्ण व्यक्ती में नहीं रह सकता।

— लेकिन गेरोन्डा, अगर कोई गलती से पवतिर जल फेंक दे तो?

— यदि वे स्वयं पवतिर जल की बोतल, उदाहरण के लिए, किसी अलमारी में रख दें, और कुछ समय बाद यह एहसास न हो कि यह पवतिर जल है, तो दोष आधा उन पर आता है। हालाँकि, यदि किसी और ने इसे वहाँ रखा हो, और जसिने इसे डाला वह यह नहीं जानता था कि यह पवतिर जल है, तो दोष उन पर नहीं आता।

यदि कोई पवतिर वस्तुओं का आदर नहीं करता, तो दविय अनुग्रह उसके नकिट कैसे आ सकता है? अनुग्रह उन लोगों के पास जाएगा जो इसका सम्मान करते हैं। पवतिर धर्मग्रंथ कहता है, 'पवतिर वस्तु कुत्तों को मत दो।' आध्यात्मिक संवेदनशीलता के बिना प्रगति असंभव है। पवतिर पर्वत पर केलियोट समुदाय के एक [भिक्षु ने] एक चर्च से आइकनोस्टेसिस को निकालकर अपने चर्च में रख दिया। एक अन्य ने वेदी के ऊपर की छत से पत्थर की पट्टियाँ हटाकर बरामदे को ढकने के लिए अपनी कोठरी में ले गया। बारिश शुरू हो गई, पानी वेदी में रसि गया और सीधे पवतिर सहिसन पर गरिने लगा! एक दिन मैं अंदर गया और मैंने क्या देखा: चर्च को बड़ी धूमधाम से पवतिर किया गया था, और वेदी के केंद्र में पवतिर अवशेष थे — एक कशेरुका। मैंने इन अवशेषों को लिया और उन्हें एक विशेष स्थान पर धोया। बाद में मैंने यह करने वालों से कहा, "तुमने यह क्या किया है!" 'चर्च का अभिषेक किया गया है, फरि भी आपने छत से पत्थर हटा दिए हैं, और पानी सीधे पवतिर वेदी पर गरि रहा है!' फरि उन्होंने एक राजमस्तिरी को ढूँढा, गए और छत की थोड़ी मरम्मत की। और एक अन्य मामले में, उन्होंने समुद्र तट की सैरगाह बनाने के लिए वेदी से तख्तियाँ ले लीं। उठे हुए तूफ़ान से वे तख्तियाँ और सीमेंट दोनों समुद्र में बह गए। ऐसे काम करने वालों को यह एहसास भी नहीं होता कि यह सब कतिना अनादर है। मुझे याद है कि कोनटिसा में एक बूढ़ा आदमी था जो चर्च की दीवार पर खरोंच लगाने पर बच्चों को भगा देता था: वह इसे अनादरपूर्ण मानता था। और देखो अब हम कहाँ पहुँच गए हैं!

हर चीज में आदर

और एक और बात ध्यान में रखने वाली है: आपके सोफे पर क्रॉस बखिरे हुए थे, लेकिन आपको उन क्रॉस पर नहीं बैठना चाहिए या उन पर पैर नहीं रखना चाहिए। यहूदी जूते बनाते हैं जनि पर क्रॉस न केवल तलवों के बाहर, बल्कि अक्सर अंदर भी — एड़ियों और तलवों के नीचे — चतिरति होते हैं। अपना पैसा चुकाओ और क्रॉस पर पैर पटकते चलो! वे झुनझुने भी बनाते थे, जनि पर एक तरफ़ मसीह और परमेश्वर की माता और दूसरी तरफ़ पतरस की तस्वीर होती थी। ऐसा लगता था मानो वे कह रहे हों: 'क्या फर्क पड़ता है: पतरस या मसीह!' गरीब लोग मसीह और परमेश्वर की माता को देखते थे और अपने बच्चों के लिए ये झुनझुने खरीद लेते थे। बच्चे उन खड़खड़ियों को फर्श पर फेंकते, उन पर पैर पटकते, उन्हें गंदा कर देते... और अब, मुझे बताया गया है, चीन के पास कहीं, कैथोलिक मशिनरी ऐसे मेडल पहनते हैं जनि के अंदर की तरफ मसीह और बाहर की तरफ बुद्ध की तस्वीर बनी होती है। या तो अंदर केवल मसीह की छवि दिखाई दे, या खुले तौर पर उनकी घोषणा करें! अन्यथा, आखरिकार, ईश्वर की कृपा नहीं आएगी! और यहाँ, ग्रीस में, दुर्भाग्य से, ऐसे लोग रहे हैं जनिन्होंने बिना किसी दूसरे विचार के, परमेश्वर की अतिपवतिर माता की छवि डाक टिकटों पर बनाई है, जनिहें इधर-उधर फेंका जाता है और पैरों तले रौंदा जाता है।

— गेरोना, क्या किसी व्यक्ती में कुछ चीजों के प्रति श्रद्धा हो सकती है, लेकिन दूसरों के प्रति नहीं?

— नहीं। यदशिरदधा सचची है, तो एक व्यक्तीमें वह हर चीज के लिए होती है। एक बार, एक पादरी स्टावरोनकिता मठ में ठहरे थे। छठे भजन के दौरान⁹⁵, उन्होंने स्टासडिया की सीट नीचे की ओर बैठ गए। 'फादर,' मैंने उनसे कहा, 'वे छठा भजन पढ़ रहे हैं।' — "लेकनि," उन्होंने जवाब दिया, "मुझे इसे इस तरह से ग्रहण करना आसान लगता है!" बस इस बारे में सोचिए! कई साल बाद, वह वापस आए और मुझे दूढ़ लिया। हमारी बातचीत के दौरान, उन्होंने बताया कविह कागज के आइकन छोटे लकड़ी के बोर्डों पर चपिकाकर उन्हें आशीर्वाद के रूप में बांटते थे। "और आप उन्हें चपिकाते कैसे हैं?" मैंने पूछा। "मैं," उसने कहा, "लकड़ी पर गोंद लगाता हूँ, उस पर आइकन रखता हूँ, और जब मैं काफी सारे बना लेता हूँ, तो एक आइकन के ऊपर दूसरा रखता हूँ, और फिर खुद उन पर बैठ जाता हूँ ताकि गोंद ठीक से जम जाए। मैं कोई कतिब या कुछ और उठाकर थोड़ा पढ़ लूंगा।" यह सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए! मैंने कहा, "तुम यह क्या कर रहे हो! आइकन पर बैठकर उन्हें चपिका रहे हो?!" — "अच्छा," उसने पूछा, "क्या यह मना है?"

देखो ये चुपचाप कतिनी दूर तक जा रहे हैं? समस्या यह है कि अनादर स्थिति नहीं रहता; यह और भी बदतर होता जाता है। एक व्यक्ती तो भलाई के लिए वकिसति होता है या बुराई के लिए। और यह पादरी—देखो उसने कहाँ से शुरुआत की और कहाँ पहुँच गया! पहले: 'मुझे छःभजन-संग्रह का पालन करना आसान लगता है,' और फिर वह इतना आगे बढ़ गया कि कहने लगा: 'इस तरह प्रतमाएँ चपिक जाएँगी, और मैं उन्हें पूज सकूँगा।' स्टावरोनकिता में, उसे यह अजीब लगा कि मैंने उसके सामने छःभजन-संग्रह का उल्लेख किया था। फिर भी वहाँ अन्य वृद्ध भिक्षु खड़े थे। वे थोड़ा सा स्टासडिया (स्टैंड) से सहारे लिए हुए खड़े थे और उन्होंने एक भी मांसपेशी नहीं हिलाई। एक बात तो तब है जब आप थके हों, बीमार हों, आपके पैर कांप रहे हों, और इसलिए आप बैठ जाएँ; खैर, मसीह आपको इसके लिए दंड नहीं देंगे। लेकिन यह सोचना कि जिस तरह से आप कर रहे हैं वह बेहतर है और यह कहना कि: 'मैं इसे बैठने पर बेहतर समझता हूँ,' यह एकदम अलग बात है। इसके लिए क्या बहाना हो सकता है? आध्यात्मिक जीवन कोई सुखद मनोरंजन नहीं है। यदि आपको दर्द हो रहा है, तो बैठ जाएँ; मसीह कोई अत्याचारी नहीं हैं। और बाबा इसाक कहते हैं: 'यदि आप खड़े नहीं हो सकते, तो बैठ जाएँ।'⁹⁶ लेकिन वे यह नहीं कहते: 'यदि आप खड़े हो सकते हैं, तो बैठ जाएँ!'

— गेरोना, मुझे बताइए, हम छह भजनों के दौरान क्यों नहीं बैठते?

— क्योंकि यह अंतमि न्याय का प्रतीक है। इसीलिए छह भजन पढ़ते समय मन का अंतमि न्याय के घड़ी की ओर मुड़ना अच्छा है। छह भजन पढ़ने में छह या सात मिनट लगते हैं। पहले छंद के बाद, हम क्रॉस का चहिन भी नहीं बनाते, क्योंकि मसीह अब सूली पर चढ़ने नहीं आएंगे, बल्कि [दुनिया के सामने] न्यायाधीश के रूप में प्रकट होंगे।

⁹⁵ छह भजन – भजन संहिता से छह चयनित भजन (भजन 3, 37, 62, 87, 102 और 142), जो मैटनिस की शुरुआत में पढ़े जाते हैं। पहले तीन भजनों के बाद, जो छह भजनों के पहले खंड का गठन करते हैं, जब 'महमा, और अब। आल्लेलुया (3)' शब्द पढ़े जाते हैं, तो क्रॉस का चहिन और कमर तक झुकने की क्रिया नहीं की जाती है, जैसा कि चर्च के वधियों में अन्य समान मामलों में निर्धारित है।

⁹⁶ 'यदि, जब आप जागते हुए प्रार्थना कर रहे हों, तो लम्बे समय तक खड़े रहने से आप थक जाएँ, और थकान से क्लान्त हो जाएँ, और एक विचार आपको बताता है—या यूँ कहें कि, वह धूर्त साँप की तरह आपके मन में बोलता है: "रुक जाओ, क्योंकि तुम खड़े नहीं रह सकते"—तो उसे उत्तर दो: 'नहीं; पर मैं एक काथसिमा के लिए बैटूँगा, और यह नींद से बेहतर है। और भले ही मेरी जीभ मौन हो और भजन न बोलें, मेरा मन फिर भी प्रार्थना में ईश्वर से संवाद कर रहा है; इसलिए, जागना किसी भी नींद से अधिक लाभदायक है।' तुलना करें: *अबा इसाक द सीरयिना* रचनाएँ। सर्गेव पोसाद, 1911। प्रवचन 52। पृ. 231।

पहले जो श्रद्धा हुआ करती थी

— गेरोन्डा, हमारे समय में भक्ति इतनी दुर्लभ क्यों है?

— क्योंकि लोग आध्यात्मिक रूप से जीना बंद कर चुके हैं। वे हर चीज़ की व्याख्या सांसारिक तर्क से करते हैं और दैवीय अनुग्रह को बाहर निकाल देते हैं। लेकिन पहले कतिनी श्रद्धा हुआ करती थी! एटोलीया और अकारनानिया में⁹⁷ वहाँ बहुत साधारण और धर्मनष्टि बूढ़ी महिलाएँ थीं, जो प्रसा के मठ के गधों के सामने ज़मीन पर गरि पड़ती थीं और उन्हें प्रणाम करती थीं जब [भक्ति] अपने कामों के लिए गधों पर सवार होकर आते थे। बूढ़ी महिलाएँ कहती थीं, 'आखिरकार, ये तो परमेश्वर की माता के छोटे-छोटे गधे हैं।' — और वे उन्हें प्रणाम करते हुए चल देतीं! यदि वे परम पवित्र माता परमेश्वर के मठ के गधों के प्रति इतना सम्मान दिखाते थे, तो कल्पना कीजिए कि वे स्वयं माता के प्रति कतिना सम्मान महसूस करते थे!

— गेरोन्डा, क्या फरासी के लोगों द्वारा दिखाई गई यह श्रद्धा संत आर्सेनयिस ने उनमें वकिसति की थी?

— वे हमेशा धर्मपरायण रहे थे, और संत ने उनमें इस भक्तिको और भी बढ़ाया। फरासियों के लोगों में धर्मपरायणता की परंपरा थी। सेंट आर्सेनयिस के कैटर, बूढ़े प्रोड्रोमस कार्ट्सनीग्लू, एक गहरे धर्मपरायण व्यक्ति थे। कोनटिसा में [वहाँ जाने के बाद] भी, उन्होंने चर्च में एक कैटर के रूप में सेवा की। यह बुजुर्ग, जिसकी उम्र अस्सी साल से ज्यादा थी, चर्च में गाने के लिए हर सुबह भोर-भोर में लगभग आधे घंटे तक नचिली कोनटिसा तक पैदल चलकर जाता था। वह कहता था, 'मैं, मसीह का कुत्ता हूँ।' सर्दियों में, जब कड़ाके की ठंड पड़ती थी, तो नीचे की ढलान बहुत खतरनाक होती थी। सड़क बर्फ से ढकी होती थी, और फसिलने से बचने के लिए कदम संभलकर रखना पड़ता था। फरि भी वह इन सबकी परवाह नहीं करता था। उसकी भक्ति ऐसी थी!...

⁹⁸मेरे माता-पिता ने मुझे बताया कि फरासी के लोगों ने [जब वे अभी भी अपने वतन में थे] वहाँ, फरासी में, एक चर्च बनाने के लिए पैसे इकट्ठा किए थे। हालाँकि, बाद में संत आर्सेनयिस इस पैसे को गरीबों को देना चाहते थे, क्योंकि फरासी में पहले से ही एक चर्च था। संत स्वयं पैसे बाँटने के लिए गरीब परिवारों के पास गए, लेकिन वे दुर्भाग्यशाली लोग इसे लेने के लिए तैयार नहीं थे। वे चर्च से पैसा कैसे ले सकते थे? और चूंकि वे पैसा स्वीकार नहीं कर रहे थे, तो पादरी को गाँव के बुजुर्ग को पैसा लेकर सीज़रिया के बशिप के पास भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा। संत ने उनसे कहा, "लो, यात्रा के लिए एक साथी।" — बुजुर्ग ने जवाब दिया, "आपका आशीर्वाद मेरे लिए काफी है।" जब उसने यह पैसा बशिप के पास लाया, तो बशिप ने उससे पूछा: "ठीक है, लेकिन हाज्जेफेन्दी ने तुम्हें इसके साथ क्या करने का आदेश दिया था?" — "इसे गरीब परिवारों में बाँटने के लिए," गाँव के मुखिया ने उत्तर दिया। "तो फरि तुमने उनकी आज्ञा क्यों नहीं मानी?" — "लोग यह पैसा स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि यह चर्च का है।" अंत में, बशिप ने पैसे गाँव के मुखिया को वापस कर दिए। फारस के लोगों ने, जब वे समझौते की शर्तों के तहत फारस से जा रहे थे, सेंट आर्सेनयिस से कहा कि वे पैसे अपने साथ ग्रीस में एक चर्च बनाने के लिए ले जाएंगे। तब सेंट आर्सेनयिस रो पड़े और उनसे कहा: "ग्रीस में आपको कई चर्च मिलेंगे, लेकिन आपको वहाँ वह आस्था नहीं मिलेगी जो यहाँ है।"

⁹⁷ मध्य ग्रीस के पड़ोसी क्षेत्र। इन्हीं इलाकों में एल्डर ने अपनी सैन्य सेवा की थी। — अनुवादक की टिप्पणी।

⁹⁸ फारस गाँव समुदाय के मुखिया प्रोड्रोमस एज़नपिडसि थे — जो वरिष्ठ पैसियों के पिता थे।

प्रतमाओं की पूजा

और हमें आइकन (चित्रों) के प्रतिकृतिनी श्रद्धा होनी चाहिए! एक भिक्षु ने किसी के लिए आशीर्वाद स्वरूप संत निकोलस की एक आइकन (चित्र) तैयार की: उसने इसे सुंदर कागज में लपेटा और कुछ समय के लिए एक अलमारी में रख दिया। लेकिन लापरवाही से, उसने आइकन (चित्र) को उल्टा रख दिया। जल्द ही, कमरे में खटखटाहट की आवाज़ सुनाई देने लगी। भिक्षु यह पता लगाने के लिए इधर-उधर देखने लगा कि आवाज़ कहाँ से आ रही थी। लेकिन वह यह कैसे अनुमान लगा सकता था कि यह अलमारी से आ रही थी! खटखटाहट काफी देर तक चलती रही: ठक-ठक-ठक! — और भिक्षु को चैन से नहीं रहने दे रही थी। आखिरकार, अलमारी के पास जाकर, भिक्षु को एहसास हुआ कि खटखटाहट अंदर से आ रही थी। उसने अलमारी खोली और देखा कि आवाज़ प्रतमा वाले बंडल से आ रही थी। भिक्षु ने सोचा, "इस प्रतमा को क्या हो गया है?" "चलो, एक नज़र डालते हैं।"

प्रतमा को खोलकर, उसने देखा कि वह उल्टी रखी हुई थी। फिर उसने उसे सही ढंग से रख दिया, और आवाज़ तुरंत ही बंद हो गई।

एक श्रद्धालु व्यक्ति प्रतमाओं के प्रतविशेष श्रद्धा दिखाता है। जब हम कहते हैं 'प्रतमाओं के प्रतश्रद्धा दिखाता है', तो हमारा मतलब है कि वह उस व्यक्ति के प्रतश्रद्धा दिखाता है जो उस पर चित्रित है। यदि कोई व्यक्ति, जिसके पास अपने पिता, माता, दादा, दादी या भाई की तस्वीर है, उसे फाड़ नहीं सकता या उस पर पैर नहीं रख सकता, तो क्या यह बात एक प्रतमा के लिए और भी अधिक प्रासंगिक नहीं है! यहोवा के साक्षी प्रतमाएँ नहीं रखते, और वे उस सम्मान को मूर्तपूजा मानते हैं जो हम प्रतमाओं को देते हैं। एक बार मैंने एक यहोवा के साक्षी से पूछा: 'क्या आपके घरों में कोई तस्वीरें नहीं होतीं?' — 'हमारे पास होती हैं,' उसने जवाब दिया। 'तो फिर,' मैंने कहा, 'क्या कोई माँ अपने बच्चे की तस्वीर को चूमती नहीं है जब बच्चा किसी लंबी यात्रा पर दूर होता है?' — 'वह ऐसा करती है,' यहोवा के साक्षी ने कहा। 'और वह किसको चूम रही है: कागज़ को या अपने बच्चे को?' 'अपने बच्चे को,' उसने जवाब दिया। 'तो फिर,' मैंने कहा, 'जैसे वह अपने बच्चे की तस्वीर को चूमकर बच्चे को ही चूम रही है, न कि कागज़ को, वैसे ही हम मसीह को चूमते हैं, न कि कागज़ या तख्ते को।'

— गेरोन्डा, अगर किसी खास तख्ते पर मसीह, परमेश्वर की माता या किसी संत की कोई प्रतमा हुआ करती थी, और समय के साथ उसका रंग छल गया हो, तो क्या हमें फिर भी उसे चूमना चाहिए?

— हाँ, बिल्कुल! जब कोई व्यक्ति पवित्र प्रतमाओं को श्रद्धा और उत्कट प्रेम से चूमता है, तो वे, मानो, इन प्रतमाओं के रंगों को अपने भीतर समाहित कर लेते हैं, और उनके भीतर, बहुत गहराई में, ये संत अंकित हो जाते हैं। संतगण आनंदित होते हैं, कागज़ और लकड़ी से 'मुक्त होकर' और मानव हृदयों पर अंकित होकर। जब कोई ईसाई श्रद्धापूर्वक पवित्र प्रतमाओं को चूमता है और मसीह, परमेश्वर की माता और संतों से सहायता मांगता है, तो वह यह चुम्बन का कार्य अपने हृदय से करता है, जो न केवल मसीह की अनुग्रह को ग्रहण करता है, ईश्वर की माता या संतों को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मसीह को, या परम पवित्र थ्रिओटोकोस को, या संतों को चूम रहे होते हैं, जो उनके [आंतरिक] मंदिर की आइकनोस्टास में अपनी जगह लेते हैं। "मनुष्य पवित्र आत्मा का मंदिर है।"⁹⁹ ध्यान दें, क्योंकि प्रत्येक सेवा प्रतमाओं को चूमने से शुरू और समाप्त होती है। यदि लोग इसे समझें, तो उन्हें कतिनी खुशी होगी, उन्हें कतिनी शक्ति प्राप्त होगी!

⁹⁹ 1 कुरिन्थियों 3:16 और 6:19 देखें।

— गैरोना, सबसे पवतिर थओटोकोस को समरपति प्रार्थना-कैनन में, थओटोकीय छंदों में से एक में, यह क्यों कहा गया है: 'जो अधर्मी तेरी सम्मानति प्रतमि के सामने नहीं झुकते, उनके होंठ मौन हो जाएँ'?

— यदि कोई व्यक्ति श्रद्धाहीन है और प्रतमिओं को चूमता है, तो क्या उसके होंठ बधरि, मौन नहीं हो जाते? और क्या एक श्रद्धालु व्यक्ति के होंठ पवतिर छवियों को चूमते समय मधुर नहीं होते? कुछ लोग, प्रतमि को चूमते समय, उसे छूते भी नहीं हैं। कुछ लोग, प्रतमि को चूमते समय, केवल अपने होंठों से उस पर रगड़ते हैं। बस यूँ ही।¹⁰⁰ क्या आपको कुछ सुनाई दिया?

— नहीं।

— तो फिर, इसका मतलब है कि होंठ 'बधरि' हैं, शांत हैं। लेकिन जब कोई भक्त व्यक्ति किसी प्रतमि को चूमता है, तो उनका चुंबन सुना जा सकता है। और फिर होंठ सुरम्य लगते हैं। जब होंठों को 'बधरि' बताया जाता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे ईश्वर नदि कर रहे हैं। लेकिन [तथ्य यह है कि] कुछ होंठ शांत रहते हैं, जबकि अन्य सुरम्य लगते हैं। जब हम पवतिर प्रतमिओं को देखते हैं, तो हमारा हृदय ईश्वर और संतों के प्रतप्रेम से भर जाना चाहिए, और हमें उनके सामने नतमस्तक होना चाहिए, उनकी पूजा करनी चाहिए और उन्हें बड़ी श्रद्धा से चूमना चाहिए। काश आप फ़िलिथियोस मठ के एक धर्मनषिठ वृद्ध भिक्षु—फादर साव्हा—को देख पाते: कविह परम पवतिर ईश्वर की माता की प्रतमि, 'द स्वीट कसि' को कतिनी श्रद्धा, कोमलता और प्रेम से चूमते थे! ईश्वर माता की इस प्रतमि पर एक छोटा सा उभार तक बन गया है, क्योंकि पिदरीगण ठीक उसी स्थान पर इसे चूमते रहे हैं।

भक्तपूरवक चतिरति एक आइकन पवतिर चतिरकार से ईश्वर की कृपा ग्रहण करता है और लोगों को शाश्वत सांतवना प्रदान करता है। चतिरकार स्वयं को उस प्रतमि में 'स्थानांतरति' कर लेता है जसि वह चतिरति कर रहा है; इसलिए, उसकी मानसिक अवस्था अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। फादर टर्किऑन⁽¹⁰¹⁾ ने एक बार मुझसे कहा था: 'मेरे पुत्र, जब मैं कफ़न चतिरति करता हूँ, तो मैं गाता हूँ "हे जोसेफ, उत्तम मुख वाले, उसे वृक्ष से उतार लाओ..." वे अवशिम गाते और रोते थे, और उनके आँसू प्रतमि पर टपकते थे। ऐसी प्रतमि संसार को एक शाश्वत उपदेश देती है। प्रतमिएँ सदियों तक उपदेश देती रहती हैं। और जब कोई—उदाहरण के लिए, कोई पीड़ित व्यक्ति—मसीह या परमेश्वर की माता की प्रतमि पर एक नज़र डालता है, तो उसे सांतवना मिलती है।

यह सब श्रद्धा पर निर्भर करता है। कुछ लोग केवल उस दीवार को छूते हैं जसि पर एक प्रतमि टकी होती है और उन्हें पहले ही अनुग्रह प्राप्त हो जाता है, जबकि दूसरों के पास सबसे उत्तम प्रतमि हो सकती है लेकिन उन्हें उससे कोई लाभ नहीं मिलता, क्योंकि उनमें श्रद्धा की कमी होती है। एक व्यक्ति को एक साधारण से क्रूस से भी लाभ हो सकता है, जबकि दूसरा, जसिमें श्रद्धा की कमी है, उसे जीवन-दायक वृक्ष से भी कोई लाभ नहीं होगा।

ईश्वर को सबसे शुद्ध चीज़ें अर्पित करनी चाहिए

एक बार, यहाँ आपके चर्च में, मैं हैरान रह गया: मैंने देखा कि आप पवतिर वेदी पर इस तरह की एक छोटी मोमबत्ती जला रहे थे। अपने चर्च में, मैं आइकनोस्टास के सामने मोमबत्ती की मशाल पर ऐसी छोटी मोमबत्तियाँ रखना भी पसंद नहीं करता — मैं इसे अनादर का संकेत मानता हूँ।

¹⁰⁰ वरषिठ ने एक प्रतमि को इतनी भक्ति से चूमा कि कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

¹⁰¹ देखें *एल्डर पैसियोस* माउंट अथोस के संत और माउंट अथोस की कहानियाँ। होली ट्रनिटि सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 13–40।

— हालाँकि, गैरोन्डा, कहते हैं कि एक मोमबत्ती को बिल्कुल नीचे तक जलना चाहिए।

— हाँ, इसे बिल्कुल नीचे तक जलने दो, लेकिन मायने यह रखता है कि यह कहाँ बुझता है। एक बात तो यह है कि यह उन मोमबत्ती-स्टैंडों पर नीचे तक जल जाए जहाँ मंडली अपनी मोमबत्तियाँ रखती है, और दूसरी बात यह है कि यह पवित्र वेदी या बलिकी मेज पर हो। वेदी में आधी मोमबत्तियाँ जलाना उचित नहीं है; यह अनादरपूर्ण है। और झूमर में, भले ही मोमबत्तियाँ प्रार्थना सभा के अंत तक जलती रहें, यदि वे बहुत छोटी हों, तो उन्हें वैसे भी बदल दें। और दक्खि लटिर्जी के प्रवेश द्वारों पर—छोटी और बड़ी दोनों—हमेशा एक बड़ी मोमबत्ती का उपयोग करें, क्योंकि यह माननीय अग्रदूत का प्रतीक है। कुछ जगहों पर, पैसे बचाने के लिए, वे तेल के दीपक भी बुझा देते हैं, यह समझने में असफल रहते हैं कि यदि कोई ईश्वर की पूजा करता है, तो वह महान आशीर्वाद भेजेंगे। और स्मृतिसेवाओं में, बहुत पतली मोमबत्तियों का उपयोग करना अनादर का संकेत है; वे मोम में डूबे धागों से बेहतर नहीं हैं। लोगों को ऐसी मोमबत्तियाँ देना भी शर्म की बात है।

— जेरोन्डा, क्या बहनों को अपनी कोठरियों में जितनी चाहें उतनी मोमबत्तियाँ जलाने की अनुमति दी जानी चाहिए?

— उन्हें जलने दो, ताकि शैतान आग की लपटों में भस्म हो जाए। आखिरकार, पूरी दुनिया आग की लपटों में है। लेकिन जो छोटी मोमबत्ती वे जलाती हैं, उसका कोई अर्थ होना चाहिए; यानी, उसके साथ प्रार्थना भी होनी चाहिए।

ईश्वर को स्वयं समर्पित करना एक महान कार्य है! हम मीठे फल खाते हैं, फरि भी हम ईश्वर को बलिदान के रूप में धूपदान में पेड़ों का गोंद अर्पित करते हैं। हम शहद का स्वाद लेते हैं, फरि भी हम ईश्वर को बलिदान के रूप में मोम अर्पित करते हैं—हालाँकि हम अक्सर उसमें पैराफिन भी मिला देते हैं! हम ईश्वर को उनके उदार, प्रचुर आशीर्वादों के लिए कृतज्ञता स्वरूप केवल एक मोमबत्ती ही अर्पित करते हैं, तो फरि क्या—क्या हम इसमें भी बेईमानी करेंगे? और अगर ईश्वर चाहते कि हम उन्हें शहद अर्पित करें तो? मैं बस कल्पना कर सकता हूँ कि हम क्या करेंगे! हम उसे या तो थोड़ा शहद का सरिप या थोड़ा चीनी का पानी चढ़ा देते। ईश्वर हमें गंभीरता से नहीं लेते! ईश्वर की सेवा को छोड़कर आप हर चीज़ में कफ़ायत कर सकते हैं। हमें ईश्वर को सबसे शुद्ध और सबसे उत्तम चीज़ें अर्पित करनी चाहिए।

— लेकिन लोग, गैरोना, वास्तव में यह नहीं समझते कि पैराफीन की मोमबत्तियाँ जलाना अनादरपूर्ण क्यों है।

— उनसे कहो: 'चर्चों में पैराफीन मोमबत्तियाँ जलाना आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।' फरि वे इस पर थोड़ा विचार करेंगे। और अगर चर्च छोटा भी हो, तो आप [ऐसी अस्वाभाविक मोमबत्तियों से] सचमुच दम घुट सकते हैं! एक बड़ी पैराफिन मोमबत्ती की तुलना में शुद्ध मोम से बनी एक छोटी मोमबत्ती जलाना बेहतर है। ठीक इसी वजह से कई लोगों को चर्चों में घबराहट होती है और वे बेहोश हो जाते हैं। एक बहुत छोटा सा चर्च — और उसमें इतना सारा पैराफिन जल रहा होता है!.. लेकिन काश बात बस इतनी ही होती... वे तेल के दीयों में खाने लायक नहीं तेल भरना चाहते हैं। लोग भी क्या कर रहे हैं! पुराने नियम में लिखा है कि मंदिर में इस्तेमाल किया जाने वाला तेल पेड़ों से इकट्ठे किए गए जैतून से बनाया जाना था, न कि उन जैतून से जो जमीन पर गिर गए हों। क्या ईश्वर को तेल और धूप की आवश्यकता है? नहीं, बल्कि [यह] उन्हें करुणा के भाव से भर देता है, क्योंकि यह एक ऐसी भेंट है जिसके माध्यम से किसी व्यक्तिकी कृतज्ञता और उनके प्रतिप्रेम व्यक्त होता है। सनाई पर्वत पर, मैं इस बात से चकित था: बेदुइनों, उन बेचारों के पास [ईश्वर को] अर्पित करने के लिए कुछ भी नहीं है। तो वे क्या करते हैं? वे दूसरों से थोड़ा अलग दखिने वाला एक कंकड़ उठाते हैं — बस ऐसा एक छोटा सा — या, अगर उन्हें कहीं किसी दरार में दो या तीन छोटे पत्ते मिल जाएं, तो वे उन्हें उस चट्टान पर रख देते हैं जिस पर मूसा ने अपनी लाठी मारी थी और जिससे पानी निकला था, और अपनी भेंट वहीं छोड़ देते हैं। और दूध पिलाने वाली माताएँ वहाँ जाती हैं और [उस चट्टान पर] दूध की कुछ बूँदें टपकाती हैं, यह सोचते हुए: 'हे

भगवान, मेरे बच्चों को पालने के लिए मुझे दूध दें।' बस देखिए कवि [ईश्वर के प्रति] कतिनी कृतज्ञता दिखाते हैं! यह कोई मामूली बात नहीं है। और हम क्या कर रहे हैं?... ये लोग हमें जज करेंगे। वे वहाँ चट्टान पर लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े, कागज के टुकड़े, कंकड़ छोड़ते हैं... क्या ईश्वर को इन सबकी जरूरत है? नहीं, उसे नहीं है, लेकिन ईश्वर एक अच्छे दिल और अच्छे इरादे को देखकर मदद करते हैं।

— गैरोना, मोमबत्ती जलाते समय, क्या किसी को यह कहना चाहिए कि इसे किसी विशेष उद्देश्य के लिए रखा जा रहा है?

— जब आप एक मोमबत्ती जलाते हैं, तो आप उसे कहाँ भेज रहे होते हैं? क्या आप उसे कहीं नहीं भेज रहे होते? मोमबत्ती के साथ, हम ईश्वर से कुछ मांगते हैं। जब आप इसे जलाते हैं और कहते हैं, 'उनके लिए जो शरीर और आत्मा में पीड़ित हैं, और उनके लिए जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है,' तो इन लोगों में जीवित और मृत दोनों शामिल होते हैं। क्या आप जानते हैं कि जब हम उनके लिए मोमबत्ती जलाते हैं तो दविंगत आत्माओं को कतिनी शांति का अनुभव होता है? इस तरह, हम जीवित और दविंगत दोनों के साथ आध्यात्मिक संवाद में होते हैं। संक्षेप में, एक मोमबत्ती एक 'एंटीना' है जिसके माध्यम से हम ईश्वर, बीमारों, दविंगतों, आदि से संपर्क में आते हैं।

— गैरोना, हम धूप क्यों जलाते हैं?

— हम इसे ईश्वर की महिमा करने के लिए जलाते हैं। हम उनकी महिमा करते हैं और संसार भर में उनकी महान आशीर्वादों के लिए धन्यवाद देते हैं। धूप भी एक भेंट है। और चर्च में प्रतिमाओं को धूप दिखाने के बाद, इसे ईश्वर और संतों को अर्पित करने के बाद, हम लोगों को—ईश्वर के जीवित प्रतिमाओं को—धूप दिखाते हैं।

चाहे प्रार्थना हो या धन्यवाद, अपना पूरा हृदय उसमें लगाएँ। 'हे मेरे ईश्वर, मैं पूरे हृदय से प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे यह दया दें—इस तरह मैं मोमबत्ती से 'बात' करता हूँ। और धूप के साथ मैं इस प्रकार 'पुकारता हूँ': 'मैं तेरा, हे मेरे प्रभु, अपने पूरे हृदय से तेरे सभी उपहारों के लिए धन्यवाद करता हूँ। मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरे अनेक पापों, और सारी दुनिया की कृतघ्नता, और मेरी अपनी महान कृतघ्नता को क्षमा किया।'

जहाँ तक आप कर सकें, [अपने भीतर] श्रद्धा और वनिम्रता का संवर्धन करें। यह आपको ईश्वर की कृपा प्राप्त करने में मदद करेगा। क्योंकि, श्रद्धा और आध्यात्मिक वनिम्रता से युक्त व्यक्ति—यदि वे वनिम्र भी हों—तो दवि्य कृपा प्राप्त करते हैं। लेकिन यदि उनमें श्रद्धा और वनिम्रता की कमी हो, तो ईश्वर की कृपा उनके समीप नहीं आती। पवित्र शास्त्र में लिखा है: *"मैं किसी पर दृष्टिकर्तूँ परन्तु नम्र और शांत, और जो मेरे वचन से काँपते हैं, उन पर।"*

अध्याय 5.

इस तथ्य पर कि उपहार में स्वयं के भीतर नहिंति है दवि्य ऑक्सीजन

लोग पीड़ितों को भूल जाते हैं

— गैरोन्डा, आपने एक बार कहा था कि जितना अधिक आप मानवीय सांत्वना से बचते हैं, उतना ही अधिक आप दैवीय प्राप्त करते हैं। तो क्या इसलिये, जब आप भूखे होते हैं, तो आप प्रार्थना को और भी तीव्रता से महसूस करते हैं?

— हाँ, लेकिन इसके अलावा, भूखा व्यक्ति दूसरे को समझता है। जो तृप्त है, वह भूखे को नहीं समझता। मैंने सुना है कएक शहर में वे खाना फेंक देते हैं, जबकथोड़ी ही दूरी पर रूस से आए प्रवासी हैं जिनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है। ये बेचारी लोग कुछ ग्रीनहाउस में, टनि के शेड में भीड़कर रहते हैं। मान लीजिए कजि लोग खाना फेंकते हैं, उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कउनके ठीक बगल में ही कुछ लोग ज़रूरतमंद हैं। लेकिन वे यह पता लगाने के लिए पूछते क्यों नहीं हैं? वे खाना फेंक रहे हैं! हम तो अपने पास मौजूद अतिरिक्त चीजें भी नहीं देते हैं। जब एक व्यक्ति अपनी ज़रूरत की चीजें नहीं खरीद पाता है, जबकदूसरा व्यक्ति उसके पास ऐसी चीजें रखता है जिनका वह स्वयं उपयोग नहीं करता और ज़रूरतमंदों को देने से इनकार कर देता है—यह एक पाप है। मेरे लिए, यही सबसे बड़ा कष्ट है। अंतमि न्याय के दिन मसीह हमसे कहेंगे: 'तुमने मुझे भूखा देखा और मुझे खाने के लिए कुछ नहीं दिया'¹⁰²

कुछ लोगों के पास सब कुछ है और वे कहते हैं: 'आज गरीबी नहीं है।' वे अपने पड़ोसी के बारे में नहीं सोचते। वे खुद को दूसरे की जगह नहीं रखते, ताकउनहें परेशान न होना पड़े या उनका मन की शांति खो न जाए। लेकिन इस तरह के रवैये से, वे एक गरीब व्यक्ति को कैसे ढूँढ सकते हैं? यदकि कोई व्यक्ति दूसरों के बारे में सोचता है, तो वे गरीबों को ढूँढते हैं और उन्हें वह मलिता है जसिकी उन्हें ज़रूरत है। और कतिने ऐसे अनाथ हैं जिनके सरि पर कोई हाथ फेरने वाला नहीं है! लोग पीड़ितों को भूल जाते हैं। उनका मन ऐश-ओ-आराम में जीने वालों में उलझा रहता है, और वे खुद की तुलना पीड़ितों से करने के बजाय, उनसे करते हैं। लेकिन अगर वे, उदाहरण के लिए, उत्तरी एपरिस (अल्बानिया) के उन दुर्भाग्यपूर्ण नवासियों के बारे में सोचते, जो सूली का नशान बनाने के कारण, बीस साल से एक तंग कोठरी में, एक-दूसरे के ऊपर चढ़े हुए, जेल में पड़े हैं!... तो लोग चीजों को अलग नज़र से देखेंगे। यह भयानक है! हम तो इसके बारे में सोच भी नहीं सकते। क्या आप जानते हैं कएक-दूसरे के ऊपर ढेर' का क्या मतलब है? न बैठना, न लेटना, न खड़ा होना... और जहाँ तक खड़िकी की बात है—अगर दीवार में एक छेद भी होता तो आप खुद को भाग्यशाली समझते!¹⁰³

— आपका मतलब कब्रों में है, गैरोना!

— कम से कम कब्र में आप अपने पैर फैला सकते हैं। क्या यातना है! आज दुनिया में इतना दुख है क्योंकि वे गोला-बारूद बनाते हैं, जबकलोगों को खुद का बचाव करने के लिए छोड़ दिया गया है। अफ्रीका में, मैंने लोगों को ऊँट की लीद खाते देखा। वहाँ मानव शरीर बिल्कुल भी शरीर जैसे नहीं दखिते। मेंढकों की तरह। पसली का पजिरा एक छोटी टोकरी जैसा होता है। मुझे यह क्यों दुख देता है? हमारे पास सब कुछ है, और इसीलिए हम दूसरों का दर्द महसूस नहीं करते। और फरि भी हम स्वर्ग में जाना चाहते हैं...

जब मैं 1958 में स्टोमयिन मठ पहुँचा, तो कोनटिसा में एक प्रोटेस्टेंट था, जसिने अमेरिका से मलि वित्तीय समर्थन की बदौलत, अस्सी परिवारों को प्रोटेस्टेंट धर्म में परिवर्तित कर दिया था। उसने उनके जमावड़ों के लिए एक प्रार्थना घर बनाने में भी सफलता हासिल कर ली थी। ये दुर्भाग्यपूर्ण लोग बहुत ज़रूरतमंद थे; अत्यधिक गरीबी ने उन्हें प्रोटेस्टेंट बनने के लिए मजबूर कर दिया था, क्योंकि वे उन्हें आर्थिक रूप से मदद कर रहे थे। एक बार, इन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों में से एक ने मुझसे कहा: 'मैं न केवल प्रोटेस्टेंट बनने को तैयार हूँ, बल्कयिहूदी भी बनने को, क्योंकि मैं इतनी बुरी हालत में हूँ।' यह सुनकर, मैंने कहा: 'हमें कुछ करना होगा। मैंने उन लोगों को इकट्ठा किया जिनके पास कुछ आर्थिक साधन थे और जो दूसरों की मदद कर सकते थे, और उनसे बात की। उस समय ये गरीब लोग पूरी तरह से सांसारिक विचारधारा के थे, लेकिन उनका स्वभाव दयालु था। विशेष रूप से, इन लोगों में से एक, पूरी तरह से सांसारिक जीवन जीने के बावजूद, उदार

¹⁰² मत्ती 25:42.

¹⁰³ मई 1990 में दिया गया।

दलि का था। जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो मैंने कहा: 'बाहर से तो वह एक नकिम्मा लगता है, लेकिन अंदर उसके भीतर अच्छाई की एक चिगारी है।' इसलिए, हमने कुछ पैसे इकट्ठा करने और उन्हें गरीब परिवारों में बांटने का फैसला किया। मैंने अमीरों को सलाह दी कि वे खुद गरीबों के पास जाएँ और पैसे दें, ताकि वे भी करुणा से प्रेरित हों और इस अनुभव से लाभान्वित हों। इस तरह, भले ही उनके दिल पत्थर के बने हों, वे नरम हो जाते और इंसान बन जाते। इस प्रकार स्वर्ग के द्वार उनके लिए खुल गए। थोड़े ही समय में, ये सभी परोपकारी बदल गए, क्योंकि उन्होंने [ठीक अपने बगल में] मौजूद दुख-दर्द को देखा, और अब उन्हें क्लबों और डांस हॉल में जाकर मौज-मस्ती करने की इच्छा नहीं रही। उन्होंने कहा, "तुमने हमें नहिंत्ता कर दिया है। अब हम मजे करने के लिए बाहर कैसे जा सकते हैं?" वे चर्च के और करीब आ गए, और मुझे बाद में पता चला कि उनमें से एक तो कैटर (गीतगायक) ही बन गया। लेकिन वे अस्सी परिवार भी, ईश्वर की कृपा से, एक-एक करके ऑर्थोडॉक्सी में लौट आए। जब बाद में अमेरिकी प्रोटेस्टेंट यह देखने आए कि इस प्रोटेस्टेंट उपदेशक ने क्या हासिल किया था, तो उन्होंने उसे अदालत में ले गए, क्योंकि अब उसके कोई अनुयायी नहीं बचे थे।

— गेरोन्डा, कुछ लोग, ज़रूरत पड़ने पर, मदद माँगने में संकोच नहीं करते, जबकि अन्य कुछ नहीं कहते।

— कई लोग शर्मिंदा होते हैं और अपनी प्रतिष्ठा को कलंकित नहीं करना चाहते। ऐसे लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक मदद की ज़रूरत होती है। और उनकी मदद करना [सबसे पहले] अधिक उचित है। मैं दो डॉक्टरों को जानता हूँ, जिनके साथ जब कोई दुर्भाग्य हुआ, तो उनके पास एस्पिरिन के लिए भी पर्याप्त पैसे नहीं थे। प्रेम से परिपूर्ण व्यक्ति केवल भीख माँगने वालों को दान देकर संतुष्ट नहीं रहता, बल्कि स्वयं ज़रूरतमंद लोगों की तलाश कर उन्हें सहायता देता है। मेरी माँ ने ऐसा करने के लिए बहुत प्रयास किया।

प्रेम का मापदंड

यदि कोई व्यक्ति अमीर है और दान करता है, तो यह बताना असंभव है कि उसमें प्रेम है या नहीं, क्योंकि हो सकता है कि वह प्रेम से नहीं, बल्कि केवल कुछ संपत्ति से छुटकारा पाने के लिए दे रहा हो। प्रेम तब स्पष्ट होता है जब कोई व्यक्ति स्वयं की कमी के बावजूद देता है। मान लीजिए मुझे विश्वास है कि मुझमें प्रेम है। ईश्वर, मेरे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए, एक गरीब व्यक्ति को मेरे पास भेजता है। यदि उदाहरण के लिए, मेरे पास दो घड़ियाँ हैं — एक अच्छी हालत में और दूसरी थोड़ी खराब — और मैं खराब वाली घड़ी गरीब व्यक्ति को दे देता हूँ, तो इसका मतलब है कि मेरा प्रेम दूसरे दर्जे का है। अगर मुझमें सच्चा प्रेम है, तो मैं गरीब आदमी को अच्छी घड़ी दूँगा। हालाँकि, दोषपूर्ण तरक बीच में आ जाता है, और हम कहते हैं: 'क्या मैं अच्छी वाली दे दूँ? खैर, उसके लिए, चूँकि उसके पास घड़ी है ही नहीं, तो पुरानी घड़ी भी अच्छी ही होगी।' और इस तरह मैं उसे पुरानी घड़ी दे देता हूँ। लेकिन जब आप पुरानी घड़ी देते हैं, तो वह बूढ़ा आदमी अभी भी आपके भीतर रहता है; यदि, हालाँकि, आप नई घड़ी देते हैं, तो आप एक पुनर्जीवित व्यक्ति हैं। वह अवस्था जिसमें आप अपने लिए पुरानी और नई दोनों रख लेते हैं और कुछ भी नहीं देते, नारकीय है।

— जेरोन्डा, इस अवस्था से कोई कैसे बच सकता है?

— मनुष्य को इस प्रकार चिंतन करना चाहिए: 'यदि स्वयं मसीह भखारी की जगह होते, तो मैं उन्हें क्या देता? नसिंदेह, सर्वोत्तम।' इस प्रकार, एक व्यक्ति सिमझ पाता है कि सच्चा प्रेम क्या है, इसके सिद्धांतों का पालन करने का दृढ़ संकल्प करता है और अगली बार सर्वोत्तम देता है। शुरू में यह उसके लिए थोड़ा मुश्किल हो सकता है, लेकिन इस तरह अभ्यास करने से, वह एक ऐसी अवस्था में पहुँच जाता है जहाँ दूसरों की मदद करते हुए, वह पुराना और नया दोनों देता है। हालाँकि उसके पास खुद घड़ी न हो, पर मसीह के भीतर होने से वह अपने ही दिल की मीठी धड़कन को दविय

आनंद में आनंदति होते हुए सुनेगा। यदतिमहारी चोगा छीन ली जाए, और तुम अपना वह फटा-पुराना वस्त्र भी दे दो,¹⁰⁴ तो मसीह तुम्हें बाद में वस्त्र पहनाएंगे। यदतिम किसी दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के लिए दया महसूस करते हो और उसकी मदद करते हो, तो वचार करो कतिम क्या बलदान करोगे यदमसीह स्वयं उसकी जगह होते। इसी तरह एक व्यक्ति अपनी परीक्षाओं को पास करता है। अपने पड़ोसी के रूप में वशिवासी मसीह को देखता है। और मसीह स्वयं कहते हैं कि, किसी दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के लिए कुछ करते हुए, आप उसी के द्वारा मेरे लिए कर रहे हैं।¹⁰⁵ बेशक, हर कोई अपने लिए उचित सम्मान का हकदार है, लेकिन प्रेम सभी के लिए समान होना चाहिए। एक मंत्री और एक भखारी, एक जनरल और एक सपिही एक वशिवासी के दिल में समान स्थान रखते हैं।

— गैराना, ऐसा कभी-कभी क्यों होता है कजिसिने उपकार प्राप्त किया है, वह उस व्यक्ति के प्रति अनादरपूर्ण व्यवहार करता है जसिने उसकी मदद की?

— शैतान हस्तक्षेप करता है और जसि व्यक्ति की हमने मदद की है, उसे हमारे प्रति बुरा व्यवहार करने के लिए उकसाता है, ताकि हम क्रोधति हो जाएँ। ऐसा करने से, हम अपना किया हुआ पुण्य खो देते हैं। उस व्यक्ति को दोष नहीं देना चाहिए; शैतान हमें सब कुछ से वंचति करने के लिए उन्हें उकसाता है। भले काम करते समय, हमेशा यह महसूस करें कि यह आपका कर्तव्य है, और प्रलोभन का सामना करने के लिए तैयार रहें, ताकि आप अपने किए हुए अच्छे को खो न दें, और ताकि उस अच्छे का सारा इनाम आपका हो। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति बिना दिखावा करने की इच्छा के कुछ पैसे दान करता है। लेकिन प्रलोभी हस्तक्षेप करता है और दूसरों को उकसाता है कि वे उससे कहें: 'तुम कंजूस हो: तुमने कुछ भी दान नहीं किया है, जबकि अमुक ने यह किया, और पमुक ने वह किया।' इस प्रकार शैतान इस व्यक्ति को 'वनिमरता से' जवाब देने के लिए मजबूर करता है: 'खैर, मैंने थोड़ा बहुत तो किया है। मैंने... एक अस्पताल बनवाया।' या फिर दुश्मन उसे गुस्से में आकर यह कहने के लिए उकसाता है: 'क्या, मैं?! मैं, जसिने यह-वह किया है?!' और इस तरह वह सब कुछ खो देता है...। या फिर शैतान उस व्यक्ति को, जिसके साथ उसने कोई अच्छा काम किया हो, यह कहने के लिए प्रेरति करेगा: 'कंजूस! शोषक!' — ताकि दाता जवाब दे: "कौन? क्या मैं, शायद, कोई शोषक हूँ? मैं, जसिने तुम्हें एहसान किया, जसिने तुम पर इतनी कृपा की?" — "आह, वह कृतघ्न है," वह बाद में कहेगा, "क्योंकि मैं निश्चिंति रूप से नहीं चाहता था कि वह मुझसे 'धन्यवाद' कहे, लेकिन वह कम से कम यह तो स्वीकार कर ही सकता था [कि मैं उसका उपकारी हूँ!]" हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति अपने गुणों की सराहना की उम्मीद करता है, तो वह सब कुछ खो देता है। लेकिन अगर क, कोई जो अच्छे इरादे से अच्छा काम करता है, कहे: 'यह तो और भी अच्छी बात है कि वह उस दया को भूल गया जो मैंने उस पर दिखाई थी,' या: 'शायद वह परेशान या थका हुआ था और इसीलिए उसने ऐसे लहजे में बात की,' तो वह अपने पड़ोसी को बख्श देता है और खुद कुछ नहीं खोता। जब हम पुरस्कार की उम्मीद नहीं करते, तो हमें शुद्ध पुरस्कार मिलता है। मसीह ने हमारे लिए सब कुछ किया, फिर भी हमने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया। चर्च में हम कैसे गाते हैं? 'मन्ना के लिए, पति।' ¹⁰⁶ तो आइए हम हमेशा अच्छा करने का प्रयास करें, बिना इसके लिए पुरस्कार की उम्मीद किए।

¹⁰⁴ लूका 6:29 देखें।

¹⁰⁵ मत्ती 25:40.

¹⁰⁶ महान शुक्रवार को मैटनिस के 12वें एंटीफोन से।

दान करने वाला दविय आनंद प्राप्ति करता है

एक व्यक्ति के पास दो प्रकार की खुशियाँ होती हैं: एक जब वे प्राप्त करते हैं, और दूसरी जब वे देते हैं। देने में जो आनंद मिलता है, उसकी तुलना प्राप्त करने पर होने वाले आनंद से नहीं की जा सकती। किसी व्यक्ति को यह समझने के लिए कि क्या वह वास्तव में आध्यात्मिक रूप से प्रगति कर रहा है, उसे सबसे पहले स्वयं की जांच करनी चाहिए कि क्या उसे प्राप्त करने के बजाय देने में आनंद मिलता है। क्या उन्हें कुछ प्राप्त करने पर निराशा होती है, और क्या उन्हें स्वयं कुछ देने पर आनंद का अनुभव होता है? इसके अलावा, यदि वे आध्यात्मिक स्तर पर सही ढंग से काम कर रहे हैं, तो जब वे कोई अच्छा काम करते हैं, तो वे उसे कभी याद नहीं रखते, फिर भी उनके लिए की गई दया की सबसे छोटी सी क्रिया को भी वे कभी नहीं भूलते। वे दूसरों द्वारा दिखाई गई सबसे तुच्छ दया के प्रति भी आँखें बंद नहीं कर सकते। हो सकता है कि उसने स्वयं किसी को एक पूरा अंगूर का बगीचा दिया हो और उसे पूरी तरह से भूल गया हो। फिर भी वह उसी बगीचे से उसे दिए गए अंगूरों की एक ही गुच्छी को कभी नहीं भूल सकता, जैसा उसने स्वयं उपहार में दिया था। या शायद उसने किसी को लकड़ी से नक्काशीदार कई आइकन दिए हैं और उसे याद भी न हो। हालाँकि, यदि वह 'कोई' उसे प्लास्टिक में सील किया हुआ एक छोटा सा आइकन दे दे, तो वह उसकी तुच्छ कीमत के बावजूद उससे गहराई से प्रभावित होगा, और बाद में कृतज्ञतापूर्वक इस बात पर विचार करेगा कि इस एहसान का बदला कैसे चुकाया जाए। वह एक पूरी चर्च बना सकता है, उसके निर्माण के लिए जमीन दान कर सकता है, और इस सब को पूरी तरह से भूल सकता है। दूसरे शब्दों में, सही आध्यात्मिक मार्ग यह है: आपने जो अच्छा किया है उसे भूल जाएँ, और दूसरों द्वारा आपके लिए किए गए अच्छे कामों को याद रखें। जो इस अवस्था तक पहुँच जाता है, वह एक इंसान, एक ईश्वर का आदमी बन जाता है। दूसरी ओर, यदि कोई दूसरों द्वारा उनके लिए किए गए अच्छे कामों को लगातार भूल जाता है, जबकि अपने द्वारा किए गए अच्छे कामों को याद रखता है, तो यह व्यवहार मसीह की इच्छा के विपरीत है। लेकिन 'आपने मुझे इतना दिया, और मैं आपको उतना ही दूँगा' जैसी गणनाएँ — यह तुच्छ सौदेबाजी है। मैं उन लोगों को देने की कोशिश करता हूँ जिन्हें अधिक आवश्यकता है। मैं बाज़ार की तरह मोल-भाव नहीं करता, यह सोचकर कि: 'अमुक ने मुझे ये कतिबें दी हैं; अब मैं उस पर इतना करजदार हूँ, इसलिए मुझे इस करज को चुकाने के लिए कुछ वापस देना होगा।' या: 'अगर किसी और ने मुझे कुछ नहीं दिया है, तो वह मुझसे भी कुछ नहीं पाएगा।' यह एक मानवीय सत्य है।

जो कुछ भी लेता है, उसे मानवीय आनंद मिलता है। जो कुछ भी देता है, उसे दविय आनंद मिलता है। हमें देने से दविय आनंद प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, कोई मुझे एक कतिब देता है और उस क्षण वे आध्यात्मिक, दविय रूप से आनंदित होते हैं, जबकि मैं, कतिब लेकर, मानवीय रूप से आनंदित होता हूँ। इस कतिब को किसी और को देकर, मैं भी दविय रूप से प्रसन्न होऊँगा, जबकि जो इसे मुझसे प्राप्त करेगा वह मानवीय रूप से प्रसन्न होगा। फिर, इसे किसी और को देकर, वह व्यक्ति दविय आनंद का अनुभव करेगा, जबकि इसे प्राप्त करने वाला अगला व्यक्ति मानवीय आनंद महसूस करेगा। लेकिन अगर वह व्यक्ति बदले में, इसे किसी और को देता है, तो वे भी दविय रूप से प्रसन्न होंगे, और इसी तरह यह सलिसला चलता रहेगा। क्या आप देख सकते हैं कि कैसे एक ही चीज़ से, कई लोग दविय और मानवीय दोनों तरह की खुशी का अनुभव कर सकते हैं?

हमें देना सीखना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति देने में आनंद पाता है तो वह सही दृष्टिकोण अपनाता है। तब वह मसीह के 'नेटवर्क' से 'जुड़' जाता है और दविय आनंद का अनुभव करता है। जब कोई कुछ देकर या किसी तरह से मदद करके आनंद का अनुभव करता है, तो उसमें दविय 'ऑक्सीजन' होती है। लेकिन जब कोई व्यक्ति जो कुछ प्राप्त करता है उसमें, या इस तथ्य में कि दूसरे उनके लिए खुद को बलिदान करते हैं, आनंद मनाता है, तो उनके आनंद में एक बदबू और घुटन भरी होती है। जो लोग अपने 'स्व' की परवाह किए बिना, खुद को दूसरों के लिए समर्पित कर देते हैं, वे बहुत जल्द हमारा न्याय करेंगे। वे कतिना आनंद अनुभव करते हैं! मसीह उनका रक्षक है। लेकिन अधिकांश लोग कुछ प्राप्त करने

में आनंदति होते हैं। वे खुद को दविय आनंद से वंचति कर लेते हैं और इसलिए वे कष्ट सहते हैं। जब हम अपने पड़ोसी से स्वयं से अधिक प्रेम करते हैं, तो मसीह करुणा से प्रेरति होते हैं, और वे हमें दविय आनंद से भर देते हैं। देखो, उन्होंने स्वयं को केवल इस आज्ञा 'अपने पड़ोसी से स्वयं के समान प्रेम करो' (107) तक ही सीमति नहीं रखा, बल्कि मानव जातिके लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।

कंजूस दूसरों के लिए इकट्ठा करता है

— यहाँ, गेरोन्डा, दो छोटे भाई हैं: छोटा भाई दूसरों को देता है, लेकिन बड़ा नहीं देता।

— उनके माता-पिता बड़े वाले को देना सखाएँ कि उसमें आनंद मल्लि। और यदि बड़ा वाला ऐसा करने का प्रयास करेगा, तो उसे छोटे वाले से भी अधिक पुरस्कार मल्लिगा, जो स्वभाव से देता है, और वह उससे बेहतर बन जाएगा।

— जेरोन्डा, हम अपने दिलों में उस हचिकचाहट से कैसे छुटकारा पा सकते हैं जो हमें दूसरों को देने से रोकती है?

— तुम्हें क्या हो गया है, तुम कंजूस? मैं ले लूँगा! मैं तुम्हें बाहर निकाल दूँगा! और जब आज्ञाकारिता की बात आती है, उदाहरण के लिए, यदि आप आर्कोन्डेरियन में काम कर रहे हैं,¹⁰⁸ तो तुरंत, भवष्य के लिए, खुद पर यह आशीर्वाद ले लें कि बिाँटें [ताकहिर बार फरि से इसके लिए न पूछना पड़े]। क्या आप देखते हैं कि ईश्वर कतिनी उदारता से सभी पर अपना आशीर्वाद बरसाता है? और यदि आप देने की आदत नहीं डालते हैं, तो आप कंजूसी के आदी हो जाएँगे, और बाद में दूसरों को कुछ देना आसान नहीं होगा।

एक कंजूस दूसरे के लिए धन संजोने वाला एक तजिरी की तरह है। इस तरह, वह देने का आनंद और ईश्वर का पुरस्कार दोनों खो देता है। 'आप इन्हें संजोकर क्यों रख रहे हैं?' मैंने एक बार एक अमीर आदमी से पूछा। 'आप पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। आप इनका क्या करेंगे?' 'जब मैं मर जाऊँगा,' उसने जवाब दिया, 'तो ये यहीं रह जाएँगे।' 'और मैं,' मैंने उससे कहा, 'तुम्हें अपनी आशीर्वाद देता हूँ कि तुम अपनी बचाई हुई सारी चीज़ें अपने साथ परलोक ले जाओ।' 'यहाँ,' उसने कहा, 'ये यहीं रहेंगे।' 'अगर मैं मर जाऊँ, तो दूसरे ही उन्हें संभाल लेंगे।' — 'यहाँ,' मैंने कहा, 'ये यहीं रहेंगे।' लेकिन बात यह है कि तुम्हें इन्हें अभी, जब तुम जीवति हो, अपने हाथों से दे देना चाहिए! कंजूस से अधिक मूर्ख कोई नहीं होता। वह लगातार जमा करता रहता है, लगातार अभाव में जीता है, और अंततः अपनी सारी बचत खुद के लिए अनंतकालीन यातनाएँ खरीदने में खर्च कर देता है। कंजूस मूर्खता की पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है, क्योंकि वह दूसरों को भीतकि वस्तुएँ नहीं देता; वह उनमें ही डूब जाता है और मसीह को खो देता है।

लोग कंजूस पर हँसते हैं। एक बार एक ज़मींदार था, एक बहुत अमीर आदमी: उसके पास एक क्षेत्र में ज़मीन और एथेस में अपार्टमेंट थे, लेकिन वह बेहद कंजूस था। एक दिन उसने अपने खेतों में काम कर रहे मजदूरों के लिए एक बर्तन में बीन्स का सूप पकाया—जो बहुत पतला और पानी जैसा था। उस ज़माने में, ये बेचारे मजदूर सुबह, सूर्योदय के समय काम शुरू करते थे और सूर्यास्त पर खतम करते थे। दोपहर को, जब वे आराम करने के लिए बैठते थे, तो ज़मींदार ने सूप को एक बड़े बेकगि ट्रे में डाल दिया और उन्हें दोपहर के भोजन के लिए बुलाया। बेचारे मजदूर उसके चारों ओर बैठ गए और खाने लगे: कभी वे अपने चम्मच से एक मटर निकालते, और कभी उस पतले से मशिरण का एक नुवाला ही खाते! लेकिन इन मजदूरों में से एक चम्मच से निकालने में माहिर था। उसने अपना चम्मच नीचे रख दिया, एक तरफ हट गया,

¹⁰⁷ लैव. 19:18; मत्ती 22:39; मरकुस 12:31; लूका 10:27.

¹⁰⁸ आर्कोन्डारकि — यूनानी मठों में मेहमानों के स्वागत का क्षेत्र। — अनुवादक की टिप्पणी।

अपने जूते और मोजे उतार लिए, और ऐसा दखावा करने लगा मानो वह अपने पैर सूप वाली ट्रे में डालना चाहता हो। 'तुम क्या कर रहे हो?' बाकी लोगों ने उससे पूछा। 'अरे,' उसने कहा, 'मैं अंदर चढ़कर एक नज़र डालना चाहता हूँ—शायद मुझे एक-दो फलियाँ मिल जाएँ।' इस बदकस्मित ज़मींदार की कंजूसी का यह आलम था। इसीलिए एक व्यक्ति के लिए कंजूस होने से उदार होना हज़ार गुना बेहतर है।

— कंजूसी, गेरोन्डा, एक बीमारी है।

— एक बहुत भयानक बीमारी! किसी व्यक्तिपर हावी होने वाली कंजूसपन से अधिक भयानक कोई बीमारी नहीं है। मतिव्ययति एक अच्छी बात है, लेकिन सावधान रहना चाहिए कि शैतान चुपचाप कंजूसपन के माध्यम से आपको अपने कब्जे में न कर ले।

— लेकिन कुछ लोग, गेरोन्डा, अपनी कंजूसी के कारण भूखे रहते हैं।

— क्या यह सर्फि भूख है? एक बार एक अमीर व्यापारी था जो एक बड़ी दुकान चलाता था, फरि भी वह जेब चाकू से माचसि की तीलियों को तीन टुकड़ों में काट देता था। और एक दूसरी बहुत अमीर महिला थी जिसके पास सल्फर था; वह हमेशा कोयले जलाती रहती थी और आग जलाने के लिए, एक भी माचसि बर्बाद न हो, इसलिए कोयले से ही सल्फर को आग लगाती थी। और फरि भी उसके पास अपना घर, ज़मीन और एक वशाल संपत्ति थी।

मैं यह नहीं कह रहा कि आप उदारता से खर्च करने वाले बनें। लेकिन अगर आप किसी उदार व्यक्ति से कुछ मांगेंगे, तो वह कम से कम खुशी-खुशी दे देगा। दूसरी ओर, एक कंजूस आपको कुछ भी देने में हचिकचाएगा। एक बार, दो पड़ोसी, जो दोनों गृहिणी थीं, ने सलाद और सरिके के बारे में बातचीत शुरू की, और बातचीत के दौरान उनमें से एक ने कहा: 'मेरे पास बहुत बढ़िया सरिका है।' कुछ समय बाद, दूसरी पड़ोसन को थोड़े सरिके की ज़रूरत पड़ी। वह कुछ मांगने के लिए अपनी पड़ोसन के पास गई, लेकिन पड़ोसन ने जवाब दिया: 'सुनो, प्रिय, अगर मैं अपना सरिका दे दूँ, तो मेरे पास सात साल तक कुछ भी नहीं बचेगा!'

एक ही समय में कंजूस और उदार होना अच्छा है। कंजूस होने का मतलब कंजूस होना नहीं है। मेरे पति के पास पैसा कभी नहीं ठहरता था। फारस में कोई होटल नहीं था; इसके बजाय, हमारा घर था। जो कोई भी गाँव में आता था, वह रात बताने के लिए गाँव के बुजुर्ग के घर जाता था। मेहमान को खाना खिलाया जाता था, उसके पैर धोए जाते थे, और उसे साफ मोजे भी दिए जाते थे।

अब मैं देखता हूँ कि तीर्थयात्रियों द्वारा जाएँ जाने वाले कुछ चर्चों में भी, पूरे गोदाम तेल के दीयों से भरे होते हैं, फरि भी वे यह नहीं कहते, 'हमारे पास काफी हैं,' ताक लोग उन्हें लाना बंद कर दें। वे न तो इन दीयों का उपयोग कर सकते हैं और न ही उन्हें बेच सकते हैं, फरि भी वे उन्हें किसी को देते भी नहीं हैं। एक बार जब कोई व्यक्ति जिमा करना शुरू कर देता है, तो वह उससे बंध जाता है और उसे फरि छोड़ नहीं पाता। लेकिन अगर कोई व्यक्ति चीज़ें इकट्ठा करना बंद कर दे और इसके बजाय उन्हें बांटना शुरू कर दे, तो उसका दिल—उसे खुद भी पता नहीं चलेगा कि कैसे—मसीह पर केंद्रित हो जाएगा। कोई वधिवा अपने बच्चों के कपड़े के लिए एक अर्शनि (माप की इकाई) कपड़ा खरीदने के लिए भी पैसे नहीं रखती, और फरि भी मैं जमा करूँ? मैं ऐसा कैसे सहन कर सकता हूँ? मेरी कोठरी में न तो थाली है और न ही पतीला, बस टनि के डब्बे हैं। अपने लिए कुछ खरीदने के बजाय, मैं किसी छात्र को पाँच सौ ड्राक्मा देना पसंद करता हूँ ताकि वह एक मठ से दूसरे मठ तक यात्रा कर सके। संग्रह न करने से, आपको ईश्वर का आशीर्वाद मिलता है। जब आप किसी दूसरे पर आशीर्वाद देते हैं, तो आपको स्वयं भी आशीर्वाद मिलता है। एक आशीर्वाद दूसरे आशीर्वाद को जन्म देता है।

दयालु स्वभाव ही सब कुछ है

— लेकिन गेरोन्डा, अगर कोई मुझसे मदद मांगे, और मेरे पास देने के लिए कुछ भी न हो, तो क्या होगा?

— जब मैं दान करना चाहता हूँ और मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं होता, तो मैं अपने खून से दान करता हूँ। जो व्यक्ति कुछ रखता है और दूसरों को भौतिक सहायता प्रदान करता है, वह आनंद का अनुभव करता है, जबकि एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास दूसरों को देने के लिए कुछ नहीं है, वह लगातार पीड़ित रहता है और वनिम्रता से अपने आप से कहता है: 'मैंने अपने पड़ोसी को दान नहीं दिया है।' एक अच्छा स्वभाव ही सब कुछ है। एक अमीर आदमी है जिसके पास देने के लिए कुछ है, लेकिन वह नहीं देता। और एक गरीब आदमी है जो देना चाहता है, लेकिन नहीं दे पाता, क्योंकि उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है। एक दूसरे से अलग होता है। अमीर व्यक्ति, दान देने के बाद, संतुष्ट महसूस करता है। लेकिन गरीब व्यक्ति पीड़ित रहता है; वह अच्छा करना चाहता है, लेकिन अपने पड़ोसी को देने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है। वह अपने दिल में पीड़ित रहता है, जबकि अगर उसके पास कुछ होता, तो वह उसे दे देता और उसे कष्ट नहीं होता। किसी के कर्मों से उसका अच्छा स्वभाव स्पष्ट होता है। यदि कोई गरीब व्यक्ति किसी से भीख माँगता है और वह गरीब व्यक्ति, स्वयं अभाव झेलते हुए, उसे दे देता है, तो चाहे पाने वाला उस पैसे को शराब पर ही क्यों न खर्च कर दे, देने वाले गरीब व्यक्ति को आंतरिक आनंद की अनुभूति होगी, और ईश्वर, किसी और को ज्ञान प्रदान करके, उस दानवीर गरीब व्यक्ति को भौतिक सहायता प्रदान करेगा। और कभी-कभी, क्या आप जानते हैं कि किस तरह का अन्याय होता है? एक व्यक्ति, अपने पड़ोसी की मदद करने के लिए, उसे वही देता है जो उसके पास होता है, जबकि कोई दूसरा, अपने मन में, इसे अपनी मर्जी से व्याख्या करता है...

— आपका क्या मतलब है, गेरोन्डा?

— मान लीजिए कि किसी गरीब बेचारहा की जेब में पाँच हजार डॉलर से अधिक नहीं है¹⁰⁹। वह सड़क पर एक भखारी से मिलता है, पैसे उसके हाथ में ठूँस देता है और भाग जाता है। भखारी देखता है कि यह पाँच हजार हैं और खुशी मनाता है। तभी, एक बहुत अमीर आदमी वहाँ से गुजरता है और यह देखकर कि दूसरे आदमी ने पाँच हजार का दान दिया है, मन ही मन सोचता है: 'अगर वह पाँच-पाँच हजार ऐसे ही बाँट रहा है, तो पता नहीं उसके पास कतिना पैसा होगा?' वह तो करोड़पति ही होगा!" और यह अमीर आदमी भखारी को पाँच सौ डॉलर दे देता है, यह आत्मसंतोष करते हुए कि उसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है। इस बीच, उस गरीब आदमी के पास बस वही पाँच हजार थे। और जैसे ही उसने भखारी को देखा, उसका दिल खुश हो गया, और उसने वह दे दिया। लेकिन अगर उस अमीर आदमी ने अपने ऊपर थोड़ा भी आध्यात्मिक काम किया होता, तो उसके मन में एक अच्छा विचार आता और वह कहता: 'देखो, उसने अपना आखिरी पैसा भी दे दिया' या: 'उसके पास शुरू में सिर्फ दस हजार थे, और उसने भखारी को पाँच दिए।' लेकिन एक अच्छा विचार उसके मन में कैसे आ सकता है, अगर उसने अपने आध्यात्मिक विकास पर काम नहीं किया है? इसलिए वह टपिपणी करता है: 'चूँकि वह पैसे ऐसे ही उड़ा रहा है, तो वह जरूर कूट-कूट कर कमा रहा होगा।'

और कुछ लोग एक भखारी को पाँच सौ या एक हजार डॉलर दे देते हैं, लेकिन उनके लिए काम करने वाले एक गरीब मजदूर पर पाँच या दस डॉलर को लेकर बहुत हंगामा मचाते हैं। मैं यह नहीं समझ पाता: यह तो बहुत अच्छी बात है कि आप किसी अजनबी को पाँच सौ या एक हजार डॉलर देते हैं, फरि भी आप अपने बगल में बैठे उस व्यक्ति को— जो आपकी मदद करता है—भूखा छोड़ देते हैं? जबकि सबसे पहले और सबसे जरूरी तो यही है कि आप उसी से प्यार करें और उसकी मदद करें। लेकिन, जाहरि है, ये लोग दान इसलिए करते हैं ताकि उनकी प्रशंसा हो सके। और ऐसे लोग,

¹⁰⁹ लगभग 15 अमेरिकी डॉलर। — अनुवादक की टपिपणी।

सांसारिक तरक से प्रेरित होकर, किसी मजदूर को अदालत में भी घसीट सकते हैं — दिखावे के लिए ताकदूसरों की नजर में वे मजाक न बनें। चर्च में आने वाली एक महिला ने मुझे बताया,¹¹⁰ , कएक बार वह एक बुजुर्ग महिला से लकड़ी खरीदना चाहती थी, जिसने जंगल से गाँव तक खच्चर पर तीन घंटे तक लकड़ी लाकर पहुँचाई थी। और उस दिन, उस बूढ़ी महिला ने अतिरिक्त आधा घंटा और चला था — यानी कुल मिलाकर ढाई घंटे — क्योंकि उसे गार्ड पोस्ट से बचना था ताकि वन रेंजरस उसे पकड़ न लें। "और इसकी कीमत क्या है?" महिला ने पूछा। "पंद्रह ड्रैक्मा," बूढ़ी औरत ने जवाब दिया। "नहीं," महिला ने कहा, "यह बहुत ज्यादा है। मैं आपको इसके लिए ग्यारह ड्रैक्मा दूँगी।" "बात यही है," उसने मुझसे बाद में कहा, "यह इसलिए है ताकि हम, आध्यात्मिक लोग, मूर्ख न समझे जाएँ।" मैंने बाद में उसे अच्छी-खासी डाँट लगाई! उस बूढ़ी औरत के पास दो खच्चर थे और उसने सिर्फ़ बाईस ड्रैक्मा कमाने के लिए दो दिन बर्बाद कर दिए। उसे ऊपर से बीस ड्रैक्मा और क्यों नहीं दे दिए गए? लेकिन नहीं, इसके बजाय उसे एक ज़बरदस्त यहूदी मोल-भाव करना पड़ा।

दान मृतकों के लिए बहुत सहायक होता है

धन, जब हमारी आत्मा की सेहत और मोक्ष या हमारे दविंगत प्रयोजनों की आत्मा की शांति के लिए गरीबों में नहीं बाँटा जाता है, तो वह व्यक्ति के लिए वनाश लाता है। बीमारों, वधवाओं, अनाथों और अन्य दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं को दिया गया दान दविंगतों के लिए भी बहुत मददगार होता है। क्योंकि जब दविंगतों की ओर से दान दिया जाता है, तो जो लोग उन्हें प्राप्त करते हैं वे कहते हैं: "भगवान उसे कृपा करें। उसकी अस्थियाँ पवित्र हों।" यदि कोई बीमारी से पीड़ित है, काम करने में असमर्थ है, और कर्ज में डूबा है, और आप, ऐसी कठिन परिस्थिति में, उसकी मदद करते हैं और कहते हैं: "यह पैसा फलाने-ढलाने की आत्मा की शांति के लिए ले लो," तो वह व्यक्ति के हेगा: "भगवान उसे कृपा करें।" उनकी अस्थियाँ पवित्र हों।" जो लोग दान प्राप्त करते हैं, वे दविंगत आत्मा के लिए हार्दिक प्रार्थना करते हैं, और यह उनके लिए बहुत मददगार होता है।

— यदि किसी महिला का पति पवित्र कुमारांभ ग्रहण किए बिना या पापस्वीकार किए बिना मर जाता है, या यदि उसका बच्चा मर जाता है, तो वह उनकी आत्मा की शांति के लिए और क्या कर सकती है?

— उसे स्वयं, जहाँ तक संभव हो, एक बेहतर इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए। स्वाभाविक रूप से, ऐसा करने से वह खुद की मदद करेगी, और साथ ही अपने पति की भी, क्योंकि चर्च में शादी करने के बाद, मृतक को भी [उसकी आध्यात्मिक प्रगतियों] एक हस्सा मिलाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है: स्वयं एक बेहतर इंसान बनना। अन्यथा, वह कुछ अच्छा कर सकती है, लेकिन स्वयं बेहतर इंसान बने बिना। वह कहेगी, 'मैंने अपना कर्तव्य निभाया है, आप मुझसे और क्या चाहते हैं?' और वह अपरिवर्तित रहेगी, या और भी बदतर हो जाएगी।

गुप्त रूप से दान¹¹¹

— गेरोन्डा, कुछ लोग इसे पाखंड मानते हैं अगर कोई व्यक्ति चर्च जाता है लेकिन प्रेम और आत्म-बलिदान में कमी करता है।

— खैर, उन्हें यह कैसे पता चलता है? क्या वे इसके बारे में निश्चित हैं?

¹¹⁰ 1958 में

¹¹¹ मत्ती 6:4.

— इस तरह वे नरिणय करते हैं।

— मसीह ने क्या कहा था? 'न्याय मत करो'।¹¹² कोई व्यक्ति एक जपिंसी को दान नहीं दे सकता क्योंकि वह किसी बीमार व्यक्ति को जानता है जसि बहुत ज़रूरत है और वह उसके बजाय उसकी मदद करना चुनता है। एक राहगीर किसी जपिंसी से मलिकर उसे दान दे सकता है, लेकिन बीमार व्यक्ति को कौन देगा? तथ्यों को जाने बना कोई ऐसे नषिकर्ष कैसे निकाल सकता है? पाखंड तब होता है जब कोई स्पष्ट रूप से प्रशंसा पाने के लिए दान देता है।

¹¹³मुझे याद है कि 1957 में, जब मैं एक ऐसे मठ में था जहाँ रहने की व्यवस्था अलग-अलग थी; प्रत्येक कार्य के लिए, उसकी कठिनाई के अनुसार, भाइयों को एक मौद्रिक पुरस्कार दिया जाता था। चूंकि उस समय मठों में लोगों की कमी थी, इसलिए कुछ भाइयों ने, जिनमें ताकत थी, कई कर्तव्य नभिए और अधिक पारिश्रमिक प्राप्त किया, लेकिन उन्होंने जो कुछ भी प्राप्त किया उसे गरीबों में बाँट दिया। वहाँ एक भिक्षु था जसि 'कंजूस' कहा जाता था क्योंकि वह कोई पैसा नहीं देता था। जब इस भिक्षु की मृत्यु हुई, तो यहाँ के गरीब किसान, चालकडिंकी से — वेलीका पनागिया, पेलियोकोरी और नेओकोरी से — उसके अंतिम संस्कार में शोक मनाने के लिए इकट्ठा हुए।¹¹⁴ ये किसान बैल पालते थे और लकड़ी तथा लट्ठों का परिवहन करते थे; उस समय सब कुछ बैलों द्वारा खींचा जाता था, आजकल की तरह नहीं, जब यह टपिरस और लकड़ी ढोने वाली लॉरियों से किया जाता है। तो, इस भिक्षु ने यह किया: उसने बचाए—जो उसे उसके कए गए कार्यों के लिए दिए गए थे—और जब भी वह देखता कि किसी किसान, परिवार के मुखिया के पास केवल एक ही बैल है या उसका बैल अंतिम दम तोड़ रहा है, तो वह उसके लिए एक नया बैल खरीद देता। उस ज़माने में एक बैल खरीदना कोई मामूली बात नहीं थी; उसकी कीमत पाँच हजार डॉलर थी, और उस समय पैसा बहुत कीमती था। दूसरे भिक्षु एक भखारी को पाँच डॉलर, दूसरे को दस, तीसरे को बीस दे देते थे, और उनके दान के कार्य सभी के देखने के लिए साफ़ थे। लेकिन वह दविगत व्यक्तिपूरी तरह से अनदेखा रह गया, क्योंकि वह दूसरों की तरह दान नहीं करता था; इसके बजाय, वह अपना पैसा बचाता था और अपने तरीके से लोगों की मदद करता था। इसलिए उन्होंने उसे कंजूस, एक तंगदलि आदमी कहा। और अंत में, जब उसकी मृत्यु हो गई, तो गरीब इकट्ठा हुए और रोए: एक ने कहा, 'उसने मुझे बचाया!' 'उसने मुझे बचाया!' दूसरे ने कहा। उन दनिों, अगर आपके पास एक बैल होता, तो आप लकड़ी ढो सकते थे और अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकते थे। मठ का समुदाय चकति रह गया। इसीलिए मैं कहता हूँ: 'हम कैसे जान सकते हैं कि दूसरे क्या कर रहे हैं?'

— गेरोन्डा, कभी-कभी कोई व्यक्ति दान तो कर देता है, लेकिन फिर भी उसे एक तरह की कमी महसूस होती है। इसका कारण क्या है?

— उसे खुद को अच्छी तरह से देखना चाहिए; शायद वह दूसरों को खुश करने की इच्छा से प्रेरित है। जब किसी के इरादे शुद्ध होते हैं, तो उसे आनंद महसूस होता है। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने एक बार किसी नगर में क्या आयोजित किया था? मेरे एक परिचित, जो एक धर्मनषिठ व्यक्ति और पेशे से वकील थे, ने मुझे इसके बारे में बताया। क्रिसमस आ रहा था, और कुछ ईसाइयों ने विभिन्न सामान इकट्ठा करने, उन्हें उपहार के रूप में लपेटने और शहर के चौक में गरीबों

¹¹² देखें मत्ती 7:1; लूका 6:37; यूहन्ना 7:24.

¹¹³ एक मठ जसिमें भिक्षु एक सामान्य मठाधीश के बना एक साथ रहते हैं, प्रत्येक आध्यात्मिक मामलों में अपने-अपने जीवन के तरीके का पालन करता है और भौतिक रूप से अपनी व्यवस्था स्वयं करता है।

¹¹⁴ खालकडिंकी में गाँव। — अनुवादक की टपिपणी।

को बांटने का फैसला किया। उस समय, कब्जे के बाद, ई¹¹⁵ लोग गरीबी में जी रहे थे। इस वकील ने कहा: 'चूकहिम जानते हैं ककौन गरीब है [और कौन नहीं], तो चलए इन उपहारों को चुपचाप बांट दें।' — "नहीं," उन्होंने जवाब दिया, "हम इन्हें ईश्वर की महिमा के लिए चौक में बाँटेंगे, ताकलोग देख सकें कहिम परवाह करते हैं।" — "लेकनि ऐसा करना जरूरी क्यों है?" मेरे परिचित ने फरि आपत्तजिताई। "आपने कसि कतिब में कभी पढ़ा है कदिन इस तरह दिया जाना चाहिए?" वे अपनी बात पर अड़े रहे: 'ईश्वर की महिमा के लिए।' वह उन्हें किसी भी तरह से मना नहीं सका, और जब उसे यह एहसास हुआ और वह पूरी तरह से थक गया, तो उसने उन्हें अपनी मर्जी से काम करने दिया। तो क्या हुआ? उन्होंने उपहारों को मुख्य शहर के चौक पर ले जाकर घोषणा कर दी कि वे उन्हें वहीं बाँटेंगे। ख़बर फैल गई, और तुरंत ही सबसे नरिदयी लोग गोरलिलों के झुंड की तरह उस जगह पर टूट पड़े: उन्होंने सब कुछ पकड़-पकड़ कर ले लिया, और बाकियों के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा। उपहार उन लोगों को मिले जो असभ्य थे और जनिकी कोई जरूरतें नहीं थीं, जबकि बेचारों गरीबों के हाथ खाली रह गए। और जब कार्यक्रम के प्रभारी लोगों ने वहाँ व्यवस्था बहाल करने की कोशिश की, तो उन्हें भी 'ईश्वर की महिमा के लिए' जमकर पीटा गया! क्या आप देख रहे हैं कि आध्यात्मिक नियम कैसे काम करते हैं? एक सांसारिक व्यक्तिके लिए घमंड करने और डींगें हाँकने का बहाना होता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्तिके लिए क्या बहाना है?

— लेकिन गेरोन्डा, ऐसे अवशिवासी भी हैं जो दयालु हैं और अच्छे काम करते हैं...

— जब कोई सांसारिक व्यक्तिसरों की कृपा पाने के लिए नहीं, बल्कि अच्छे दिल से दान करता है, तो ईश्वर उसे नहीं छोड़ेंगे और किसी न किसी समय उसके हृदय से बात करेंगे। स्वटिज़रलैंड में रहने वाले मेरे एक परिचित ने मुझे एक अमीर महिला के बारे में बताया जो एक नास्तिक थी। वह अत्यधिक दयालु थी, और उसने अपनी पूरी संपत्ति गरीबों और बेचारों को दे दी, और अंत में वह पूरी तरह से बेसहारा रह गई। जनि लोगों की उसने पहले मदद की थी, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उसे सबसे अच्छे देखभाल केंद्र में भरती कराया जाए। हालाँकि, इस महिला द्वारा किए गए सभी अच्छे कर्मों के बावजूद, वह नास्तिक ही रही। जब भी कोई उसके साथ मसीह के बारे में बात करने की कोशिश करता, तो वह बातचीत को टाल देती, यह कहते हुए कि मसीह केवल एक अच्छे इंसान, एक सामाजिक सुधारक थे, और इस तरह के अन्य समान सिद्धांत पेश करती। हो सकता है कि जनि ईसाइयों ने उससे बात की, वे उसकी मदद करने में असफल रहे; उसे उनके जीवन में कुछ भी असाधारण नहीं दिखा। "इस आत्मा के लिए प्रार्थना करो," मेरा दोस्त मुझसे कहता था, और वह स्वयं भी उसके धर्म परिवर्तन के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करता था। कुछ समय बाद, उसने मुझे बताया कि एक दिन जब वह केयर होम गया, तो उसने उसे पूरी तरह से बदला हुआ पाया। "मुझे विश्वास है," उसने कहा, "मुझे विश्वास है!" एक चमत्कारिक घटना घटी थी जिसने उसे बदल दिया था, और उसके बाद वह बपतिस्मा लेना चाहती थी।

"क्योंकि ऐसा करने से, आप उसके सरि पर जलते हुए कोयले ढेर कर रहे हैं"¹¹⁶

— गेरोना, यदि कोई व्यक्ति जरूरतमंद नहीं है, पर केवल दिखावा कर रहा है, तो क्या हमें उसकी मदद करनी चाहिए?

¹¹⁵ यह 1941–44 में जर्मनी, इटली और बुल्गारिया द्वारा ग्रीस पर कब्जे को संदर्भित करता है। — अनुवादक की टिप्पणी।

¹¹⁶ रोमियों 12:20.

— मसीह ने कहा कि हमें उन लोगों को देना चाहिए जो हमसे माँगते हैं, बनिा उन्हें परखे।¹¹⁷ और भले ही माँगने वाला व्यक्ति ज़रूरतमंद न हो, फरि भी आपको उन्हें देना चाहिए। इस बात की खुशी मनाएँ कि आपको दान देने का अवसर मिला है। ईश्वर *"धर्मनष्टिओं और अधर्मनष्टिओं दोनों पर अपना वर्षा बरसाता है,"*¹¹⁸ तो हम अपने पड़ोसी की मदद क्यों न करें? और क्या हम स्वयं उन सभी उपहारों के योग्य हैं जो ईश्वर हमें प्रदान करता है? उसने *"हमारे साथ हमारे अधर्म के अनुसार व्यवहार नहीं किया, न ही हमारे पापों के अनुसार हमें प्रतफल दिया।"*¹¹⁹ एक गरीब व्यक्ति आपसे मदद मांगता है। भले ही आपको उस पर संदेह हो, फरि भी सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद उसकी मदद करें, ताकि बाद में ऐसे विचारों से आपका मन न भटके। याद रखें कि अब्बा इसाक ने लिखा था: "भले ही कोई व्यक्ति घोड़े पर सवार हो और आपसे कुछ मांगे — उसे दे दें।"¹²⁰ आप वास्तविक स्थिति को नहीं जानते। आपका कर्तव्य है कि आप उस याचक की बात पर विश्वास करें जो वह आपसे कहता है, और वह जतिनी राशि मांगता है, उतनी ही राशि दें।

उदाहरण के लिए, यदि हमारे पास केवल एक हजार ड्रैक्मा हैं और उन्हें एक भखिारी को देते समय हमें इस बात का दुख होता है कि हम और नहीं दे सकते, तो हम जसि धन को देते हैं, उस धन के आशीर्वाद के अतिरिक्त, हम भखिारी की अंतरात्मा में मसीह और एक उत्तम चिंता की भावना भी भर देते हैं। हमने जो किया है वह उसे प्रेरित करेगा, क्योंकि उसका मन लगातार उस दयालु व्यक्ति की ओर लौटेगा जसिने, 'चलियारिकी'¹²¹ के साथ मिलकर, उसे अपना हृदय दिया, जो दुख से भरा था। यह दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा यहाँ तक कर देगी कि वह अपने दाता को, गुमनाम रूप से, उससे प्राप्त सभी पैसे, या उससे भी अधिक पैसे वापस भेज देगी। एक बार मेरे साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ था। एक दिन, जब मैं थ्रेसलॉनीकी में था, तो एक महिला—जो एक रोमा महिला लग रही थी—ने मुझे रोका और अपने बच्चों के लिए पैसे मांगे, क्योंकि उसका पति बीमार था। मेरे पास केवल पाँच सौ ड्रैक्मा थे; मैंने उन्हें उसे दे दिया और कहा: "मुझे खेद है, लेकिन मेरे पास आपको देने के लिए और कुछ नहीं है। अगर आप चाहें तो मेरा पता ले लें और मुझे अपने पति की सेहत के बारे में लिखें। मैं पवित्र पहाड़ से आपके लिए और पैसे भेजने की कोशिश करूँगा।" कुछ ही समय बाद, मुझे पाँच सौ ड्रैक्मा और एक नोट वाला पत्र मिला: "आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद। मैं आपको आपके दिए हुए पैसे लौटा रहा हूँ।" यदि कोई भारी मन से देता है, तो दान का प्राप्तकर्ता प्रेम—मसीह—से प्रभावित होगा और स्वयं इकट्ठा करने के बजाय देना शुरू कर देगा। लेकिन यदि भखिारी बहुत कठोर हृदय का व्यक्ति निकले और इकट्ठा किए गए पैसे को जमा कर ले, तो इससे उसे कोई खुशी नहीं मिलेगी। ईश्वर यह सुनिश्चित कर देगा कि उसने जो पैसा इकट्ठा किया है वह वहाँ जाए जहाँ उसकी ज़रूरत है। जहाँ तक उस कठोर-हृदय भखिारी का सवाल है, उसके पास उस 'धन-संग्रह' (आइए इसे ऐसा ही कहें) से होने वाली थकान और थकान के सिवा कुछ नहीं बचेगा, जसि उसने [बनिा समझे] दूसरों के लिए आयोजित किया है।

— तो, गेरोन्डा, कतिनी राशि देनी चाहिए?

¹¹⁷ देखें मत्ती 5:42; लूका 6:30.

¹¹⁸ मत्ती 5:45.

¹¹⁹ भजन संहिता 102:10.

¹²⁰ "यदि कोई, घोड़े पर सवार होकर, आपसे भीख लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाए, तो उसे इनकार न करें, क्योंकि उस क्षण वह नसि संदेह भखिारियों में से एक के समान ही दरदिर है।" तुलना करें: *अबा इसाक द सीरयिना* कृतियाँ। सेरगीव पोसाद, 1911। प्रवचन 56। पृ. 286।

¹²¹ एक हजार ड्रैक्मा (बोली-चाल की भाषा) – *अनुवादक का नोट।*

— बस इतना ही कबिबाद में तुम्हारा अंतरात्मा तुम्हें कटे। तुम्हें अपनी समझदारी से काम लेना है। सौ रुपये देकर फरि पचास न देने का पछतावा मत करना। यदकिस्सी व्यक्तिके प्रेम के साथ महान प्रेरणा और उत्साह भी जुड़ा हो तो वशिष सावधानी की आवश्यकता होती है। ऐसे मामले में, व्यक्तिको अपने प्रेम और उत्साह पर थोड़ी लगाम लगानी चाहिए, ताकबिबाद में इस बात का पछतावा न हो कउस दुर्भाग्यशाली व्यक्तिको, जसि कम देना चाहिए था, बहुत अधिक दे दिया, और अब खुद को खाली हाथ पाया। धीरे-धीरे, ऐसा व्यक्ति अनुभव प्राप्त कर लेगा और अपनी आत्म-बलदान क्षमता के अनुसार दान देगा।

— जेरोंडा, जब किसी भखिारी की माँगे अत्यधिक हों, तो क्या उन्हें पूरा करना चाहिए?

— यहाँ समझदारी की आवश्यकता है—और उससे भी अधिक। जब कोई आपसे कुछ माँगता है ताकविह दूसरों के सामने जो उसे मिला है, उसकी दिखावा कर सके, तो उसे दे दें। इस पर वचिर करें: मसीह ने यहूदा से नहीं कहा, 'तुम कसि तरह के प्रेरति हो? अपने धन के प्रेम को समाप्त करो!'—बल्किउसे धन का बक्सा सौंप दिया। हालाँकि, यदकि कोई आपसे, उदाहरण के लिए, जैम का एक जार माँगता है, और आपके पास एक है, लेकिन आप जानते हैं कि माँगने वाले व्यक्तिके पास पहले से ही इसका एक पूरा बैरल है, जबकि किसी और के पास बलिकुल भी जैम नहीं है, तो बहुत कुछ होने के बावजूद माँगने वाले से कहें: 'भाई, यदआप चाहें, तो जो आपके पास है उसमें से कुछ अमुक को दे दें।' लेकिन अगर ऐसी कोई जरूरत नहीं है, तो माँगने वाले को दे दो, क्योंकि उसने तुमसे मांगा है, और उससे कुछ मत कहो। अगर उसका दलि नरम है, तो यह देने का काम उसे करुणा के लिए प्रेरति कर सकता है और उसे अपने रास्ते सुधारने के लिए प्रेरति कर सकता है।

इस प्रकार, ऐसे मामलों में, जैसा कि पिवतिर प्रेरति पौलुस लिखते हैं, वैसा ही होता है: 'यदतुम्हारा शत्रु तुम्हें नुकसान पहुँचाए, और तुम उसे भलाई करो, तो तुम उसके सरि पर जलते हुए कोयले ढेर कर रहे हो।' इस अर्थ में नहीं कि तुम अपने शत्रु को राख में बदल रहे हो, बल्किइस अर्थ में कि जब तुम उसे भलाई करते हो, तो उसके भीतर प्रेम जागृत होता है। प्रेम ही मसीह है, और दैवीय अनुग्रह एक व्यक्तिके भीतर काम करना शुरू कर देता है। और फरि वह व्यक्ति बदल जाता है, क्योंकि उसका अंतरात्मा उसे दोषी ठहराता है; अर्थात्, तब वे अपने ही अंतरात्मा से दोषी ठहराए जाते हैं। हालाँकि, केवल इसलए अच्छा करना कि कोई अपने अंतरात्मा से दोषी ठहराया जाए और सच्चे मार्ग पर लौट आए, गलत है, क्योंकि ऐसा करने से अच्छे काम की शक्ति छिनि जाती है। प्यार से अच्छा करें। जब आप अपने दुश्मन को अच्छाई का 'बदला' चुकाते हैं, तो वह बेहतर के लिए बदलता है और सुधर जाता है।

कोनटिसा में एक शराबी था जसिके परिवार था। मैं उसे कुछ पैसे दिया करता था। कुछ लोगों को पता चला कि मैं इस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तिकी मदद कर रहा था (उसने खुद उन्हें इसके बारे में बताया था), और उन्होंने मुझसे कहा: 'उसे कोई पैसा मत दो; वह शराब पीता है।' वह खुद मुझसे कहता, 'मुझे यह मेरे बच्चों के लिए दे दो,' और जब मैं उसे दान में कुछ देती, तो मैं कहती, 'यह अपने बच्चों के लिए ले लो।' मैं जानती थी कि विह शराब पीता है, लेकिन मैं यह भी जानती थी कि मेरे शब्द उसकी थोड़ी मदद करेंगे: वह पीना जारी रखता, लेकिन वह अपने बच्चों के बारे में भी थोड़ा सोचता। अगर मैंने उसे पैसे नहीं दिए होते, तो वह अपनी पत्नी को सताता, क्योंकि तब वह उसके कमाए पैसे (और वह, बेचारी, दूसरों के घरों में कड़ी मेहनत करती थी) ले लेता, उसे शराब में उड़ा देता, और बच्चों को और भी ज्यादा तकलीफ होती। हालाँकि, जब मैंने उससे कहा, 'यह अपने बच्चों के लिए ले लो,' तो वह अपने बच्चों के बारे में एक बार सोचता। क्या आप समझते हैं? मुझे उसके लिए दुख हुआ; वह यह देख सकता था, और उसके भीतर आंतरिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया शुरू हुई। इस तरह कई लोग सुधर गए। और कुछ ने, बाद में अपने वविक से कटु होकर, पैसे वापस भी कर दिए।

हमारी अपनी तरकसंगति से हम मसीह को काम करने से रोकते हैं। यदआप सुसमाचार प्रचारक बनना चाहते हैं (हालाँकि, बेशक, प्रोटेस्टेंट नहीं), तो अभी सच्चा सुसमाचार सीखें।

भाग 3। आध्यात्मिक साहस पर

"सर्वोच्च आनंद त्याग से आता है। केवल त्याग के माध्यम से ही एक व्यक्ति मसीह के साथ एकता में रहता है, क्योंकि मसीह ही बलदान हैं।"

अध्याय 1. समय के संकेतों पर¹²²

मसीह-वरोधी

— गैरोना, हमें वरोधी मसीह के बारे में कुछ बताइए।

— आइए अब मसीह के बारे में बात करें... आइए मसीह के जितना संभव हो उतना करीब आएं। और अगर हम मसीह के साथ हैं, तो हमें मसीह-वरोधी से क्यों डरना चाहिए? या शायद मसीह-वरोधी की आत्मा अभी मौजूद नहीं है? जो भी हो, यह मसीह-वरोधी की आत्मा ही है जो बुराई करती है। और अगर वह जानवर, मसीह-वरोधी, पैदा होता है और हर तरह के पागलपन भरे काम करता है, तो अंत में वह [फिर भी] एक मज्जाक बनकर रहेगा। हालाँकि, कई घटनाएँ घटेंगी। यह संभव है कि आपको भी उस सब को सहना पड़ेगा जिसका वर्णन प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में किया गया है। धीरे-धीरे, बहुत कुछ उजागर हो रहा है। और मैं, जो एक दीन-हीन मनुष्य हूँ, कई साल पहले ही पुकारने लगा था! स्थिति भयानक, पागलपन भरी है! यह पागलपन सभी सीमाएँ लांघ चुका है। धर्मत्याग आ चुका है,¹²³ और अब केवल 'वनिश के पुत्र' के आगमन का इंतजार है।¹²⁴ [दुनिया] एक पागलखाने में बदल जाएगी। सर्वत्र अराजकता का राज होगा, जिसके बीच हर राज्य अपनी मनमर्जी करने लगेगा। ईश्वर करे कि जो लोग प्रमुख नीतियाँ बनाते हैं, उनके हति हमारे पक्ष में काम करें। समय-समय पर हम कुछ नया सुनेंगे। हम सबसे अवश्वसनीय, सबसे पागलपन भरी घटनाओं को घटते हुए देखेंगे। [एकमात्र अच्छी बात यह है] कि घटनाएँ एक के बाद एक तीव्र गति से घटती होंगी।

एक्यूमेनिज्म, एक एकल बाज़ार, एक महान राज्य, एक एकल धर्म जो उनकी अपनी वशिष्टताओं के अनुरूप हो — इन राक्षसों की योजनाएँ ऐसी ही हैं। ज़ायोनी पहले से ही किसी को मसीहा बनाने के लिए तैयार कर रहे हैं। उनके लिए, मसीहा एक राजा होगा; यानी, वह पृथ्वी पर शासन करेगा। यहोवा के साक्षी भी एक सांसारिक राजा की प्रतीक्षा कर

¹²² इस अध्याय में संकलित सामग्री वृद्धजन ने 1981 और 1994 के बीच बोली या लिखी थी।

¹²³ Ἀποστασία (ग्रीक) – धर्मत्याग, परित्याग। — अनुवादक की टिप्पणी।

¹²⁴ देखें 2 थिसस. 2:3.

रहे हैं। जायोनी अपने राजा को प्रस्तुत करेंगे, और यहोवा के साक्षी उसे स्वीकार कर लेंगे। वे सभी उसे राजा के रूप में पहचान लेंगे और कहेंगे: 'हाँ, यही है।' बहुत बड़ा उथल-पुथल होगा। इस उथल-पुथल में, हर कोई एक ऐसे राजा को चाहेगा जो उन्हें बचा सके। और फिर वे एक ऐसे व्यक्ति को प्रस्तुत करेंगे जो कहेगा: 'मैं इमाम हूँ, मैं पाँचवाँ बुद्ध हूँ, मैं वही मसीह हूँ जिसका ईसाई इंतजार करते हैं, मैं वही हूँ जिसका यहोवा के साक्षी इंतजार कर रहे हैं, मैं यहूदियों का मसीहा हूँ।' उसमें पाँच 'मैं' होंगे।

सुसमाचार लेखक यूहन्ना अपनी पहली पत्र में कहते हैं: 'हे बालको... वरिंथी मसीह आ रहा है, और अब से ही बहुत से वरिंथी मसीह हैं...' ¹²⁵ उनका यह मतलब नहीं है कि अपेक्षित मसीहा-वरिंथी उत्पीड़क मैक्सिमिलियन और डायोक्लेटियन जैसा होगा, बल्कि यह कि अपेक्षित मसीहा-वरिंथी, कह सकते हैं, शैतान का अवतार होगा। ¹²⁶ वह इस्राएल के लोगों के सामने मसीहा के रूप में प्रकट होगा और दुनिया को धोखा देगा। कठिनी समय आने वाला है; महान परीक्षाएँ हमारा इंतजार कर रही हैं। ईसाइयों को बड़े उत्पीड़न का सामना करना पड़ेगा। इस बीच, यह स्पष्ट है कि लोग यह भी महसूस नहीं करते कि हम पहले से ही [अंतिम] दनों के संकेतों का अनुभव कर रहे हैं, कि मसीहा-वरिंथी का चहिन वास्तविकता बनता जा रहा है। ऐसा लगता है जैसे कुछ हो ही नहीं रहा। इसीलिए पवित्र शास्त्र कहता है कि चुने हुए लोग भी धोखा खा जाएँगे। ¹²⁷ जिनमें अच्छी प्रवृत्ति नहीं है, वे परमेश्वर से प्रबुद्धता प्राप्त नहीं करेंगे और धर्मत्याग के वर्षों में धोखा खा जाएँगे। क्योंकि जिसने दवि अनुग्रह नहीं पाया, उसमें आध्यात्मिक स्पष्टता नहीं होती, ठीक वैसे ही जैसे शैतान में नहीं होती।

— और जायोनी, गेरोन्डा, क्या वे मसीह-वरिंथी में और उससे जुड़ी चीजों में विश्वास करते हैं?

— वे दुनिया पर शासन करना चाहते हैं। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, वे जादू-टोना और सैटनज्म (शैतानवाद) का उपयोग करते हैं। वे शैतान की पूजा को एक ऐसी शक्तिमानते हैं जो उनकी योजनाओं को अंजाम देने में उनकी मदद करेगी। परिणामस्वरूप, वे शैतानी शक्तियों सहायता से दुनिया पर शासन करना चाहते हैं। वे ईश्वर का कोई ध्यान नहीं रखते। हालाँकि, क्या ईश्वर ऐसा करने पर उन्हें आशीर्वाद देंगे? ईश्वर इस सब से बहुत अच्छा नकिलेंगे। पछिले शैतानी सिद्धांत सत्तर वर्षों तक चले, लेकिन ये सात साल भी नहीं चलेंगे।

— गेरोन्डा, जब मैं वरिंथी मसीह के बारे में सुनता हूँ, तो मुझे डर लगता है।

— तुम किस बात से डरते हो? क्या तुम्हें लगता है कि वह शैतान से भी बुरा होगा? वह सिर्फ एक इंसान है। देखो संत मरीना को—उसने शैतान को अच्छी तरह से धूल चटा दी, और संत जस्टिना—उसने कतिने राक्षसों को पराजित किया! लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इस दुनिया में सिर्फ अपनी सुविधा के लिए नहीं आए हैं।

¹²⁵ 1 यूहन्ना 2:18।

¹²⁶ जब वे कहते हैं, 'मसीह-वरिंथी, कह सकते हैं, शैतान का अवतार होगा,' तो एल्डर का तात्पर्य यह है कि मसीह-वरिंथी एक ऐसा मानव होगा जो शैतान की सारी ऊर्जा को समाहित करेगा, और जो शैतान की योजनाओं के साकार होने का एक आज्ञाकारी साधन होगा। पवित्र चर्च-पति सर्वसम्मति से गवाही देते हैं कि मसीह-वरिंथी एक मानव होगा। ऊपर और नीचे दोनों जगह, एल्डर पैसियोस स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वरिंथी मसीह एक मानव होगा। इस प्रकार, इस मामले पर उनका दृष्टिकोण पवित्र पतिओं के दृष्टिकोण से पूरी तरह से मेल खाता है। — *अनुवादक की टिप्पणी*

¹²⁷ मत्ती 24:24; मरकुस 13:22 देखें।

यहूदियों का सांसारिक राजा

भवषियवाणियों के पूरा होने का एक संकेत यरूशलेम में उमर मस्जिद का वनिश होगा। इसे इसलिए नष्ट किया जाएगा ताकि सुलैमान का मंदिर, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह ठीक उसी जगह पर खड़ा था, को फिर से बनाया जा सके। फिर से बने मंदिर में, जायोनी अंततः मसीहा के रूप में मसीह-वरींथी की घोषणा करेंगे। मैंने सुना है कि यहूदी पहले से ही सोलोमन के मंदिर का नरिमाण करने की तैयारी कर रहे हैं।

— गेरोन्डा, ऐसा क्यों है कि यहूदी पुराना नियम पढ़ते हुए भी मसीह पर विश्वास नहीं करते?

— आप स्वयं जाकर उनसे इसके बारे में क्यों नहीं पूछते? यहूदी हमेशा से ही कट्टर रहे हैं। वे समझते तो हैं, लेकिन स्वार्थ की अँधी गली में खो गए हैं। अगर वे थोड़ी और ध्यान से देखें, तो उनमें से एक भी यहूदी नहीं रहेगा।

— और उन्होंने जो पढ़ा, उसकी व्याख्या उन्होंने कैसे की?

— उन्होंने तब इसे कैसे व्याख्यायति किया, और अब इसे कैसे व्याख्यायति करते हैं! वे आध्यात्मिक अर्थों को भौतिक अर्थों में बदल देते हैं। [जाओ,] उदाहरण के लिए, और देखो कि उन्होंने भवषियवक्ता यशायाह के शब्दों की कैसे व्याख्या की: 'यॉर्डन का मरुभूमि फल-फूल उठेगा...' ¹²⁸ यह दिखाने के लिए कि मरुभूमि 'सिमृद्ध' हो गई है, उन्होंने एक नदी का रुख मोड़ दिया, टैरेस और बगीचे बनाए, केले, नींबू और संतरे लगाए, और पूरे इलाके को हरा-भरा कर दिया, ताकि अब वे कहें: 'मरुभूमि सिमृद्ध हो गई है।' और वे हर चीज़ की व्याख्या इसी तरह करते हैं। इस बीच, नबी के ये शब्द पवित्र बपतस्मा के माध्यम से दुनिया के पुनर्जन्म — 'पुनर्जन्म का स्नान' — की ओर संकेत करते हैं।

— क्या वे अब एक सांसारिक राजा की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

— हाँ, वरींथी मसीह। रब्बी जानते हैं कि मसीहा आ चुके हैं और उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था। मैंने एक आदमी से सुना है कि जब कोई यहूदी अपने अंतिम क्षणों में होता है, तो एक रब्बी उसके पास जाता है और उसके कान में फुसफुसाता है: 'मसीहा आ चुके हैं।' आप देखिए, उनका अंतरात्मा उन्हें दोषी ठहराता है; वे अपने पापबोध को महसूस करते हैं, लेकिन वे स्वयं को नम्र नहीं करते।

— और एक मरते हुए व्यक्ति से ये शब्द कहने का क्या फायदा?

— बलिकुल भी नहीं। वे यह सिर्फ इसलिए कहते हैं क्योंकि उनका विवेक उन्हें सता रहा है। वे सोचते हैं कि एक बार ये शब्द कह दिए जाएँ, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

— लेकिन क्या दूसरे ये शब्द नहीं सुनते?

— नहीं, यह उनके कान में फुसफुसाया जाता है। और यहूदी युवा रब्बियों के खिलाफ विद्रोह कर चुके हैं। वे कहते हैं, 'मसीहा आ चुका है; आप किस मसीहा की तलाश कर रहे हैं?' अमेरिका में, धर्मग्रंथों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने वाले युवाओं का एक समूह एक पत्रिका प्रकाशित करता है जिसमें लिखा है: 'मसीहा आ चुका है। जो कोई भी यह विश्वास नहीं करता कि मसीहा आ चुके हैं, हम उसे यह पत्रिका निशुल्क भेजेंगे ताकि वह विश्वास करने लगे। और यदि वे विश्वास करने लगे, तो वे पत्रिका की सदस्यता ले लें ताकि हम इसे दूसरों को भेज सकें और वे भी विश्वासी बन सकें।'

— क्या वे यहूदी हैं?

— हाँ, वे यहूदी हैं।

¹²⁸ देखें यशायाह 35:2।

— और क्या वे ईसाई बन गए हैं?

— खैर, फलिहाल, यह तथ्य कवि आस्था में आए हैं, अपने आप में ही कुछ मायने रखता है।

— क्या रब्बी गुप्त ईसाई हो सकते हैं?

— एक रब्बी और एक गुप्त ईसाई? अगर कोई आदमी ईसाई हो जाए तो क्या वह फरि भी रब्बी रहेगा? तो फरि क्या होगा? क्या वह यहूदियों को सखाएगा कमिशीहा अभी तक नहीं आए हैं, और फरि, जब वे मर रहे हों, तो उन्हें बताएगा कविह आ चुके हैं?

६६६ का नशान

— गेरोन्डा, ये सभी घटनाएँ कतिनी जल्दी घटेंगी?

— वे आपके और मेरे लिए वलिंबति हो रहे हैं — ताकहिम एक सुदृढ़ आध्यात्मिक प्रवृत्ति प्राप्त कर सकें। ईश्वर हमसे धैर्य रखता है क्योंकि, यदि यह सब अभी हो जाता, तो आप और मैं खो जाते। मसीह की शक्ति में कहीं भी किसी वशिष्ट समय का उल्लेख नहीं है,¹²⁹ फरि भी पवित्र धर्मग्रंथ कहता है कि इन घटनाओं का आगमन समय के संकेतों द्वारा पूर्व-सूचि होगा।¹³⁰ आइए हम सदा तैयार रहें, और जब वह समय नकिट आएगा, तब हम देखेंगे। तब हमें और अधिक नशिचिता होगी। केसरिया के संत एंड्रयू कहते हैं: 'जो वविकी है, उनके लिए समय और अनुभव इसे प्रकट करेंगे।'¹³¹

मुझे एक ऐसी कतिब मिली जिसके कवर पर तीन बड़े छक्के बने थे। कतिने नरिलज्ज लोग हैं! वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकसिंख्या छह आकर्षक लगे और लोगों को इससे परिचित किया जा सके। और इस तरह, धीरे-धीरे, वह नशान आ जाएगा।

— गेरोन्डा, कपड़ों के प्रेस स्टड्स भी 666 नंबर वाले गत्ते के कार्ड पर बेचे जाते हैं।

— हाँ, शैतान तुम्हें ले जाए! वे लंबे समय से क्रेडिट कार्ड पर तीन छह अंकों का उपयोग कर रहे हैं, और अब प्रेस स्टड्स पर भी! कई लोग '666' का उपयोग एक ट्रेडमार्क के रूप में करते हैं ताकलोग उनके सामान को प्राथमिकता दें। एक दूसरे का समर्थन करता है। दूसरे शब्दों में, '666' [एक पासवर्ड की तरह है; यह] '666' को पहचानता है। लखि है कि जब अपनी पूँछ खाने वाले साँप का प्रतीक व्यापक रूप से फैल जाएगा, तो इसका मतलब होगा कि यहूदियों ने पूरी दुनिया को गुलाम बना लिया है। यह प्रतीक अब कुछ बैंक नोटों पर भी लगाया गया है। 666 का नंबर पहले से ही चीन और भारत दोनों में फैल रहा है।

— गेरोन्डा, उन्हें यह संख्या कैसे पता है, ताकवि इसे चीजों पर लगा सकें?

¹²⁹ देखें मत्ती 24:36; मरकुस 13:32; प्रेरितों के काम 1:7; 1 थिसलुनीकियों 5:1।

¹³⁰ मत्ती 24:29 आदि; मरकुस 13:24 आदि; लूका 21:25 आदि देखें।

¹³¹ "चहिन के अंक और उसके (मसीह-वशिधी) बारे में लखी गई सभी बातों का सावधानीपूर्वक अध्ययन उन लोगों के लिए संकट के समय का खुलासा करेगा जो सतर्क और स्वस्थ मन वाले हैं।" तुलना करें: *सेंट एंड्रयू केसरिया के आर्चबिशप* द अपोकलिप्स। सेंट पीटर्सबर्ग, 1909, पृ. 120.

— सुसमाचार प्रचारक यूहन्ना जानते थे कि शैतान क्या करेगा, ठीक वैसे ही जैसे भवषियवक्ताओं ने भवषियवाणी की थी कि मसीह को 'चांदी के तीस टुकड़ों' के लिए बेचा जाएगा,¹³² कि उन्हें सरिका पलाया जाएगा,¹³³ और उनके वस्त्र उनके बीच बाँट लिए जाएंगे।¹³⁴ दो हजार साल पहले, प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में लिखा गया था कि लोगों को संख्या 666 से चिह्नित किया जाएगा। 'जो समझ रखता है, वह उस जानवर की संख्या की गणना करे, क्योंकि यह एक मनुष्य की संख्या है, और उसकी संख्या छह सौ साठ-छह है।' ¹³⁵ '666' यहूदियों के लिए अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। जैसा कि पवित्र शास्त्रों में कहा गया है, यहूदियों ने विभिन्न युद्धों में अधीन किए गए लोगों पर एक वशिष्ट कर लगाया। वार्षिक कर 666 प्रतिभाँ सोने का था।¹³⁶ अब, पूरी दुनिया पर वजिय प्राप्त करने के लिए, वे एक बार फिर अपना पुराना कर आंकड़ा पेश कर रहे हैं, जो उनके गौरवशाली अतीत से जुड़ा है। इसीलिए वे इस संख्या को किसी अन्य से बदलना नहीं चाहते। दूसरे शब्दों में, '666' मम्मोन का प्रतीक है।¹³⁷ यह सोने के एक माप से लिया गया था। वे इस बात से अनजान थे कि सेंट जॉन द थियोलोजियन किस बारे में बात करते हैं, लेकिन मम्मोन फिर भी मम्मोन ही रहता है। 'तुम ईश्वर और मम्मोन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।' ¹³⁸

सब कुछ वैसा ही हो रहा है जैसा होना चाहिए। अमेरिका में कुत्यों में माइक्रोचिप लगा दी गई है। एक ट्रांसमीटर के माध्यम से, वे रेडियो तरंगें उत्सर्जित करते हैं, और उनका पता लगाया जाता है; वे जानते हैं कि हर कुत्ता कहाँ है। टैग के बिना आवारा कुत्तों को लेजर बीम से मारा जाता है। और फिर वे लोगों को भी मारना शुरू कर देंगे। उन्होंने टनों मछलियों पर नशान लगा दिया है और एक उपग्रह से निगरानी कर रहे हैं कि वे किस समुद्र में हैं। और अब एक और बीमारी उभर आई है, जिसके लिए पहले ही एक टीका खोज लिया गया है। यह अनिवार्य होगा, और जब किसी व्यक्ति का टीकाकरण हो जाएगा, तो उस पर भी नशान लगा दिया जाएगा। अमेरिका में कतिने लोगों को पहले ही लेजर बीम से चिह्नित किया जा चुका है: कुछ को माथे पर, दूसरों को हाथ पर। और बाद में, कोई भी जो 666 नंबर से चिह्नित नहीं है, वह बेचने, खरीदने, कर लेने या नौकरी पाने में असमर्थ होगा। मेरा अंतरज्ञान मुझे बताता है कि विरोधी मसीह इस प्रणाली के माध्यम से पूरी दुनिया को अपने अधीन करना चाहता है। लोग — चाहे वे लाल, काले या गोरे हों — जो इस प्रणाली के बाहर रहेंगे, वे काम करने में असमर्थ होंगे और सामाजिक रूप से बहिष्कृत हो जाएंगे। इस प्रकार, [मसीह-विरोधी] एक ऐसी प्रणाली के माध्यम से थोपा जाएगा जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करती है, और केवल वे ही लोग व्यापार कर पाएँगे जो चिह्न — अंक 666 अंकित अंकन — को स्वीकार करते हैं।

लेकिन जिन्होंने नशान प्राप्त किया है, वे कतिनी पीड़ा सहेंगे! एक विशेषज्ञ ने मुझे बताया कि लेजर करिणें मनुष्यों के लिए बहुत हानिकारक होती हैं। जिन्होंने नशान लिया है, वे सूर्य की करिणों को 'सोख' लेंगे और इतनी पीड़ा सहेंगे कि

¹³² जेकर्याह 11:1-13 देखें

¹³³ देखें भजन संहिता 68:22।

¹³⁴ भजन संहिता 21:19 देखें।

¹³⁵ प्रकाशतिवाक्य 13:18।

¹³⁶ देखें 3 राजा 10:14 और 2 इतिहास 9:13।

¹³⁷ म¹¹² — धन, लाभ, सांसारिक वस्तुएँ। — अनुवादक की टिप्पणी।

¹³⁸ मत्ती 6:24.

वे अपने दरद में अपनी जीभ काट लेंगे।¹³⁹ जो लोग नशान नहीं लेते हैं, वे दूसरों की तुलना में बेहतर रहेंगे, क्योंकि मिसीह उनकी मदद करेंगे। और यह कोई मामूली बात नहीं है...

— वह उनकी मदद कब करेगा, गेरोन्डा? बाद में?

— नहीं, ठीक उसी समय।

— गेरोन्डा, लेकिन अगर वे बेच या खरीद नहीं सकते तो वे दूसरों से बेहतर कैसे रहेंगे?

— तुम देखोगे। ईश्वर जाने कैसे। और मुझे भी पता है। चीजों का यही चलन है... यह सवाल मेरे दमिग पर बहुत भारी था, और ईश्वर ने मुझे भेजा... एक तार। ईश्वर हम पर कतिनी कृपा करता है! ओह!...

— बताइए, जेरोन्डा, मुहर को भी 'चहिन' क्यों कहा जाता है?¹⁴⁰

— क्योंकि यह सतही नहीं होगा। 'अंकित करना' का क्या मतलब है? गहरी, सीधी रेखाएँ खींचना, है ना? यह नशान एक अंकन होगा जैसे पहले सभी सामानों पर लगाया जाएगा, और फिर लोगों को इसे अपने माथे या हाथ पर लगवाने के लिए मजबूर किया जाएगा। दो साल पहले मैंने टोरंटो के एक डॉक्टर से इस नशान के बारे में बात की थी, और अब उसने मुझे बताया है कि उसने अखबार में पढ़ा कि क्रेडिट कार्ड के बजाय अब फगिरप्रिंट की मांग की जा रही है। वे आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि क्या होगा। हाल ही में ग्रीस में आयात किए गए कुछ टेलीविज़न में एक विशेष उपकरण होता है जो उन्हें देखने वालों की निगरानी करता है। जल्द ही, जनिके पास टेलीविज़न होगा वे उसे देख रहे होंगे, जबकि दूसरे लोग उसी समय उनकी निगरानी कर रहे होंगे! लोगों पर नज़र भी रखी जाएगी और वे दूसरों पर भी नज़र रखेंगे। उनका पूरा जीवन, वे जो कुछ भी कहते और करते हैं — सब कुछ एक कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित किया जाएगा। क्या आप देख रहे हैं कि शैतान ने किस तरह की तानाशाही रची है? ब्रुसेल्स में, [केंद्रीय] कंप्यूटर के ऊपर तीन छह वाले एक पूरे महल का निर्माण किया गया है। यह कंप्यूटर अरबों लोगों को नियंत्रित कर सकता है। छह अरब लगभग पूरी दुनिया है। एक बटन के स्पर्श पर पाप-स्वीकृति! कुछ यूरोपीय लोगों ने वरिध किया है क्योंकि उन्हें एक वैश्विक तानाशाही का डर है। और हम, ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के रूप में, इसका वरिध करते हैं क्योंकि हम न तो मसीह-वरिधी को चाहते हैं, और न ही, बेशक, हम कोई तानाशाही चाहते हैं। हम [गंभीर] घटनाओं का सामना कर रहे हैं, लेकिन वे लंबे समय तक नहीं चलेंगी। जैसे कि साम्यवाद के तहत ऑर्थोडॉक्सी कथित तौर पर गायब हो गई थी, वैसे ही अब यह 'गायब' हो जाएगी।

नए पहचान पत्र

— गेरोन्डा, एक व्यक्ति ने कहा: 'लेकिन पाँच-हजार-ड्राकमा के बैंकनोट का क्या? उस पर तीन छह के अंक हैं, और हम इसका उपयोग करते हैं, है ना? पहचान पत्र के साथ भी यही सच होगा।'...

— पाँच हजार ड्राकमा एक बैंकनोट है। अंग्रेज़ी पाउंड पर रानी विक्टोरिया की तस्वीर भी बनी है, लेकिन मुझे उससे कोई परेशानी नहीं है। 'सीज़र की चीज़ें सीज़र को दो।' हालाँकि, जब पहचान पत्रों की बात आती है तो यह एक अलग

¹³⁹ देखें प्रका. 16:10।

¹⁴⁰ लेख — χάραγμα (ग्रीक) क्रियापद χάρασσω से — चहिनित करना, नक्काशी करना, काटकर निकालना। — अनुवादक की टिप्पणी।

मामला है। ये पैसे नहीं, बल्कि कुछ व्यक्तिगत हैं। शब्द 'ताउतोतति'¹⁴¹ का शाब्दिक अर्थ है, यानी किसी व्यक्ति की पहचान उस चीज़ से होती है जो वह घोषित करता है। तो वे चुपके से शैतान को शामिल कर रहे हैं, और मैं इस पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ कि मैं उसे स्वीकार करता हूँ? मैं भला ऐसा कैसे कर सकता हूँ?

— गेरोन्डा, नए आईडी कार्ड और मुहर के बीच क्या संबंध है?

— नया आईडी कार्ड नशान नहीं है। यह नशान का परिचय है।

— लोग, जेरोन्डा, पूछ रहे हैं कि उन्हें इन नए पहचान पत्रों के थोपे जाने के बारे में क्या करना चाहिए।

— यदि वे पूछें, तो आप उन्हें सलाह दें कि वे अपने आध्यात्मिक पतिओं से परामर्श करें और धैर्य रखें, ताकि यह देखा जा सके कि चर्च कैसे कार्य करेगी,¹⁴² क्योंकि किई प्रश्न पूछते हैं, लेकिन उत्तरों को समझने वाले कम हैं। पुस्तिका 'Signs of the Times'¹⁴³ में मैंने सब कुछ अत्यंत स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है। हर कोई अपने विचारों के अनुसार कार्य करे। बेशक, कुछ लोग कहते हैं: 'आह, यह तो बस एक भिक्षु की राय है। यह चर्च का रुख नहीं है।' हालाँकि, मैंने जो राय व्यक्ति की वह मेरी अपनी नहीं थी। मैंने तो केवल मसीह के वचन, सुसमाचार के वचन प्रस्तुत किए, क्योंकि हमें अपनी राय को ईश्वर की इच्छा के अधीन करना होगा, जो सुसमाचार में व्यक्ति होती है। हालाँकि, अन्य लोग मेरे कहे का विपरीत कहते हैं [और, मेरी राय को बहाना बनाकर], दावा करते हैं कि फादर पैसियस ने यह कहा था। और फिर कुछ अन्य लोग, यह सुनकर, इस बात पर ध्यान नहीं देते कि ये मामले अत्यंत गंभीर हैं; वे यह नहीं पूछते कि क्या मैंने वास्तव में ऐसा कुछ कहा था, बल्कि बस इसे आँख मूँदकर मान लेते हैं। मुझे डर नहीं लगता; मैं बिना हचिकचाहट के बोलता हूँ। कुछ लोग मेरे आश्रम में आते हैं और डबबे में छह-रूबल के नोट डाल जाते हैं। कहने का मतलब यह है कि यह सब ठीक है। लेकिन एक बार उन्होंने गेट के पीछे एक कार्डबोर्ड का टुकड़ा छोड़ दिया। मैंने सोचा कि कोई आया होगा, मुझे घर पर नहीं पाया होगा, और दूसरों के लिए लिख गया होगा 'वह यहाँ नहीं है'। फिर मैंने इसे पढ़ा और यह देखा!.. ऐसी घनिष्ट गाली कि एक साधारण व्यक्ति भी बोलने की हिम्मत नहीं करेगा! इस सारी गंदगी की सफाई आ रही है, आ रही है, लेकिन हम इस तूफान का सामना करेंगे। लोग पहले ही लड़ने के लिए उठ खड़े हुए हैं। हमें भी बहुत प्रार्थना के साथ उठ खड़ा होना चाहिए।

कुछ लोग पहचान पत्रों के मुद्दे को लेकर चिंतित हैं, जबकि अन्य लोग कठिनाइयाँ पैदा करने के लिए इसका फायदा उठा रहे हैं। चर्च को सही रुख अपनाना चाहिए; उसे बोलना चाहिए और विश्वासियों को समझाना चाहिए ताकि वे समझें कि नया पहचान पत्र स्वीकार करना अनुग्रह से पतन होगा। साथ ही, चर्च को राज्य पर यह सुनिश्चित करने के लिए

¹⁴¹ ग्रीस में, नागरिकों की पहचान प्रमाणित करने वाले दो प्रकार के दस्तावेज़ हैं: देश के भीतर उपयोग के लिए एक पहचान पत्र और विदेश यात्रा के लिए एक पासपोर्ट। पहचान पत्र के लिए ग्रीक नाम है: ταυτότητα | Ταυτότητα — "1) पहचान (गणति), एकरूपता, समतुल्यता, संयोग; 2) पासपोर्ट, पहचान पत्र; 3) व्यक्ति" (*आई. पी. खोरीकोव, एम. जी. मालेवा* आधुनिक ग्रीक-रूसी शब्दकोश। मास्को, 1980। पृ. 743)। शैगन समझौते के तहत, जानवर की संख्या पर आधारित बारकोड वाले नए पहचान दस्तावेज़ों की शुरुआत ने चर्च ऑफ़ ग्रीस, माउंट एथोस और ग्रीक नागरिकों की भारी बहुमत से विरोध का तूफान खड़ा कर दिया। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹⁴² एल्डर पैसियस की मृत्यु के बाद ग्रीस की चर्च के पवित्र सनिड द्वारा लिए गए नरिण्यों में कहा गया है कि विरोधी मसीह के नंबर वाले दस्तावेज़ रूढ़िवादी ईसाइयों के लिए अस्वीकार्य हैं। इस मुद्दे पर चर्चा के दौरान, दविगत एल्डर की राय ग्रीस की चर्च के पदानुक्रम, पुरोहिता वर्ग और सामान्य ईसाइयों के लिए नरिणायक कारकों में से एक साबित हुई। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹⁴³ 1987 में, धन्य एल्डर पैसियस ने इस विषय को समर्पित 'समय के संकेत - 666' शीर्षक से एक पुस्तिका प्रकाशित की। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

दबाव डालना चाहिए कनिया पहचान पत्र, कम से कम, अनविार्य न हो। यदि चिरच एक दृढ़ रुख अपनाती है, यदि विश्वासियों की स्वतंत्रता का सम्मान किया जाता है—ताकजि लोग चाहें वे नया आईडी कार्ड ले सकें, जबकि जो नहीं चाहते वे पुराना ही रख सकें—तो केवल कुछ ही दृढ़ विश्वास वाले लोग 'तीन छह' को स्वीकार करने से इनकार करेंगे। उनके लिए परीक्षाएँ इंतज़ार कर रही हैं, क्योंकि बाकी लोग उनके खिलाफ हो जाएँगे। अधिकांश लोग उस जानवर के नंबर वाले आईडी कार्ड को स्वीकार कर लेंगे। जो लोग शांति और आराम चाहते हैं वे नए आईडी कार्ड स्वीकार कर लेंगे, जबकि दुर्भाग्यपूर्ण, धर्मनिरपेक्ष लोग अपने पुराने दस्तावेज़ रखेंगे, और इस कारण से उनका उत्पीड़न किया जाएगा।

वर्तमान में, मंत्री का यह वादा कि 666 पहचान पत्रों पर नहीं दखिगा—न तो स्पष्ट रूप से और न ही नहिती रूप से—का भी कुछ मतलब है। आइए धैर्य रखें; समय ही बताएगा। उनका यह बयान कि तीन छह शामिल नहीं किए जाएंगे, पहले से ही कुछ है। उन्होंने अपनी मर्जी से पीछे हटना शुरू कर दिया है। आइए देखें कि वे आखिरकार आईडी कार्डों पर क्या छापते हैं। और जब तक नए आईडी कार्ड जारी होना शुरू होंगे, तब तक ईश्वर का प्रकोप भी भड़क सकता है। इसके अलावा, ऐसा भी नहीं होगा कि सभी को चौबीस घंटों के भीतर नए आईडी कार्ड मलि जाएँगे। पहले कार्ड सामने आएँगे, उनकी बारीकी से जाँच होगी, और अगर मंत्री झूठा नकिला, तो संघर्ष न्यायसंगत होगा। लेकिन अगर हम अभी अपने वरिध प्रदर्शन जारी रखते हैं, तो तार खींचने वाले कहेंगे: 'देखो, रूढ़िवादी लोग अशांति फैला रहे हैं। मुद्दा अभी तक उठा भी नहीं है, और वे पहले से ही चलिला रहे हैं और वरिध कर रहे हैं।' एक अच्छा प्रहरी कुत्ता चोर के आने पर भौंकता है। जब चोर भाग जाता है, तो वह भौंकना बंद कर देता है। हालांकि, अगर कुत्ता लगातार भौंकता रहे, तो आप उसे अच्छा प्रहरी कुत्ता नहीं कह सकते।

— और साथ ही, गेरोन्डा, यह कहा गया है कि, चूँकि हमारे यहाँ धार्मिक सहिष्णुता है, इसलिए नए पहचान पत्रों में धार्मिक संबद्धता का उल्लेख नहीं किया जाएगा।¹⁴⁴

— हाँ, उन्हें इसमें दलिचस्पी नहीं है, लेकिन मुझे है, क्योंकि यह मेरी पहचान का दस्तावेज़ है। इसमें लिखा है कि मैं कहाँ से हूँ और मैं किस तरह का व्यक्ति हूँ। अगर मेरी धार्मिक पहचान नहीं होगी, तो समस्याएँ पैदा होंगी। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति रिजिस्ट्री कार्यालय जा सकता है। अगर उनकी आईडी में 'ऑर्थोडॉक्स' लिखा है—चाहे वह किसी भी संप्रदाय का हो—तो सब कुछ ठीक है। लेकिन अगर कोई धार्मिक संबद्धता नहीं दी गई है, तो उन्हें शादी की अनुमति कैसे मिलेगी? इससे चर्चों में भ्रम पैदा होगा। हालांकि, अगर धार्मिक संबद्धता स्वैच्छिक आधार पर दर्ज की जाती है, तो यह आस्था की स्वीकृति के रूप में भी काम करेगी। यूरोप तो यूरोप है। यहाँ हमारी स्थिति अलग है।

स्टाम्प लगाने का एक चालाकी भरा तरीका

धीरे-धीरे, पहचान पत्रों और आईडी दस्तावेजों—यानी व्यक्तिगत फाइलें बनाने—की शुरुआत के बाद, वे चालाकी से उस नशान को लगाना शुरू कर देंगे। विभिन्न तरीकों का उपयोग करके, लोगों को अपने माथे या हाथ पर नशान स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाएगा। वे लोगों के लिए मुश्किलें पैदा करेंगे और कहेंगे: 'केवल क्रेडिट कार्ड का उपयोग करें; नकद को समाप्त कर दिया जाएगा।' कुछ खरीदने के लिए, एक व्यक्ति अपना कार्ड दुकानदार को देगा, और दुकानदार को उसके बैंक खाते से पैसे मलेंगे। कार्ड के बिना कोई भी कुछ भी बेच या खरीद नहीं पाएगा। दूसरी ओर, वे 'परफेक्ट सिस्टम' का विज्ञापन करना शुरू कर देंगे: माथे और हाथ पर अंकित संख्या 666, जो नग्न आंखों से दिखाई

¹⁴⁴ ग्रीस में, हाल तक, पहचान पत्रों पर 'धर्म' का कॉलम अनविार्य था। – अनुवादक की टिप्पणी।

नहीं देती। इसी समय, टेलीवज़िन कार्यक्रम दिखाएंगे कि कैसे किसी ने किसी दूसरे व्यक्ति का कार्ड लेकर उसका उपयोग करके बैंक से पैसे निकाले। वे बना रुके बात करेंगे: 'माथे या हाथ पर लेजर से उकेरा गया नशान अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि केवल मालिक ही नशान का नंबर जानता है। यह नशान सबसे उत्तम प्रणाली है: कोई चोर आपके सरि या हाथ को चुरा नहीं पाएगा, और न ही वह नंबर पर जासूसी कर पाएगा।' इसीलिए अपराधियों और खलनायकों को वर्तमान में खुली छूट दी जा रही है। माउंट अथोस पर, कैरीज के आसपास, पंद्रह सेल लूटे गए, और डकैती के दौरान एक भिक्षु की हत्या कर दी गई। इस तरह, हर किसी को दूसरों की चीजों पर कब्ज़ा करने और जो चाहें चोरी करने का अवसर मिलेगा। मान लीजिए कोई धोखाधड़ी से जमीन का एक टुकड़ा हासिल करने का फैसला करता है। वह दावा करेगा कि यह कथित तौर पर उसके दादा की थी या उसने खुद इस जमीन को चराई के लिए पट्टे पर लिया था। इसे सुलझाने की कोशिश करें! और फिर अधिकारी कहेंगे: "दुर्भाग्य से, हम उनका हिसाब नहीं रख सकते। नगिरानी केवल कंप्यूटर द्वारा ही की जा सकती है।" और वे लोगों का पंजीकरण शुरू कर देंगे। कंप्यूटर दिखाएगा कि आप पंजीकृत हैं या नहीं, और उसी के आधार पर, आपको सेवा दी जाएगी या नहीं।

अगले ढाई साल बहुत कठिन होंगे।¹⁴⁵ जो लोग इस व्यवस्था को स्वीकार करने से इनकार करेंगे, उन्हें बहुत कठिनाई होगी। वे उन्हें जेल में डालने की कोशिश करेंगे, इसके लिए लगातार कोई न कोई नया बहाना ढूंढते रहेंगे। एक साल बीत जाएगा, और उन्हें पूछताछ के लिए किसी दूसरे शहर ले जाया जाएगा ताकि मामला किसी दूसरी अदालत में सुना जा सके; उस शहर से उन्हें तीसरे शहर ले जाया जाएगा। और फिर वे कहेंगे: 'माफ़ कीजिए, आप निर्दोष हैं। अगर आप पंजीकृत होते, तो हम एक मिनट में आपकी जांच कर सकते थे। लेकिन अब हम जांच नहीं कर सकते।'

— गेरोन्डा, क्या वे जबरदस्ती पासपोर्ट पर मुहर नहीं लगा सकते?

— वे शष्पिटाचार के लिए इतना आगे नहीं बढ़ेंगे। आखिरकार, वे यूरोपीय होने के नाते, ठीक से व्यवहार करेंगे। वे परम कुलीनता दिखाएंगे! वे लोगों को सताएंगे नहीं; हालाँकि, नशान के बिना, कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह पाएगा। वे कहेंगे, 'तुम नशान के बिना कष्ट झेल रहे हो, लेकिन अगर तुम इसे स्वीकार कर लेते, तो तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होती।' भले ही किसी व्यक्ति के पास सोने के सिक्के या डॉलर हों, वह उनका उपयोग नहीं कर पाएगा। इसलिए, अभी से एक साधारण, मध्यम जीवन का आदी हो जाने से, उन वर्षों में जीवित रहना संभव होगा। यदि किसी के पास थोड़ी सी ज़मीन है, थोड़ी सी गेहूँ और आलू उगाता है, और कुछ जैतून के पेड़ लगाता है, और फिर कुछ पशु—एक बकरी, कुछ मुरगियाँ—पालता है, तो [एक ईसाई] अपने परिवार का भरण-पोषण कर पाएगा। क्योंकि संग्रहीत राशन का भी कोई बहुत उपयोग नहीं है: भोजन ज्यादा समय तक नहीं टकित और जल्दी खराब हो जाता है। लेकिन, बेशक, ये कष्ट लंबे समय तक नहीं रहेंगे: तीन साल, साढ़े तीन साल।¹⁴⁶ चुने हुए के लिए, दानों को कम कर दिया जाएगा,¹⁴⁷ और उन्हें यह भी एहसास नहीं होगा कि ये साल कैसे बीत गए। ईश्वर मनुष्य को सहायता के बिना नहीं छोड़ेगा।

— गेरोना, क्या मसीह इन कठिन वर्षों के दौरान होने वाली घटनाओं में हस्तक्षेप करेंगे?

— हाँ। देखिए, यहाँ तक कि अब भी, संत, परमेश्वर और मसीह की अतिपवित्र माता अक्सर एक ऐसे व्यक्ति के सामने प्रकट होती हैं जिसका स्वभाव अच्छा है लेकिन जिसके साथ अन्याय हो रहा है, ताकि उसे बचा सकें। तो अब प्रभु

¹⁴⁵ देखें दानियेल 9:26-27; प्रकाशतिवाक्य 12:6; 13:5। यह भी देखें: *सेंट आइरेनियस ऑफ़ ल्यॉन* कृतियाँ। मॉस्को: पालोमन, ब्लागोवेस्ट, 1996। heresies के खिलाफ पाँच पुस्तकें। पुस्तक V, अध्याय XXV, पृ. 500, 501, और अध्याय XXX, पृ. 512.

¹⁴⁶ उपरोक्त।

¹⁴⁷ मत्ती 24:22; मरकुस 13:20 देखें।

कतिनी अधिक मदद करेंगे, जब ये दुर्भाग्यशाली लोग खुद को इतनी कठिनी स्थितिमें पाएँगे। एक तूफ़ान आने वाला है; वरिधी मसीह, शैतान की एक संक्षिप्त तानाशाही होगी। और फिर मसीह हस्तक्षेप करेंगे, इस पूरी वरिधी मसीह की व्यवस्था को बुरी तरह धूल चटा देंगे; बुराई को वे अपने पैरों तले कुचल देंगे, और अंततः उसे अच्छाई में बदल देंगे।

मुहर त्याग के समान है

यद्यपि सेंट जॉन द थियोलोजियन ने प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में चहिन,¹⁴⁸ के बारे में अत्यंत स्पष्टता से लिखा है, कुछ लोग इसे नहीं समझते। और आप उनसे क्या कह सकते हैं? दुर्भाग्यवश, कुछ आधुनिक ग्नोस्टिकों के मन से बहुत सारी बकवास सुनी जाती है। "मैं तीन छह वाले आईडी कार्ड को स्वीकार करूँगा और उस पर एक क्रॉस बनाऊँगा," एक कहता है। दूसरा उसकी प्रतिध्वनि करता है: "और मैं अपने माथे पर नशान स्वीकार करूँगा और अपने माथे पर क्रॉस का चहिन बनाऊँगा।" और वे इस तरह की बहुत सारी बकवास दोहराते हैं। वे सोचते हैं कि इस तरह वे पवित्र हो जाएँगे, जबकि ऐसे विचार एक भ्रम हैं। एक बशिप ने मुझसे कहा: 'मैं अपने पहचान पत्र पर, जहाँ मुझे हस्ताक्षर करना होता है, एक छोटा सा क्रॉस बनाऊँगा। मैं मसीह का परित्याग नहीं कर रहा हूँ; मैं तो बस उस व्यवस्था का उपयोग करता हूँ जो मेरे काम आती है।' — "बहुत अच्छा," मैंने उससे कहा, "तो आप, बशिप, अपने विशेष पद के कारण, अपने नाम के आगे एक क्रॉस लगाते हैं। कोई और एक आर्चमैड्राइट है; उसका पद भी विशेष है, और वह भी अपने नाम के आगे एक क्रॉस लगाता है। लेकिन आप लोगों से क्या कहेंगे कि वे क्या करें?" गंदगी को पवित्र नहीं किया जा सकता। शुद्ध जल अनुग्रह प्राप्त करता है और पवित्र जल बन जाता है। लेकिन मूत्र पवित्र जल नहीं बन सकता। एक पत्थर चमत्कारक रूप से रोटी में बदल जाता है। लेकिन अशुद्धियाँ पवित्र नहीं होतीं। परिणामस्वरूप, शैतान, वरिधी मसीह, जो हमारे पहचान पत्र पर, हमारे माथे पर या हमारे हाथ पर अपने प्रतीक के रूप में प्रकट होता है, पवित्र नहीं होता, भले ही हम वहाँ एक क्रॉस लगा दें। हमारे पास सच्चे क्रॉस की शक्ति—यह पवित्र प्रतीक—और मसीह की द्रव्य अनुग्रह केवल तभी होती है जब हम पवित्र बपतिस्मा की अनुग्रह को बनाए रखते हैं, जिसमें हम शैतान का परित्याग करते हैं, मसीह के साथ एक होते हैं, और पवित्र मुहर प्राप्त करते हैं—'पवित्र आत्मा के वरदान की मुहर'। और वे, आप देखिए, सब कुछ [इतनी सरल] तर्क से समझा देते हैं!... बस पास में ही क्रॉस का नशान बना लें – और सब कुछ ठीक हो जाएगा! फिर भी हम देखते हैं कि पवित्र प्रेरित पतरस ने बाहरी रूप से मसीह का इनकार किया, लेकिन वह भी एक इनकार ही था।¹⁴⁹ मसीह-वरिधी के चहिन को ग्रहण करके, वे पवित्र बपतिस्मा में उन्हें दिए गए मसीह के चहिन का परित्याग करते हैं, और फिर भी वे यह दावा करते हैं कि मसीह उनके भीतर है!

— लेकिन अगर, गेरोना, कोई अज्ञानता के कारण चहिन स्वीकार कर ले?

— तुम्हारे लिए 'उदासीनता से' कहना बेहतर होगा। जब सब कुछ पूरी तरह स्पष्ट हो, तो अज्ञानता कैसी? भले ही कोई व्यक्ति जाने, उसे पछताछ करके पता लगाना चाहिए। मान लो कि हम नहीं जानते थे और इसलिए हमने वह चहिन स्वीकार कर लिया। लेकिन तब मसीह हमसे कहेंगे: 'हे कपटियों, तुम आकाश का रूप देखकर मौसम का अनुमान तो लगा लेते हो, पर समय के संकेतों (искусити) की व्याख्या नहीं कर सकते।'¹⁵⁰ चहिन प्राप्त करके, भले ही अज्ञानता में ही

¹⁴⁸ देखें प्रका. 13:16 और आगे; 14:9 और आगे; 16:2 और 20:4।

¹⁴⁹ देखें मत्ती 26:69–75; मरकुस 14:4–72; लूका 22:54–62; यूहन्ना 18:16–18; 25–27.

¹⁵⁰ मत्ती 16:3.

क्यों न हो, एक व्यक्तिदिव्य अनुग्रह खो देता है और शैतानी प्रभाव के अधीन आ जाता है। देखो, जब एक पुरोहित बपतिस्मा के पवित्र कुंड में एक बच्चे को डुबोता है, तो बच्चा, बना यह जाने भी, पवित्र आत्मा प्राप्त करता है, और उसके बाद दिव्य अनुग्रह उनमें वास करता है।

भवषियवाणियों की व्याख्याएँ

— गैरोना, कुछ लोग कहते हैं: 'जो कुछ भी ईश्वर ने नयित किया है, वह होकर रहेगा। इसमें हमारा क्या काम?' हमें इसे कैसे देखना चाहिए?

— हाँ, मेरे बच्चे, वे ऐसा कह सकते हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है! मुझे भी कुछ लोगों से सुनना पड़ता है: 'यहूदी इतने मूर्ख नहीं हैं कि तीन छक्कों के साथ खुद को उजागर कर लें, क्योंकि सुसमाचार लेखक यूहन्ना ने इस बारे में प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में लिखा है। अगर ऐसा होता, तो वे सब कुछ और चतुराई से और गुप्त रूप से व्यवस्थित करते।' तो फिर, क्या लेखकों और फरीसियों को पुराना नियम नहीं पता था? क्या अन्नास और कैफा को किसी और से बेहतर नहीं पता था कि क्या लिखा गया था—कमिशीह को 'चाँदी के तीस टुकड़ों' के लिए धोखा दिया जाएगा?¹⁵¹ तो फिर, उन्होंने [यहूदा को] एकतीस या उन्नीस चाँदी के टुकड़े क्यों नहीं दिए, बल्कि तीस दिए? लेकिन वे अंधे हो गए थे। ईश्वर जानता था कि सब कुछ बिल्कुल ऐसा ही होगा। ईश्वर पूर्वानुमान लगाता है, लेकिन पूर्वनिर्धारित नहीं करता। केवल तुर्क ही भाग्य, कस्मिमत में विश्वास करते हैं।¹⁵² ईश्वर जानता है कि घटनाएँ एक निश्चित तरीके से घटित होंगी, जबकि मनुष्य अपनी मूर्खता में वही करता है जो ईश्वर पहले से जानता था कहिगा। यह इसलिए नहीं कि ईश्वर ने ऐसा आदेश दिया हो; नहीं, वह देखता है कि मानव द्वेष कतिनी दूर तक जाएगा, और जानता है कि वे अपना मन नहीं बदलेंगे। इसका यह अर्थ नहीं कि ईश्वर घटनाओं को पूर्वनिर्धारित करता है।

इस बीच अन्य लोग भवषियवाणियों में व्यस्त हैं, जिनकी वे अपनी-अपनी व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं। वे अपने कथनों को 'मेरे विचार से' कहकर भी सीमिति नहीं करते, बल्कि दावा करते हैं: 'यही सच है!' और वे अपनी-अपनी रायों का एक पूरा समूह पेश करते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी इच्छानुसार भवषियवाणियों की व्याख्या करते हैं, ताकि वे अपनी नज़ी इच्छाओं को सही ठहरा सकें। उदाहरण के लिए, संत सरिलि के शब्दों के संबंध में: 'यह बेहतर होगा यदि कमिशीह-वरीधी के संकेत हमारे समय में न हों'¹⁵³ — एक व्यक्ति जो खुद को और अपनी कायरता को सही ठहराना चाहता है, वह कहेगा: 'देखिए न? संत सरिलि को डर था कि वह धर्म त्याग देगा!' और मेरी क्या बात? क्या मैं संत सरिलि से बेहतर हूँ? परिणामस्वरूप, भले ही मैं मसीह का परित्याग कर दूँ, उसमें कुछ भी भयानक नहीं है!' फिर भी संत कहते हैं: "यह बेहतर होता अगर वे न होते," ताकि उनकी आँखें मसीह-वरीधी को न देखें, और यह इसलिए नहीं कि वह कथिति तौर पर डर गया था। क्या आप देख रहे हैं कि शैतान क्या कर रहा है?

दुर्भाग्य से, कुछ आधुनिक ग्नोस्टिक भी अपने आध्यात्मिक बच्चों को शिशुओं की तरह लपेटते हैं, ताकि वे परेशान न हों। वे कहते हैं, "कोई बात नहीं, यह कोई बड़ी बात नहीं है, जब तक कि आप अपने भीतर विश्वास रखते हैं।" या वे

¹⁵¹ देखें ज़ेकार्याह 11:1-13।

¹⁵² कस्मिमत (अरबी, शाब्दिक अर्थ 'आवंटन') – वह जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की इच्छा से नयित है। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁵³ 'हे, काश कि यह केवल कहा ही गया होता, परन्तु परमेश्वर करे कि यह हम पर न आए!' तुलना करें: *सेंट सरिलि ऑफ़ जेरुसलम*, कृतियाँ, मॉस्को, 1855. उपदेश 15, 18. पृ. 262.

वलिप करते हैं: "इस वषिय पर बात मत करो—प्रमाणपत्रों के बारे में, मुहर के बारे में—ताकलोग चतिति न हों!" जबकि, अगर वे लोगों से कहते: "आओ अधिकि आध्यात्मकि रूप से जीने की कोशशि करें, मसीह के करीब रहें और कसी से न डरें, क्योकिसबसे बुरा जो हो सकता है वह यह है कहिम शहीद हो जाएँगे," तो वे कम से कम उन्हें कसी न कसी तरह से आने वाली कठनाइयों के लिए तैयार कर रहे होते। सत्य जानने पर, एक व्यक्तचितिन करेगा और अपनी नींद से जाग जाएगा। जो हो रहा है उससे उसे पीड़ा होगी; वह प्रार्थना करेगा और कसी जाल में न फंसने का ध्यान रखेगा।

तो अब क्या हो रहा है? ऐसे 'व्याख्याकार' न केवल अपनी तरह से भवषियवाणियों पर टपिपणी करते हैं, बल्कि वे स्वयं भी सांसारकि लोगों की तरह कायर हैं। फरि भी उन्हें आध्यात्मकि चति दखाकर ईसाइयों की मदद करनी चाहिए, उनमें बेचैनी की एक स्वस्थ भावना भरनी चाहिए ताकि वे अपने वशिवास में मजबूत हो सकें और दविय सांतवना का अनुभव कर सकें। मैं हैरान हूँ: क्या जो कुछ भी हो रहा है, वह उन्हें एक पल के लिए भी सोचने पर मजबूर नहीं करता? और अपनी ही तरकशक्तिके आधार पर दी गई अपनी व्याख्याओं के बाद, वे कम से कम एक प्रश्नचहिन भी क्यो नहीं लगाते? क्या होगा अगर वे मसीह-वरिधी के नशान में उसकी मदद करें और अन्य आत्माओं को भी वनिश की ओर ले जाएँ? जब सुसमाचार में कहा गया है: '*कवि, यदसिभव हो तो, चुने हुआओं को भी धोखा दें*' (154), तो प्रभु का तात्पर्य यह है कि जो लोग अपनी ही तरकशक्तिके अनुसार धर्मग्रंथों की व्याख्या करते हैं, वे धोखा खाएंगे।

तो, 'परफेक्ट क्रेडिट कार्ड ससिटम' और कंप्यूटर सुरक्षा के पीछे एक वैश्वकि तानाशाही छपि है; इसके पीछे वरिधी मसीह का जुआ है। "*... उनके दाहनि हाथों या उनके माथों पर नशान लगाया जाए, ताकि कोई भी तब तक न खरीद सके और न बेच सके जब तक उसके पास वह नशान, या जानवर का नाम, या उसके नाम का अंक न हो। यहाँ बुद्धि है। जो समझ रखता है, वह उस जानवर की संख्या का हसिब लगाए, क्योकियह एक मनुष्य की संख्या है, और उसकी संख्या छह सौ साठ-छह है।*"^{155 156}

¹⁵⁴ मार्क 13:22.

¹⁵⁵ प्रकाशतिवाक्य 13:16–18।

¹⁵⁶ 1997 में, नकिपोलसि और प्रेवेजा के महाधर्ममाध्यक्ष मेलेटओस की 'ऑर्थोडॉक्स परंपरा में वरिधी मसीह का चहिन' नामक एक पुस्तक ग्रीस में प्रकाशति हुई। 2001 में, पवतिर शहीद ग्रैंड डचेस एलजाबेथ की बहनों ने मास्को में इस पुस्तक का रूसी अनुवाद प्रकाशति किय।

इस पुस्तक को ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च के धर्मनषिठ पुरोहितों, संन्यासियों और ईश्वर-भयभीत सामान्य लोगों द्वारा नकारात्मक रूप से स्वीकार किय गया। इसके बाद आए समीक्षाओं में यह बताया गया कि परिम आदरणीय लेखक ने पवतिर धर्मग्रंथ और पैट्रिस्टिकि स्रोतों को तोड़-मरोड़कर, ऐसे नषिकर्षों पर पहुँचता है जो 7 अप्रैल 1997 और 9 फरवरी 1998 के ग्रीस की चर्च के पवतिर सनिड की परपितर पत्रों में नरिधारति सरव-चर्च संबंधी आकलनों, माउंट अथोस के पवतिर समुदाय के आह्वानों, साथ ही धन्य एल्डर पैसयिस की राय का खंडन करते हैं। मेट्रोपॉलिटिन मेलेटयिस की पुस्तक का सबसे व्यापक और सफल धर्मशास्त्रीय खंडन मेटेओरा के पवतिर पहाड़ों के संन्यासियों द्वारा 'Παραχάραξη του χαράγματος' शीर्षक के तहत प्रकाशति किय गया है। 'उनकी पुस्तक "ऑर्थोडॉक्स परंपरा में वरिधी मसीह का चहिन" में नकिपोलसि और प्रेवेजा के महाधर्ममाध्यक्ष उनकी उत्कृष्टता मेलेटओस के दृष्टिकोणों का खंडन।' — *अनुवादक की टपिपणी*।

अध्याय 2. कैसे बलदान एक व्यक्ति को आनंद देता है

हमारे युग में, आत्म-बलदान एक दुर्लभता है

'बच्चे तो बस एक इंड्रस्ट हैं,' एक ऐसी महिला ने मुझे कहा जिसके पास सब कुछ था। उसके बच्चे उसके लिए बोझ थे! अगर एक माँ इस तरह सोचती है, तो वह किसी काम की नहीं है, क्योंकि माँ का प्यार करना स्वाभाविक है। एक माँ अपनी बेटी को शादी से पहले सुबह दस बजे तक सोने दे सकती है। हालाँकि, जिस क्षण वह खुद माँ बनती है और उसे अपने बच्चे को खाना खिलाना, नहलाना और उसकी देखभाल करनी होती है, वह रात में सोएगी भी नहीं, क्योंकि इंजन चलने लग जाता है। आत्म-बलदान की भावना से, एक व्यक्ति किराहता या बोझिल महसूस नहीं करता, बल्कि आनंदित होता है। यही पूरी नींव है: आत्म-बलदान की भावना मौजूद होनी चाहिए। और यह महिला, अगर वह कहे, 'मेरे ईश्वर, मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ? आपने मुझे न केवल बच्चे दिए हैं, बल्कि कई आशीर्वाद भी दिए हैं। कतिने लोगों के पास कुछ भी नहीं है, फरि भी मेरे पास कई घर हैं, मेरे पति से वरिषत मली है, मेरे पति अच्छी तनखाह कमाते हैं, और मुझे दो जगहों से करिया मलिता है!... मुझे कोई कठिनाई नहीं है। मैं आपकी कैसे धन्यवाद करूँ, मेरे ईश्वर? मैं इन सबका योग्य नहीं थी।' अगर उसने ऐसा सोचा होता, तो प्रशंसा के साथ-साथ दुर्भाग्य की भावना भी गायब हो जाती; यानी, अगर वह बस दनि-रात ईश्वर का धन्यवाद करती रहती, तो वही काफी होता।

— बलदान, गेरौन्डा, आनंद लाता है।

— ओह, वह कैसी खुशी है! इस बलदान की खुशी का स्वाद आज के लोगों को पता नहीं है, और इसीलिए वे इतने पीड़ित हैं। उनके भीतर कोई आदर्श नहीं है; वे जीवित होने की इस सच्चाई से ही दबे हुए हैं। साहस और आत्म-बलदान एक व्यक्ति के भीतर प्रेरक शक्तियाँ हैं। यदि यह शक्ति कम हो, तो व्यक्ति पीड़ित होता है। पहले के दनि में, गाँवों में, लोग रात में चुपचाप और इस बात का ध्यान रखते हुए कि कोई उन्हें न देखे, एक रास्ता बनाने के लिए काम करते थे— ताकि उनकी मृत्यु के बाद दूसरे उन्हें याद रखें। आजकल, यह आत्म-बलदान की भावना शायद ही कभी मिलती है। एक बार, माउंट अथोस पर एक जुलूस के दौरान, मैंने देखा कि भिक्षु एक रास्ते पर चलते हुए अपनी चोगा झाड़ी की एक टहनी में अटक रहे थे, फरि भी उनमें से किसी ने भी पीछे चलने वालों के लिए रास्ता आसान बनाने के लिए उसे नहीं तोड़ा; वे सभी अपनी चोगा अटकने से बचाने के लिए झुक गए। ऐसा था मानो वे झाड़ी के सामने झुक रहे हों! काश वह 'अनबर्नड बुश' (अनजली झाड़ी) होती, तो यह सब बहुत अच्छा होता! लेकिन हर एक ने सोचा: 'कोई और कर दे; मैं तो बस खुद नकिल जाना चाहता हूँ।' लेकिन तुम उसे क्यों नहीं करते, अगर तुम वह शाखा सबसे पहले देख रहे हो? आखिरकार, सांसारिक लोग ऐसे ही व्यवहार करते हैं—जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखते। ऐसी ज़िदगी का मुझे क्या फायदा? मरना ही इससे हजार गुना बेहतर होगा। बात यह है कि दूसरे व्यक्ति के बारे में सोचना, उनके दर्द के बारे में सोचना।

दुनिया पहले ही खुद पर से काबू खो चुकी है। लोगों से प्यार और त्याग खत्म हो गए हैं। मैंने आपको एक बार उस हालत के बारे में बताया था जब मुझे पवित्र पहाड़ पर अपने कलवि में हर्निया का दौरा पड़ा था। जब भी कोई फाटक के पास हथौड़े से खटखटाता, तो मैं उसे खोलने के लिए बर्फ और ठंड में बाहर नकिल जाता था। अगर किसी व्यक्ति को गंभीर समस्याएँ होतीं, तो मुझे अपनी पीड़ा का एहसास भी नहीं होता था, भले ही कुछ ही क्षण पहले मैं [शाब्दिक रूप से] बसितर से जकड़ा हुआ था। मैं आगंतुक को खाने या पीने के लिए कुछ न कुछ देता था: एक हाथ से मैं उनकी सेवा करता, जबकि दूसरे हाथ से अपनी हर्निया को अपनी जगह पर पकड़े रहता। हमारी बातचीत के पूरे समय, तीव्र दर्द के बावजूद,

मैं किसी भी चीज़ से नहीं टकि, ताक़िउसे यह एहसास न हो कि मुझे दर्द हो रहा है। और जब आगंतुक चला जाता, तो मैं फरि से दर्द से मुड़ जाता। ऐसा नहीं था कि दर्द चला गया या मैं चमत्कार कि रूप से ठीक हो रहा था—बल्कि नहीं। मैंने देखा कि दूसरा आदमी दर्द में था, और मैं अपना दर्द भूल गया। जब आप किसी और के दर्द में भागीदार होते हैं तो एक चमत्कार होता है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि आप दूसरे व्यक्ति को एक भाई के रूप में महसूस करें और उसके लिए दर्द महसूस करें। यह दर्द ईश्वर को छूता है, और एक चमत्कार होता है। क्योंकि कोई और चीज़ नहीं है जो ईश्वर को उदार उदारता—यानी, आत्म-बलदान—जतिना गहराई से प्रभावित करती हो। लेकिन हमारे युग में, उदारता एक दुर्लभ वस्तु है, क्योंकि सिवार्थ और स्वहति ने जड़ें जमा ली हैं। ऐसा व्यक्ति मिलना दुर्लभ है जो कहे: 'मैं दूसरे को अपनी बारी दूँगा, और खुद अपनी बारी का इंतज़ार करूँगा।' दूसरों के बारे में सोचने वाले ये धन्य प्राणी कितने कम हैं! यहाँ तक कि आध्यात्मिक लोगों के बीच भी, यह घृणति भावना—उदासीनता की भावना—मौजूद है।

कोई पुण्य कर्म तभी वास्तव में पुण्य होता है जब उसे करने वाला अपनी किसी चीज़ का त्याग करता है: नींद, आराम, और इसी तरह की चीज़ें। इसीलिए मसीह ने कहा: '*... अपनी ही वंचना से...*'¹⁵⁷ जब मैं आराम करने के बाद कोई पुण्य कर्म करता हूँ, तो मुझे उसका बहुत कम मूल्य चुकाना पड़ता है। हालाँकि, यदि मैं थका हुआ हूँ और, उदाहरण के लिए, किसी के रास्ता पूछने पर उसे रास्ता दिखाने के लिए बाहर जाता हूँ, तो इसमें बहुत अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। जबकि, जब मैं पहले अच्छी नींद लेने के बाद, जहाँ मेरी मदद की ज़रूरत है, वहाँ जागकर रात बताता हूँ, तो इसकी कीमत कम होती है। यदि इसके अलावा, मुझे बातचीत में आनंद आता है, तो मैं इसे केवल संगत कि आनंद लेने और थोड़ी मौज-मस्ती करने के लिए कर सकता हूँ। जबकि, जब मैं थका हुआ होता हूँ और किसी दूसरे की मदद करने के लिए त्याग करता हूँ, तो मुझे स्वर्गीय आनंद का अनुभव होता है। तब मैं ईश्वर के आशीर्वाद से अभिभूत हो जाता हूँ।

लेकिन यदि किसी व्यक्ति को न केवल दूसरों की मदद करना बल्कि अपने लिए कुछ करना भी बोज़ लगता है, तो वह आराम से भी थक जाता है। वही व्यक्ति जो अपने पड़ोसी की मदद करता है, अपनी थकान से राहत पाता है। यदि किसी व्यक्ति में त्याग की भावना है, तो, किसी को देखकर—उदाहरण के लिए, कोई जो शारीरिक रूप से थका हुआ, कड़ी मेहनत कर रहा है और थका हुआ है—वे उससे कहेंगे: 'बैठ जाओ, थोड़ा आराम करो'—और उनका काम खुद कर देंगे। जो थका हुआ है वह शारीरिक रूप से आराम करेगा, जबकि जिसने उसकी मदद की है वह आध्यात्मिक ताजगी का अनुभव करेगा। कोई भी व्यक्ति जो कुछ भी करता है, उसे वह दिल से करना चाहिए; अन्यथा, करने वाला आध्यात्मिक रूप से नहीं बदलता। जो काम दिल से किया जाता है वह थका नहीं करता। दिल एक स्व-चार्जिंग डिवाइस की तरह है: यह जतिना अधिक काम करता है, उतना ही अधिक रीचार्ज होता है। उदाहरण के लिए, एक चेनसॉ लें: जब यह एक सड़े हुए पेड़ के तने से टकराता है, तो यह 'फ्र-र-र' की आवाज़ करता है... और रुक जाता है। लेकिन जब यह ठोस लकड़ी से टकराता है, तो यह 'चट-चट' की आवाज़ करता रहता है, खुद को रीचार्ज करता है और आरी चलाना जारी रखता है। और केवल देने में ही नहीं, बल्कि जब हम कुछ लेने वाले हों, तो हमें अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि हमेशा उस चीज़ के लिए प्रयास करना चाहिए जो दूसरे की आत्मा को शांति दे। हमारे भीतर कोई लालच नहीं होना चाहिए। हमें यह विचार मन में नहीं लाना चाहिए कि हमें जतिना चाहें लेने का अधिकार है, जबकि दूसरों के लिए कुछ भी न छोड़ें।

— एक बार फरि, गेरोन्डा, यह सब आत्म-बलदान की भावना पर लौट आता है।

— लेकिन आखिरकार, यह पूरे आध्यात्मिक जीवन की ही नींव है! और क्या आप जानते हैं कि एक व्यक्ति को कैसी खुशी महसूस होती है जब वह खुद को बलदान के रूप में अर्पित करता है? वे अपने द्वारा अनुभव की गई खुशी को

¹⁵⁷ लूका 21:41

व्यक्त नहीं कर सकते। सर्वोच्च आनंद त्याग से आता है। केवल त्याग के माध्यम से ही कोई व्यक्ति मसीह के साथ एकता में रहता है, क्योंकि मसीह स्वयं त्याग हैं। यही पर कोई व्यक्ति स्वर्ग या नरक का अनुभव करना शुरू करता है। जो व्यक्ति अच्छा करता है वह आनंदित होता है, क्योंकि उसे इसके लिए द्रव्य सात्वना से पुरस्कृत किया जाता है। लेकिन जो बुरा करता है वह यातना का अनुभव करता है।

मेरी अपनी शांति किसी दूसरे को शांति देने से आती है

— लेकिन, गेराना, कोई व्यक्ति बलिदान कैसे कर सकता है यदि उसने अभी तक बलिदान के आनंद का स्वाद नहीं चखा है?

— खुद को दूसरे की जगह रखकर। जब मैं सेना में था, तो हमारा बंकर अक्सर पानी में डूब जाता था। रेडियो की बैटरियाँ बदलनी थीं, और यह कोई आसान काम नहीं था, क्योंकि लाइन व्यस्त थी। मैं कमर तक भीग गया था, और मेरा ओवरकोट लगभग नचोड़ने लायक हो गया था। हालाँकि, दूसरों को कष्ट न झेलना पड़े, इसलिए मैंने यह काम खुद करना पसंद किया और इसे करते हुए मुझे आनंद मिला। कमांडर मुझसे कहते थे: 'जब तुम यह काम करते हो, तो मुझे सुकून मिलता है, लेकिन मुझे तुम्हारी चिंता होती है। किसी और को यह करने के लिए कहो।' — "नहीं, कमांडर," मैं जवाब देता, "मुझे इसमें आनंद आता है।" हमारी अर्ध-बटालियन में एक और रेडियो ऑपरेटर था, लेकिन जब हम अभियानों पर जाते, तो उसे खतरे में नहीं डालने के लिए, मैं उसे न तो बैटरी और न ही रेडियो उठाने देता, भले ही यह मेरे लिए कठिन काम था। वह मुझसे इस बारे में पूछता [और नाराज़ हो जाता]: 'तुम मुझे ये क्यों नहीं लेने देते?' — 'तुम्हारे,' मैंने जवाब दिया, 'घर में पत्नी और बच्चे हैं। अगर तुम मारे गए, तो मुझे ईश्वर के सामने इसका जवाब देना होगा।' और इस तरह ईश्वर ने हम दोनों की रक्षा की: उसने हम में से किसी को भी मरने नहीं दिया।

एक संवेदनशील व्यक्ति के लिए, लापरवाही या कायरता दिखाकर जीवन भर अंतरात्मा की पीड़ा सहने से बेहतर है कि वह परम से किसी की ढाल बनते हुए एक बार मारा जाए। एक बार, गृहयुद्ध के दौरान, विद्रोहियों की एक चाल ने हमें एक गाँव के पीछे हमारी बाकी सेना से अलग कर दिया था। सैनिकी गाँव में राशन लेने के लिए जाने वाले का फैसला करने के लिए पास फेंकने ही वाले थे। मैंने कहा, 'मैं जाऊँगा।' अगर कोई अनुभवहीन और लापरवाह व्यक्ति गया होता, तो वह मारा जा सकता था, और बाद में मेरा अंतरात्मा मुझे तंग करता। मैंने सोचा, 'यह बेहतर होगा कि मैं किसी और को मारने के बजाय मुझे मार दूँ, और फिर मेरा अंतरात्मा मुझे जीवन भर तड़पाएगा। मैं इसे कैसे सहन कर पाता?' 'तुम उसे बचा सकते थे,' मेरा अंतरात्मा मुझसे कहता, 'तो तुमने उसे बचाया क्यों नहीं?' इसके अलावा, मैं उपवास पर था और मेरा पेट खाली था... खैर, जाने दो। तो कमांडर मुझसे कहता है: 'तुम्हारा भी जाना बेहतर होगा; आखिरकार, तुम पानी से सूखे ही बाहर निकिलोगे, और अपनी ताकत बनाए रखने के लिए बस कुछ खा-पी लेना।' मैंने अपनी राइफल उठाई और चल पड़ा। विद्रोहियों ने मुझे अपना समझ लिया और मुझे जाने दिया। मैं गाँव पहुँचा और एक दो-मंजिला घर में गया। वहाँ एक बूढ़ी औरत थी; उसने मुझे कुछ खाना दिया, और मैं अपने लोगों के पास वापस आ गया।

मैंने [पहाड़ों में] उस सर्दी में बर्फ के बीच सबसे बड़ी खुशी का अनुभव किया। मुझे याद है कि एक रात मैं जागा। हर कोई सो रहा था, और हमारे तंबू बर्फ में दबे हुए थे। मैं रेंगते हुए टेंट से बाहर निकला, रेडियो उठाया और उसमें से बर्फ झाड़ने लगा। मैंने देखा: वह काम कर रहा था। मैं कमांडर के पास दौड़ा और उन्हें बताया कि क्या हो रहा है। उस रात, मैंने बर्फ़ीले तूफ़ान में फंसे छब्बीस लोगों को फावड़े से बर्फ़ से बाहर निकाला।

मैंने मसीह के लिए कुछ नहीं किया। अगर मैंने युद्ध के दौरान जो किया, उसका सरिफ़ 10 प्रतिशत भी मसीह के लिए किया होता, तो मैं अब चमत्कार कर रहा होता! यही कारण है कि बाद में, मठ के जीवन में, मैं कहा करता था: 'सेना में

मैंने मातृभूमि के लिए इतनी यातनाएँ सहन कीं, लेकिन मैं मसीह के लिए क्या कर रहा हूँ?" दूसरे शब्दों में, सेना में मैंने जो यातनाएँ सहन कीं, उनकी तुलना में मठ के जीवन में मुझे एक राजकुमार जैसा महसूस हुआ; यहाँ वास्तव में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि मेरे पास सूखी रोटी का एक टुकड़ा था या नहीं। क्योंकि उस समय, अभियानों के दौरान, क्या आप जानते हैं कि हम किस तरह का उपवास रखते थे? हम बर्फ खाते थे! दूसरे कम से कम आसपास खोजबीन कर कुछ खाने योग्य ढूँढ़ लेते थे, लेकिन मैं तो रेडियो से बंधा था—मैं उसे छोड़ नहीं सकता था। एक बार हम तेरह दिनों तक बना भोजन के रहे: हमें हर एक को सिर्फ एक सैनिकी की रोटी और आधी हेरगि दी गई थी। मैंने खुर के नशियान से पानी पिया, और वह भी साफ़ बारिश का पानी नहीं, बल्कि कीचड़ मिला हुआ पानी। और एक बार तो मुझे कुछ 'नीबू पानी' का स्वाद भी चखने को मिला! उस समय, मेरी प्यास अपनी हृद को पार कर चुकी थी जब मैंने पानी से भरा एक खुर का नशियान देखा — पीला पानी! मैंने उसे पीते-पीते चूर कर दिया!... और इसीलिए बाद में, मठ के जीवन में, पानी—भले ही वह तरह-तरह के कीड़ों से भरा हो—मुझे एक बड़ी कृपा-दान लगता था। कम से कम वह पानी जैसा तो लगता था।

और एक शाम, केबल संचार लाइन कट गई। यह दिसंबर 1948 की बात है। चारों ओर बर्फ के ढेर थे। दोपहर के चार बजे, हमें आदेश मिला: गाँव तक मार्च करने का (दो घंटे का रास्ता), लाइन की मरम्मत करने और वापस आने का। दो घंटे बाद, अँधेरा हो गया था। सैनिकी पूरी तरह से थक चुके थे और आगे बढ़ने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे। और उन सभी बर्फ़ीले ढेरों में हम उस केबल को ढूँढ़ते ही कैसे!

'क्या, गेरोंडा, क्या आपको रास्ता या केबल बछियाने का तरीका नहीं पता था?'

— खैर, मुझे सामान्य मार्ग पता था, लेकिन रात तो हमें वैसे भी रास्ते में ही पकड़ लेती। लंबी कहानी को संक्षेप में कहूँ तो, उन्होंने मुझे कुछ लोग दिए, और हम चल पड़े। पहले, जब हम अभी भी अपनी यूनिट के बेस पर थे, हमने कमांडर को आश्वस्त करने के लिए फावड़ों से सड़क की बर्फ़ साफ़ की, और थोड़ा आगे बढ़े। फिर मैंने उनसे कहा, 'चलो, चलो, हमें अभी भी वापस जाना है।' मैं पहले चला क्योंकि बाकी सब हर समय बड़बड़ा रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा, 'एल्लादा, हम कभी खतम नहीं हो सकते, लेकिन यहाँ हम हैं, हम खतम होने वाले हैं।' वे बस यही बात बार-बार दोहराते रहे! तो हम आगे बढ़ते रहे: मैं बर्फ़ में धँस जाता, वे मुझे खींच निकालते, मैं फिर धँस जाता, वे फिर मुझे खींच निकालते... मेरे पास एक तलवार थी, और मैं बीच-बीच में अपने आगे की बर्फ़ में उसे घुसाकर कदम रखने की जगह तलाशता रहता था। मुझे लगातार जाँच करते रहना पड़ता था। मैंने अगुवाई की और उनसे कहा: 'चलो, चलो, यहाँ पशु चराई नहीं करते और वे केबल तोड़ नहीं सकते। हम किसी खाई या ऐसी ही किसी जगह पहुँचेंगे जहाँ केबल ज़मीन के ऊपर लटक रही होगी, और तब जाकर ही हम इसकी जाँच करेंगे।' आखिरकार हम एक गाँव पहुँचे, जिसके सामने बर्फ़ के ढेरों के नीचे छपि हुई सीढ़ियाँ थीं, और मैं उन सीढ़ियों में से एक से गरिकर बर्फ़ में जा गिरा। बाकी लोग और आगे बढ़ने से या मुझे उठाने आने से बहुत डर गए थे। आखिरकार हम एक छज्जे से दूसरे छज्जे पर चढ़ते हुए नीचे उतरे — कैसे, यह मत पूछिए — और शाम को ढेर से गाँव में पहुँचे। कुछ दर्रों में, एक-दो जगहों पर, मुझे एक चट्टान का कनारा मिला; हमने केबल जोड़ा और कमांडर से संपर्क किया। कमांडर ने हमें कहा, 'वापस मुड़ जाओ।' लेकिन हम वापस कैसे मुड़ते? न केवल रात हो चुकी थी, बल्कि हमें किसी तरह वापस ऊपर टैरेस पर चढ़ना भी था! हम तो सीधे-सीधे नीचे आ गए थे! आखिर हम वापस रास्ता कैसे खोजते? मैंने कमांडर से पूछा, "लेकिन हम वापस कैसे जाएंगे?" "हम किसी तरह नीचे तो आ ही गए, लेकिन अब वापस ऊपर चढ़ेंगे कैसे? चलो कल सुबह वापस चलते हैं: हम गाँव के दूसरे छोर से निकलेंगे और दूसरी तरफ से घूमकर जाएंगे।" — "कोई 'चलो' वाली बात नहीं," कमांडर ने कहा, "आज ही!" हमारी कस्मिमत अच्छी थी कि कमांडर के सहायक ने यह बातचीत सुन ली और उसने हमसे रात के लिए गाँव में रुकने की वनिती की। तो हमने वैसा ही किया। एक घर में, उन्होंने हमें दो मोटे ऊनी कंबल दे दिए। मैं काँपने लगा: आखिरकार, मैं सबसे आगे चल रहा था, रास्ता साफ़ कर रहा था, और पूरी तरह भीग गया था। मेरे साथियों को मुझ पर तरस आ गया, क्योंकि कह सकते हैं, मेरा हाल दूसरों से भी बुरा था, और उन्होंने मुझे बीच में

कर दिया। फिर हमने सैनिकों की रोटी के एक ही टुकड़े पर रात का खाना खाया। मुझे याद नहीं कि मैंने अपने जीवन में कभी उससे ज्यादा खुशी महसूस की हो।

मैंने आपको ये उदाहरण देने के लिए खुद को बाध्य महसूस किया ताकि आप समझ सकें कि वास्तव में बलदान क्या होता है। मैंने यह सब आपको इसलिए नहीं बताया है कि आप मेरी प्रशंसा करें, बल्कि इसलिए बताया है ताकि आप समझ सकें कि सिच्ची खुशी कहाँ से आती है।

और बाद में, संचार विभाग में, मेरे सहकर्मी मुझे धोखा देते थे। "मेरे पापा मलिन आ रहे हैं; मुझे उनसे मलिन जाना है। क्या आप मेरी जगह काम कर सकते हैं, प्लीज?" एक कहता। "मेरी बहन मुझसे मलिन आई है," दूसरा झूठ बोलता (वह उसकी बहन बिल्कुल नहीं थी)। जब भी किसी और को किसी भी कारण से बाहर जाना होता, तो मैं बलदान दे देती: मैं लगातार ड्यूटी पर रहती, किसी न किसी की जगह काम करती। अपनी शफिट के बाद, मैं फर्श झाड़ती और सफाई कर देती। सगिनल प्लाटून के परिसर में किसी और को आने की इजाजत नहीं थी – दूसरे विभागों के अधिकारी भी नहीं – और वैसे भी, युद्ध का समय था। इसलिए हम सफाई करने वाला रख नहीं सकते थे। मैं झाड़ू उठाकर सारे कमरे झाड़ देती। यहीं मैंने झाड़ू लगाना सीखा। मैं कहती, 'यह एक सेवा कक्ष है, एक ऐसी जगह जो एक तरह से पवित्र है; इसे गंदा नहीं छोड़ा जा सकता।' मुझे झाड़ू लगाने के लिए बाध्य नहीं किया गया था, और वैसे भी मुझे यह करना नहीं आता था: घर पर तो मैंने झाड़ू तक नहीं उठाई थी। और अगर मैं चाहती भी, तो मेरी बहन उसी झाड़ू से मुझे अच्छी-खासी पटाई लगा देती! मेरे सहकर्मी मुझे चढ़ाते थे, "सफाई करने वाला, शाश्वत शहीद।" मैं इसकी परवाह नहीं करता था। और मैंने यह 'धन्यवाद' सुनने के लिए नहीं किया, बल्कि इसलिए किया क्योंकि मुझे लगता था कि यह जरूरी है और इससे मुझे खुशी मिलती थी।

— गेरोन्डा, क्या आपके मन में कभी कोई 'अनुचित' विचार भी नहीं आया? क्या आपने, उदाहरण के लिए, कभी सोचा: 'फलाना-ढलाना अपनी बहन से मलिन के बजाय बाहर मजे कर रहा है'?

¹⁵⁸— नहीं, मेरे मन में कभी ऐसे विचार नहीं आए। जैसे ही कोई मुझसे कहता, 'कृपया, क्या आप थोड़ी देर के लिए मेरी जगह बैठ सकते हैं?' — बस, मामला खतम। और एक और था जो मुझसे पैसे मांगता था, कथित तौर पर अपने बच्चों के लिए, लेकिन उसने न केवल उन्हें पैसे भेजे ही नहीं, बल्कि अपनी पत्नी से भी अपने लिए पैसे मांगे। समझे? और मैंने यह 'शाबाश' सुनने के लिए नहीं किया; मुझे लगा कि यह एक जरूरत थी। मैं यूनिट के क्वार्टर कभी नहीं छोड़ता था; दूसरों ने इसका फायदा उठाया और सारा काम मेरे ऊपर थोप दिया। मुझे पूरे प्लाटून का काम करना पड़ता था। कॉल साइन्स का एक ढेर, रल्लि बनिा रुके खड़खड़ा रहे थे... उस समय मैं पूरी तरह से टूट गया था। कुछ समय के लिए, मुझे 39.5 का बुखार था, और मैंने किसी को इसके बारे में नहीं बताया। लेकिन फिर, तनाव के कारण, मैं गरि पड़ा और बेहोश हो गया। उन्होंने मुझे एक स्ट्रेचर पर फेंक दिया, और मैं अपने साथियों को यह कहते सुन सकता था: 'तो फिर, वेनेडिक्ट, तुम जाओ एक बड़े मरम्मत के लिए; हम तुम्हें इस स्ट्रेचर पर वहीं ले जाएंगे जहाँ पुरानी कारों की मरम्मत होती है।' और वे मुझे अस्पताल ले गए। वहाँ मुझे अकेला छोड़ दिया गया—जब हर कोई घायलों की देखभाल में व्यस्त था, तो मेरा ख्याल रखने वाला वहाँ कौन था?—लेकिन मुझे आनंद महसूस हुआ। वह आनंद जो त्याग से मिलता है, क्योंकि किसी दूसरे को शांति देने से ही मेरी अपनी शांति जन्म लेती है।

¹⁵⁸ यह उन इलाकों में एक प्रसिद्ध पुरोहिता और उपदेशक का नाम था, और उसके साथी पुरोहितों ने, बूढ़े को चढ़ाने के लिए, उसे बेनेडिक्ट कह दिया।

जतिना अधिक हम खुद को भूलते हैं, उतना ही अधिक ईश्वर हमें याद करते हैं।

जिनके पास आत्म-बलदान की भावना और ईश्वर में विश्वास होता है, वे स्वयं को ध्यान में नहीं रखते। यदि कोई व्यक्ति अपने भीतर आत्म-बलदान की भावना का विकास नहीं करता है, तो वह केवल अपने बारे में ही सोचता है और चाहता है कि दूसरे उसके लिए बलदान करें। लेकिन जो लोग केवल अपने बारे में सोचते हैं, वे लोगों और ईश्वर दोनों से अलग-थलग हो जाते हैं—एक दोहरी अलगाव—और उन्हें दैवीय कृपा प्राप्त नहीं होती। ऐसा व्यक्ति किसी काम का नहीं होता। और इस पर विचार करें: आखिरकार, कोई भी—मानवीय दृष्टिकोण से भी—उस व्यक्ति का समर्थन नहीं करेगा जो जरूरत के समय में लगातार केवल अपने और अपनी कठिनाइयों आदि के बारे में सोचता है। यह तो कहने की जरूरत नहीं है कि उन्हें दैवीय सहायता नहीं मिलेगी, बल्कि उन्हें मानवीय सहायता भी नहीं मिलेगी! तब यह व्यक्ति इधर-उधर मदद मांगेगा; यानी, वह दूसरों से मदद पाने के लिए संघर्ष करेगा, लेकिन उसे मदद नहीं मिल पाएगी। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपने बारे में नहीं सोचता बल्कि लगातार दूसरों के बारे में सोचता है—भगवान ऐसे व्यक्ति के बारे में हर समय सोचते हैं। और फिर दूसरे लोग भी उनके बारे में सोचते हैं। कोई व्यक्ति जितना अधिक खुद को भूलता है, भगवान उसे उतना ही अधिक याद करते हैं। उदाहरण के लिए, एक सामुदायिक मठ लें: जो व्यक्ति आत्म-बलदान का धनी है, वह खुद को अर्पित करता है, खुद को दूसरों को दे देता है। क्या आपको लगता है कि दूसरे इसे नहीं देखते हैं? और वे उस आत्मा के बारे में कैसे सोचने से चूक सकते हैं जो पूरी तरह से दूसरों को समर्पित हो जाती है, जबकि अपने बारे में कुछ भी नहीं सोचती? और ईश्वर उस आत्मा के बारे में कैसे सोचने से चूक सकते हैं? यह एक महान बात है। इसमें, ईश्वर का आशीर्वाद स्पष्ट है; द्रव्य कर्म की छवि दिखाई देती है।

जब कोई कठिनाई पर स्थिति का सामना करता है, तो उसकी परीक्षा होती है। ऐसे क्षणों में सच्चा प्रेम और आत्म-बलदान प्रकट होते हैं। जब हम कहते हैं कि कोई निस्वार्थी है, तो हमारा मतलब होता है कि वह खतरे के समय में खुद को पहले नहीं रखते, बल्कि दूसरों के बारे में सोचते हैं। आखिरकार, जैसा कि कहावत है: 'बुरे समय में दोस्त ही सच्चा दोस्त होता है।' अगर, ईश्वर न करे, उदाहरण के लिए, अभी बम गरिने लगे, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि कौन दूसरों के बारे में सोच रहा है और कौन सिर्फ अपने बारे में। लेकिन जो लोग केवल अपने बारे में सोचने के आदी हो गए हैं, वे संकट के समय में भी केवल अपने बारे में ही सोचेंगे, और ईश्वर ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं सोचेंगे। दूसरी ओर, यदि कोई पहले से ही अपने बारे में नहीं बल्कि दूसरों के बारे में सोचना सीख लेता है, तो खतरे के समय में भी वे दूसरों के बारे में ही सोचेंगे। तब यह स्पष्ट हो जाएगा कि किसमें सच्ची आत्म-बलदान की भावना है और कौन आत्म-प्रेम से प्रेरित है।

यदि एक ईसाई अभी से कुछ बलदान करना शुरू नहीं करता—अपनी कोई वासना, कुछ स्वार्थ—तो वह उस बिंदु तक कैसे पहुँचेगा जहाँ, संकट के समय में, वह अपना जीवन बलदान करने के लिए तैयार हो? और यदि वह अब कड़ी मेहनत से डरता है और यह सुनिश्चित करने के लिए चिंतित है कि वह किसी और से ज्यादा मेहनत न करे, तो वह उस स्थिति तक कैसे पहुँचेगा जहाँ वह किसी दूसरे के लिए अपना जीवन त्यागने के लिए दौड़ेगा? यदि वह अभी स्वयं से संबंधित तुच्छ मामलों में व्यस्त है, तो वे उस क्षण में किसी दूसरे के बारे में कैसे सोचेंगे जब उनका अपना जीवन खतरे में होगा? तब यह और भी कठिनाई होगा। यदि कठिनाई समय आता है और कोई ऐसा व्यक्ति अपने पड़ोसी को, जो बुखार से सड़क पर गिर पड़ा है, देखता है, तो वह उसे वहीं पड़ा हुआ छोड़ देगा, चला जाएगा और कहेगा: 'मुझे तो खुद जाकर लेटना चाहिए, नहीं तो मैं भी गिर सकता हूँ।'

लेकिन युद्ध में, यह जीवन के लिए संघर्ष है—आपका और किसी और का। साहस दूसरे व्यक्ति की मदद के लिए दौड़ने में नहिता है, लेकिन अगर कोई त्याग नहीं है, तो हर कोई खुद को बचाने की कोशिश करता है। लेकिन यह देखा गया है: युद्ध में, एक गोला या खदान हमेशा उस व्यक्ति को ढूँढ़ लेता है जो बचने की कोशिश कर रहा होता है। ऐसा व्यक्ति खतरे से बचना चाहता प्रतीत होता है, लेकिन वह और भी तेजी से अपनी ही बर्बादी को बुलावा देता है। इसीलिए किसी को

खतरे से बचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, और खासकर दूसरों की कीमत पर तो बलिकुल नहीं। मुझे अल्बानियाई युद्ध के दौरान हुई एक घटना याद है।¹⁵⁹ एक सैनिक के पास एक पत्थर की स्लैब थी, जिसका वह गोलियों और छर्रों से अपना सरि बचाने के लिए इस्तेमाल करता था। जब उसे एक पल के लिए हटना पड़ा, तो उसने स्लैब को खندق के तले में रख दिया और दीवार से टिका दिया। यह देखकर उसके पड़ोसी ने तुरंत स्लैब उठा ली और ले गया। "अब," उसने सोचा, "मेरे लिए इसे लेने का एक उपयुक्त अवसर आ गया है।" लेकिन उसी क्षण एक खदान ठीक उसके ऊपर फट गई, जिससे पीछे एक भी गीला दाग नहीं बचा। चारों ओर गोले फटते देख उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति ने पत्थर की स्लैब उठा ली, लेकिन उसने यह नहीं सोचा कि उसका मालिक लौट सकता है। उसने केवल अपने बारे में सोचा और अपने कार्यों के लिए एक बहाना ढूँढ लिया: 'चूँकि वह चला गया है, मैं यह स्टोव अपने लिए ले सकता हूँ।' हाँ, वह चला गया था, लेकिन स्टोव अभी भी उसका ही था। और एक और आदमी ने पूरे युद्ध के दौरान अपनी ड्यूटी से जी चुराई। उसने किसी और के बारे में नहीं सोचा। दूसरों ने अपने देश के लिए अपनी जान दे दी — फरि भी वह घर पर बैठा रहा। आखिरी पल तक, जब स्थिति गंभीर हो गई, तब भी वह खतरे से बचने की कोशिश करता रहा। फरि, जब अंग्रेज आए, तो वह किसी तरह उनकी पंक्तियों में पहुँच गया, ज़र्वस से अपना परचिय कराया¹⁶⁰ और, चूँकि उसके पास अमेरिकी नागरिकता भी थी, उसने अमेरिका भागने का अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। वहाँ पहुँचते ही उसकी मौत हो गई! उसकी पत्नी, बेचारी, कहा करती थी: 'वह ईश्वर से बचकर निकलना चाहता था!' तो वह मर गया, जबकि युद्ध में शामिल अन्य लोग जीवित बच गए।

जो वीरतापूर्वक मरते हैं, वे मरते नहीं हैं

मुझे याद है कि सेना में हम सभी का एक ही साझा लक्ष्य था। मैंने अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन दूसरों ने भी त्याग दिखाया — चाहे वे परलोक में विश्वास रखते हों या नहीं। 'यह आदमी क्यों मरे? वह परिवार का मुखिया है,' वे कहते, और फरि खुद एक खतरनाक मशिन पर नकिल पड़ते। इन लोगों ने जो बलदान दिया, वह किसी आस्तिक के बलदान से कहीं अधिक मूल्यवान था। आस्तिक को दैवीय सत्य और दैवीय पुरस्कार पर भरोसा था, जबकि नास्तिकों को यह नहीं पता था कि उन्होंने जो बलदान करने का संकल्प लिया था, वह व्यर्थ नहीं था, और उन्हें आने वाले जीवन में इसके लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

¹⁶¹ कब्जे के दौरान, दावाकसि के अधीन, इतालवी सैनिकों ने युवा अधिकारियों को गरिफ्तार किया, उन्हें एक जहाज पर चढ़ाया, और फरि उसे डुबो दिया। इसके बाद, उन्होंने नागरिकों को पकड़ना शुरू कर दिया; जनिहें पहले पकड़ा गया, उन्हें यातना दी गई ताकि वे अपने घरों में हथियार रखने वाले अन्य नविसयियों के नाम बताने के लिए मजबूर हो जाएं। काश आप उस समय आम लोगों द्वारा दिखाए गए त्याग को देख पाते! कोनटिसा में, हमारे घर के पास, जहाँ अब सेंट कॉस्मस ऑफ़ एटोलिया का चर्च है, वहाँ एक मस्जिद हुआ करती थी। जनि लोगों को गरिफ्तार किया गया था, उन्हें मस्जिद में

¹⁵⁹ अल्बानियाई युद्ध (या अल्बानियाई मोर्चा) – 1940-41 में ग्रीस और फासीवादी इटली के बीच का युद्ध। – *अनुवादक की टिप्पणी।*

¹⁶⁰ नेपोलियन ज़र्वस (1891-1957) – 'राष्ट्रीय ग्रीक लोकतांत्रिक संघ' नामक फासीवादी-विरुद्ध आंदोलन के नेता, जिसने एपरिस और ग्रीस के कुछ अन्य क्षेत्रों में नाज़ियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। – *अनुवादक की टिप्पणी।*

¹⁶¹ कॉन्सटैंटिनोस दावाकसि (1897-1942) – ग्रीक सेना में एक कर्नल, एक प्रतभाशाली सैन्य कमांडर, और नवंबर 1940 में स्वतंत्र पडिस ब्रिगेड के कमांडर। पडिस परवतमाला में इतालवी 'जूलाय' माउंटन इन्फैंट्री डिवीजन पर के. दावाकसि द्वारा प्राप्त वजिय ने द्वितीय विश्व युद्ध में फासीवादी गुट की पहली गंभीर पराजय का नशान लगाया। – *अनुवादक की टिप्पणी।*

बंद कर दिया जाता था और पूरी रात काँटों वाली कोड़ों या नंगी केबलों से पीटा जाता था: वे तार को फैलाते, सरिँ पर सीसे के टुकड़े बाँधते, और इन तारों से लोगों को पीटते थे।

स्टील की तारों ने त्वचा फाड़ दी। और यह सुनिश्चित करने के लिए कच्चीखें सुनाई न दें, इतालवी लोग गाना गाते या संगीत बजाते थे। यहीं से 'संगीत के साथ कसाईखाना' कहावत आई। इसके अलावा, बेचारी पीड़ितों को उनके पैरों से उल्टा लटका दिया जाता था, और उनके मुँह से खून बहता था। लेकिन वे चुप रहे, क्योंकि वे सोचते थे: 'अगर हम कबूल कर लेते हैं (और वे जानते थे क्राइफल कसिके पास हैं), तो वे बाकी सभी को भी कबूल कराने के लिए इसी तरह पीटेंगे।' इसलिए, पहले पकड़े गए लोगों ने फैसला किया: 'हम तो मरना पसंद करेंगे, बजाय इसके कि हम यह साबित करें कि बाकी लोगों के पास कोई राइफल नहीं है।' दूसरों ने, एक या पाँच 'ok¹⁶² s' की यातनाओं के बाद, दुश्मन को बता दिया कि हिथियार कहाँ छपाए गए थे। अकाल पड़ा था, और लोग गद्गार बन रहे थे। बटालियन के कुछ इतालवी, जो अवैध संतान से भरती किए गए थे, सच्चे बर्बर थे जिनमें बर्बरों की सभी कुंठाएँ थीं। वे अपना गुस्सा दूसरों पर निकालते थे। वे छोटे बच्चों को पकड़ लेते, उन्हें नंगा कर देते, उन बेचारों को लाल-गरम लोहे की चिमटियों पर बठाकर अपने पैरों से दबा देते ताकि उनका शरीर जल जाए। वे बच्चों को यातना देते ताकि उनके माता-पिता यह कबूल करें कि किसके पास राइफलें हैं। 'मेरे पास कोई नहीं है, मेरे पास कोई नहीं है।' वयस्क चलिताते, जबकि यातना देने वाले उनके बच्चों को जलाते थे। मैं यह कहना चाहता हूँ कि किई लोगों ने मरना चुना—भले ही वे आम लोग थे—ताकि दूसरों को यातना न दी जाए या मारा न जाए। ऐसा करके, उन्होंने कई जानें बचाईं। और इसलिए, कुछ ही नायकों की बदौलत, हम एक लोगों के रूप में जीवित रहे।

जो लोग वीरता से मरते हैं, वे मरते नहीं हैं। और अगर कोई वीरता नहीं है, तो किसी अच्छे की उम्मीद मत करो। यह भी जान लो कि एक आस्थावान व्यक्ति साहसी होगा! मक्रीयानीस,¹⁶³ – यह क्या त्रासदी है कि वह बच गया! और किस जमाने में!

— उन्होंने एक बार गेरोना से कहा: 'मेरी आँखें धुंधली हो गई हैं।'

— हाँ, उसकी आँखें धुंधली थीं। सहन की गई तनाव और चिंता से, ऐसा लगता था कि उसकी आँखों से धुआँ निकल रहा है। कठिन समय में रहते हुए, उसने दर्द और प्रेम के कारण लगातार खुद को बलिदान किया। उसने अपने बारे में नहीं सोचा; उसने कभी खुद को ध्यान में नहीं रखा। अपनी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, वह मृत्यु से नहीं डरता था। मक्रीयानिस ने आध्यात्मिक अवस्थाओं का अनुभव किया। अगर वह भिक्षु बन गया होता, तो मुझे लगता है कि वह एंथनी द ग्रेट से बहुत अलग नहीं होता। अपने घावों और चोटों के बावजूद, वह [प्रतिदिन] तीन हजार प्रणाम करता था। जब वह प्रणाम करता था, तो उसके घाव खुल जाते थे, उसकी आँतें बाहर निकल आती थीं, और वह उन्हें खुद ही वापस अपनी जगह पर रख देता था। मेरी तीन प्रणामों का मूल्य उनकी एक के बराबर है। उनके सामने का फर्श आँसुओं से भीग गया था। और अगर हम उनकी जगह होते? तो हम इलाज के लिए अस्पताल भाग गए होते! सांसारिक लोग हम पर टपिपणी करेंगे!

¹⁶² ओका – वजन की एक इकाई जो 1,280 ग्राम के बराबर होती है। – *अनुवादक की टिपिपणी।*

¹⁶³ इओआनिस मक्रीयाननीस (1797–1864) – मेजर-जनरल, हेलेस के राष्ट्रीय नायक। ग्रीक क्रांति (1821–1830) के दौरान तुर्कों के खिलाफ सबसे अधिक आत्म-बलिदान करने वाले योद्धाओं में से एक। क्रांति और मुक्ति के संघर्ष पर 'मेमोइर' के लेखक। आई. मक्रीयाननीस का जीवन ईश्वर, अपने पड़ोसी और अपनी मातृभूमि के प्रति आत्म-बलिदानी ईसाई प्रेम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। – *अनुवादक की टिपिपणी।*

जो स्वयं का हिसाब नहीं रखता, उसे द्रव्य शक्तिप्राप्त होती है।

— और युद्ध के दौरान, गेरान्डा, क्या आप कभी खतरे में पड़े?

— ओह! क्या यह सिर्फ एक या दो बार हुआ था? अब जब मैं सोचता हूँ कि ईश्वर ने [मेरी] कैसे मदद की, तो मैं बहुत भावुक हो जाता हूँ। लेकिन उस समय मैंने इसके बारे में नहीं सोचा था। खासकर मौत — मैंने इसके बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचा। जब आपने मरने का संकल्प ले लिया हो, तो आपको कुछ भी डरा नहीं सकता। मरने का संकल्प एक हजार अंगरक्षकों के बराबर शक्तिशाली होता है। मौत ही सुरक्षा है। युद्ध में, पवित्र स्वयंसेवकों के एक दस्ते का प्रतीक एक खोपड़ी होती है। इसका मतलब है: उन्होंने मरने का संकल्प ले लिया है। जो कोई भी दूसरे व्यक्ति के लिए या सामान्य भलाई के लिए खुद को भूल जाता है, उसे द्रव्य शक्तिप्राप्त होती है। और देखो, अगर कोई व्यक्ति आत्म-बलिदान से प्रेरित है, तो ईश्वर उसकी रक्षा करते हैं। मुझे याद है कि एक बार हम एक चट्टान के पीछे छिपे गए थे। मैंने एक छोटा सा खाई खोदा और उसमें थोड़ी देर के लिए छिप गया। एक आदमी रेंगता हुआ आया: 'मुझे भी अंदर आने दो,' दूसरा रेंगता हुआ आया: 'मुझे भी।' मैंने उन्हें खाई में चढ़ने दिया क्योंकि उन्होंने मुझसे ऐसा करने को कहा, जबकि मैं बाहर ही रहा। उस रात, जब भारी तोपखाने की गोलाबारी शुरू हुई, तो छर्रे का एक टुकड़ा मेरे सरि से बस छू गया और मेरे माथे से सरि के ऊपरी हिस्से तक बाल उड़ा गया: इसने मेरे सरि पर छह सेंटीमीटर चौड़ी एक नंगी पट्टी छोड़ दी। मैं हेलमेट नहीं पहने था, बस एक हुड पहने था। 'साथियों,' मैं चिल्लाया, 'मुझे छर्रा लगा है!' मैंने अपने हाथ से अपने सरि को छुआ - मुझे कोई खून महसूस नहीं हुआ; मैंने फरि से छुआ - कुछ भी नहीं! गोले का टुकड़ा मेरे सरि को बस छू गया था, और माथे से सरि के ऊपरी हिस्से तक बाल उड़ा गया था: इसने मेरे सरि पर छह सेंटीमीटर चौड़ी एक नंगी पट्टी छोड़ दी थी।

तुम उन कठिनि वर्षों, कब्जे के दौर से नहीं गुजरे; तुमने युद्ध, दुश्मन या दुख नहीं देखा है। मुझे उम्मीद है कि तुमहें कभी इनमें से कुछ भी देखने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन यही वजह है कि तुम यह नहीं समझते कि यह कैसा होता है। हालाँकि, हमारा समय उबलते, फुसफुसाते हुए कड़ाही जैसा है। हमें लचीलेपन, साहस और बहादुरी की आवश्यकता है। अगर कुछ होता है, तो सुनिश्चित करें कि आप पूरी तरह से *अपरेपैड* न पाएँ। अभी से खुद को तैयार करें, ताकि आप विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सकें। और जैसा कि मसीह ने कहा: '*... तैयार रहो*,'¹⁶⁴ क्या यह सच नहीं है? आज, ऐसे कठिनि समय में जीते हुए, हमें केवल तैयार ही नहीं, बल्कि कम से कम तीन बार तैयार रहना चाहिए! शायद हमें न केवल अचानक मृत्यु, बल्कि अन्य खतरों का भी सामना करना पड़ेगा। तो, आइए आराम की कोई भी इच्छा को त्याग दें! ईश्वर करे कि प्रेम हमारे भीतर कार्य करे और त्याग की भावना मौजूद रहे।

अभी मैं देख सकता हूँ कि कुछ तैयार हो रहा है, कि वह होने वाला है लेकिन बार-बार टलता जा रहा है। लगातार छोटी-छोटी देरी हो रही है। ये समयसीमाएँ कौन आगे बढ़ा रहा है? क्या ईश्वर इन्हें टाल रहा है? 'बस एक और महीना,' 'बस दो और'!... ऐसा ही होता है।¹⁶⁵ लेकिन चूंकि हमें नहीं पता कि आगे क्या है, आप जितना हो सके अपने भीतर प्रेम वक्तिसति करें। यह सबसे महत्वपूर्ण बात है: कि आपके बीच सच्चा, भाईचारा भरा प्रेम हो, न कि झूठा। अगर सच्ची चिंता, करुणा और प्रेम है, तो व्यक्ति हमेशा सही काम करेगा। दया और प्रेम शक्तिका स्रोत हैं। जहाँ तक हो सके, रहस्य बनाए रखें, और बहुत अधिक खुलासा न करें: आखिरकार, अगर रहस्य सिर्फ तुम्हें, और मुझे, और उसे, और घंटी बजाने वाले समीओन को ही पता हो, तो उससे क्या फायदा होगा? साधारण मूर्खता से भी, आप नुकसान पहुँचा सकते हैं, और फरि अपना सरि ईंट की दीवार पर ठोकने जैसा होगा। आप देखिए कि सिना में रहस्य कैसे रखे जाते हैं! अगर आपको एहसास

¹⁶⁴ मत्ती 24:44; लूका 12:40।

¹⁶⁵ नवंबर 1984 में दिया गया।

हो जाता कि आपको कैदी बना लिया जाएगा, तो सबसे पहले आपको अपने कॉल साइन नष्ट करने होते थे: नोट को टुकड़ों में काटकर उन्हें नगिल जाना होता था। एक बार, जब मैं खुद को एक खतरनाक स्थिति में पाया, तो मैंने ठीक यही किया, क्योंकि अगर कॉल साइन वदिरोहियों के हाथ लग जाते, तो उन्हें पता चल जाता कि [हमारे] सैनिक अमुक जगह पर थे, उनके पास कोई राशन नहीं था, और इसी तरह की बातें। और फिर वे [हमारे] मुख्यालय को एक रेडियो संदेश भेजते, जिसमें [हमारी] वायु सेना से उनके लिए आपूर्ति गिराने और हम पर बम गराने के लिए कहा जाता। समझा? [कॉल साइन जानकर], वे सरकार की सेना की ओर से मुख्यालय से संपर्क कर लेते। अगर आप एक रेडियो ऑपरेटर होते और आपको कैदी बना लिया जाता, तो वे आपको कॉल साइन बताने के लिए प्लास से आपके नाखून उखाड़ देते। और आप गद्दार बनने के बजाय अपने नाखूनों को उखड़वाना पसंद करेंगे। एक [रेडियो ऑपरेटर] से एक रेडियो संदेश की सामग्री का खुलासा करवाने के लिए, उसकी बगलें आग से जला दी गईं, फिर भी उसने कबूल नहीं किया; ऐसा था मानो वह सुन्न हो गया हो। उसने दुश्मन के सामने रहस्य नहीं खोले और इस प्रकार वह एक शहीद बन गया। जहाँ तक महिलाओं का सवाल है, वे खचचरों की काठी में सेना के लिए दस्तावेज ले जाती थीं और मरने के लिए तैयार रहती थीं।

युद्ध में मृत्यु ईश्वर को अत्यधिक प्रसन्न करने में सक्षम है, क्योंकि एक बहादुर की मृत्यु दूसरों की रक्षा के लिए अपना बलदान देती है। जो लोग, शुद्ध प्रेम से, अपने साथी मनुष्यों, अपने पड़ोसियों की रक्षा के लिए अपना जीवन बलदान करते हैं, वे मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। ये लोग सबसे बड़े नायक हैं; यहाँ तक कि मृत्यु स्वयं भी उनसे डरती और कांपती है, क्योंकि प्रेम के लिए वे मृत्यु को तुच्छ समझते हैं और इस प्रकार अमरत्व प्राप्त करते हैं, कब्र के पत्थर के नीचे अनंत काल की कुंजी पाते हैं और सहजता से शाश्वत आनंद में प्रवेश करते हैं।

एक भिक्षु का संपूर्ण जीवन एक बलदान है

एक भिक्षु का संपूर्ण जीवन स्वाभाविक रूप से उसे प्रेम और आत्म-बलदान की भावना विकसित करने में मदद करता है। उसने मसीह के लिए मरने के उद्देश्य से अपनी यात्रा शुरू की है। इसका मतलब है कि उसने बलदान के उद्देश्य से अपनी यात्रा शुरू की है। एक भिक्षु की कोई [लौकिक] जम्मेदारियाँ नहीं होतीं, इसलिए उसे अपने भीतर त्याग की भावना विकसित करनी होती है। एक गृहस्थ का मसीह के लिए मरने का कोई इरादा नहीं था, और इसके अलावा, उसकी सांसारिक जम्मेदारियाँ होती हैं: वह अपने परिवार और अपने बच्चों का खयाल रखता है; इसलिए, उस पर रखी गई माँगें इतनी सख्त नहीं होतीं, और उसके पास एक बहाना होता है। उदाहरण के लिए, युद्ध में, एक परिवारिक व्यक्ति खतरे से बचने की कोशिश करता है ताकि उसके बच्चे सड़कों पर न रह जाएँ। वह इस तथ्य पर विचार नहीं करता कि, यदि वह खतरे से बचता है, तो कोई और—जसिके भी बच्चे हैं—मारा जा सकता है। खैर, यह एक बात है: कम से कम यहाँ अपने परिवार की चिंता तो होती है। ऐसा व्यक्ति कह सकता है, 'मेरे बच्चे सड़कों पर रह जाएँगे।' वह, किसी अन्य जीवन में बलि कुल भी विश्वास किए बिना, इस जीवन को बचाने की कोशिश कर सकता है।

— तो, गेरोंडा, क्या एक भिक्षु को लगातार अपना बलदान करते रहना चाहिए?

— लेकिन हम पहले ही कह चुके हैं कि एक भिक्षु का पूरा जीवन ही एक बलदान है। अन्यथा, हम भिक्षु ही क्यों बनते हैं? यदि कोई भिक्षु इस मामले में कमी करता है, तो वह भिक्षु नहीं है। तो फिर हम किस आध्यात्मिक संघर्ष की बात कर सकते हैं? यदि बलदान नहीं है, तो आध्यात्मिक संघर्ष के लिए कोई जगह नहीं है। और यदि त्याग नहीं है, तो चाहे एक भिक्षु आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए कतिनी भी कोशिश कर ले, यह सब व्यर्थ होगा। पर्वत पर वे कहते हैं कि ऐसा आध्यात्मिक जीवन एक बगीचे के बुतिया की तरह है: ऐसा आध्यात्मिक जीवन जीने वाला भिक्षु तो राक्षसों को भी भगा नहीं सकता, कागजों को तो दूर की बात है—और वह भी एक उपलब्धि होती। जब कोई व्यक्ति इस

जीवन में अपने सामने रखे गए कार्य को पूरी लगन से अपनाता है, तो दविय ज्वाला उसके भीतर भी जलती है। यद्यपि दविय ज्वाला अनुपस्थिति है, तो वह किसी काम का नहीं है। यह ज्वाला उसे आनंद देती है, साहस देती है, प्रेम देती है। यही वह है जिसके बारे में प्रभु ने कहा: "मैं आग लाने आया हूँ..."¹⁶⁶ जब यह दविय अग्नौ मौजूद होती है, तो भजन-गायक का भजन और संन्यासी की प्रार्थना—चाहे वह अपने लिए हो या दूसरों के लिए—दोनों फलदायी होती है। विशेष रूप से एक महिला का हृदय, जब शुद्ध हो जाता है, तो उसमें बड़ी शक्ति होती है और वह प्रार्थना में बहुत आगे बढ़ जाती है, और 'एक रडार' () बन जाती है। लेकिन जिनमें प्रेम और आत्म-बलदान की कमी होती है, वे या तो सांसारिक आनंद का अनुभव करेंगे या सांसारिक दुख का; ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक आनंद का अनुभव नहीं कर सकता।

इसीलिए मैं आपसे कहता हूँ: आत्म-त्याग और भाइयों के प्रति प्रेम को विकसित करें। आप में से प्रत्येक एक आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त करे, ताकि जब आप किसी कठिनी परिस्थिति का सामना करें, तो आप स्वयं उससे बाहर निकल सकें। आध्यात्मिक अवस्था में न होने पर, एक व्यक्ति डिर जाता है, क्योंकि वह स्वयं से प्रेम करता है। वह मसीह का भी परित्याग कर सकता है; वह उनका विश्वासघात कर सकता है। आपको मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। देखो, सांसारिक लोग भी—जो स्वर्ग में विश्वास भी नहीं करते—अपने आप को बलदान कर देते हैं। फिर भी हम विश्वास करते हैं कि कुछ भी व्यर्थ नहीं है, कि हमारे बलदान का एक अर्थ है। सांसारिक लोग, अपनी पूर्ण अज्ञानता में, किसी दूसरे की रक्षा के लिए खुद को बलदान कर देंगे और अपनी जान को खतरे में डाल देंगे—और फिर भी भिक्षु खुद को बलदान के रूप में अर्पित नहीं करेंगे? हमने मसीह के प्रेम के लिए मरने के उद्देश्य से इस मार्ग पर कदम रखा है। हमारी कोई सांसारिक ज़िम्मेदारियाँ नहीं हैं, और अगर हम में आत्म-बलदान की भावना भी नहीं है, तो फिर हम आखिर कर क्या रहे हैं? तोते भी हम पर हँसेंगे! क्या आपने देखा है कि कैसे तोते लोगों का मज़ाक उड़ाते हैं? वे आलसी लोगों का मज़ाक उड़ाते हैं!

— गैरोन्डा, क्या यह संभव है कि मैं दूसरों की मदद करने को तैयार हूँ, लेकिन ऐसा करने के मेरे उद्देश्य शुद्ध नहीं हैं?

— यह तो हमेशा स्पष्ट होता है। जब किसी के इरादे अपवर्ति होते हैं, तो आत्मा को कोई चैन नहीं मिलता; वह यह महसूस करती है और उन्हें शुद्ध करने का प्रयास करती है। मैं उस महिला की आत्मा से बहुत प्रभावित हुआ जो कुछ दिनों पहले मुझसे मिलने आई थी। जब उसे पता चला कि कोई बीमार और पीड़ित है, तो वह सो नहीं सकी: वह बेचैन हो गई और रोई। और फिर भी वह स्वयं एक सांसारिक जीवन जीती है। उसने जो उसके साथ हो रहा था, वह किसी से साझा किया, और जवाब में उसे मिला: 'शायद यह दुश्मन का प्रलोभन है।' लेकिन क्या वास्तव में ऐसी कोई चीज़ प्रलोभन से उत्पन्न हो सकती है? शैतान केवल तभी किसी व्यक्ति को धोखा दे सकता है जब वे दिखावे के लिए ऐसा करते हैं, और फिर उनकी भावनाएँ झूठी होंगी।

अपने कर्मों से अपना 'स्व' हटा दो। जब कोई व्यक्ति अपने 'स्व' से बाहर निकलता है, तो वह पृथ्वी से बाहर निकलकर एक अलग वातावरण में चला जाता है। जब तक कोई व्यक्ति अपने भीतर ही रहता है, तब तक वह दविय प्राणी नहीं बन सकता। बलदान के बिना कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं हो सकता। कम से कम थोड़ा याद रखो कि मृत्यु मौजूद है। और चूँकि हम सभी को वैसे भी मरना है, तो हम अपने बारे में बहुत ज्यादा सावधान न रहें। अपनी सेहत की अनदेखी करने की हद तक नहीं, लेकिन हमें आराम के आगे भी नहीं झुकना चाहिए। मैं आपसे खतरनाक कारनामों में कूदने के लिए नहीं कह रहा हूँ, लेकिन निश्चित रूप से, मेरे भाई, आप में थोड़ी-बहुत वीरता तो होनी चाहिए! युद्ध के दौरान वीरों ने कतिनी

¹⁶⁶ लूका 12:49।

बहादुरी से मौत का सामना किया! एक भिक्षु, जिसने कोंडलिसि के साथ लड़ाई लड़ी¹⁶⁷ (कोंडलिसि एक देशभक्त, एक नायक था), ने मुझे बताया कि एशिया माइनर के युद्ध के दौरान, जब यूनानी कॉन्स्टेंटिनोपल के पास एक नौसैनिक आक्रमण बल उतार रहे थे, कोंडलिसि एक जहाज पर था और जैसे ही उसने दूर से कॉन्स्टेंटिनोपल को देखा, वह एक पागल की तरह व्यवहार करने लगा। "चलो, साथियों," वह चिल्लाया, "अगर हमें मरना ही है, तो मर जाएँ! चाहे आज या कल! अगर हमें मरना ही है, तो वीरों की तरह मरते हैं! हे, साथियों! अपने देश के लिए वीरगति प्राप्त करते हैं!" वह तो जहाज के किनारे पहुँचने का इंतज़ार भी नहीं कर सका। अपने उत्साह और तीव्र लालसा में, वह यह ध्यान देने में नाकाम रहा कि जहाज अभी तट तक नहीं पहुँचा था — वह कूदा और समुद्र में गरि गया। वह इस कदर जुनून से भरा हुआ था! वह तैर नहीं सकता था: दूसरे दौड़कर आए और उसे पानी से बाहर खींच लिया।

— जेरोडा, आपने कहा था कि हमें अपने हर कर्म को अपने 'स्व' से मुक्त करने का प्रयास करना चाहिए। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं?

— आप सब कुछ थाली में परोसा हुआ चाहते हैं। अपना 'स्व' अलग रखना क्या होता है? मैं अपना 'स्व' कब अलग रखूँ? हम अपने प्रेम से अपने 'स्व' को कैसे दूर कर सकते हैं? हम अपने प्रेम को कैसे शुद्ध कर सकते हैं? मैं जितना अधिक स्वयं की उपेक्षा करता हूँ, उतना ही अधिक मैं अपने 'स्व' को दूर करता हूँ। और अपनी इच्छा, अपनी कमजोरी, अपने मन की शांति को अलग रखकर, हम भी अपने 'स्व' को दूर करते हैं। आज्ञाकारिता और मौन के माध्यम से, हमारे आत्म-बोध से बहुत कुछ गायब हो जाता है। जब हमारा प्रेम नस्वित्व होता है, तो हम अपने 'स्व' को भी दूर कर देते हैं, लेकिन हमारे प्रेम में त्याग भी होना चाहिए। क्या आप इसे समझते हैं? उदाहरण के लिए, एक नन मदर सुपीरियर से मिलने जाना चाहती है और देखती है कि एक और बहन भी उनसे मिलने जाना चाहती है। यदि पहली नन अपनी बहन को तुरंत रास्ता दे देती है, यह जानते हुए भी कि बहन को कोई विशेष समस्या नहीं है, तो वह आज्ञाकारिता, आत्म-त्याग और इसी तरह का प्रदर्शन कर रही है। और जब वह पूरे दिल से अपना स्थान दूसरे को दे देती है और मदर सुपीरियर से बात नहीं करती, तो स्वयं मसीह उससे बात करेंगे। हालाँकि, उसे यह एहसास होना चाहिए कि यह आवश्यक है; उसे यह इसलिए करना चाहिए क्योंकि उसके दिल ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया है, और, न कि केवल इसलिए कि पिता पति ऐसा कहते हैं।" इस तरह, उसे ईश्वर की कृपा का दोगुना हिससा मिलता है। और इस मामले में, एक बहन को मानवीय तरीके से आध्यात्मिक मदद मिलती है, जबकि दूसरी को द्रव्य तरीके से, सीधे मसीह से मदद मिलती है।

उन गृहस्थ लोगों पर भी ध्यान दें जो ऐसा त्याग दिखाते हैं जो संन्यासियों में भी नहीं होता। मैं देखता हूँ कि दुनिया में, इस तथ्य के बावजूद कि लोग विश्वास नहीं करते, और उनमें कमजोरियाँ और वासनाएँ हो सकती हैं, उनके पास—जैसा कि ईश्वर ने वधान किया है—एक कोमल हृदय होता है। वे किसी को ज़रूरतमंद देखते हैं और, भले ही वे उन्हें न जानते हों, उनकी मदद करते हैं। कई लोग, जो स्वर्ग के अस्तित्व में विश्वास भी नहीं करते, किसी खतरे को देखकर, बुराई को टालने के लिए दौड़ पड़ते हैं, दूसरों के जीने के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहते हैं, और अपनी संपत्ति दूसरों को देने के लिए तत्पर रहते हैं। कई साल पहले, एक कारखाने में, एक मजदूर मशीन में फँस गया और उसमें खिंच रहा था। इस तथ्य के बावजूद कि आसपास बहुत सारे पुरुष थे, एक महिला ही उसकी जान बचाने के लिए दौड़ी। पुरुष—इतने 'बहादुर'—वहाँ खड़े तमाशा देखते रहे। लेकिन उसने उसे मशीन से बाहर खींच लिया; हालाँकि, उसका दुपट्टा फँस गया, वह मशीन में घुसी गई, और उसकी मौत हो गई। एक शहीद! क्या महान कार्य है!

¹⁶⁷ जॉर्जियोस कोन्डलिसि (1879–1936) – ग्रीस के एक प्रमुख सैन्य और राजनेता। 1920 के दशक में एशिया माइनर में हुई शत्रुता में एक सक्रिय भागीदार। बाद के वर्षों में, उन्होंने रक्षा मंत्री, गृह मंत्री और ग्रीस के प्रधानमंत्री के पद संभाले। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

इस तरह के लोग अपने बारे में नहीं सोचते: वे अपने 'स्व' को अलग कर देते हैं। और जब वे इसे अलग कर देते हैं, तो मसीह उनमें दौड़ पड़ते हैं।

अध्याय 3. ईश्वर में विश्वास से ही साहस का जन्म होता है

साहस में कोई बर्बरता नहीं होती

बड़े कारनामे लंबे कद वालों से नहीं, बल्कि उन लोगों से होते हैं जिनमें साहस, उदार हृदय और खुद को बलिदान करने का संकल्प होता है। और युद्ध में, जिनमें साहस होता है, उनमें दया भी होती है और वे दूसरों को नहीं मारते, क्योंकि साहस में कोई बर्बरता नहीं होती। ऐसे लोग दुश्मन पर नहीं, बल्कि उसके चारों ओर गोली चलाते हैं, और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करते हैं। एक दयालु व्यक्ति मारने की बजाय मारा जाना पसंद करेगा। इस स्वभाव का व्यक्ति दैवीय शक्तियों के प्रति खुला होता है। दूसरी ओर, दुष्ट लोग कायर और डरपोक होते हैं; वे अपने डर को अहंकार से छपाते हैं, खुद से और दूसरों से दोनों से डरते हैं, और इसलिए, डर के मारे, वे बनिा रुके गोली चलाते हैं। जब मैं गृहयुद्ध के दौरान अपनी सैन्य सेवा कर रहा था, तो हम एक बार एक गाँव में घुसे। स्थानीय लोगों ने हमें बताया, "यहाँ कोई डाकू नहीं है, वे सब चले गए हैं। केवल एक पागल औरत बची है।" हमारे एक सैनिक ने इस महिला को दूर से देखा और लाइट मशीन गन से उस पर दो बार गोलियाँ चलाई। उस बेचारी महिला ने पुकारा, "मैंने तुम्हारा क्या बगिड़ा है?" और वह जमीन पर गिर पड़ी।

— क्या उसने यह डर के मारे किया?

'हाँ, डर के कारण। उस तरह के लोग अपने लिए आसान रास्ते तलाशते हैं। वे कहते हैं, "दुश्मन का काम तमाम कर देना ही बेहतर है," ताकि कोई शक न रहे। एक कम कायर व्यक्ति कम क्रूर होता है। वह दुश्मन को अक्षम करने की कोशिश करेगा—उदाहरण के लिए, उसकी बांह या पैर में गोली मारकर—लेकिन वह उसे नहीं मारेगा।

साहस और बहादुरी एक बात है, लेकिन द्वेष और अपराध-प्रवृत्ति बिल्कुल दूसरी बात है। दुश्मनों को सरिफ़ गला काटने के लिए बंदी बनाना साहस नहीं है। सच्चा साहस तो यह होगा कि दुश्मन को पकड़कर उसकी बंदूक तोड़ दी जाए और उसे आजाद कर दिया जाए। बिल्कुल यही मेरे पति ने किया था। जब उन्होंने फारसी पर छापा मार रहे चेत्स (168) को पकड़ा, तो वे उनकी राइफलें छीन लेते, उन्हें तोड़ देते और कहते: 'तुम औरतें हो, मर्द नहीं।' इसके बाद, वे उन्हें आजाद कर देते। और एक बार, उन्होंने एक अमीर तुर्की महिला का वेश धारण किया, उनके शविरि में गए और नेता को बुलाया। उन्होंने अपने आदमियों के साथ पहले से ही यह व्यवस्था कर रखी थी कि जैसे ही वे पूर्व निर्धारित संकेत सुनें, वे हमला कर दें। जब डाकू उसे नेता के पास ले गए, तो मेरे पति ने उससे कहा, 'अपने आदमियों को जाने दो और हमें अकेला छोड़ दो।' जैसे ही वे अकेले हुए, मेरे पति ने सरदार से राइफल छीन ली, उसे दो टुकड़ों में तोड़ दिया और डाकू से

¹⁶⁸ तुर्की डाकू। पुस्तक में यह भी देखें: *माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस* कैपाडोसिया के परमपूज्य आर्सेनयिस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1997। पृ. 22, 74

कहा: 'अब तुम एक औरत हो, और मैं एजनेपडिसि हूँ।'¹⁶⁹ उसी क्षण, उन्होंने पहले से तय संकेत दिया, उनके साथी अंदर घुस पड़े और डाकुओं को गाँव से बाहर खदेड़ दिया।

सफल होने के लिए, व्यक्ति में थोड़ी-बहुत उग्रता होनी चाहिए—शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति इस उग्रता का उपयोग कैसे करता है, वह या तो एक संत बनता है या एक नायक। हालाँकि, यदि ऐसा व्यक्ति रास्ते से भटक जाता है और बुराई उसके मार्गदर्शन करती है, तो वह एक अपराधी बन सकता है। जसिमें वह बेधड़कपन नहीं होता, वह न तो संत बन सकता है और न ही नायक। और इसलिए हमारी भीतरी प्रेरणा को गति में आना चाहिए; हमारा हृदय और हमारा साहस सक्रिय हो उठना चाहिए। हृदय को बेधड़क हो जाना चाहिए। मैं कई सेवानिवृत्त अधिकारियों को जानता हूँ जो बेचैनी के कारण जीवन में अपनी जगह नहीं बना पाते। उनमें से कुछ चाहते हैं कि युद्ध छड़ि जाए ताकि वे मोरचे पर रह सकें—उनमें जुनून इतना प्रबल है। कुछ अन्य, जैसे ही उन्हें सेना में बुलावे का पत्र मिलता है, कांपने लगते हैं, जबकि कुछ और लोग सेना में भरती होने से बचने के लिए पागल होने का नाटक करते हैं। कतिने ही सेवानिवृत्त अधिकारियों ने मुझसे कहा है कि वे बोस्निया जाकर लड़ना चाहते हैं! आध्यात्मिक जीवन में अपने साहस को लगाने में असफल रहने के कारण, जब वे युद्ध के बारे में सुनते हैं तो लड़ने की संभावना पर प्रसन्न होते हैं। क्या आप समझते हैं कि ये शक्तिशाली पुरुष, अगर उन्हें आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान होता, तो क्या-क्या कारनामे, क्या-क्या आध्यात्मिक संघर्ष करते? वे संत बन गए होते।

पहले के दिनों में कतिनी हमिमत थी

— जेरोंडा, आपने एक बार हमें अपनी दादी के बारे में कुछ बताया था...

— मेरी दादी बहुत बहादुर महिला थीं। सुरक्षा की दृष्टि से, वह हमेशा अपने साथ एक यातागन रखती थीं।¹⁷⁰ और यह रही कहानी: दो बच्चों वाली एक वधिया, तुरकों से घरी हुई, लेकिन उसे जीवन चलाना था... वे कठिन समय थे... हर कोई उससे डरता था। वह एक असली करिदार थी! एक बार, एक डाकू कबरस्तान के पास की दाख की बारी में चढ़ गया। लोगों को डराने के लिए, उसने एक लंबी, सफेद कमीज पहनी जो उसके एड़ियों तक पहुँचती थी। फिर, दाख की बारी से निकलकर, अभी भी वही सफेद कमीज पहने, वह कबरस्तान में आ गया और वहाँ इधर-उधर घूमने लगा। संयोग से उसी समय मेरी दादी उस कबरस्तान से गुजर रही थीं। जब डाकू ने उन्हें देखा, तो वह ज़मीन पर लोट गया और मरने का नाटक करने लगा, इस उम्मीद में कि वह उसे एक पशिाच समझकर डर जाएँगी। हालाँकि, मेरी दादी उसके पास गईं और कहा: 'अगर तुम एक सभ्य इंसान होते, तो ज़मीन तुम्हें कब की नगिल चुकी होती!' और यह कहकर, उन्होंने उस खलनायक को अपने यातागान (एक प्रकार की तलवार) के कुंद हस्तिसे से पीटना शुरू कर दिया! उन्होंने उसे अपंग बना दिया। उन्हें यह भी नहीं पता था कि वह कौन था। बाद में, गाँव वापस आकर ही उन्होंने सुना कि फिलाने को अपंग बना दिया गया है, और इसी तरह उन्हें पता चला कि वह कौन था।

आजकल के ज़माने में, साहस एक दुर्लभ चीज़ है। लोग कमजोर इच्छाशक्तिवाले हैं। इसलिए, ईश्वर न करे, अगर कोई युद्ध छड़ि जाए, तो कुछ लोग डर से मर जाएँगे, जबकि अन्य तो छोटी सी भी परीक्षा में ही हमिमत हार जाएँगे, क्योंकि वे आरामदायक जीवन के आदी हो गए हैं। लेकिन पुराने दिनों में, कतिना साहस हुआ करता था! एशिया माइनर के

¹⁶⁹ एल्डर का उपनाम।

¹⁷⁰ एक बड़ा, घुमावदार तुरकी खंजर। – अनुवादक की टिप्पणी।

फ्लेवियन मठ में, तुरकों ने एक ईसाई व्यक्ति को पकड़ लिया और मार डाला। फिर उन्होंने उसकी पत्नी से कहा: 'या तो तुम मसीह का त्याग करो, या हम तुम्हारे बच्चों का भी कत्ल कर देंगे।' — "मसीह ने मेरे पत को ले लिया है," उसने जवाब दिया, "मैं अपने बच्चों को मसीह के हवाले करती हूँ, और मैं खुद मसीह को नहीं त्यागूँगी!" क्या साहस! यदि मसीह किसी व्यक्ति के भीतर नहीं वास करते, तो उसमें साहस कैसे वास कर सकता है? फिर भी आज, मसीह के बिना लोग अपना पूरा जीवन बकवास पर बनाते हैं।

उन दानों, माताएँ बहादुर थीं, और बच्चे भी। मुझे याद है कि कोनटिसा में, हमारी पड़ोसन—जो गर्भवती थीं—अकेले खेत में मकई में मटिटी डालने के लिए गईं, भले ही वहाँ पैदल डेढ़ घंटे का रास्ता था। वहाँ उन्होंने अपने बच्चे को जन्म दिया, उसे अपनी स्कर्ट में लपेटा, और गाँव लौट आईं। "मेरा बच्चा हुआ है!" वह हमारे दरवाजे से गुजरते हुए डींगें हाँक रही थीं। तब युद्ध चल रहा था, वे मुश्किल के दिन थे। लेकिन आजकल ऐसी महिलाएँ हैं जो डर के मारे, सिर्फ एक बच्चा जन्म देने के लिए छह-सात महीने बसितर पर ही बंती देती हैं। मैं [बेशक] उन महिलाओं की बात नहीं कर रहा हूँ जो ऐसा बीमारी के कारण करती हैं।

स्वाभाविक भय एक बाधा है

— गेरौन्डा, मैं बहुत डरपोक हूँ। मुझे नहीं पता कि अगर मैं खुद को किसी मुश्किल स्थिति में पाऊँ तो मैं क्या करूँगी। डर कहाँ से आता है?

— शायद बचपन में किसी के साथ कुछ ऐसा हुआ हो, और इसलिए वे डरते हैं। अक्सर, डर स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन यह आस्था की कमी, ईश्वर में विश्वास की कमी से भी उत्पन्न हो सकता है। हालाँकि, डर एक [आवश्यक] ब्रेक भी है, क्योंकि यह एक व्यक्ति को ईश्वर की ओर मुड़ने में मदद करता है। अपने डर में, जब लोग कुछ भी थामने के लिए खोजते हैं, तो वे ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। गर्म देशों का उदाहरण लें जहाँ जंगली जनजातियाँ रहती हैं; वहाँ जंगली जानवर भी होते हैं—बड़े जानवर, अजगर आदि। ऐसा इसलिए है ताकि लोग अपनी राह खोजने के लिए ईश्वर से मदद माँगें और ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए विवश हों। यदि ऐसा न होता, तो आखिर इन लोगों को कौन रोक सकता था? ईश्वर ने जो कुछ भी व्यवस्था की है, उसमें एक उद्देश्य है।

— और जो लोग सच्चे ईश्वर को नहीं जानते, और डर के मारे मदद माँगते हैं—क्या उन्हें वह मिलती है?

— देखिए: वे अपना सरि ऊपर उठाते हैं, और यह अपने आप में कुछ मायने रखता है। और छोटे बच्चों के लिए, डर एक ब्रेक के रूप में काम करता है। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो, अगर आप उन्हें थोड़ा डराएँ नहीं, तो किसी की नहीं सुनेंगे: न अपनी माँ की और न ही अपने पिता की। और जब मैं छोटा था, तो वे मुझसे कहा करते थे: 'भूत आ रहा है!' छोटे बच्चों का डरना स्वाभाविक है। लेकिन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है और परिपक्व होता है, और उसका मन भी परिपक्व होता है, तो डर कम हो जाता है। स्वाभाविक भय केवल बचपन में ही सहायक होता है। यदि कोई व्यक्ति, वयस्क होने के बाद भी, खाली जगह से डरता है, तो उस पर तरस आता है। कुछ आध्यात्मिक लोग मेरे कालीवा में आते हैं और कहते हैं: "देखिए, हमारे कोई करीबी गुजर गया है, और इस वजह से हम लगातार डरे हुए हैं।" और वे मुझसे प्रार्थना करने के लिए कहते हैं कि यह डर उनसे दूर हो जाए। "लेकिन यहाँ," मैं जवाब देता हूँ, "लोग मृत्यु को ध्यान में रखने की कोशिश करते हैं, और आपके कोई करीबी गुजर गया है, और आप इस डर को भगाना चाहते हैं?!"

महिलाओं में स्वाभाविक रूप से थोड़ा अधिक डर होता है। ऐसी बहुत कम महिलाएँ हैं जो नहीं डरतीं। हालाँकि, ऐसी महिलाएँ परिवार में समस्याएँ पैदा कर सकती हैं क्योंकि वे आज्ञाकारिता नहीं करतीं। एक पुरुष भी साहसी बन सकता है यदि वह स्वभाव से कायर न हो और उसके दिल में हिम्मत हो। और कुछ महिलाएँ बहुत बड़ी कायर होती हैं। यह वाकई

कुछ हटके हैं जब एक महिला जो स्वाभाविक रूप से डरपोक है, प्रयास करके साहस जुटा लेती है। एक महिला के स्वभाव में त्याग होता है और इसलिए वह बहुत अधिक आत्म-त्याग करने में सक्षम होती है, जो एक पुरुष में, उसकी सभी स्वाभाविक हिम्मत के बावजूद, नहीं होता है।

मौत उस व्यक्ति से डरती है जो मौत से नहीं डरता

— जेरोंडा, भय को कैसे दूर किया जाता है?

— साहस से। कोई व्यक्ति जितना अधिक डरता है, दुश्मन उसे उतना ही अधिक प्रलोभित करता है। जो कोई भी कायरता पालता है, उसे उसे बाहर निकालने का प्रयास करना चाहिए। जब मैं छोटा था, तो मुझे कोनटिसा के कब्रस्तान के पास से गुजरने में डर लगता था। इसलिए मैं तीन रातों तक कब्रस्तान में सोया, और डर चला गया। मैं नशान लगाकर अंदर चला जाता; किसी को डराने के लिए मैंने अपनी टॉर्च भी नहीं जलाई। अगर कोई व्यक्ति साहसी बनने का प्रयास नहीं करता और सच्चा प्रेम प्राप्त नहीं करता, तो जब कोई कठिनी परिस्थिति आती है, तो उसके लिए तो मुरगियाँ भी रो पड़ेंगी।

— तो, गेरोन्डा, क्या कोई वीरतापूर्ण कार्य करके खुद को डर से मुक्त कर सकता है?

— किसी को इस बात की खुशी मनानी चाहिए कि वह मर रहा है ताकि दूसरे न मरें। यदि कोई यह मानसकित्ता अपनाता है, तो फिर किसी चीज़ से डरने की कोई बात नहीं है। साहस महान दया, प्रेम और आत्म-बलदान से उत्पन्न होता है। लेकिन आजकल, लोग मौत के बारे में सुनना भी नहीं चाहते। मैंने जाना कि जो लोग अंतिम संस्कार का आयोजन करते हैं, वे अपने साइनबोर्ड पर 'फ़्यूनरल होम' लिखने के बजाय 'फ़्यूनरल सर्विसेज' लिखते हैं, ताकि लोगों को मौत की याद न आए। हालाँकि, अगर लोग मौत को याद नहीं रखते, तो वे वास्तविकता से परे जी रहे हैं। जो लोग मृत्यु से डरते हैं और दिखावटी जीवन से प्यार करते हैं, वे कीटाणुओं से भी डरते हैं; वे लगातार भय से ग्रस्त रहते हैं, जो उन्हें आध्यात्मिक सुस्ती में रखता है। दूसरी ओर, साहसी लोग कभी भी मृत्यु से नहीं डरते और इसलिए वे उत्साह और आत्म-बलदान के साथ परिश्रम करते हैं। मृत्यु को अपनी आँखों के सामने रखकर और प्रतिदिन इसके बारे में सोचकर, वे इसके लिए अधिक आध्यात्मिक रूप से तैयारी करते हैं और अधिक साहस के साथ परिश्रम करते हैं। इस प्रकार, वे सांसारिक व्यर्थता पर काबू पाते हैं और यहाँ भी, अनंतकाल और स्वर्गीय आनंद में जीना शुरू कर देते हैं। और जो व्यक्ति अपने आदर्शों, धर्म और अपनी मातृभूमि के लिए युद्ध में लड़ता है, वह **صلیب** का चहिन बनाए और न डरे, क्योंकि ईश्वर उसकी सहायता के लिए है! यदि कोई व्यक्ति **صلیب** का चहिन बनाता है और अपना जीवन ईश्वर के हाथों में सौंपता है, तो ईश्वर स्वयं बाद में नरिणय करेंगे कि उस व्यक्ति को जीना था या मरना।

— लेकिन क्या किसी व्यक्ति के लिए लापरवाही से उत्पन्न होने वाले भय को महसूस न करना संभव है?

— यह तो उससे भी बदतर है, क्योंकि किसी भी खतरनाक स्थिति में ऐसा व्यक्ति खुद को गंभीर मुसीबत में पा सकता है और अपनी सारी जल्दबाजी का भारी कीमत चुका सकता है। इसलिए, जो लोग ईश्वर से थोड़ा भी डरते हैं, वे सतर्क रहते हैं और लापरवाही से खतरे में नहीं कूदते। मनुष्य को खुद को अच्छा करने के लिए मजबूर करना चाहिए,¹⁷¹ लेकिन भरोसा ईश्वर पर रखना चाहिए, खुद पर नहीं।

¹⁷¹ तुलना करें मत्ती 11:12 से।

साहस का महत्व बहुत बड़ा है

एक चरम स्थिति में, सबसे बड़ा नुकसान उस घबराहट से होता है जो छा जाती है। जब खतरा हो, तो सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आप अपना आपा न खोएं। बस देखिए कि कैसे एक मुरगी एक चील का सामना करती है और उस पर टूट पड़ती है! और कैसे एक बलिली अपने बलिली के बच्चों की रक्षा के लिए एक कुत्ते से लड़ती है! वह अपनी पूंछ को तुरही की तरह उठाती है और धमकी भरे अंदाज में फुफकारने लगती है! एक जानवर पूरी ताकत झोंक देता है, जबकि एक इंसान कायर साबित होता है!

घबराहट में न आएँ। महिलाएं विशेष रूप से घबराने की प्रवृत्ति रखती हैं। मुझे याद है कि बिज्जे के दौरान, हम संयोग से कोनटिसा से लगभग दो घंटे की पैदल दूरी पर एक जगह गए थे। लड़के थोड़ा आगे निकल गए, उन्हें वहाँ कुछ ग्रीक सैनिकों के हेलमेट और वर्दी मिली, उन्होंने उन्हें पहन लिया और सेंट कॉन्स्टेंटिनि के चैपल में चले गए। मैं भी वहाँ गया, आइकन की पूजा करने के लिए। उस समय मैं पंद्रह साल की थी। जैसे ही माताओं ने दूर से सैन्य वर्दी में बच्चों को देखा, वे चलिलाने लगीं: 'इटालियन आ रहे हैं!' — और भागने के लिए तैयार हो गईं। उन्होंने यह देखने की जहमत तक नहीं उठाई कि वे कौन थे! शरारती लड़कों ने ग्रीक हेलमेट पहन रखे थे, और डरी हुई माताओं ने उन्हें इटालियन समझकर अपने ही बच्चों से दूर भाग गईं!

साहस का महत्व बहुत बड़ा है। अगर आप शारीरिक रूप से स्वस्थ लेकिन कायर व्यक्ति से कहें, 'अरे, आप तो बहुत पीले पड़ गए हैं! क्या बात है?', तो वह डॉक्टर के पास चला जाएगा, जबकि वह सिर्फ इसलिए पीला पड़ गया हो सकता है क्योंकि उसे पर्याप्त नींद नहीं मिली है, या दांत में दर्द है, या कुछ इसी तरह की कोई वजह हो। एक ग्रीक या तो आगे बढ़ेगा या घबरा जाएगा। कायर किसी काम के नहीं होते। युद्ध में, किसी को कायरों की जरूरत नहीं होती; उन पर भरोसा नहीं किया जाता। उन्हें मशिनों पर या मोर्चे पर नहीं भेजा जाता, ताकि वे समस्याएँ पैदा न करें। एक अकेला कायर सैनिक, अगर वह युद्ध योजना से अनजान हो, तो इतना दहशत फैला सकता है कि वह एक पूरी डिवीजन को ही अस्त-व्यस्त कर देगा! डर कायर की कल्पना को जगाता है, और वह चलिलाने लग सकता है: 'वह देखो! ओह, वे आ रहे हैं, वे पहले से ही यहाँ हैं, वे हमें काट रहे हैं! ओह, हम आखिर भागेंगे कहाँ?! दुश्मनों का एक पूरा झुंड है! वे हमें पूरा का पूरा नगिल जाएँगे!' ऐसा व्यक्ति बहुत नुकसान पहुँचाता है, क्योंकि लोग दूसरों से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। हालाँकि, एक बहादुर आदमी दुश्मनों को देखकर बस थूककर कहेगा: 'पाह, ये लोग हैं भी? ये तो बस चींटियों का एक झुंड है!' — और बाकी [ये शब्द सुनकर] भी बहादुरी से हमले में कूद पड़ेंगे। इसीलिए सेना में कहा जाता है कि एक मुश्किल काम को बीस कायरों से बेहतर पाँच बहादुर लोग शांत दमिग से कर लेते हैं।

— तो, गेराना, एक कठिन और खतरनाक स्थिति में, बाहरी खतरे उतने डरावने नहीं होते जितने कि आंतरिक खतरे।

¹⁷²— हाँ, बिल्कुल ऐसा ही है। और अगर सूली के ही रहने वाले पलियुस की गद्दारी न हुई होती, तो तुर्क सूली¹⁷³ पर कब्जा नहीं कर पाते। उसने तुर्कों को एक गुप्त रास्ते से ले जाया। उदाहरण के लिए, पाँच छोटे गाँव सौहारदपूर्ण संबंधों में थे और मलिकर उन्होंने स्वयं अली पाशा का सामना किया, जो इतना शक्तिशाली था कि उसने सुल्तान को भी

¹⁷² अली पाशा (तेपेलनली), 1714–1820 – इओआननि के प्रसिद्धि पाशा, डाकू सरदार वेलीस के पुत्र, जसिने सुलओट्स के खिलाफ क्रूर युद्ध लड़े, सुल्तान के साथ संघर्ष में आए और 1820 में मारे गए। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹⁷³ सूली – एपरिस (ग्रीस का एक क्षेत्र) के कई गाँवों का एक संघ, जसिने तुर्की शासन के दौरान स्वतंत्रता का आनंद लिया और 1790 से 1893 तक विजिताओं के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया। – *अनुवादक की टिप्पणी*।

चुनौती दी।¹⁷⁴ सूली के लोग अली पाशा के दरवाजे पर ही थे, फरि भी उन्होंने उसे कड़ी टक्कर दी। और वहाँ की महिलाएँ कतिनी बहादुर और एकजुट थीं! उन्होंने भी कार्बाइन उठा लीं।

अनुशासन

— जेरोंडा, यदकिस्सी समूह में अनुशासन की कमी सामान्य हो, तो क्या उसके सदस्य कठनि परस्थिति में अनुशासन दिखा पाएंगे?

¹⁷⁵— आग लगने के दौरान, कोई भी अपनी मनमर्जी नहीं करता; इसके विपरीत, हर कोई आदेश का पालन करता है। प्रभारी व्यक्ति स्थिति की निगरानी करता है और दूसरों को बताता है कि क्या करना है। अन्यथा, लोग घबराहट फैला सकते हैं और आग बुझाने के बजाय, लपटों को और भी भड़का सकते हैं। एक बार, मैं पवित्र पर्वत पर लौट रहा था। जब हमारी छोटी नाव वाटोपेदी और पंतोक्रेटर मठों के बीच थी, तो उत्तर-पूर्वी हवा चलने लगी और एक तूफान आ गया। नाविक ने छोटी नाव को लहरों के बीच ले गया, क्योंकि विरना हम डूब जाते। इएसिसोस का एक कायर,¹⁷⁶ जैसी जहाजों या समुद्री यात्रा के बारे में कुछ भी नहीं पता था — वह तो गर्धों को पालता था — चिल्लाने लगा: "तुम यह क्या कर रहे हो, हँ? तुम हमें डुबो दोगे! क्या तुम्हें देखि नहीं रहा? वह हमें ऐसे ही कावाला ले जाएगा!" यह सुनते ही सभी यात्री कूद पड़े और कप्तान के चारों ओर इकट्ठा हो गए, जबकि विह बेचारा बार-बार कहता रहा: "मुझे अकेला छोड़ दो, मुझे पता है कि मैं क्या कर रहा हूँ!" सौभाग्य से, यात्रियों में से एक नाविक था और उसने बाकियों को शांत किया: 'उसे अकेला छोड़ दो, वह जानता है कि विह क्या कर रहा है! हमें लहरों को काटते हुए आगे बढ़ने के लिए नाव चलाना होगा।' अगर वह नाविक वहाँ नहीं होता, तो जहाज डूब जाता, क्योंकि यात्री कप्तान को अपना काम करने नहीं देते। आप देखिए क्या हुआ: एक कायर निकला, दहशत फैल गई, जहाज पर सवार हर कोई कूद पड़ा और वे जहाज को डुबो ही सकते थे। और आखिरकार, ऐसी परिस्थितियों के लिए हमेशा एक दूसरा इंजीनियर होता है जो कप्तान के [वास्तव में] जहाज चलाने में असमर्थ होने पर पतवार संभाल लेता है।

ग्रीक लोगों पर आम तौर पर आसानी से हुकुम नहीं चलाया जा सकता। रोमन कैथोलिक पोप की अचूकता में विश्वास करते हैं, लेकिन हम ग्रीक अपने फैसले पर विश्वास करते हैं और, जैसा कि पिता चलता है, हम सभी में... अचूकता होती है! यह क्यों सोचा जाता है कि तुर्क अच्छी नीतियाँ अपनाते हैं? क्योंकि तुर्कों में कुछ ही बुद्धिमान लोग होते हैं; उनमें से अधिकांश विशेष रूप से तेज-तर्रार नहीं होते हैं। इसलिए, जो कुछ लोग बुद्धिमान होते हैं, वे तुर्कों के नेता बन जाते हैं, जबकि बाकी लोग स्वाभाविक रूप से उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। दूसरी ओर, ग्रीक, जो कि भारी बहुमत में बहुत बुद्धिमान होते हैं, सभी बिना किसी अपवाद के शासन करना और आदेश देना चाहते हैं, और आज्ञा मानना उनके लिए मुश्किल होता है।

और इतालवी कहा करते थे: 'दस यूनानियों में से पाँच कमांडर बनना चाहते हैं!' मान लीजिए कि हम कहीं जा रहे हैं। कोई एक छोटा रास्ता जानता होगा, कोई दूसरा दूसरी तरफ से एक अलग रास्ता, तीसरा कोई और... 'नहीं, हम इसी रास्ते

¹⁷⁴ सुल्तान – तुर्की का शासक – मूल रूप से उस्मानी साम्राज्य के नेताओं का और बाद में किसी भी मुस्लिम राज्य के प्रमुखों का खिताब।

¹⁷⁵ कावाला – उत्तरी ग्रीस में एक शहर और बंदरगाह, जो माउंट अथोस के दृश्य में आता है। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁷⁶ येरसिसोस – खाल्कडिकी प्रायद्वीप के पूर्वी तट पर एक बंदरगाह, जहाँ से माउंट अथोस के उत्तर-पूर्वी तट पर चलने वाली एक यात्री नाव संचालित होती है। – अनुवादक की टिप्पणी।

से चलें, यह बेहतर है,' कोई ज़िद करेगा। 'नहीं, हम उस तरफ़ से चलते हैं,' कोई दूसरा आपत्त करेगा। अंततः यदि कोई आदेश नहीं देता है, तो घंटों या दिनों तक समय बीत सकता है, और यात्री कभी भी निकल नहीं पाएंगे और वहीं की वहीं बने रहेंगे। हालाँकि, यदि कोई एक व्यक्ति रास्ता जानते हुए, ज़िम्मेदारी ले लेता है, तो भले ही उनका सुझाया हुआ रास्ता थोड़ा लंबा हो, वे अंततः अपनी मंजिल पर पहुँच ही जाएँगे। बेशक, यह सबसे अच्छा है यदि ज़िम्मेदारी लेने वाला व्यक्ति सबसे छोटा रास्ता जानता हो। लेकिन भले ही उनका जाना-माना रास्ता सबसे लंबा हो, तब भी यात्री उनके आदेश का पालन करके अपनी मंजिल पर पहुँच जाएँगे।

ईश्वर किसी व्यक्ति के स्वभाव को देखता है और उसकी मदद करता है

— यदि परिस्थितियाँ हमें गंभीर कठिनाइयों से अवगत कराती हैं, और हममें आध्यात्मिक धैर्य की कमी है, तो क्या आप केवल एक अच्छे स्वभाव के साथ दृढ़ खड़े रह पाएँगे?

— आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? ईश्वर किसी व्यक्ति के स्वभाव को देखता है और उसकी मदद करता है। इसके अलावा, जो लोग पहली नज़र में नडिर लगते हैं, वे भी अक्सर मुश्किल समय में बहुत बहादुरी दिखाते हैं। मुझे याद है कि हमारी सेना में एक युवा लेफ्टनैंट था जो कभी भी कोई त्याग या साहस नहीं दिखाता था। लेकिन एक बार, जब वदिरोही हमें बंदी बनाने ही वाले थे, तो वह चैपल के पीछे छिप गया और एक ही सबमशीन गन से लैस होकर, जब तक हम पीछे नहीं हट गए, तब तक उन्हें रोकता रहा। यही वजह थी कि हम बच गए। अपनी जगह से, उसने चारों ओर गोलियों की बौछार कर दी — ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ — और वदिरोहियों को आगे बढ़ने से रोक दिया। और फिर वह भाग गया ताकि हम उसे न देख सकें।

और बाद में, उसने अपनी वीरता का ढठोरा पीटने के लिए यह भी नहीं कहा, 'मैंने उन्हें रोके रखा, और इसलिए तुम बच पाए...'। हम सब उस समय यही कह रहे थे, 'हमें तो बस एक ही सबमशीन गन ने बचाया!' और वह बार-बार यही दोहरा रहा था, 'हमें तो बस एक ही सबमशीन गन ने बचाया।' वह बस वही कह रहा था जो बाकी सब कह रहे थे। लेकिन फिर हमने हिसाब लगाया: हमने याद करना शुरू किया कि अमुक तो बाकी सबके साथ वहाँ था, और फ़लाँ भी, और हमें एहसास हुआ कि सिर्फ़ यह लेफ्टनैंट वहाँ नहीं था। इसी से हमें पता चला कि वह वही था। और क्या आप जानते हैं कि अगर वदिरोहियों ने उसे कैदी बना लिया होता तो उसके साथ क्या होता? वे उसे बख़्शते नहीं; वे अपना सारा गुस्सा उस पर उतारते, कहते: 'तुमने हमें बहुत नुकसान पहुँचाया है—यहाँ आओ, हम प्लायर से तुम्हारे नाखून उखाड़ देंगे!' दुनियादार आदमी, और फिर भी उसने इतना बड़ा बलदान दे दिया! उसने वह बलदान इसलिए दिया क्योंकि उसने खुद को हम में से किसी से भी अधिक खतरे में डाल लिया था। लेकिन क्या आप भी ऐसा बलदान करने के लिए तैयार हैं? इस लेफ्टनैंट ने कभी पवतिर पतिओं को नहीं पढ़ा था, और न ही वह आध्यात्मिक जीवन के बारे में कुछ जानता था। मैं उसे व्यक्तिगत रूप से जानता था; उसमें सादगी और ईमानदारी थी। और दूसरे भी थे: ऐसे लोग जो किसी मारे गए वदिरोही को पाकर उसका सरि काटकर गाँव में घुमाते, और खुद को हीरो समझते! इसीलिए केवल साहस ही काफी नहीं है; एक व्यक्ति में आत्म-बलदान की भावना भी होनी चाहिए, ताकि साहस की आत्मा में एक ठोस नींव हो।

आइए आध्यात्मिक शक्ति से खतरों का सामना करें

संकट के क्षणों में सूझबूझ और साहस हमेशा आवश्यक होते हैं। कब्जे के दौरान, इतालवी पाँच-छह खच्चर लेकर हमारे खेत में आते और उन्हें खरबूजों से लाद लेते थे। एक बार मैंने उनसे कहा: 'हमने इन खरबूजों को बीज के लिए अलग रखा है; तुम्हें तो वहाँ रखे हुए वाले ले लेने चाहिए।' तब इतालवियों में से एक ने अपनी कोड़ा उठाया और मुझसे पूछा, 'क्या

तुम यह देख रहे हो?" मैंने हाथ से कोड़े को छुआ, उसे देखा और कहा, 'हड्डी!' — जसिका मतलब था, 'क्या शानदार कोड़ा है!' मानो वह मुझे यह दिखा रहा हो कयिह कतिनी खूबसूरत चीज थी! उस इतालवी का गुस्सा तुरंत ही गायब हो गया; वह हँसा और चल दिया। मुझे गृहयुद्ध के समय की एक और घटना याद है। हमारे दो सैनिक एक खरबूजा और कुछ टमाटर माँगने के लिए सब्जी के खेत में आए। उन्होंने अपनी राइफलें एक तरफ रख दीं और सब्जी के खेत में और अंदर चले गए। जैसे ही मालिक ने उन्हें दूर से देखा, उसने अपनी राइफल उठाई और उन पर नशाना साधना शुरू कर दिया। फरि सैनिकों में से एक ने एक लाल टमाटर उठाया और चिल्लाया: 'अपना हथियार फेंक दो, नहीं तो मैं अभी तुम्हारे ऊपर ग्रेनेड फेंक दूँगा!' वह आदमी अपना हथियार छोड़कर कूदा और भाग गया।

— कतिनी सूझबूझ और साहस!...

— इस बीच, एक और सैनिक ने अपना बुरका एक जंगली नाशपाती के पेड़ पर टाँग दिया था। जल्द ही एक वदिरोही पहाड़ों से उतर आया और इस सैनिक को पकड़ने की कोशिश करने लगा। तब सैनिक बुरके की ओर मुड़ा, जो कुछ दूरी पर लटका हुआ था, और चिल्लाया: 'कमांडर, मैं इसके साथ क्या करूँ?' और फरि, जैसे कि अपने कमांडर से कोई संकेत मिला हो, उसने डाकू पर भौंकते हुए कहा, 'अपना हथियार डाल दो!' उसने डाकू से राइफल छीन ली और उसे हथियारवहीन कर दिया।

— क्या बुरका कमांडर था, गेरोन्डा?

— हाँ, बुरका! देखिए: वहाँ सरिफ़ एक सपिही था, और उसके पास सरिफ़ एक बुरका था, फरि भी उसने एक सशस्त्र आदमी से राइफल छीन ली! इस तरह, उसने वदिरोहियों से राइफलों का एक पूरा ढेर जब्त कर लिया। इसमें तो हमिमत लगती है! मुझे पवतिर पहाड़ पर एक रूसी एकांतवासी भिक्षु भी याद है। एक बार, डाकू उसे लूटने आए थे। जब वे दीवार पर चढ़ रहे थे, तो वह ऊपर से उन पर कूदा और गरजा: 'तो फरि, क्या मैं तुम्हें कोल्ट से उड़ा दूँ या नागंत से?।' वे पलक झपकते ही भाग खड़े हुए। और एक और संन्यासी, जब लुटेरे उसकी कोठरी में आए, तो उसने एक कड़ाही उठा ली और फोन पर बात करने का नाटक किया, जैसे कि टेलीफोन पर: 'हैलो, मुझ पर लुटेरे हमला कर रहे हैं!' — और इसी तरह। उन्होंने सोचा कि विह पुलसि को बुला रहा है और वे भाग खड़े हुए। और यहाँ एक और कहानी है: एक हट्टा-कट्टा, एक सच्चा दैत्य, एक चरवाहे को गला घोटने के लिए पकड़ लिया। बेचारे चरवाहे की आँखें डर के मारे इतनी बड़ी हो गईं कि उस दरदि ने तो पूछ ही लिया: "तुम मुझे इतनी अजीब नज़रों से क्यों घूर रहे हो?" — "मैं यह देख रहा हूँ कि तुम्हें किस पेड़ में फेंकूँ" — चरवाहे ने काँपती आवाज़ में कहा। वह खलनायक डर गया और उसे छोड़ दिया!..

यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि आपको अपना आपा नहीं खोना चाहिए। आपको शांत रहने और अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। क्योंकि अगर आप अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो आप सरिफ़ मूर्खता के कारण देशद्रोह भी कर सकते हैं। जो भी हो जाए, आपको प्रार्थना करनी चाहिए, सोचना चाहिए और काम करना चाहिए। सबसे अच्छी बात हमेशा यह है कि किसी मुश्किल हालात का सामना आध्यात्मिक शक्ति से करने की कोशिश की जाए। हालाँकि, आज साहस के दोनों रूपों की कमी है। न तो आध्यात्मिक साहस है—जो ईश्वर के प्रति पवतिरता और नडिरता से उत्पन्न होता है और आध्यात्मिक रूप से कठिनाइयों पर काबू पाने में मदद करता है—और न ही स्वाभाविक साहस, जसिकी किसी खतरनाक स्थिति में धैर्य बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है। किसी बड़े बुरे को रोकने के लिए, व्यक्ति में महान पवतिरता होनी चाहिए; अन्यथा, बुराई पर काबू पाने का कोई आधार नहीं होगा। यदि किसी मठ में, समुदाय का कोई सदस्य आध्यात्मिक साहस रखता है, तो आप देखेंगे कि विह दुष्ट इरादे से आए किसी भी व्यक्ति को वहीं पर रोक देता है: एक पैर मठ के प्रांगण में, और दूसरा उसकी दीवारों के बाहर! वह पापी के सरि पर आध्यात्मिक रूप से 'गोली चलाएगा': पसितौल से नहीं, बल्कि अपनी माला से; वह बस एक संक्षिप्त प्रार्थना करेगा, और वह खलनायक

अचल हो जाएगा। वह एक पहरेदार की तरह जड़ हो जाएगा!¹⁷⁷ यदि भाईचारे में कोई आध्यात्मिक अवस्था में है, तो वह बुराई को वफिल करने, लोगों की मदद करने और मठ के लिए एक रक्षक के रूप में कार्य करने, तीनों काम करेगा। मरिआ-वाहियों ने किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे आध्यात्मिक अवस्था में थे और म ने मसीह पर भरोसा किया था। क्योंकि अगर वे आध्यात्मिक अवस्था में नहीं होते, तो क्या वे उस पर भरोसा करते, और क्या वे वह करते जो उन्होंने किया?

आध्यात्मिक जीवन में, सबसे बड़ा कायर भी महान साहस प्राप्त कर सकता है यदि वह स्वयं को मसीह और द्रव्य सहायता के हवाले कर दे। वह अगरमि पंक्ति में जा सकेगा, दुश्मन से लड़ सकेगा और विजयी हो सकेगा। जहाँ तक उन दुष्ट लोगों का सवाल है जो बुराई करना चाहते हैं, वे डरते हैं, भले ही उनमें साहस हो। क्योंकि वे अपराध-बोध महसूस करते हैं और पूरी तरह से अपनी ही बर्बरता पर नरिभर रहते हैं। परन्तु, ईश्वर का पुरुष द्रव्य शक्तिरिखता है, और न्याय भी उसकी ओर है। वहाँ, एक छोटा कुत्ता थोड़ा सा भौकता है, और भेड़िया पहले से ही भाग जाता है, क्योंकि वह दोषी महसूस करता है। ईश्वर ने ऐसा प्रबंध किया है कि एक भेड़िया भी एक छोटे से मश्रिती नस्ल के कुत्ते से डरता है, क्योंकि मालिक के घर में, सत्य कुत्ते के पक्ष में है। तो एक बुराई करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति उससे तो और भी अधिक डरता है जिसके भीतर मसीह है! इसलिए हमें केवल परमेश्वर से डरना चाहिए, न कि लोगों से, चाहे वे कतिने भी दुष्ट क्यों न हों। परमेश्वर का भय सबसे बड़े कायर को भी एक वीर में बदल देता है। कोई व्यक्ति परमेश्वर से जतिना अधिक एक होता है, वह उतना ही कम किसी से डरता है।

परमेश्वर कठिनाई के समय में मदद करेंगे। लेकिन परमेश्वर से द्रव्य शक्ति प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को भी वह थोड़ा सा देना चाहिए जो वह दे सकता है।

अध्याय 4. किएक विश्वासी के लिए, शहादत एक विजय है

स्थिति में सुधार के लिए, कुछ को युद्ध में गरिना होगा

कठिनाई समय आने वाला है!... एक महान उथल-पुथल हमारा इंतज़ार कर रही है। क्या आप जानते हैं कि उथल-पुथल क्या होती है? यदि आप कम से कम थोड़ा भी आध्यात्मिक रूप से स्थिर नहीं हैं, तो आप इसका सामना नहीं कर पाएंगे। हे प्रभु, हमारी रक्षा करो, लेकिन हम उस बिंदु तक भी पहुंचेंगे जहाँ लोग अपने विश्वास का परित्याग करना शुरू कर देंगे। भाइयों की तरह एकजुट होने का प्रयास करें, आध्यात्मिक रूप से जीना शुरू करें, और मसीह के साथ एकजुट रहें। यदि आप मसीह के साथ एकजुट हैं, तो आप न तो शैतान से और न ही यातना से डरेंगे। संसार में लोग हर तरफ से दमन और धमकी का सामना करते हैं। लेकिन जब आप मसीह के करीब हैं तो डरना क्या? क्या आपको संत सरिथिकस याद हैं?¹⁷⁸

¹⁷⁷ देखें *माउंट अथोस के एल्डर पैसियोस* कैपाडोसिया के पूजनीय आर्सेनयिस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1997। पृ. 72।

¹⁷⁸ पवतिर शहीद सरिथिकस का पर्व 15 जुलाई को मनाया जाता है।

वह केवल तीन साल का था, फरि भी उसने उस तानाशाह को लात मारी जो उसे 'प्रबुद्ध' करना चाहता था। संतों के जीवन पढ़ें; वे आत्मा के लिए बहुत मददगार हैं, क्योंकि उन्हें पढ़ने से, एक व्यक्ति संतों से जुड़ता है, और उनके भीतर श्रद्धा की भावना और बलदान करने की इच्छा जागृत होती है।

यह जीवन आराम से बसने के लिए नहीं है। अगर हमें मरना ही है, तो कम से कम वैसे ही मरें जैसे हमें मरना चाहिए! चूँकि हम वैसे भी कुछ और कर ही नहीं रहे हैं, अगर ईश्वर हमें शहादत के योग्य समझते हैं, तो क्या यह वास्तव में बुरी बात होगी? एक बार, एक खचर चालक रोते हुए मेरी झोपड़ी में आया और मुझसे कहा: 'आज रात यहाँ अकेले मत रहना। वे तुम्हें मारने की योजना बना रहे हैं।' 'कौन?' मैंने पूछा। 'वे लोग,' उसने कहा, 'पाँच-छः लोग।' वह पाँच-छह अधरमी लोगों के साथ आया था। पवतिर पर्वत पर उनके ठहरने की योजना क्या थी, यह कौन जाने। उन्होंने उसे मूर्ख समझा और उसकी मौजूदगी में अपनी बातचीत जारी रखी, लेकिन जैसे ही उसे इसकी जानकारी मिली, वह आया और मुझे चेतावनी दे गया। शाम को, मैं जैसे ही बसितर पर गया, मुझे कुत्ते की घंटी की आवाज़ सुनाई दी।¹⁷⁹ मैंने खड़की से बाहर देखा और तीन लड़के दिखाई दिए। "चलो," उन्होंने चिल्लाया, "बुढ़े आदमी, दरवाज़ा खोलो!" मैंने कहा: "लड़को, तुम्हें क्या चाहिए? तुम इस रात के समय इधर-उधर क्यों भटक रहे हो? क्या तुम्हारा दमिग खराब हो गया है? शक तुम पर पड़ेगा! उन्होंने तो बाकियों को पहले ही गरिफ्तार कर लिया है। और मुझे बात करने की कोई इच्छा नहीं थी।" — "तो," वे पूछते हैं, "क्या हम कल आएँ? बताइए, हमें कतिने बजे आना चाहिए?" — "कल जब चाहो आ जाना, और अगर मैं मलि सकूँगा तो तुमसे मलूँगा।" मैंने उन्हें भेज दिया। मैंने देखा, और मशाल की रोशनी दूर नहीं जा रही थी। वे थोड़ी ऊपर रुक गए थे।¹⁸⁰ मैं उठा, कपड़े पहने, अपना मठ का वस्त्र धारण किया और उनका इंतज़ार करने लगा। भीतर मुझे शांतिका अनुभव हो रहा था। अगले दिन तीन-तीन लोगों के तीन समूह आए, लेकिन रात वाले किसी भी व्यक्ति का आगमन नहीं हुआ। और वे, बेशक, जानते हैं कि मेरे पास कोई पैसा नहीं मलूँगा, क्योंकि मेरे पास कोई पैसा नहीं है। वे केवल आध्यात्मिक कारणों से मेरे पीछे आए हैं।

एक अन्य अवसर पर, एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति—जो एक गोरलिला जतिना मजबूत था—मेरे सेल में आया और एक तरफ बैठ गया। उसी क्षण, मैं एक समूह से बात कर रहा था और मैंने उनसे कहा: "तुम केवल परेड के लिए अच्छे हो, लड़ाई के लिए नहीं! मसीह ने स्वयं को बलदान के रूप में अर्पित किया! हमारे पास ऑर्थोडॉक्सी है! संतों ने अपने दुखों को सहा और वे भी हमारी मदद करते हैं। और अगर उन्होंने कष्ट न उठाए होते, तो कौन जाने हमारा क्या होता।" इन सभी बातों से वह आदमी आग-बबूला हो गया। लोग आते-जाते रहे, लेकिन वह वचारों में खोया हुआ वहीं उसी जगह पर बैठा रहा। उससे एक ठंडक नकिल रही थी। अंत में, उनमें से आखिरी व्यक्ति भी चला गया। "अच्छा, तो चलो," मैंने उससे कहा, "पहले ही अँधेरा हो गया है—तुम कहाँ जाने की योजना बना रहे हो?" "वह सवाल," उसने जवाब दिया, "मुझे दलिचस्प नहीं है।" "वह," मैंने कहा, "मुझे दलिचस्प है।" "चलो, चलते हैं!" उस पर वह मुझ पर झपट पड़ा और मेरा गला पकड़ लिया। "तो फरि," वह फुफकार कर बोला, "तुम, अपने देवताओं के साथ!" उस 'अपने देवताओं के साथ' ने मुझे ऐसे ठेस पहुँचाई जैसे उसने ईश्वर का अपमान किया हो। क्या मैं किसी तरह का मूर्तपूजक हूँ? मैंने कहा, 'तुम कसि "देवताओं" की बात कर रहे हो, हे अधरमी नीच? मैं त्रिमूर्ति में एकमात्र ईश्वर की सेवा करता हूँ! अब यहाँ से नकिल जाओ!' मैंने उसे धक्का दिया; वह ज़मीन पर गिर पड़ा और सकिड़ गया। मुझे यह भी एहसास नहीं हुआ कि वह दरवाज़े के बाहर कैसे पहुँच गया।

¹⁷⁹ शकिर को भगाने के लिए शकिरी कुत्ते के कॉलर से एक छोटी घंटी लटकाई जाती थी। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

¹⁸⁰ परम पवतिर माता परमेश्वर की जन्मस्थ 'पनागूडा' की कोठरी, जहाँ धन्य एल्डर पैसयिस अपने जीवन के अंतिम वर्षों में रहे, एक सुनसान, जंगली स्थान पर स्थित है। आस-पास कोई अन्य कोठरियाँ या आवास नहीं हैं। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

'अगर वे मुझे उल्टा लटका देंगे,' मैंने उस समय सोचा, 'तो कम से कम मेरा हरनया'¹⁸¹ वापस अपनी जगह पर चला जाएगा।' वह अधर्मी आदमी अंत तक वहीं रहा और, ऐसा लगता है, मुझे खत्म करना चाहता था, क्योंकि उसने मुझे गले से पकड़ लिया और मुझे घुटने लगा।

जो मरने का नश्चिन्ना कर लेता है, वह किसी से नहीं डरता

आज, कठनिाइयों का सामना करने के लिए, एक व्यक्तिके भीतर मसीह का होना आवश्यक है। मसीह से उन्हें दविय सांत्वना मलिंगी, जो उन्हें आत्म-बलदान का अभ्यास करने में सक्षम बनाएगी। लेकिन अगर यह कमी हो, तो परीक्षा के क्षण में क्या होगा? मैंने कहीं पढ़ा है कि अब्दुल पाशा¹⁸² ने पवतिर परवत से पाँच सौ युवकों को ले लिया था। उनमें से कुछ नवसखिए थे, जबकि अन्य तुर्कों से बचने के लिए पवतिर परवत पर छपि हुए थे। जाहरि है, उस समय, ग्रीक वदिरोह के वर्षों के दौरान, युवा पुरुष शरण लेने के लिए पवतिर परवत पर आते थे, क्योंकि तुर्क युवा लड़कों को ले जाकर उन्हें जनीसरी बना रहे थे।¹⁸³ यद्युवा पुरुष मसीह का त्याग नहीं करते, तो अब्दुल पाशा उन्हें उरानोपोलसि के टावर में फांसी दे देता। उसने पवतिर परवत पर इतने सारे युवा पुरुषों को पकड़ा, और फरि भी उनमें से केवल पाँच ने शहादत को चुना! बाकी लोगों ने मसीह का त्याग कर दिया और जनसिरी बन गए। साहस आवश्यक है: यह कोई हँसने वाली बात नहीं है। यदि कोई व्यक्ति अन्यायपूर्ण रूप से पीड़ित महसूस करता है, यदि वह अहंकार रखता है, तो उसमें दैवीय शक्तिकी कमी होती है। ऐसी कठनि परस्थितिकी सामना करते समय वह व्यक्ति कैसे व्यवहार करेगा?

मैं पतिसत्ता से आए एक बशिप द्वारा दिए गए वविरण से गहराई से प्रभावित हुआ। पहले मैंने उससे कहा: "आखिर हो क्या रहा है? एक ओर ईक्यूमेनजिम बढ़ रहा है; दूसरी ओर सयोनजिम और शैतानवाद।" "जल्द ही, दो-सरि वाले गरुड़ के बजाय, हम दो-सींग वाले शैतान को श्रद्धांजलि देंगे!" — "आजकल," उन्होंने जवाब दिया, "कैसरिया के बशिप पैसयिस द्वितीय जैसे बशिप मलिना आसान नहीं है।"¹⁸⁴ तो पैसयिस द्वितीय ने क्या किया? जब वह याचकिओं के साथ सुल्तान के पास जाता था, तो वह अपनी कमर में एक रस्सी बाँध लेता था; दूसरे शब्दों में, उसने पहले से ही यह ठान लिया था कि तुर्क उसे फांसी देंगे। यह ऐसा था मानो वह सुल्तान से कह रहा हो: 'रस्सी ढूँढने की जहमत मत उठाओ और अपना समय बर्बाद मत करो। अगर तुम मुझे फांसी देना चाहते हो, तो रस्सी तैयार है।' उन्हें मुश्किल मामलों पर सुल्तान के पास भेजा जाता था, और अक्सर कठनि परस्थितियों में उन्होंने पैटरआर्केट को बचाया। जब वे बूढ़े हो गए लेकिन उन्हें एक बार फरि सुल्तान के पास यात्रा करनी पड़ी, तो दो बड़ी टोकरियाँ, एक-दूसरे से बँधी हुई, घोड़े की काठी पर लटका दी गईं। एक टोकरी सामान से भरी थी, जबकि वह दूसरी में बैठा था, और इस तरह वह कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा पर गया। एक

¹⁸¹ उक्त घटना 1987 में हुई थी, जब एल्डर हरनया से पीड़ित थे।

¹⁸² मेहमेत एमीन अब्दुल्लाह पाशा ने 1821 से 1823 तक थेससालोनिकी पर शासन किया।

¹⁸³ जनीसारी ओटोमन साम्राज्य की दंडात्मक सेनाएँ थीं, जिन्हें आमतौर पर तुर्कों द्वारा जीते गए ईसाई लोगों के युवा पुरुषों में से भरती किया जाता था। विशेष प्रशिक्षण और शिक्षा प्राप्त करने के बाद, जनीसारी असाधारण कट्टरता और क्रूरता के लिए जाने जाते थे। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹⁸⁴ पाइसयिस द्वितीय — सेसरिया के मेट्रोपॉलिटन। उनका जन्म कैपाडोसिया के फरासी गाँव में हुआ था। उन्होंने होली फोररनर के फ्लेवियन मठ से संबद्ध धर्मशास्त्र स्कूल में अध्ययन किया, और बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल में, जहाँ उन्हें डीकन और पादरी के रूप में नियुक्त किया गया। 1832 में, उन्हें सेसरिया के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त किया गया। वे अपने धर्मप्रांत में हेलेनजिम के संरक्षण के एक नडिर समर्थक थे।

अवसर पर, तुर्कों ने एक फरमान जारी किया¹⁸⁵ जिसमें ग्रीकों को तुर्की सेना में भरती किया गया। ईसाइयों के लिए तुर्कों के साथ सेवा करना मुश्किल था, क्योंकि वे अपने आवश्यक धार्मिक दायित्वों को पूरा करने में असमर्थ थे। इसके अलावा, रूस ने कुछ ही समय पहले यह मांग की थी कि तुर्क ग्रीकों को उनके ईसाई कर्तव्य नभियाने से न रोकें। तब पैटरआर्क ने मेट्रोपॉलिटन पैसयिस को बुलाया और उन्हें सुल्तान के पास भेजा। मेट्रोपॉलिटन कमर में रस्सी बाँधकर एक बार फिर सुल्तान के सामने उपस्थित हुए। सुल्तान ने उससे कहा: "ग्रीक लोगों को अपने देश की सेवा के लिए सेना में शामिल होना चाहिए।" — "हाँ," मेट्रोपॉलिटन पैसयिस ने जवाब दिया, "मैं भी इस बात से सहमत हूँ कि ग्रीक लोगों को सेना में सेवा करनी चाहिए, क्योंकि ये भूमि लंबे समय से ग्रीक लोगों की रही है। हालाँकि, हमारे धर्म अलग-अलग हैं, इसलिए एक अलग ग्रीक सेना को एक अलग सैन्य शिविर में तैनात किया जाना चाहिए, उसके अपने अधिकारी आदि होने चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है ताकि ग्रीक भी अपने धार्मिक कर्तव्यों को पूरा कर सकें। वे आपके साथ प्रार्थना नहीं कर सकते: आप रमज़ान का पालन कर रहे हैं,¹⁸⁶ जबकि हम एपफिनी का जश्न मना रहे हैं।" — "ईसाइयों को हथियार दें?" सुल्तान ने सोचा। "यह खतरनाक है!" "नहीं, नहीं," उन्होंने मेट्रोपॉलिटन से कहा, "यह बेहतर होगा कि वे सेना में शामिल न हों।" एक अन्य अवसर पर, अर्मेनियाई लोगों ने सुल्तान को एक याचिका प्रस्तुत की जिसमें बालुकली को उन्हें वापस करने का अनुरोध किया गया,¹⁸⁷ और उन्हें अनुकूल प्रतिक्रिया मिली। इसके बाद, मेट्रोपॉलिटन पैसयिस इस मामले पर चर्चा करने के लिए सुल्तान के पास गए। सुल्तान ने उनसे कहा, "बालुकली, अर्मेनियाई लोगों को ही लेना चाहिए, क्योंकि यह स्थान उनके पूर्वजों की वरिसत है।" — "हाँ," पैसयिस ने जवाब दिया, "उन्हें इसे लेना ही चाहिए, क्योंकि यह जानते हुए कि कोई विशेष स्थान हमारे पूर्वजों की वरिसत है, हमें इसे अपने लिए दावा करना चाहिए। मुझे बालुकली का हस्तांतरण करने वाला दस्तावेज़ दें, और मैं भी उस पर हस्ताक्षर करूँगा, क्योंकि मैं यहाँ पैटरआर्केट के प्रतिनिधिक रूप में आया हूँ।" उन्होंने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए, फिर एक सोने का कॉन्स्टेंटाइन ड्रुकेट¹⁸⁸ निकालकर कहा: "बहुत अच्छा, अर्मेनियाई लोग बालुकली ले लें, लेकिन फिर हमें हागिया सोफिया अपने लिए लेनी होगी, क्योंकि वह हमारी है। यह हमारे पूर्वजों की थी, और आपको हमें यह वापस करनी होगी।" यह कहकर, उन्होंने सुल्तान को संत कॉन्स्टेंटाइन की छवि वाला सोने का सक्का दिखाया। मेट्रोपॉलिटन ने उस समय जहाज से कॉन्स्टेंटिनोपल आए एक रूसी अधिकारी को सुल्तान से भेंट के लिए गवाह के रूप में साथ लिया। इस प्रकार, सुल्तान खुद को एक मुश्किल स्थिति में पाया और उसने बालुकली के संबंध में अपना नरिणय रद्द कर दिया। सुल्तान ने उससे कहा, "नहीं, नहीं, बालुकली आपका ही रहेगा।" क्योंकि उसे या तो अपना फैसला वापस लेना था या हागिया सोफिया को यूनानियों को सौंप देना था। क्या आप समझते हैं कैसे? मेट्रोपॉलिटन पैसयिस तुर्कों को अपनी मर्जी से घुमा रहे थे! ऐसा इसलिए था क्योंकि वह मरने के लिए तैयार थे। और अगर आप मरने के लिए तैयार नहीं हैं, तो आप कुछ भी हासिल नहीं करेंगे। सब कुछ यहीं से शुरू होता है।

¹⁸⁵ फ़रमान – सुल्तान का एक फरमान। – *अनुवादक की टिप्पणी।*

¹⁸⁶ रमज़ान – इस्लामी कैलेंडर का नौवां महीना, जिसके दौरान मुसलमान सुबह से शाम तक रोज़ाना सख्त उपवास (भोजन, पेय, धूम्रपान आदि से पूर्ण परहेज) रखते हैं। सूर्यास्त से सूर्योदय तक, रमज़ान के प्रतिबंध हटा दिए जाते हैं।

¹⁸⁷ बालुकली – कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला जहाँ 'जीवन-दायक झरना' मठ स्थित है। – *अनुवादक की टिप्पणी।*

¹⁸⁸ संत कॉन्स्टेंटाइन और हेलेना की छवि वाला एक सोने का सक्का, जिसे आभूषण या तावीज़ के रूप में पहना जाता था।

आस्था से वचिलन शहादत से धोया जाता है

आज, ज्यादातर लोग चाहते हैं कि कोई और गड्ढे से साँप को बाहर निकाले। अगर वे खुद इसे बाहर नहीं निकाल सकते, तो कम से कम दूसरों को चेतावनी तो दें: 'सावधान! क्या उसमें साँप है?' — ताकि दूसरे दो बार सोचें। हालाँकि, वे इतना भी नहीं करते। अगर हम शहीदों के दानों में रहते, तो हम अपने तर्कवाद के साथ कहते: 'मैं बाहरी रूप से ईश्वर का त्याग करता हूँ, लेकिन भीतर से नहीं। इस तरह मुझे किसी-न-किसी पद पर नयिक्त मिलि जाएगी और मैं किसी गरीब आत्मा की मदद कर सकूँगा।' लेकिन शहीदों के दानों में, चर्च उन लोगों को पवतिर Communion (पवतिर भोज) के लिए स्वीकार नहीं करती थी जो मूर्तपूजक बलदान की आग में धूप डालते थे; ऐसे लोग 'रोने वालों' की श्रेणी में आते थे।¹⁸⁹ जो मसीह का त्याग करते थे, उन्हें अपने धर्मत्याग का प्रायश्चिति शहादत के माध्यम से करना पड़ता था। और प्रतमि-भंजन के दानों में, ईसाइयों को प्रतमिओं को जलाने या जमीन पर फेंकने के लिए कहा जाता था, और उन्होंने उन्हें फेंकने के बजाय शहीद होने का वकिल्प चुना। हमारी बात करें तो, अगर हमें कोई आइकन फेंकने को कहा जाए, तो हम कहेंगे: 'ठीक है, मैं इसे फेंक दूँगा; यह पुनरजागरण शैली में बना है। बाद में मैं खुद के लिए एक और मंगवा लूँगा, एक बाइजेंटान शैली का।'

— गेराना, गुप्त ईसाइयों के बारे में चर्च का क्या दृष्टिकोण है? क्या उन्होंने मसीह का त्याग नहीं किया?

— सच्चे गुप्त ईसाइयों ने अपने धर्म का परतियाग नहीं किया। उदाहरण के लिए, जब तुर्कों ने कापाडोसिया में फारस के सत्ताइस गांव जला दिए, तो कुछ नवासी दूर अन्य क्षेत्रों में भाग गए, जहाँ स्थानीय आबादी को यह भी नहीं पता था कि वे ईसाई थे। उन्हें मुसलमान समझा जाता था। और एक भी बार ऐसा नहीं भेल जहाँ उनमें से किसी से सीधे पूछा गया हो: 'क्या आप ईसाई हैं?' — ताकि उन्हें जवाब देना पड़े: 'हाँ, मैं ईसाई हूँ या 'नहीं, मैं मुसलमि हूँ।' ये लोग गुप्त ईसाई थे। हालाँकि, जिस क्षण किसी को पकड़कर कहा जाता था, 'हमें पता चला है कि आप एक ईसाई हैं,' तो उन्हें कहना पड़ता था, 'हाँ, मैं एक ईसाई हूँ।' दूसरे शब्दों में, उन्हें कभी भी यह नहीं कहना चाहिए कि वे मुसलमि हैं। और प्रारंभिक चर्च के युग में, ऐसे विश्वासी थे जिन्हें गुप्त रूप से बपतस्मा दिया गया था, जिन्हें दूसरे ईसाई नहीं समझते थे। फिर भी, जब आवश्यकता पड़ी, तो इन गुप्त ईसाइयों ने खुले तौर पर अपने विश्वास की घोषणा की। उदाहरण के लिए, संत सेबास्टियन एक सैन्य कमांडर थे जिन्हें गुप्त रूप से ईसाई बपतस्मा दिया गया था। अन्य लोग उन्हें मूर्तपूजक मानते थे, लेकिन वह एक ईसाई थे। गुप्त रूप से, उन्होंने ईसाइयों को बहुत सहायता प्रदान की। हालाँकि, जब यह पता चला कि वह एक ईसाई थे, तो उन्होंने अपने धर्म का प्रचार किया और शहीद हो गए।

एक तुर्की गाँव में कई गुप्त ईसाई थे, और गाँव का मुखिया एक पादरी था। उसका नाम फादर जॉर्ज था, लेकिन लोग उसे हसन कहते थे। एक दिन तुर्क उसके पास आए और उन्होंने बताया कि ईसाई एक नश्चिति स्थान पर, भूमगित गुफाओं में छिपे हुए हैं: 'चिता मत करो,' उसने कहा, 'मैं जाकर देखता हूँ।' वह अपने आदमियों को लेकर इन भूमगित गुफाओं में गया और वहाँ सभी ईसाइयों को इकट्ठा पाया। फिर वह शाही द्वारों तक गया, हुक से एपटिरैक्लियन (एक प्रकार का चोगा) उतारा, उसे पहना और उनके लिए संध्या की प्रार्थना सभा की! बाद में उसने तुर्कों को आश्वस्त करते हुए उनसे कहा, 'आवश्यक कदम उठाएँ, 'वहाँ कोई नहीं है; ये झूठी अफवाहें हैं।' ऐसे लोग धर्मत्यागी नहीं होते। हालाँकि, जिस क्षण किसी ईसाई पर संदेह किया जाता है और उससे कहा जाता है, 'हमने तुम्हें बपतस्मा लेते देखा था! तुम ईसाई हो,' और वह जवाब देता है, 'नहीं, मैं मुसलमान हूँ,' तो वह धर्मत्यागी बन जाता है।

¹⁸⁹ 'वीपर्स' चर्च के दरवाजों पर खड़े रहते थे और चर्च में प्रवेश करने वाले श्रद्धालुओं से उनके लिए प्रभु से प्रार्थना करने के लिए कहते थे। देखें नेओकेसरेया के संत ग्रेगरी का नियम 12। द बुक ऑफ रूल्स। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा। 1992। पृ. 294। — अनुवादक की टिप्पणी।

शहादत और वनिम्रता

जो शहीद बनने के योग्य माना जाता है, उसमें महान वनिम्रता होनी चाहिए और उसे मसीह से गहरा प्रेम होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति स्वार्थ के लिए शहादत की ओर बढ़ता है, तो अनुग्रह उससे दूर हो जाएगा। क्या आप सप्रसियस को याद करते हैं,¹⁹⁰ जो पहले ही फाँसी के स्थान पर पहुँच चुके थे और फिर भी मसीह का इनकार कर दिया था? 'तुम मुझे यहाँ क्यों लाए?' उन्होंने जल्लादों से पूछा। उन्होंने उससे पूछा, 'तुम्हारा क्या मतलब है, क्या तुम ईसाई नहीं हो?' 'नहीं,' उसने जवाब दिया। और वह एक पादरी था! मेरा अंतरज्वान कहता है कि उसने नम्रता से शहादत का सामना नहीं किया, बल्कि स्वार्थ के लिए ऐसा किया। उसने शहादत वनिम्रता के लिए नहीं, और न ही मसीह के प्रति प्रेम के लिए चाही, और इसीलिए अनुग्रह ने उसे छोड़ दिया। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति स्वार्थी व्यवहार करता है, तो वह परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त नहीं करता है। स्वाभाविक रूप से, कठिनाई के क्षण में, वह मसीह का त्याग कर देगा।

— गेरोन्डा, हम अक्सर कहते हैं कि परीक्षा के समय, ईश्वर हमें शक्ति देंगे...

— ईश्वर एक वनिम्र व्यक्ति को शक्ति देता है जिसके पास शुद्ध हृदय और अच्छा स्वभाव हो। यदि ईश्वर वास्तव में अच्छा स्वभाव और वनिम्रता देखता है, तो वह महान शक्ति प्रदान करता है। तो, ईश्वर किसी व्यक्ति को शक्ति देता है या नहीं, यह उस व्यक्ति के अपने स्वभाव पर निर्भर करता है।

— जेरोन्डा, आपने कहा कि एक व्यक्ति में वनिम्रता और अच्छा स्वभाव होना चाहिए। क्या इसका मतलब यह है कि कोई व्यक्ति घिंमंडी हो सकता है और फिर भी उसका स्वभाव अच्छा हो सकता है?

— जब हम वनिम्रता की बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य यह है कि एक व्यक्ति में यह गुण होना चाहिए, कम से कम शहादत के संबंध में। कोई व्यक्ति अभिमानी हो सकता है, लेकिन निर्णायक क्षण पर कहे: 'हे मेरे ईश्वर, मैं अभिमानी हूँ; फिर भी मुझे अब थोड़ी सी शक्ति प्रदान करें, ताकि मैं अपनी पीड़ा में आपके प्रति अपने प्रेम की गवाही दे सकूँ और अपने पापों का प्रायश्चित्त कर सकूँ।' और फिर, यदि कोई व्यक्ति वनिम्र स्वभाव का है और पश्चात्ताप के साथ शहादत को प्राप्त करता है, तो ईश्वर उसे प्रचुर अनुग्रह प्रदान करते हैं। किसी को भी घिंमंडी स्वभाव के साथ शहादत को प्राप्त नहीं करना चाहिए, यह सोचकर कि वह शहीद हो जाएगा, उसकी जीवन-कथा लिखी जाएगी, और उसके सम्मान में एक सेवा और एक हेलो वाली प्रतिमा बनाई जाएगी। एक आदमी ने मुझसे पूछा: 'मेरे लिए प्रार्थना करें, फादर, कि मैं पाँचवें स्वर्ग तक पहुँच सकूँ।' — "बहुत अच्छा," मैंने उससे कहा, "प्रेरति पौलुस तीसरे स्वर्ग तक पहुँचे थे,¹⁹¹ और आप पाँचवें तक पहुँचना चाहते हैं?" — "तो फिर," उसने उत्तर दिया, 'क्या यह नहीं लिखा है कि हमें "बड़ी चीजों" की खोज करनी चाहिए?'¹⁹² बस इसे सुनिए! उस स्थिति में, यदि कोई व्यक्ति स्वर्ग में महिमा प्राप्त करने के लिए शहादत को अपनाता है, तो उसके लिए शहादत के बारे में सोचना भी बेहतर होगा। एक सच्चा, सच्चा ईसाई, भले ही वह जानता हो कि स्वर्ग में उसे फिर से पीड़ा और यातना सहनी पड़ेगी, फिर भी वह वहाँ प्रवेश करने के लिए लालायति रहेगा। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि अगर हम यहाँ पृथ्वी पर कुछ पीड़ा सहते हैं, तो वहाँ, स्वर्ग में, हम बेहतर स्थिति में होंगे। हमें ऐसे स्वार्थी हिसाब-किताब को एक तरफ रखना चाहिए। हम मसीह को चाहते हैं। चाहे शहादत हो; चाहे हमें हर दिन उसका

¹⁹⁰ सप्रसियस पर, देखें: लाइव्स ऑफ़ द सेंट्स। खंड 6। मॉस्को, 1905। पृ. 180–185।

¹⁹¹ देखें 2 कुरिन्थियों 12:2।

¹⁹² 1 कुरिन्थियों 12:31 देखें।

सामना करना पड़े; चाहे हमें रोज़ाना, दनि में दो या तीन बार पीटा जाए—हम इन सबकी परवाह नहीं करते। हम केवल एक बात की परवाह करते हैं: मसीह के साथ होना।

— लेकिन गेरोन्डा, क्या किसी व्यक्ति के लिए यह संभव है कविह आलस्य में जीए, और फरि भी जब समय आए, तो साहस के साथ मसीह की गवाही दे?

— ऐसे व्यक्ति के लिए ऐसा करने हेतु, उनके हृदय में दया और आत्म-बलदान की भावना होनी चाहिए। इसीलिए मैंने आपसे कहा कि आपको अपने भीतर महानता और आत्म-बलदान की भावना को विकसित करना चाहिए। एक को दूसरे के लिए स्वयं को बलदान करना चाहिए। क्या आपको संत बोनफेस और संत अग्लाइडा याद हैं? वहाँ, रोम में, उन्होंने एक विलासी जीवन जिया, लेकिन जब वे भोजन करने बैठते थे, तो उनके वचिर गरीबों की ओर मुड़ जाते थे। पहले वे भूखों को खाना खलाने के लिए दौड़ते थे, और उसके बाद ही वे स्वयं खाते थे। यद्यपि वे अपनी वासनाओं के गुलाम थे, फरि भी उनके भीतर गरीबों के प्रतदिया और करुणा थी। उनमें आत्म-बलदान की भावना थी, और इसीलिए ईश्वर ने उनकी मदद की। अग्लाइडा, अपने पापी जीवन के बावजूद, पवतिर शहीदों से प्रेम करती थी और उनके पवतिर अवशेषों की देखभाल करती थी। उसने बोनफेस को, अपने घर के अन्य सेवकों के साथ, एशिया माइनर की यात्रा करने का नरिदेश दिया ताकि वे शहीदों के पवतिर अवशेषों को खरीद सकें, इकट्ठा कर सकें और उन्हें रोम वापस ला सकें। और भवषिय के शहीद ने मुस्कुराते हुए उससे कहा: 'यदि मेरी अवशेष तुम्हारे पास लाई जाएँ, तो क्या तुम उन्हें स्वीकार करोगी?' 'इस बारे में मज़ाक मत करो,' अग्लाइडा ने जवाब दिया। अंत में, संत बोनफेस तारसस पहुँचे और शहीदों की अवशेषों को छुड़ाने की इच्छा से, एम्फीथिएटर गए।

वहाँ, जब उन्होंने ईसाइयों को यातनाएँ झेलते देखा, तो वे उनकी दृढ़ता से गहराई से प्रभावित हुए। उनके पास दौड़कर उनके बंधन और घावों को चूमते हुए, बोनफेस ने उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा कि मसीह उन्हें सार्वजनिक रूप से एक ईसाई के रूप में अपने विश्वास की गवाही देने की शक्ति प्रदान करें। इस प्रकार, शहादत के माध्यम से, उन्होंने अपने विश्वास की गवाही दी; उनके साथियों ने उनकी अस्थियों को छुड़ाया और उन्हें रोम ले गए, जहाँ प्रभु के स्वर्गदूत ने पहले ही अग्लाइडा को बता दिया था कि क्या हुआ था। और इस प्रकार वह पूरा हुआ जो बोनफेस ने रोम से प्रस्थान करने से पहले मज़ाक में भवषियवाणी की थी। इसके बाद, अग्लाइडा ने अपनी संपत्ति बाँटकर, अगले पंद्रह वर्ष तपस्या और गरीबी में बित्ताए और पवतिरता प्राप्त की।¹⁹³ आप देखिए, उनका जीवन इस तरह से विकसित हुआ कि शुरुआत में वे अपनी इच्छाओं के वश में हो गए और सच्चे मार्ग से भटक गए। हालाँकि, उनमें आत्म-बलदान की भावना थी, और ईश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा।

संतों में कतिनी हमिमत थी!

— मुझे लगता है, गेरोना, कि अगर मैं सेंट कैथरीन का पहिया देख लेता, तो डर से मर जाता!

— अगर तुम्हें पहिये पर चढ़ाने से पहले ही मौत आ जाती, तो अच्छा होता; यह ईश्वर का आशीर्वाद होता। यह एक यातना होती अगर उन्होंने तुम्हें पहिये पर चढ़ाना शुरू कर दिया होता और तुम इसे सहन नहीं कर पाते। शहीदों का स्वभाव अच्छा था; मसीह ने उनकी मदद की, और इसीलिए उन्होंने दर्द को सहन किया।

¹⁹³ संत बोनफेस और अग्लाइडा का परव 19 दसिंबर को मनाया जाता है।

पवतिर शहीदों में मसीह के प्रतिकृतिना प्रेम था, कतिनी हमिमत! संत सलोमोनिया और उनके सात बच्चे¹⁹⁴ — एक-एक करके, सभी को यातना देकर मार डाला गया। संत लॉगनिस¹⁹⁵ ने उन्हें गरिफ्तार करने आए सैनिकों के लिए दावत तैयार की और उन्हें अपने घर में स्वागत किया। जो लोग आए थे उन्होंने उसे लॉगनिस देखाने के लिए कहा ताकि वे उसका सरि काट सकें, लेकिन उन्होंने उनसे कहा: "मैं उसे तुम्हें दिखाऊँगा!" जब उन्होंने उन्हें बताया कि वह लॉगनिस है, तो वे हचिकचाए, लेकिन संत ने उन्हें अपने आदेशों का पालन करने के लिए मना लिया। और इस प्रकार उन्होंने उसका सरि काट दिया। और काराकल के संत गेडयिन ने कतिनी सहनशीलता दिखाई!¹⁹⁶ "मेरी बांह काट दो," उन्होंने जल्लादों से कहा, "मेरी टांग काट दो, मेरा नाक काट दो! और बातों से बचने के लिए, सब कुछ काट दो!" आश्चर्यजनक! लेकिन इस स्तर तक पहुँचने के लिए, एक व्यक्तिको स्वयं से प्रेम नहीं करना चाहिए बल्कि ईश्वर से प्रेम करना चाहिए। एक माँ, अपने बच्चे को बचाते हुए, आग में कूद जाती है। उसे कोई दर्द महसूस नहीं होता, क्योंकि उसका प्यार आग की लपटों की जलन से ज्यादा मजबूत होता है। अपने बच्चे के लिए उसका प्यार दर्द पर काबू पा लेता है। तो फिर, मसीह के लिए प्रेम दर्द से कतिना ज्यादा मजबूत होना चाहिए!

एक संत के लिए जो शहादत का सामना कर रहा है, मसीह के प्रति उसका प्रेम पीड़ा से भी अधिक प्रबल होता है और उसे निष्प्रभावी कर देता है। शहीदों के लिए जल्लाद की छुरी वायलनि की धनुष से भी कोमल थी। जब मसीह के प्रति प्रेम प्रज्वलित होता है, तो ' ' शहादत एक वजिय बन जाती है: उस क्षण आग स्नान से भी अधिक ठंडी लगती है, क्योंकि उसकी ज्वाला द्रव्य प्रेम की ज्वाला में खो जाती है। त्वचा उधेड़ना एक लाड़-प्यार जैसा महसूस होता है। द्रव्य देखभाल हृदय और मन पर अधिकार कर लेती है, और व्यक्ति 'पागल' हो जाता है: उन्हें न तो दर्द महसूस होता है और न ही कुछ और, क्योंकि उनका मन मसीह में और उनका हृदय आनंद से लबालब होता है। और कतिने संतों ने ऐसी खुशी के साथ शहादत प्राप्त की, मानो वे किसी उत्सव में जा रहे हों! संत इग्नेशियस¹⁹⁷ अपनी शहादत के स्थान पर दौड़े और चिल्लाए: 'मुझे शहादत का दर्द झेलने दो, मुझे जंगली जानवरों द्वारा नोचा जाने दो!' यहाँ तक कि एक प्रेमी युवक भी, जो कहता है: 'मैं उससे शादी करना चाहता हूँ, और मुझे अपनी माँ या अपने पति की बिल्कुल भी परवाह नहीं!' संत इग्नेशियस का 'पागलपन' एक प्रेमी युवक से भी बढ़कर था।

सभी संतों ने मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए महान कार्य किए। पवतिर शहीदों ने अपना रक्त बहाया। पूजनीय पतिओं ने पसीना और आँसू बहाए और, कुशल औषधि-विशेषज्ञों की तरह, अपने ऊपर आध्यात्मिक प्रयोग किए; ईश्वर और मनुष्य—जो ईश्वर की प्रतिमा है—के प्रति प्रेम के लिए, उन्होंने हमें अपने आध्यात्मिक नुस्खे छोड़ने के लिए स्वयं को थका दिया। उनकी मदद से, हम बुराई को दूर करते हैं या अपनी आध्यात्मिक बीमारी को ठीक करते हैं और पूर्ण हो जाते हैं। और यदि हम भी प्रेम से, उनके पराक्रम का अनुकरण करने का प्रयास करें, तो हम पवतिरता भी प्राप्त कर सकते हैं।

लेकिन, बेशक, पूजनीय पतिरों के सभी पराक्रम—उपवास, जागरण और इसी तरह के अन्य—और सभी पवतिर शहीदों के दुख भी, हमारे प्रभु के दुख की तुलना में कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि मसीह ने द्रव्य रूप से उन सभी की सहायता

¹⁹⁴ मक्केबयियों के पवतिर शहीदों का पर्व 1 अगस्त को मनाया जाता है।

¹⁹⁵ सेंट लॉगनिस शताब्दीपति का स्मरणोत्सव 16 अक्टूबर को होता है।

¹⁹⁶ संत गेदेओन, पवतिर पर्वत के शहीद, का पर्व दविस 30 दिसंबर को मनाया जाता है।

¹⁹⁷ संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर, पुरोहित और शहीद, का पर्व 20 दिसंबर को मनाया जाता है।

की जिन्होंने उनके लिए दुख उठाया, और उनमें से प्रत्येक के दर्द को उनके महान प्रेम ने मीठा कर दिया। हालाँकि, अपने संबंध में, मसीह ने अपनी द्रव्य शक्तिका बलिकुल भी उपयोग नहीं किया और अपनी सृष्टिके प्रतिमहान प्रेम के कारण, अपने संवेदनशील शरीर में बहुत दर्द सहन किया। केवल मानवजातिके प्रतिमसीह के इस प्रेम का अनुभव करके ही कोई वास्तव में मानव बन सकता है [केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि] आंतरिक रूप से भी। अन्यथा, आप ईश्वर की सृष्टिसे भी अधिक असंवेदनशील हो जाएँगे, क्योंकिजब प्रभु का दुख महसूस किया गया, तो सूर्य अँधेरा हो गया, वह इस दृश्य को सहन नहीं कर सका। और यह देखकर पृथ्वी दहशत से भर गई, और चट्टानें फट गईं। और कब्रें इतनी जोर से हल गईं कि वे बहुत समय से मर चुके कई लोगों को उनकी नींद से जगाकर बाहर निकाल लाई—यह दिखाने के लिए कि लोग अपने उपकारी और उद्धारकर्ता परमेश्वर के प्रतिकृतिने कृतघ्न रहे थे।

संन्यासी और शहादत

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति उचित रूप से आध्यात्मिक अभ्यास में संलग्न नहीं होता है, तो क्या कठिनाइयों के समय में, उसे इतना विश्वास होगा कि ईश्वर उनकी सहायता के लिए पुकारने पर मदद करेंगे? या क्या हम खुद को इस विचार से आश्वस्त करते हैं किपरीक्षाओं के दौरान, ईश्वर केवल हमें तैयारी की परेशानी से बचाने के लिए हमारी मदद करेंगे? — तैयारी करनी ही चाहिए। यदि आप बोआई नहीं करते, तो ईश्वर आपकी फसलों को फसल से कैसे धन्य करेगा? एक व्यक्ति को बोआई करनी चाहिए, और ईश्वर उसे उसी के अनुसार देगा जो वह बोता है। और सेना में कहते हैं: 'तैयार रहो!'

— गेरोन्डा, हमें कैसे तैयार होना चाहिए?

— किसी व्यक्ति को किसी चीज़ के लिए तैयार कब माना जाता है? यदि सैनिक युद्ध की सतर्कता पर हैं, तो वे लगातार तैयार रहते हैं: वे पहले से ही अपने जूतों में, अपनी राइफल और गोला-बारूद के साथ, आदेशों की प्रतीक्षा में होते हैं।

— और यह युद्ध की तत्परता की स्थितिकितिनी देर तक रह सकती है?

— यह अलग-अलग होता है। एक भिक्षु को हमेशा तैयार रहना चाहिए, और फिर वह किसी से नहीं डरता। उसे किस बात का डर हो सकता है? मृत्यु? लेकिन वह उसके लिए स्वर्ग के द्वार खोल देगी, क्योंकिकिबर-पत्थर के नीचे अनंतकाल की कुंजी पड़ी है। इसके अलावा, जब भी एक भिक्षु मरता है, वह पश्चाताप की अवस्था में ही रहता है। उसकी दुनियाँ से त्याग और उसके भिक्षु संस्कार इस बात की गवाही देते हैं। एक भिक्षु पश्चाताप करता है और फिर सूक्ष्म आध्यात्मिक कार्य की ओर बढ़ता है। जैसे-जैसे ईश्वर और अपने पड़ोसी के प्रति भिक्षु का प्रेम बढ़ता है, वैसे-वैसे अपने प्रति उसका प्रेम कम हो जाता है। और फिर प्रेरित पौलुस की यह बात लागू होती है: 'कुछ भी हमें मसीह के प्रेम से अलग नहीं कर सकता।'¹⁹⁸

दुनियादार लोगों के लिए, यातना का विचार उन्हें डर के मारे ईश्वर की ओर मुड़ने और पुकारने के लिए मजबूर करता है: 'हे मेरे मसीह, हे परमेश्वर की परम पवित्र माता!' — जबकि एक भिक्षु हमेशा ईश्वर के साथ रहना चाहता है, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। कई गृहस्थ लोग इसलिए अच्छा करते हैं क्योंकि उन्हें शाश्वत यातना में पड़ने का डर होता है। एक भिक्षु, हालाँकि, कृतज्ञता से अच्छा करता है, अपने कल्याणकर्ता ईश्वर का धन्यवाद करने के लिए।

¹⁹⁸ देखें रोमियों 8:35।

— गेरोना, मैं कैसे समझ सकता हूँ कि शहादत और तपस्या क्या है?

— शहादत क्या है, यह थोड़ा समझने के लिए, कम से कम दूसरों की अवहेलना को खुशी से स्वीकार करो। और यदि तुम तपस्या क्या है, यह थोड़ा समझना चाहते हो, तो, यदि तुम मसीह की तरह चालीस दिन तक उपवास नहीं कर सकते, तो कम से कम उस बुधवार को उपवास करो जिस दिन उनसे विश्वासघात किया गया था, और उस शुक्रवार को जिस दिन उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था।¹⁹⁹ जो लोग शहादत के माध्यम से मसीह के प्रति अपने प्रेम की गवाही देना चाहते हैं, वे शहादत के अभाव में, इस प्रेम को, जो उन्हें भीतर से जलाता है, दविंगतों की जलती आत्माओं के लिए भक्तों के एक शारीरिक कार्य के रूप में प्रकट कर सकते हैं, ताकि उन्हें थोड़ी शांति मिल सके। संयम भी शहादत जतिना ही वजिय है, क्योंकि [दोनों ही मामलों में] व्यक्ति सभी मानवीय सुख-सुविधाओं का त्याग करता है और दवि संतुष्टि प्राप्त करता है।

पवित्र शहीदों को अपने यातनाओं को सहने का अनुकूल अवसर मिलने पर बहुत आनंद हुआ। आध्यात्मिक जीवन में तपस्या का आरंभ शहादत से हुआ। जब कॉन्स्टेंटाइन महान सत्ता में आए, तो उन्होंने उन तहखानों से ईसाइयों को मुक्त कर दिया जहाँ वे (जिनमें से कुछ को अपंग कर दिया गया था) मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। यातनाओं का अंत हो गया। लेकिन जिनमें मुक्त किया गया था, वे बहुत दुखी थे, क्योंकि जेल में वे शहीद होने की अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे, और अब संत कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने उनके लिए सब कुछ बर्बाद कर दिया था। उन्होंने खुशी-खुशी शहादत की उम्मीद की थी, लेकिन इसके बजाय उन्हें आजादी मिली। और इसलिए — ईश्वर के प्रति प्रेम और मसीह के लिए पीड़ा सहने की अपनी प्रबल इच्छा के कारण — वे इस दुनिया से चले गए। और वे यातनाएँ, जिनका सामना डायोक्लेटियन और मैक्सिमिलियन उनसे करवाते, उन्होंने अपने तपस्या के द्वारा स्वयं को दी। कोई जाकर रस्सियों से अपने हाथों से एक पेड़ से खुद को लटका देता: वह दर्द में प्रार्थना करता, फिर भी दवि रूप से आनंदित होता। कोई और, मसीह के प्रेम के लिए, खुद को बाँध लेता। वह कहता, 'इस तरह डायोक्लेटियन ने मुझे बाँधा होता।' और इस तरह खुद को यातनाएँ देते हुए, उन्होंने महान आनंद का अनुभव किया। इसी दैवीय पागलपन, इसी दैवीय मूर्खता से, पहले लोगों ने शुरुआत की और मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए, उन्होंने खुद को तपस्या के लिए समर्पित कर दिया। फिर दूसरों ने उनके इस कारनामे की नकल करना शुरू कर दिया। इस प्रकार तपस्या हमारे धर्म में प्रवेश कर गई। और एक तीसरा समूह, जो सबसे 'अजीब' था, कहता था: 'हम मसीह के भेड़ें हैं।' — और केवल जमीन से उगने वाली घास पर ही जीवित रहता था। इन्हें तथाकथित 'वोस्की' कहा जाता था।²⁰⁰ उन्होंने ईश्वर के आशीर्वाद और अपनी तुच्छता को इतनी गहराई से महसूस किया कि उन्होंने कहा: 'मैं, एक कृतघ्न प्राणी, अपने जीवन के बाकी दिनों में घास खाऊँगा।' और उन्होंने ऐसा ही किया। उनका हृदय मसीह के प्रति प्रेम से भर उठा। वे कहते थे, "क्या मैं मसीह की भेड़ों में से एक नहीं हूँ? तो मैं घास खाऊँगा।"²⁰¹

¹⁹⁹ एल्डर का तात्पर्य दिन भर भोजन और पानी से परहेज करने से है।

²⁰⁰ वोस्की (ग्रीक) — शाब्दिक रूप से, 'जो चराते हैं'। आर्चमिंड्राइट चेरुबिम (करामबेलास) अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि, 'माउंट अथोस की परंपरा के अनुसार, वे पहाड़ के सबसे पवित्र भिक्षु हैं और किसी को भी पता न चलने वाले पूर्ण एकांत में रहते हैं... उसी परंपरा के अनुसार, पृथ्वी पर अंतिम धर्मोपदेश इन्हीं अदृश्य बारहों द्वारा संपन्न किया जाएगा। उनकी संख्या स्थिर रहती है, क्योंकि यदि उनमें से कोई एक मर जाता है, तो उसकी जगह पवित्र पर्वत के सबसे उत्तम भिक्षुओं में से एक ले लेता है।' (चेरुबिम (करंबेलास), आर्चमिंड्राइट। डोमेन ऑफ द मदर ऑफ गॉड से। कीव, 1998। पृ. 164.) — *अनुवादक की टिप्पणी*।

²⁰¹ देखें सोजोमेन, पीजी 67, 1395 ff.; इवाग्रयिस, पीजी 86, 2480; मॉस्कस, पीजी 87, 2868B; और लियोनटियस, पीजी 93, 1688।

लेकनि बाद में चर्च ने इसे मना कर दिया, क्योंकि शिकारी इन संन्यासियों को जंगली जानवर समझकर कई को मार डालते थे।

आज लोग इसे समझ नहीं सकते; वे इसे पागलपन मानते हैं। वे कहते हैं, "जानवर की तरह घास क्यों खाएं?" 'इस तरह रस्सियों से लटकने और अपने शरीर को पीड़ा देने का क्या फायदा?' लेकिन याद करो कि अब्बा इसाक क्या कहते हैं: 'हे, काश ईश्वर हम पर ऐसी मूर्खताएँ करने की कृपा करें।' ईश्वर करे कि हम भी इस आध्यात्मिक मूर्खता को प्राप्त कर सकें²⁰² ।

भाग 4. स्वर्ग पर निर्भरता

"न तो लोग और न ही राक्षस दैविय सहायता में बाधा डाल सकते हैं। ईश्वर या किसी पवित्र व्यक्ति के लिए कुछ भी कठिनी नहीं है। एकमात्र बाधा हमारी अपनी मानव अवशिवास है। हमारी अवशिवास के कारण हम महान दैविय शक्तियों को हमारे समीप आने से रोकते हैं।"

अध्याय 1. मानवजात के लिए ईश्वर की दैविय व्यवस्था पर

"पहले परमेश्वर का राज्य खोजो..."²⁰³

— गेराना, बाबा मकरयिस कहते हैं कि ईश्वर हमें स्वर्गीय आशीर्वाद प्रदान करेंगे,²⁰⁴ और हम इस पर विश्वास करते हैं। क्या हमें यह भी विश्वास करना चाहिए कि वह हमें सांसारिक आशीर्वाद भी प्रदान करेंगे, जो उतने आवश्यक नहीं हैं?

— कौन सी सांसारिक आशीर्वाद?

— वे चीजें जिनकी हमें जरूरत है।

²⁰² अब्बा इसाक सीरियाई। कृतियाँ। सर्गेव पोसाद, 1911। प्रवचन 73। पृ. 370।

²⁰³ मत्ती 6:33.

²⁰⁴ देखें: संत मकरयिस द इजिप्शियन। स्परिचुअल कॉन्वर्सेशंस। एसटीएसएल, 1904।

— यह बलिकूल सही है। ईश्वर अपनी सृष्टि, अपनी प्रतमा से प्रेम करते हैं, और उसकी ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं।

— क्या हमें इस पर विश्वास करके चिंता नहीं करनी चाहिए?

— यदि कोई व्यक्ति इस पर विश्वास नहीं करता है और इन आशीर्वादों को प्राप्त करने के लिए स्वयं संघर्ष करता है, तो वह कष्ट सहन करेगा। लेकिन जो व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन जीता है, वह नरिश नहीं होगा, भले ही ईश्वर उसे सांसारिक और भौतिक चीजें न दे। यदि हम पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करें, यदि इस राज्य की खोज ही हमारी एकमात्र चिंता हो, तो बाकी सब कुछ हमें दे दिया जाएगा। क्या ईश्वर वास्तव में अपनी सृष्टि को भाग्य की मनमानी पर छोड़ देंगे? यदि इस्राएलियों ने जंगल में ईश्वर द्वारा दिया गया मानना अगले दिन तक छोड़ दिया होता, तो वह सड़ने लगता।²⁰⁵ ईश्वर ने इसे इस तरह व्यवस्थित किया ताकि वे उनकी द्रव्य व्यवस्था पर निर्भर रहें।

हमने अभी तक 'पहले परमेश्वर के राज्य को खोजो...' शब्दों को भी नहीं समझा है। या तो हम विश्वास करते हैं [और स्वयं को परमेश्वर के सुपुत्र कर देते हैं], या हम विश्वास नहीं करते [और इसलिए हमें अपनी ज़रूरतों का प्रबंध स्वयं करना होगा]। जब मैं सनाई पर्वत पर रहने गया, तो मेरे पास कुछ भी नहीं था। हालाँकि, मैंने एक पल के लिए भी यह नहीं सोचा कि अजनबियों के बीच रेगसितान में मेरा क्या होगा, मैं क्या खाऊँगा या कैसे जियूँगा। सेंट एपस्टिमिया की वह कोठरी, जहाँ मुझे बसना था, लोगों द्वारा लंबे समय से परित्यक्त और सुनसान पड़ी थी। मैंने मठ से कुछ भी नहीं माँगा, क्योंकि मैं उस पर बोझ नहीं बनना चाहती थी। एक बार, किसी ने मठ से मेरे लिए कुछ रोटी लाई, और मैंने उन्हें वापस भेज दिया। मुझे चिंता क्यों करनी चाहिए थी, जब मसीह ने कहा: 'पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करो?' वहाँ पानी भी लगभग नहीं था। मुझे हस्तशिल्प के बारे में कुछ भी नहीं पता था। तो अब मुझसे पूछिए कि मैं कैसे रहता था और अपनी रोटी कैसे कमाता था। मेरे पास एकमात्र औज़ार एक कैंची थी। मैंने उसे दो हस्सों में तोड़ा, एक पत्थर पर तेज किया, एक छोटा सा तख़्ता लिया और आइकॉन (चित्र) उकेरना शुरू कर दिया। मैं यीशु की प्रार्थना का जाप करते हुए काम करता था। मैंने जल्द ही नक्काशी की कला सीख ली; मैंने एक ही डिज़ाइन को बार-बार उकेरा और ग्यारह घंटों में पाँच दिन का काम पूरा कर लिया। न केवल मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई, बल्कि मैंने बेदुइन बच्चों की मदद भी की। कुछ समय के लिए, मैं दिन में कई घंटे यह काम करता था, लेकिन फिर मैं एक ऐसे मोड़ पर पहुँच गया जहाँ मैं अब शिल्पकार्य नहीं करना चाहता था, फिर भी, साथ ही मैं बेदुइन बच्चों द्वारा झेली जा रही कठिनाइयों को देख सकता था। उनके लिए, उपहार में एक टोपी और चप्पलों की एक जोड़ी प्राप्त करना एक बड़ी कृपा थी। और मेरे मन में एक विचार आया: 'क्या मैं यहाँ बेदुइनों की मदद करने आई थी, या पूरी दुनिया के लिए प्रार्थना करने आई थी?' इसलिए मैंने अपने सुईकाम को कम करने का फैसला किया ताकि मैं कम वचिलित रहूँ और अधिक प्रार्थना कर सकूँ। क्या आपको लगता है कि मैं किसी से मेरी मदद करने की उम्मीद कर रही थी? कहाँ से? बेदुइनों के पास खुद खाने के लिए कुछ भी नहीं था। मठ बहुत दूर था, और दूसरी ओर नरिजन भूमिपिड़ी थी। लेकिन उसी दिन, जब मैंने प्रार्थना के लिए अधिक समय समर्पित करने हेतु अपने काम को कम कर दिया था, एक आदमी मेरे पास आया। उस समय मैं अपनी कोठरी के पास खड़ा था; उसने मुझे देखा और कहा: 'लो, ये सौ सोने के सक्के ले लो। तुम छोटे बेदुइनों की मदद कर पाओगे, अपनी दिनचर्या पर टिके रहोगे, और प्रार्थना करोगे।' मैं खुद को रोक नहीं सका; मैंने उसे पंद्रह मिनट के लिए अकेला छोड़ दिया और अपनी कोठरी में चला गया। ईश्वर की कृपा और प्रेम मुझे ऐसी अवस्था में ले आए कि मैं अपने आँसू नहीं रोक सका। क्या आप देखते हैं कि जब किसी व्यक्ति का स्वभाव अच्छा होता है तो ईश्वर सब कुछ कैसे व्यवस्थित कर देता है? मैं इन दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं को अधिकतम कतिना दे

²⁰⁵ नरिगमन 16:19-20 देखें।

सकता था? मैं एक को देता, और तुरंत ही दूसरा आ जाता: 'मेरे पति ने मुझे कुछ नहीं दिया!' — फरि तीसरा: 'मेरे पति ने मुझे कुछ नहीं दिया!..'

— गेरोन्डा, ऐसा क्यों है कि कई बार ईश्वर की सर्वशक्तिमानता का अनुभव करने के बाद भी, हम अपने जीवन में उनके प्रबंध को कार्य करते हुए नहीं देखते हैं?

— यही तो शैतान का जाल है। शैतान किसी व्यक्ति की आँखों में धूल झोंक देता है ताकि वह ईश्वर की व्यवस्था को न देख सके। क्योंकि अगर कोई व्यक्ति ईश्वर की व्यवस्था को देख ले, तो उसका पत्थर जैसा दिल नरम हो जाएगा, संवेदनशील हो जाएगा, और स्तुति से भर जाएगा। और यह शैतान को पसंद नहीं है।

लोग अक्सर ईश्वर के बिना ही सब कुछ संभालने की कोशिश करते हैं।

एक आदमी ने मछली पालन शुरू किया और दिन भर यही कहता रहता था, 'हे ईश्वर, तेरी महिमा!' — क्योंकि वह लगातार दैवीय कृपा का साक्षी बनता था। उसने मुझे बताया कि जैसे ही एक मछली नषिचिती होती है, जब वह अभी पनी की नोक जतिनी छोटी होती है, उसके पास तरल से भरी एक थैली होती है, जिस पर वह तब तक निर्भर रहती है जब तक वह बड़ी होकर स्वयं जलजीवों को खाने में सक्षम नहीं हो जाती। दूसरे शब्दों में, मछली को ईश्वर से 'शुष्क राशन' मिलता है! अगर ईश्वर छोटी मछलियों का भी ध्यान रखते हैं, तो वह मनुष्यों का कतिना अधिक ध्यान रखते होंगे! फरि भी लोग अक्सर बिना ईश्वर के ही सब कुछ तय कर लेते हैं। वे कहते हैं, "हमारे दो बच्चे होंगे [और वही काफी होगा]।" वे ईश्वर को ध्यान में नहीं रखते। इसीलिए इतनी सारी त्रासदियाँ होती हैं और इतने सारे बच्चे मर जाते हैं। अधिकांश परिवारों में दो बच्चे पैदा होते हैं। लेकिन एक बच्चे को कार चपेट में ले लेती है, दूसरा बीमार पड़कर मर जाता है, और माता-पिता नश्वर रह जाते हैं।

जब माता-पिता—जो ईश्वर के सह-स्रष्टा हैं—अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद अपने बच्चों का भरण-पोषण करने में कठिनाई महसूस करते हैं, तो उन्हें अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर महान स्रष्टा से वनिम्रतापूर्वक मदद माँगनी चाहिए। तब ईश्वर, जो मदद करते हैं, और वह व्यक्ति जो उनकी मदद स्वीकार करता है, दोनों प्रसन्न होते हैं। जब मैं स्टोमयिन मठ में था, तो मैं कई बच्चों वाले एक पति से मिला। वह एपरिस के एक गाँव में एक क्षेत्र रक्षक था, जबकि उसका परिवार कोनटिसा में रहता था—जो चार घंटे तीस मिनट की पैदल दूरी पर था। उसके नौ बच्चे थे। उस गाँव का रास्ता मठ से होकर जाता था। सेवा के लिए जाते समय और घर लौटते समय, वह रक्षक मठ पर रुकता था। वापस आते समय, वह स्वयं तेल के दीपक जलाने की अनुमति मुझसे माँगता था। भले ही दीपक जलाते समय तेल फर्श पर गिर जाता था, मैं उसे ऐसा करने देता था; मैं उसे नाराज़ करने के बजाय बाद में फर्श पोंछ लेना ज्यादा पसंद करता था। हर बार जब वह मठ से निकलता और लगभग तीन सौ मीटर चल लेता, तो वह अपनी राइफल से एक गोली चलाता था। इसका कारण समझ न पाकर, मैंने अगली बार उसे चर्च में प्रवेश करने से लेकर कोनटिसा सड़क तक पहुँचने तक देखने का फैसला किया। यही तरीका था जिससे मुझे पता चला कि वह पहले चर्च में तेल के दीपक जलाता, फरि नारटेक्स⁽²⁰⁶⁾ में जाकर प्रवेश द्वार के ऊपर माँ एगज़ियस की प्रतिमा के सामने तेल का दीपक जलाता था। फरि वह अपनी उंगली दीपक के तेल में डुबोता, घुटने टेकता, हाथ आइकन की ओर फैलाकर कहता: 'हे ईश्वर की माता, मेरे नौ बच्चे हैं। उन्हें थोड़ा मांस भेजो!' यह कहकर, वह अपनी उंगली का तेल अपनी बंदूक की नली के सामने वाले नशान पर मलता और चला जाता। मठ से तीन सौ मीटर दूर, एक अंजीर के पेड़ के पास, एक जंगली बकरी उसका इंतजार करती थी। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, वह

²⁰⁶ नारथेक्स – चर्च का पश्चिमी भाग, बरामदा। – अनुवादक का नोट।

एक गोली चलाता, उसे मार देता, उसे थोड़ी आगे की एक गुफा तक ले जाता, जहाँ वह उसका चमड़ा उधेड़ता, और फरि मांस अपने बच्चे के पास ले जाता। ऐसा हर बार होता था जब वह घर लौटता था। मैं उस कष्टरक्षक के विश्वास और ईश्वर की माता की द्रव्य व्यवस्था के प्रति प्रशंसा से भर गया। पच्चीस साल बाद, वह पवित्र पर्वत पर आया और मुझे खोज निकाला। हमारी बातचीत के दौरान, मैंने उससे पूछा: 'आपके बच्चे कैसे हैं? वे कहाँ हैं?' जवाब में, उन्होंने पहले उत्तर की ओर इशारा किया और कहा, 'कुछ जर्मनी में हैं,' और फिर, अपनी बांह को दक्षिण की ओर फैलाते हुए, उन्होंने आगे कहा, 'और बाकी ऑस्ट्रेलिया में हैं। ईश्वर का धन्यवाद, वे कुशल हैं।' इस व्यक्ति ने अपने विश्वास और खुद को दोनों को ही नास्तिक विचारधाराओं से शुद्ध रखा, और इसलिए ईश्वर ने उसे नहीं छोड़ा।

ईश्वर की अदभुत व्यवस्था का आशीर्वाद

— कभी-कभी, गेर्रोना, मेरी एक इच्छा होती है, और ईश्वर उसे मुझसे पूछे बिना ही पूरा कर देते हैं। यह कैसे होता है?

— ईश्वर हमारी परवाह करते हैं। वे हमारी जरूरतों, हमारी इच्छाओं को देखते हैं, और जब कुछ हमारे भले के लिए होता है, तो वे हमें वह दे देते हैं। यद्यकि किसी व्यक्ति को किसी चीज़ में मदद की जरूरत होती है, तो मसीह और सर्वपवित्र थियोटोकोस उसकी मदद करते हैं। जब एल्डर फलारेट²⁰⁷ से पूछा गया: 'मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ, गेर्रोना? तुम्हें क्या चाहिए?'—वे उत्तर देते: 'जो कुछ भी मुझे चाहिए, वह ईश्वर की माता मुझे भेज देंगी।' और ऐसा ही हुआ।

जब हम स्वयं को प्रभु के हवाले कर देते हैं, तो वह, हमारे भले ईश्वर, हमारी देखभाल करते हैं और हमारी परवाह करते हैं। एक अच्छे प्रबंधक के रूप में, वह हम में से प्रत्येक को वह सब कुछ देते हैं जिसकी हमें आवश्यकता होती है। वह हमारी भौतिक जरूरतों के छोटे-छोटे विवरणों का भी ध्यान रखते हैं। और ताकि हम उनकी देखभाल, उनकी द्रव्य व्यवस्था को समझ सकें, वह हमें ठीक उतना ही देते हैं जितनी हमें आवश्यकता होती है। हालाँकि, यह उम्मीद न करें कि ईश्वर आपको पहले कुछ देंगे; नहीं, पहले खुद को पूरी तरह से ईश्वर को अर्पित करें। क्योंकि यदि आप लगातार ईश्वर से कुछ मांग रहे हैं, फिर भी उन पर विश्वास के साथ खुद को नहीं सौंपते हैं, तो यह स्पष्ट है कि आपका अपना घर है और आप शाश्वत स्वर्गीय नवासों से अपरचित हैं। जो लोग सब कुछ ईश्वर को अर्पित करते हैं और स्वयं को पूरी तरह से उनके हवाले कर देते हैं, वे ईश्वर के महान आवरण में आश्रित रहते हैं और उनकी द्रव्य व्यवस्था द्वारा संरक्षित रहते हैं। ईश्वर में विश्वास एक अनवरत, रहस्यमयी प्रार्थना है, जो सही क्षण पर मौन रूप से द्रव्य शक्तियों को उस स्थान पर आकर्षित करती है जहाँ उनकी आवश्यकता होती है। और फिर उसके प्रिय बच्चे उसकी अखंड स्तुति करते हैं, और उसे महान कृतज्ञता अर्पित करते हैं। जब फादर टर्कोन होली क्रॉस के तपस्थल में बसे, तो वहाँ कोई चर्च नहीं था, जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। उनके पास इसे बनाने के लिए पैसे भी नहीं थे — ईश्वर में केवल गहरी आस्था थी। एक दिन, प्रार्थना करने के बाद, वे कैरिस के लिए रवाना हो गए, यह विश्वास करते हुए कि ईश्वर चर्च बनाने के लिए आवश्यक धन के साथ उनकी मदद करेंगे। कैरीज के रास्ते में, इलसिकी स्केट के मठाधीश ने उन्हें दूर से ही पुकारा। जब फादर टर्कोन उनके पास पहुँचे, तो मठाधीश ने कहा: "अमेरिका से एक दयालु ईसाई ने ये डॉलर इसलिए भेजे हैं ताकि मैं उन्हें किसी ऐसे तपस्वी को दे सकूँ जिसके पास कोई चर्च नहीं है। तुम्हारे पास चर्च नहीं है, है ना? तो यह पैसा लो और एक बना लो।" हृदयों को जानने वाले ईश्वर के प्रतिकृतज्ञता से फादर टर्कोन की आँखों में आँसू आ गए, जिन्होंने फादर

²⁰⁷ देखें *एल्डर पैसियोसा*। द होली माउंटेन फादर्स एंड स्टोरीज़ फ़ॉर्म द होली माउंटेन। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लावरा, 2001। पृ. 62–65।

टकीन द्वारा माँगने से पहले ही चर्च की व्यवस्था कर दी थी — ताकजिब तक उन्होंने इसके लिए प्रार्थना की, पैसा पहले से ही तैयार था।

यदि कोई व्यक्ति स्वयं को ईश्वर के हवाले कर देता है, तो ईश्वर उसे कभी नहीं छोड़ता। और वास्तव में: यदि कल सुबह दस बजे आपको किसी चीज़ की ज़रूरत है, तो (बशर्ते यह ज़रूरत उचित सीमाओं से अधिक न हो और वह वस्तु वास्तव में आवश्यक हो) सुबह के नौ बजकर पैंतालीस मिनट पर या साढ़े नौ बजे, ईश्वर उसे आपको देने के लिए तैयार रखेगा। उदाहरण के लिए, कल आपको नौ बजे एक मग चाहिए। नौ बजकर पंद्रह मिनट तक, वह आपके पास पहले से ही होगा। आपको पाँच सौ ड्राचमा चाहिए। जसि क्षण आपको उनकी आवश्यकता होगी, ठीक पाँच सौ ड्राचमा प्रकट होंगे—न पाँच सौ दस, और न ही चार सौ नब्बे। मैंने ध्यान दिया है कि अगर, उदाहरण के लिए, मुझे कल किसी चीज़ की ज़रूरत है, तो ईश्वर ने आज ही उसकी व्यवस्था कर दी होती है। यानी, मेरे उसके बारे में सोचने से पहले ही, ईश्वर ने उसके बारे में सोच लिया होता है; उन्होंने ज़रूरी चीज़ों की पहले से ही व्यवस्था कर रखी होती है और उन्हें ठीक उसी क्षण देते हैं जब उनकी ज़रूरत होती है। मुझे यह तब एहसास हुआ जब मैंने देखा कि किसी चीज़ के मेरे पास किसी ज़रूरत के समय पर कहीं से आने में कतिना समय लगता है। इसलिये, ईश्वर इसकी पहले से ही व्यवस्था कर देते हैं।

जब हम, उनके प्रताप्रेम से, अपने जीवन के माध्यम से ईश्वर को आनंदित करते हैं, तो वह अपने प्रिय बच्चों पर ठीक उसी क्षण अतुलनीय आशीर्वादों की वर्षा करते हैं जब उन्हें उनकी आवश्यकता होती है। तब हमारा संपूर्ण जीवन दैवीय प्रबंध की आशीर्वादों के बीच प्रकट होता है। मैं आपको ईश्वर के चमत्कारी प्रबंध के उदाहरण देते हुए घंटों बता सकता हूँ।

जब मैं युद्ध में था, लड़ाई के अभियानों में हसिसा ले रहा था, मेरे पास एक सुसमाचार था, और मैंने वह किसी को दे दिया। बाद में, मैं कहा करता था, 'आह, काश मेरे पास सुसमाचार होता, तो वह मेरी कतिनी मदद करता!' क्रिसमस पर, मेसोलॉन्धी से हमारे यूनिट को दो सौ पार्सल भेजे गए थे, जो उस समय पहाड़ों में था।²⁰⁸ दो सौ पार्सल में से, केवल वही पार्सल जसिमें सुसमाचार था, मुझे मिला! यह सुसमाचार का एक पुराना संस्करण था, जसिमें फलिस्तीन का नक्शा था। पार्सल में एक नोट भी था: 'यदि आपको कोई अन्य पुस्तकें चाहिए, तो बस हमें लिखें और हम उन्हें आपको भेज देंगे।'

एक अन्य अवसर पर, जब मैं पहले से ही स्टोमयिन मठ में था, मुझे चर्च के लिए एक तेल का दीपक चाहिए था। एक सुबह, भोर में, मैं कोनटिसा गया। जब मैं एक घर के पास से गुजर रहा था, तो मैंने एक छोटी लड़की को अपने पिता से कहते सुना: "पापा, एक भिक्षु आ रहा है!" वह मुझसे मलिन बाहर आया और कहा: "फादर, मैंने ईश्वर की माता को तेल का दीपक दान करने का व्रत लिया है। यह पैसा लीजिए और इसे स्वयं खरीद लीजिए।" और उसने मुझे पाँच सौ ड्राक्मा दिए — ठीक वही कीमत जो 1958 में तेल के दीपक की थी।

²⁰⁹ और आज भी, जब भी मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत होती है, ईश्वर तुरंत उसकी व्यवस्था कर देता है। उदाहरण के लिए, अगर मैं कुछ लकड़ी काटने चाहता हूँ लेकिन नहीं काट पाता, तो लकड़ी तुरंत ही आ जाती है। आपसे मलिन आने से पहले, मुझे पचास हजार ड्रैक्मा का एक पार्सल मिला — ठीक उतनी ही राशजितिनी मुझे चाहिए थी। एक और उदाहरण: मैंने किसी को आशीर्वाद के रूप में 'इट इज़ ट्रूली मीट' आइकन दिया। अगले ही दिन, कोई मेरे लिए 'इवेरॉन' आइकन ले आया! और इस गर्मी में, बरसात आने से पहले, मेरे पास बिल्कुल भी पानी नहीं था। अब थोड़ी-बहुत बूँदाबांदी हुई है, और एक दिन मैं [अधिकतम] डेढ़ टन पानी इकट्ठा करता हूँ। पछिले साल की टंकी में अभी भी कुछ पानी बचा है, लेकिन

²⁰⁸ मध्य ग्रीस का एक शहर। — अनुवादक की टिप्पणी।

²⁰⁹ 1990 की गर्मियों में दिया गया।

वह खराब हो गया है। पर ईश्वर कतिनी अद्भुत व्यवस्था करते हैं! मेरे पास एक बैरल पानी है। हर दनि कतिने सारे लोग आते हैं—वे पीते हैं, अपने चेहरे धोते हैं; आखरिकार, वे पसीने से लथपथ आते हैं—और फरि भी पानी का स्तर केवल चार या पाँच उंगलियों तक ही घटता है! एक सौ पचास से दो सौ लोगों के लिए एक बैरल पानी — और यह कभी खत्म नहीं होता! इसके बावजूद, कभी-कभी कुछ लोग नल को बहुत ज्यादा खोल देते हैं, तो कुछ लोग बंद करना भूल जाते हैं, और पानी बहता रहता है, फरि भी यह कभी खत्म नहीं होता!

ईश्वरीय व्यवस्था पर स्वयं को सौपना

जो व्यक्ति ईश्वर की कृपा को अनुभव करता है, वह स्वयं को दैवीय प्रबंध पर आश्रित करना सीख जाता है। और फरि वे पालने में पड़े बच्चे की तरह महसूस करने लगते हैं, जो जैसे ही उसकी माँ उसे छोड़कर जाती है, रो पड़ता है और तब तक रोता रहता है जब तक वह दौड़कर वापस उसके पास नहीं आ जाती। स्वयं को ईश्वर के हवाले करना एक महान बात है! जब मैं पहली बार स्टोमयिन मठ पहुँचा, तो मेरे पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। पूरा मठ नरिमाण के मलबे से भरा पड़ा था। मुझे बाड़ के पास एक कोना मिला, मैंने उसे ऊपर से थोड़ा ढक लिया, और अपनी रातें वहीं बैठकर बिताईं, क्योंकि मैं वहाँ लेट नहीं सकता था। एक दनि, एक परचिति ह्यरोमोंक मेरे पास आए और पूछा: 'सुनो, तुम आखरि यहाँ कैसे रहते हो?' 'खैर,' मैंने जवाब में उनसे पूछा, 'क्या सांसारकि लोगों के पास हमसे ज्यादा कुछ था? जब कनारसि²¹⁰ ने कर्ज माँगा और उनसे कहा गया, "तुम्हारा कोई वतन नहीं है," तो उन्होंने जवाब दिया: "हम अपना वतन वापस जीत लेंगे।" अगर एक सामान्य व्यक्ति में इतना विश्वास था, तो हम ईश्वर पर भरोसा क्यों नहीं कर सकते? चूँकि ईश्वर की माता मुझे यहाँ लाई हैं, नश्चिति रूप से, जब समय आएगा, तो वह अपने मठ की देखभाल करने में वफिल नहीं होंगी?' और वास्तव में, धीरे-धीरे, देखो कि ईश्वर की सर्वपवतिर माता ने सब कुछ कैसे व्यवस्थित किया! मुझे याद है जब कारीगर जले हुए सेलों की छत की स्लैब में कंक्रीट डाल रहे थे, तो सीमेंट खत्म हो रहा था। स्लैब का एक तह्माई हसिसा अभी भी कंक्रीट करना बाकी था। कारीगर मेरे पास आए और कहा: 'हमारा सीमेंट खत्म हो रहा है। हमें मशिर्ण में और अधिक रेत और कम सीमेंट मलाना होगा ताकि हम पूरी चीज का कंक्रीट कर सकें।' — "नहीं," मैंने उनसे कहा, "इसे पतला मत करो; जैसा शुरू किया है, वैसा ही जारी रखो।" और सीमेंट लाना असंभव था क्योंकि सभी खच्चर खेत में थे। नरिमाणकर्ताओं को खच्चरों को खोजने के लिए कोनटिसा तक दो घंटे पैदल चलना पड़ता, फरि खेत तक दो घंटे और। सोचिए ज़रा कि उनका कतिना समय बर्बाद हो गया होता... और इसके अलावा, उन लोगों के अपने काम थे; वे दूसरे दनि वापस नहीं आ पाते। मैंने देखा: उन्होंने फर्श की स्लैब का दो-तह्माई हसिसा डाल दिया था। मैं छोटी सी चर्च में गया और कहा: "हे माता, अब हम क्या करें? मैं आपसे वनिती करता हूँ, हमारी मदद करें!" फरि मैं चर्च से बाहर आया...

— और फरि क्या हुआ, गेरोन्डा?

— उन्होंने छत का काम पूरा कर लिया, और कुछ सीमेंट भी बच गया!

— क्या बलिडरों को इसका एहसास हुआ?

²¹⁰ कोन्स्टान्टिनोस कनारसि (लगभग 1795–1877)। हेलेस के एक राष्ट्रीय नायक, एक पौराणिक नाविक और ग्रीक क्रांति (1821–1830) के दौरान तुर्कों के खिलाफ एक नडिर योद्धा। 7 जून 1822 को, के. कनारसि के नेतृत्व में मछली पकड़ने वाली नावों में सवार साहसी लोगों के एक समूह ने खथोस द्वीप के पास एक तुर्की सकवाडरन पर एक साहसिक छापा मारा, जिसके परिणामस्वरूप तुर्की बेड़े के प्रमुख जहाज का वनिाश हो गया और तुर्की के एडमरिल कारा अली की मृत्यु हो गई। बाद में के. कनारसि एक एडमरिल, नौसेना मंत्री और ग्रीस के प्रधानमंत्री बने। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

— बेशक उन्हें एहसास हुआ! कभी-कभी ईश्वर और परमेश्वर की अतिपवित्र माता की सहायता कतिनी महान होती है!

ईश्वर हर चीज का उपयोग भलाई के लिए करते हैं

— जेरोंडा, कभी-कभी हम कोई काम शुरू करते हैं और बाधाओं का एक पूरा सलिसला आ जाता है। हम कैसे जान सकते हैं कि ईश्वर की ओर से है?

— आइए हम इस पर विचार करें कि क्या इसमें हमारी कोई गलती है। यदि हमारी कोई गलती नहीं है, तो बाधा ईश्वर की ओर से आती है और हमारे भले के लिए होती है। इसलिए, इस बात से निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है कि कार्य पूरा नहीं हुआ है या उसके पूरा होने में देरी हो रही है। एक बार, किसी ज़रूरी काम की जल्दी में, मैं स्टोमथीन मठ से कोनटिसा उतर रहा था। सड़क के एक विशेष रूप से कठिन हिस्से पर (मैं इस जगह को गोलगोथा कहता था), मुझे मठ का एक परिचित, अंकल अनास्तासियस, तीन भारी बोझ से लदे गधों के साथ मिला। एक खड़ी ढलान पर, सामान की पीठें एक तरफ़ से फिसल गई थीं, और एक जानवर सीधे खाई के किनारे पर था — नीचे गरिने की कगार पर। "भगवान ने आपको भेजा है, फादर!" चाचा अनास्तासियस ने खुशी से कहा। मैंने उसे खच्चरों पर फरि से सामान लादने में मदद की, फिर हम उन्हें सड़क पर ले आए। वहाँ मैंने उसे छोड़ दिया और अपनी राह चल पड़ा। मैं काफी दूर निकल आया था कि रास्ता एक भूस्खलन पर आकर खत्म हो गया। एक बड़ा भूस्खलन, तीन सौ मीटर लंबा, अभी-अभी हुआ था, जिसने रास्ते को दबोच लिया था। पेड़, चट्टानें — सब कुछ नदी में बह गया था। अगर मैं गधों के साथ देर से नहीं लगा होता, तो मैं ठीक उसी समय वहाँ होता जब भूस्खलन हुआ। मैंने कहा, "चाचा अनास्तासियस, आपने मुझे बचाया; ईश्वर ने आपको भेजा है।"

मसीह स्वर्ग से देखते हैं कि हम में से प्रत्येक कैसे व्यवहार करता है, और जानते हैं कि उन्हें हमारे भले के लिए कब और कैसे स्वयं कार्य करना है। वह जानते हैं कि हमें कैसे और कहाँ ले जाना है, बशर्ते कि हम उनसे मदद माँगें, अपनी इच्छाओं को उनके सामने उजागर करें, और उन्हें स्वयं सब कुछ व्यवस्थित करने दें। जब मैं माउंट अथोस पर फिलोथिमी मठ में था, तो मैं रेगसितान में जाना चाहता था। मैंने एक सुनसान द्वीप पर जाने की योजना बनाई थी और एक नाविक से मुझे लेने के लिए आने का इंतजाम भी कर लिया था, लेकिन अंत में वह नहीं आया। ईश्वर ने ऐसा ही व्यवस्थित किया, क्योंकि मैं अभी भी अनुभवहीन था और एक निर्जन द्वीप पर बहुत कष्ट सहता; मैं वहाँ के दुष्टात्माओं का शिकार हो जाता। फिर, द्वीप पर जाने के अपने प्रयास में विफल होने के बाद, मुझमें कातौनाकी जाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। कातौनाकी का मरुस्थल मुझे आकर्षित कर रहा था; मैंने वहाँ जाने के लिए प्रार्थना की और इसकी तैयारी की। मैं वृद्ध पीटर—जो एक उच्च आध्यात्मिक जीवन वाले व्यक्ति थे—के साथ बसना और तपस्या करना चाहता था। हालाँकि, एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे कातौनाकी नहीं, बल्कि कोनटिसा जाने के लिए मजबूर कर दिया। एक शाम, संध्या प्रार्थना के बाद, मैं अपनी कोठरी में चला गया और देर रात तक प्रार्थना की। लगभग ग्यारह बजे, मैं आराम करने के लिए लेट गया। सुबह साढ़े एक बजे, मठ की घंटी के बजने की आवाज़ से मैं चौंक गया, जो भाइयों को मध्यरात्रि की प्रार्थना के लिए चर्च बुला रही थी। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन नहीं उठा पाया। एक अदृश्य शक्ति ने मुझे लकवाग्रस्त कर दिया था, और मैं एक भी मांसपेशी नहीं हल्ला पा रहा था। मुझे एहसास हुआ कि कुछ असाधारण हो रहा था। मैं दोपहर तक बिस्तर पर ही पड़ा रहा। मैं प्रार्थना कर सकता था और सोच सकता था, लेकिन मैं बिल्कुल भी हल्ल नहीं सकता था। इस अवस्था में, मैंने जैसे किसी टेलीविजन स्क्रीन पर, एक ओर कटुनाकी और दूसरी ओर कोनटिसा में स्थित स्टोमथिन मठ को देखा। एक प्रबल इच्छा के साथ, मैंने अपनी नज़ाह कटुनाकी की ओर केंद्रित की, और फिर एक आवाज़ ने स्पष्ट रूप से मुझसे कहा: "तुम कटौनाकी नहीं जाओगे, बल्कि स्टोमथिन के मठ में जाओगे।" यह सर्व पवित्र थियोटोकोस की

आवाज़ थी। मैंने कहा, "हे ईश्वर की माता, मैंने आपसे एकांतवास माँगा था, फरि भी आप मुझे संसार में भेज रही हैं?" और एक बार फरि मैंने वही आवाज़ सुनी, जो मुझे सख्ती से कह रही थी: "तुम जाकर अमुक व्यक्ति से मिलोगे। वह तुम्हारी बहुत मदद करेगा।" मैं तुरंत उन अदृश्य बंधनों से मुक्त हो गया, और मेरा हृदय दैवीय अनुग्रह से भर गया। फरि मैं गया और मैंने अपने आध्यात्मिक पिता को जो हुआ था, वह सब बता दिया। मेरे आध्यात्मिक पिता ने मुझसे कहा, "यह ईश्वर की इच्छा है।" 'हालाँकि, इस बारे में किसी को कुछ मत बताना। कहना कि स्वास्थ्य कारणों से (और उस समय मुझे रक्तस्राव हो रहा था) तुम्हें माउंट अथोस छोड़ना होगा, और चले जाओ।'

मैं एक बात चाहता था, लेकिन ईश्वर की अपनी योजना थी। उस समय मुझे लगा कि ईश्वर की इच्छा थी कि मैं कोनटिसा में मठ को पुनर्जीवित करूँ। इस तरह, मैं युद्ध के दौरान ईश्वर की माता से किया गया अपना व्रत भी पूरा कर रहा था। "हे ईश्वर की माता," मैंने तब उनसे प्रार्थना की थी, "मुझे एक भिक्षु बनने में मदद करें, और मैं आपके जलकर खाक हो गए मठ को बहाल करने के लिए तीन साल तक काम करूँगा।" लेकिन, जैसा कि बाद में स्पष्ट हुआ, परमेश्वर की अतिपवित्र माता ने मुझे वहाँ भेजने का मुख्य कारण उन अस्सी-सात परिवारों की मदद करने की आवश्यकता थी जो प्रोटेस्टेंट धर्म में भटक गए थे, ताकि वे ऑर्थोडॉक्स में लौट सकें।

ईश्वर अक्सर कई लोगों के लाभ के लिए कुछ होने देता है। वह कभी सिर्फ एक अच्छा काम नहीं करता, बल्कि एक साथ तीन या चार अच्छे काम करता है। और वह कभी भी बुराई को होने नहीं देता जब तक कि उससे बहुत अच्छा न हो। वह हर चीज़—चाहे वह गलतियाँ हों या खतरे—हमारे लाभ के लिए उपयोग करता है। अच्छा और बुरा एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं। यह अच्छा होता अगर वे अलग होते, लेकिन व्यक्तिगत मानवीय हति हस्तक्षेप करते हैं और उन्हें भ्रमति कर देते हैं।

हालाँकि, ईश्वर इस भ्रम से भी लाभ उठाते हैं। इसलिए हमें यह विश्वास करना चाहिए कि ईश्वर केवल उसी को होने देते हैं जो भलाई की ओर ले जा सकता है, क्योंकि वह अपनी सृष्टि से प्रेम करते हैं। उदाहरण के लिए, वह हमें किसी बड़ी परीक्षा से बचाने के लिए कोई छोटी परीक्षा आने दे सकते हैं। एक बार, एक आम आदमी पवित्र पहाड़ों में एक मठ के संरक्षक के भोज में गया। वहाँ उसने शराब पी और थोड़ा नशे में हो गया। मठ से लौटते समय, वह सड़क पर गिर पड़ा। बर्फ गरिने लगी, और वह बर्फ के ढेर में दब गया, लेकिन शराब के नशे ने उसके ऊपर बर्फ के ढेर में एक छेद बना दिया। एक राहगीर संयोग से उस जगह से गुजर रहा था। बर्फ में छेद देखकर, वह आश्चर्य से चलिलाया: 'यह आखिर है क्या? क्या यह कोई झरना हो सकता है?' — और उसने छेद पर एक डंडा मारा। 'आउच!' नशेड़ी चलिलाया। इस प्रकार ईश्वर ने उसे बर्बाद होने से बचा लिया।

ईश्वर की कृपा हृदय तक पहुँचती है

— गैरोना, ईश्वर हमसे क्या चाहता है?

— ईश्वर हमारी स्वतंत्र इच्छा, हमारे अच्छे स्वभाव को प्रकट करना चाहते हैं, भले ही वह प्रेम के श्रम से केवल थोड़ा ही क्यों न हो। वह यह भी चाहते हैं कि हम अपनी पापी प्रकृति से अवगत रहें। बाकी सब कुछ वह प्रदान करते हैं। आध्यात्मिक जीवन के लिए बड़ी बाजुओं की आवश्यकता नहीं होती। आइए हम वनिम्रता से परश्रिम करें, ईश्वर से दया माँगें, और हर चीज़ के लिए उनका धन्यवाद करें। ईश्वर की योजना उस व्यक्ति में पूरी होती है जो अपनी किसी योजना के बिना, स्वयं को ईश्वर के हाथों में सौंप देता है। कोई व्यक्ति जितना अधिक अपने 'स्व' से चपिका रहता है, वह उतना ही पीछे रह जाता है। वे आध्यात्मिक रूप से उन्नत नहीं करते क्योंकि वे ईश्वर की कृपा के मार्ग में खड़े होते हैं। उन्नत करने के लिए, किसी को ईश्वर में गहरा विश्वास रखना चाहिए।

हर क्षण, ईश्वर अपने प्रेम से सभी लोगों के हृदयों को सहलाता है, लेकिन हम इसे महसूस नहीं कर पाते क्योंकि हमारे हृदय मैल की एक परत से ढके होते हैं। अपना हृदय शुद्ध करने के बाद, एक व्यक्तिको कोमलता की ओर प्रेरित किया जाता है, वह पघिल जाता है, और ईश्वर की कृपा और दया को देखकर आनंद से भर जाता है, जो सभी लोगों से समान रूप से प्रेम करता है। ऐसा व्यक्ति पीड़ितों के लिए दर्द महसूस करता है, और आध्यात्मिक जीवन जीने वालों के लिए आनंदित होता है। यदि एक प्रेमपूर्ण आत्मा केवल ईश्वर की कृपा पर मनन करती है, तो वह उसे आकाश तक पहुँचा सकती है; तो सोचिए, जब वह अपने अनगणित पापों और ईश्वर की प्रचुर दया पर मनन करे तो कतिना अधिक! यदि किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक आँखें शुद्ध हो गई हैं, तो, ईश्वर की देखभाल [अपने और दूसरों के लिए] को देखकर, वे अपने संवेदनशील, उजागर हृदय से संपूर्ण दैवी व्यवस्था को महसूस करते और अनुभव करते हैं; वे कृतज्ञता से पघिल जाते हैं; वे 'पागल' हो जाते हैं—इस शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। क्योंकि जब कोई व्यक्ति ईश्वर की देन को महसूस करता है, तो वे हृदय में एक दरार डालती हैं, और उसे चीर देती हैं। और फिर, जब ईश्वर का हाथ, उस प्रेमपूर्ण हृदय को सहलाते हुए, इस दरार को छूता है, तो वह व्यक्ति भीतर से प्रफुल्लित हो उठता है, और ईश्वर के प्रति उसकी कृतज्ञता और भी बढ़ जाती है। जो लोग अपनी पापी प्रकृति और ईश्वर की कृपा दोनों को महसूस करते हुए प्रयास करते हैं, और स्वयं को उसकी महान दया पर सौंप देते हैं, वे अपने आत्मा को अधिक निश्चिंता और कम शारीरिक कष्ट के साथ स्वर्ग तक उठाते हैं।

छोटी और बड़ी दोनों चीजों के लिए ईश्वर के प्रतिकृतज्ञता

कुछ लोग कहते हैं, 'मुझे विश्वास है कि ईश्वर मेरी मदद करेंगे', फिर भी वे किसी भी कमी से बचने के लिए पैसे बचाने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग ईश्वर का मजाक उड़ाते हैं, क्योंकि वे खुद को ईश्वर के हवाले नहीं करते, बल्कि पैसे के हवाले करते हैं। जब तक वे पैसे से प्रेम करना बंद नहीं कर देते और उस पर अपनी आशा नहीं छोड़ देते, तब तक वे ईश्वर पर अपनी आशा नहीं रख पाएंगे। मैं यह नहीं कह रहा कि लोगों के पास ज़रूरत के समय के लिए कुछ बचत नहीं होनी चाहिए—नहीं। लेकिन किसी को अपनी आशा धन में नहीं रखनी चाहिए; किसी को अपना दिल धन को नहीं देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से लोग ईश्वर को भूल जाते हैं। एक व्यक्ति जो ईश्वर पर भरोसा नहीं करता, अपनी योजनाएँ बनाता है और फिर दावा करता है कि यही ईश्वर चाहता है, वह शैतानी तरीके से अपने प्रयास को 'आशीर्वाद' देता है और लगातार पीड़ित रहता है। हमने यह महसूस नहीं किया है कि ईश्वर कतिना शक्तिशाली और अच्छा है। हम उसे नियंत्रण में रहने नहीं देते; हम उसे हमारा मार्गदर्शन करने नहीं देते, और इसीलिए हम पीड़ित होते हैं।

सनिई पर्वत पर, सेंट एपस्टिमिया की कोठरी में, जहाँ मैं रहता था, वहाँ पानी बहुत कम था। कोठरी से लगभग बीस मीटर दूर एक गुफा में, चट्टान की एक दरार से पानी बूंद-बूंद कर टपकता था। मैंने पानी इकट्ठा करने के लिए एक छोटा सा पात्र बनाया और दिन में तीन लीटर पानी इकट्ठा करता था। जब मैं पानी लेने जाती थी, तो मैं एक लोहे का डब्बा थाम लेती थी और, जब वह भर रहा होता था, तब परम पवित्र ईश्वर की माता के लिए अकैथिस्ट पढ़ती थी। मैं अपना सरि थोड़ा गीला कर लेता था—बस अपना माथा—क्योंकि इससे मुझे मदद मिलती थी, जैसा कि एक डॉक्टर ने सलाह दी थी; मैं पीने के लिए थोड़ा पानी इकट्ठा करता था, और अपनी कोठरी के पास रहने वाले चूहों और पक्षियों के लिए एक अलग जग में थोड़ा पानी डाल देता था। धुलाई और अन्य जरूरतों के लिए, मैं यही पानी गुफा से इस्तेमाल करती थी। उस थोड़े से पानी के लिए मुझे कतिनी खुशी, कतिनी कृतज्ञता महसूस हुई! मैं ईश्वर की धन्यवाद करती थी कि मेरे पास पानी था।

बाद में, जब मैं पवित्र पर्वत पर पहुँचा और कुछ समय के लिए आइवरॉन स्केट में बस गया, तो वहाँ पानी की कोई कमी नहीं थी, क्योंकि यह धूप वाले हिससे में था। वहाँ एक ही टंकी थी, जिससे पानी लबालब भरता था। ओह! मैंने अपना

सरि और पैर दोनों धोए, लेकनि... मैं पुराने तरीकों को भूल गया था। सनिई पर्वत पर, थोड़े से पानी के लिए कृतज्ञता से मेरी आँखों में आँसू आ गए थे, लेकनि यहाँ, स्केटे में, पानी की प्रचुरता ने मुझे भुलकड़ बना दिया। इसलिए मैं उस कोठरी को छोड़कर लगभग अस्सी मीटर दूर बस गया, जहाँ एक छोटा सा जलाशय था। प्रचुरता का सामना करते हुए कोई कतिनी आसानी से अपना रास्ता भूल जाता है, कतिना आसानी से भूल जाता है!...

हमें खुद को पूरी तरह से और बनिा शर्त दविय प्रबंध पर, ईश्वर की इच्छा पर सौंप देना चाहिए, और ईश्वर हमारी देखभाल करेंगे। एक शाम, एक भिक्षु वहाँ वेस्परस (सांध्य प्रार्थना) करने के लिए पहाड़ की चोटी पर गया। रास्ते में, उसे एक सफेद मशरूम मिला और उसने इस दुर्लभ खोज के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। वापस आते समय, वह उस मशरूम को तोड़कर अपने रात के खाने के लिए पकाना चाहता था। "अगर गृहस्थ मुझसे पूछें कि क्या मैं मांस खाता हूँ," भिक्षु ने अपने मन में सोचा, "तो मैं उन्हें बता सकता हूँ कि हाँ, मैं हर पतझड़ में खाता हूँ!" अपनी कुटिया में लौटकर, भिक्षु ने देखा कि जब वह संध्या की प्रार्थना कर रहा था, तब किसी जानवर ने उस कवक पर पैर रख दिया था, और उसका केवल आधा हसिसा ही सही-सलामत बचा था। भिक्षु ने कहा, "जाहरि है, मुझे बस इतना ही खाना था।" उसने बचे हुए हसिसे को इकट्ठा किया और आधे मशरूम के लिए ईश्वर की दविय कृपा के लिए धन्यवाद दिया। थोड़ा आगे चलने पर उसे एक और आधा मशरूम मिला; वह उसे काटकर अपने रात के खाने के लिए पूरा करने के लिए झुका, लेकनि देखा कि मशरूम सड़ा हुआ था (शायद वह जहरीला था)। भिक्षु उसे वहीं छोड़कर एक बार फिर ज़हर से बचने के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने लगा। अपनी कुटिया में लौटकर, भिक्षु ने रात के खाने में उस मशरूम का आधा हसिसा खाया। अगले दनि, जब वह बाहर निकला, तो उसकी नज़रों के सामने एक अद्भुत दृश्य था। तपस्वी के आश्रम के चारों ओर सुंदर मशरूम उग आए थे, और उन्हें देखकर तपस्वी ने एक बार फिर ईश्वर का धन्यवाद किया। देखिए, उसने पूरे मशरूम और आधे के लिए, अच्छे के लिए और बुरे के लिए, एक के लिए और कई के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। वह हर चीज़ के लिए आभारी था।

दयालु ईश्वर हम पर उदार आशीर्वादों की वर्षा करते हैं, और उनके कार्य हमारे लाभ के लिए नरिदेशति होते हैं। हमारे पास जो भी आशीर्वाद हैं, वे ईश्वर के उपहार हैं। उन्होंने अपनी सृष्टि-मानव जाति की सेवा में सब कुछ लगा दिया है; उन्होंने ऐसा प्रबंध किया है कि हर चीज़—पशु, पक्षी, छोटे और बड़े, यहाँ तक कि पौधे भी—मनुष्य के लिए अपना बलदान कर देती है। और ईश्वर स्वयं मानवता को बचाने के लिए बलदान हो गए। तो आइए, हम इन सब के प्रति उदासीन न रहें; आइए, हम अपनी महान कृतघ्नता और कठोरता से उन्हें आहत न करें, बल्कि आइए, हम उन्हें धन्यवाद दें और उनकी महिमा करें।

अध्याय 2.

ईश्वर में विश्वास और उस पर भरोसा

हमें पूरे हृदय से ईश्वर में विश्वास करना चाहिए

— जेरोंडा, मेरे मन में आने वाले अवश्वास के विचारों से मैं परेशान हो जाता हूँ।

— यह कि आप इन विचारों से परेशान हैं और इन्हें स्वीकार नहीं करते, इसका मतलब है कि ये विचार दुष्ट से आते हैं। कभी-कभी ईश्वर हमें संदेह या अवश्वास के विचारों को आने देता है ताकि हमारी प्रवृत्ति और भक्ति की परीक्षा

हो सके। लेकिन हमारा ईश्वर ज्यूस, अपोलो और ऐसे अन्य मथिकों की तरह कोई मथिक नहीं है। हमारा विश्वास सच्चा और जीवंत है। हमारे पास 'साक्षियों का बादल' है, जैसा कपिरेरति पौलुस लिखते हैं।²¹¹ ये लोग मसीह को जान गए, उनके साथ व्यक्तिगत रूप से एकता का अनुभव किया, और उनके लिए अपना बलदान कर दिया। और हमारे अपने समय में, ऐसे लोग हैं जिन्होंने स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर दिया है और वे द्रव्य अवस्थाओं का अनुभव कर रहे हैं। वे स्वर्गदूतों, संतों, और यहाँ तक कि मसीह और परमेश्वर की माता के साथ भी संबंध बनाए रखते हैं। मैं आपकी मदद करने के लिए, अपने बारे में भी आपको थोड़ा बताऊँगा। देखिए, मैं भी 'खून देता हूँ'—मैं दूसरों की मदद करने के लिए कुछ अनुभव साझा करता हूँ। यह देखकर कि एक व्यक्ति ने जो ज्ञान इकट्ठा किया है, वह उसके विश्वास को कैसे दूर कर देता है, मैं, उस विश्वास को मजबूत करने की इच्छा से, विश्वास के क्षेत्र की कुछ घटनाओं का वर्णन करता हूँ।

जब मैं बच्चा था, हम कोनटिसा में रहते थे। संतों के कई जीवन पढ़ने के बाद, मैं दूसरे बच्चों को भी उन्हें पढ़ने देता था, या मैं लड़कों को इकट्ठा करता और हम उन्हें साथ में पढ़ते थे। मैं संतों के महान तपस्या और उनके द्वारा किए गए उपवासों को देखकर चकित होता था, और मैं उनका अनुकरण करने की कोशिश करता था। उपवास करने से, मेरी गर्दन एक चेरी की डंठल की तरह पतली हो गई थी। लड़के मेरा मजाक उड़ाते थे: 'तुम्हारा सरि कट जाएगा!' उस समय मैंने क्या-क्या नहीं झेला!... खैर, जाने दो। इसके अलावा, मेरे बड़े भाई, यह देखकर कि मैं उपवास से बीमार पड़ रहा था और इस डर से कि मैं स्कूल पूरा नहीं कर पाऊँगा, मैं जो संतों के जीवन वाली छोटी कतिबें पढ़ रहा था, वे छीन लिया करते थे। बाद में, मैंने उन्हें जंगल में, सेंट बारबरा के चैपल में छिपा दिया; मैं चुपके से वहाँ जाता और उन्हें पढ़ता था। एक दिन, हमारे एक पड़ोसी कोस्टास ने मेरे भाई से कहा: 'मैं उसे समझा दूँगा; मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वह जो कतिबें पढ़ रहा है उन्हें फेंक दे और अपने उपवास और प्रार्थनाएँ भी छोड़ दे।' खैर, उसने मुझे ढूँढ़ नकिला (उस समय मैं लगभग पंद्रह साल का था) और मुझे डार्वनि के सिद्धांत के बारे में बताने लगा। वह बोलता ही गया और मुझे पूरी तरह से भ्रमति कर दिया। सरि चकराते हुए, मैं सीधे जंगल की ओर, सेंट बारबरा के चैपल की तरफ चल पड़ा। एक बार अंदर जाने के बाद, मैंने मसीह से वनिती करनी शुरू कर दी: 'हे मेरे मसीह, अगर आप मौजूद हैं, तो मुझे प्रकट हो जाइए!' मैंने यह बहुत देर तक दोहराया और बना रुके अपना सरि झुकाए रहा। गर्मी का मौसम था। मुझसे पसीने की धारियाँ बह रही थीं; मैं पूरी तरह से भीग गया था और पूरी तरह से थक गया था। लेकिन मैंने कुछ भी नहीं देखा और न ही सुना। तो यह पता चला कि ईश्वर ने भी मेरी मदद नहीं की — न तो किसी छोटे से संकेत से, न ही किसी खटखटाहट या छाया से — आखिरकार, मैं सरिफ एक बच्चा था। मानव परप्रेक्ष्य से या तर्क की कसौटी पर परखने पर, कोई भी चलि़ला उठेगा: 'हे मेरे ईश्वर, वह कतिना दयनीय है, वह बेचारा!' ग्यारह साल की उम्र से वह चट्टानों पर चढ़ रहा था, वह बहुत समर्पित था, और अब वह एक संकट से गुज़र रहा है। उन्होंने उसके दमाग में बेटुके सिद्धांत भर दिए हैं, उसका भाई घर पर उसके रास्ते में बाधाएँ डाल रहा था, इसलिए वह आपकी मदद माँगने के लिए जंगल में भाग गया!" लेकिन कोई जवाब नहीं आया: कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं!!! सभी झुकने से थककर, मैं बैठ गया। तब मैंने मन ही मन सोचा, "ठीक है, और जब मैंने कोस्टास से पूछा था कि वह मसीह के बारे में क्या सोचता है, तो उसने मुझे क्या कहा था?" उसने जवाब दिया, "वह सबसे दयालु, सबसे न्यायप्रिय व्यक्ति थे।" 'न्याय पर उनके उपदेश से, उन्होंने फरीसियों के हतियों को खतरा पहुँचाया, और ईर्ष्या के कारण उन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया।' और फिर मैंने फैसला किया: 'चूँकि मसीह इतने दयालु और न्यायप्रिय व्यक्ति थे, चूँकि उनसे पहले या बाद में कोई भी उनके जैसा नहीं रहा, चूँकि दुष्ट लोगों ने उन्हें ईर्ष्या और द्वेष के कारण मार डाला, तो इस व्यक्ति के लिए मेरे द्वारा किए गए से भी अधिक करना सार्थक है। उसके लिए मरना भी सार्थक है।' जैसे ही मैंने

²¹¹ इब्रानियों 12:1 देखें।

यह नरिणय लिया, मसीह प्रकट हो गए। वे बहुत अधिक प्रकाश के बीच प्रकट हुए; वह छोटी सी चैपल प्रकाश में नहा गई, और उन्होंने मुझसे कहा: 'मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा।'²¹² एक हाथ में उन्होंने एक खुला हुआ सुसमाचार पकड़ा हुआ था, जिसमें मैंने वही शब्द पढ़े। मेरे भीतर इतना आंतरिक परिवर्तन हुआ कि मैं बना रुके दोहराता रहा: "तो फिर चलो, कोस्टास, अब यहीं आओ, चलो ठीक से बात करें: क्या ईश्वर है या नहीं!" देखो, मसीह ने स्वयं को मुझ पर प्रकट करने के लिए मेरे अपने ईमानदार नरिणय का इंतजार किया। अगर वह एक बच्चे से ईमानदार नरिणय चाहता है, तो एक वयस्क से वह कतिनी अधिक अपेक्षा रखता होगा?

— कुछ लोग, गैरोना, संपूर्ण दैवीय व्यवस्था पर संदेह करते हैं।

— लेकिन कोई भी मसीह के बारे में इस पूरी कहानी को पूरी कथा कैसे मान सकता है? और क्या यह तथ्य कि भविष्यवक्ताओं ने, जो उनसे सात सौ साल पहले रहे और उनके बारे में इतनी विस्तार से बात की, मसीह के बारे में लिखा, इन लोगों को सोचने के लिए विराम नहीं देता? पुराने नियम में तो यह भी ठीक-ठीक लिखा है कि मसीह के लिए कतिनी रकम में विश्वासघात किया जाएगा,²¹³ और यह कियहूदी इस पैसे को मंदिर के कोष में नहीं रखेंगे, क्योंकि यह रक्त की कीमत होगी, बल्कि वे इसका उपयोग अजनबियों के दफन के लिए एक भूखंड खरीदने में करेंगे।²¹⁴ जो ज़करियाह और अन्य भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, वह पूरी हुई है। यह सब कतिना स्पष्ट है! विवरण कतिने सटीक हैं! पवित्र शास्त्र यहाँ तक बताता है कि मसीह के वस्त्रों का क्या किया जाएगा।²¹⁵ और यह सब उनकी जन्मतथि से कई वर्ष पहले ही पूर्वानुमानित था। तो फिर, [इन सबके बाद], मैं अवश्वास का विचार कैसे कर सकता हूँ? और फिर हम प्रेरित पौलुस को देखते हैं। वह मसीहियों का उत्पीड़क था और उसी उद्देश्य के लिए दमशिक जा रहा था। रास्ते में, प्रभु उसे प्रकट हुए और कहा: "सौल, सौल, तुम मुझे क्यों सता रहे हो?"²¹⁶ — "प्रभु, आप कौन हैं?" — सौल ने पूछा। "मैं मसीह हूँ, जैसा तुम सता रहे हो," — प्रभु ने उत्तर दिया। फिर मसीह ने अननयिस को संदेश भेजा, और उसने पूर्व उत्पीड़क का बपतिस्मा दिया! और उसके बाद प्रेरित पौलुस ने कतिनी पीड़ा सहन की, सभी राष्ट्रों में प्रचार करते हुए उसने कतिने पराक्रम किए! फिर शहीदों का समय आया। ग्यारह मिलियन शहीद! क्या, वे सब पागल थे? कोई भी यह सब कैसे भूल सकता है? क्या कोई जो सुसमाचार को थोड़ा भी पढ़ चुका है, विश्वास करने में विफल हो सकता है? यदि सुसमाचार में और भी विवरण होते, तो यह सभी को विश्वास करने में बहुत मदद करता। लेकिन ईश्वर ने जानबूझकर ऐसा नहीं होने दिया, ताकि लोगों की परख हो सके, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कौन उनसे प्रेम करता है, कौन उनके लिए बना चमत्कार या ऐसी किसी भी चीज़ की उम्मीद किए बलिदान देता है। मुझे लगता है कि एक धर्मपरायण व्यक्ति चाहे कतिनी भी नदि सुने, वे उस पर असर नहीं करती, उन पर कोई प्रभाव नहीं डालती।

²¹² यशायाह 11:25–26।

²¹³ ज़ेका. 11:1–13 देखें।

²¹⁴ देखें यरिम. 18:2; 32:9; मत्ती 27:7–9।

²¹⁵ देखें भजन संहिता 21:19।

²¹⁶ प्रेरितों के काम 9:1–18 देखें।

किसी को ईश्वर में सच्चे दिल से विश्वास करना चाहिए, न कि ऐसा करने के लिए चमत्कार की मांग करनी चाहिए। क्या आप जानते हैं कि मुझे कतिना बुरा लगता है जब बड़े लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि उन्हें विश्वास करने के लिए किसी तरह का चमत्कार देखना है? अगर वे बच्चे होते, तो उनकी उम्र के कारण उन्हें कुछ बहाना मलि सकता था।

लेकिन यह कहना, 'विश्वास करने के लिए, मुझे कुछ देखना जरूरी है,' जबकि खुद मसीह की खातिर कुछ भी नहीं किया—यह तो बहुत ही घटिया बहाना है! भले ही वे कोई चमत्कार देख लें, क्या उससे उन्हें कोई फायदा होगा? वे उसे जादू-टोना या उस जैसी कोई और चीज़ बताकर टाल देंगे।

"हमारा विश्वास बढ़ाओ"²¹⁷

— गेरोन्डा, कुछ संतों को, प्राचीन और आधुनिक दोनों, यह कैसे पता चलता था कि उनका अंतिम समय कब आएगा या कोई विशेष घटना कब घटित होगी?

— वे महान प्रेम, गहरी सादगी, वनिम्रता और विश्वास से परभाषित थे। उन्होंने तरक—जो विश्वास को कमजोर करता है—को अपने जीवन में घुसने नहीं दिया। विश्वास एक महान चीज़ है! देखिए, प्रेरित पतरस भी विश्वास के द्वारा लहरों पर चला था,²¹⁸ लेकिन जैसे ही तरक हस्तक्षेप हुआ, वह डूबने लगा। क्या मैंने आपको फादर चरालाम्पियोस के बारे में बताया है,²¹⁹ जो कुछ समय पहले कुटलमुश मठ में रहते थे? वह एक बहुत ही सरल, मेहनती और आध्यात्मिक भिक्षु थे। जब वह बूढ़े हो गए, तो फ्लू के एक गंभीर दौर ने उन्हें बेसितर पर ही सीमति कर दिया। डॉक्टर ने मठवासियों से उसके पास से न हटने के लिए कहा, क्योंकि उसके पास जीने के लिए बहुत कम समय बचा था। पादरी चरालाम्पीओस ने कंबलों के नीचे से यह सुनकर जवाब दिया: 'यह आप क्या कह रहे हैं? मैं तब तक नहीं मरूँगा जब तक ईस्टर नहीं आ जाता और मैं यह नहीं कह देता, "मसीह जी उठे हैं।"' और वास्तव में, लगभग दो महीने बीत गए, ईस्टर आया, उन्होंने कहा, 'मसीह जी उठे हैं,' पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया, और शांतिपूर्वक नधिन कर गए। यह सरल, ईश्वर-प्रेमी वृद्ध ईश्वर की एक सच्ची संतान बन गए और, ईश्वर के साथ मलिकर, उन्होंने अपने ही नधिन का दिन निरधारित किया!

— गेरोना, विश्वास कैसे मजबूत होता है?

— प्रार्थना के माध्यम से विश्वास मजबूत होता है। एक व्यक्ति जिसने छोटी उम्र से ही अपने भीतर विश्वास को विकसित नहीं किया है, लेकिन जो ऐसा करने के लिए इच्छुक है, वह प्रार्थना के माध्यम से इसे विकसित कर सकता है, मसीह से अपने विश्वास को बढ़ाने के लिए कह सकता है। आइए हम मसीह से अपने विश्वास को बढ़ाने और उसे गुणा करने के लिए कहें। प्रेरितों ने मसीह से क्या माँगा? 'हमारा विश्वास बढ़ाओ।' यदि आप 'हमें प्रदान करें' कहते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप स्वयं को ईश्वर के हवाले कर रहे हैं। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति स्वयं को ईश्वर के हवाले नहीं करता है, तो वह उस व्यक्ति को क्या प्रदान कर सकते हैं? हम ईश्वर से अपने विश्वास को बढ़ाने के लिए इसलिए नहीं पूछते कि हम चमत्कार कर सकें, बल्कि इसलिए पूछते हैं ताकि हम उनसे अधिक प्रेम कर सकें।

ईश्वर में विश्वास की वृद्धि में हर चीज़ योगदान करती है: फूल, टड्डियाँ, तारे और बजिली। हम इन सभी चीज़ों को देखते हैं, लेकिन वे किसी के भी काम नहीं आती, क्योंकि हमें 'टेलीग्राम' मिलते हैं—वचिर जो दुश्मन हमें भेजता है।

²¹⁷ लूका 17:5.

²¹⁸ मत्ती 14:30 देखें।

²¹⁹ देखें *एल्डर पैसियोस*। द होली माउंटेन फादर्स एंड स्टोरीज़ फ्रॉम द होली माउंटेन। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लावरा, 2001। पृ. 9

उदाहरण के लिए, यदि निमक न होता, तो समुद्र सड़ जाता। हालाँकि, यदि कोई आस्थाहीन व्यक्ति अपनी प्रयोगशाला में समुद्र के पानी का विश्लेषण करे, तो उसे उससे कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि उसने अपने दिल को उसके खारापन से नहीं शुद्ध किया है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति प्रेम और अच्छे इरादे से प्रयास करता है, तो द्रव्य प्रबोधन के माध्यम से, सबसे बड़ी बेतुकी बातें भी एक अलग रोशनी में दिखाई देंगी। और वे ईश्वर की महिमा करेंगे।

हर चीज़ हमें ईश्वर की ओर ले जानी चाहिए

— एल्डर, आपने हमें बताया कि हर चीज़ हमें ऊपर की ओर, ईश्वर की ओर ले जानी चाहिए। हम इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

— आप इसे अपने जीवन की यात्रा में मलिन वाली हर चीज़ से लाभ उठाकर प्राप्त करेंगे। क्या आप जानते हैं कि हर चीज़ में आध्यात्मिक अर्थ खोजने से एक व्यक्ति को क्या आध्यात्मिक लाभ और आध्यात्मिक अनुभव मिलता है? उदाहरण के लिए, सीमेंट के साथ काम करते समय, आप ईश्वर को पा सकते हैं; एक ईंट को छूकर, आप ईश्वर को छू सकते हैं। आप एक चीज़ लेते हैं, फिर दूसरी, फिर तीसरी, और आप ईश्वर को छू लेते हैं! हाँ, हर चीज़ में ईश्वर को छूँ! यदि कोई व्यक्ति इस तरह से काम नहीं करता है, यदि वह हर चीज़ में ईश्वर को नहीं देखता है, तो चर्च में भी—यदि उन्हें वहाँ ले जाया जाए—वे उनसे दूर ही रहेंगे। उन्हें गायन मंडली में गाने के लिए लगा दें, और वे ईश्वर से दूर ही रहेंगे। उसे पढ़ने के लिए एक आध्यात्मिक पुस्तक दी जाए, और वह फिर भी उससे दूर ही रहेगा। आप उसे जो भी आध्यात्मिक कार्य सौंपें, वह उसे ईश्वर के और करीब नहीं लाएगा।

हर व्यक्ति को, जो कुछ भी वह देखता है, जो कुछ भी वह करता है—चाहे सलाई करना हो या कढ़ाई करना—उससे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना चाहिए। कुछ फूल देखें? आपने ईश्वर को देखा है! कुछ सूअर देखें? हाँ, मेरे भाई, आपने एक बार फिर ईश्वर को देखा है! आप पूछ सकते हैं: 'तो क्या, फिर? क्या मैं एक सूअर के माध्यम से भी ईश्वर को देख सकता हूँ?' हाँ, एक सूअर के माध्यम से। देखो ईश्वर ने इसे कैसे बनाया है! उसने इसे एक थूथन दिया—जिससे वह जमीन खोद सके और स्पर्श से पौधों के कंद ढूँढ़ सके। इसका थूथन ऐसा है कि वह लोहे, कांच, कांटों और इसी तरह की तेज धार वाली चीज़ों से अप्रभावित रहता है। जब हम कोई सुंदर, सुगंधित फूल देखते हैं तभी हमें यह नहीं कहना चाहिए, 'ईश्वर ने इसे कतिनी बुद्धिमानी से बनाया है!' जब हम एक सूअर को देखते हैं, तो हमें वहाँ भी ईश्वर को देखना चाहिए! और इससे भी बेहतर, हमें इस तथ्य पर विचार करना चाहिए कि ईश्वर मुझे एक सूअर के रूप में बना सकते थे, लेकिन इसके बजाय उन्होंने मुझे एक इंसान के रूप में बनाया! क्या यह आपको अजीब लगता है? क्या, ईश्वर हमें सूअर नहीं बना सकते थे? शिकारी जंगली सूअरों को घायल कर देते हैं और अक्सर उन घायल जानवरों को ढूँढ़ नहीं पाते। फिर शिकारी जानवर आकर उस बेचारी सूअर को जीवित ही खा जाते हैं। बनिा किसी इलाज के, वह सूअर कष्ट सहता है, भले ही उसने अपने सर्पट को नाराज़ करने के लिए कुछ भी नहीं किया हो। जबकि मनुष्य ने अपने सर्पटकिर्ता को घायल किया है, और करना जारी रखता है, और अक्सर कृतघ्नता से व्यवहार करता है। इसीलिए मैं आपसे सही आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए कह रहा हूँ। ईश्वर ने सब कुछ कतिनी अच्छी तरह से व्यवस्थित किया है! और जानवरों को देखो: वह उन्हें कतिनी ताकत देता है! डॉक्टर कहते हैं कि मिजबूत मांसपेशियों के लिए मांस खाना ज़रूरी है। लेकिन बैलों को देखो: ये बेचारे जीव घास खाते हैं, फिर भी उनकी मांसपेशियाँ कतिनी शक्तिशाली होती हैं! क्या आप इसमें ईश्वर को नहीं देख सकते? यानी, ईश्वर उन्हें केवल उसी घास के ज़रिए शक्ति देता है जो वे खाते हैं। वह मनुष्य पर कतिना अधिक अनुग्रह करता है! क्या आप इसे समझते हैं?

यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार अपने ऊपर काम करता है, तो वह एक ऐसी अवस्था में पहुँच जाता है जहाँ उसे न केवल संतों से, बल्कि पापियों से भी लाभ होता है। एक संत अपने पवित्र उदाहरण से हमें मजबूत बनाता है। एक पापी, अपने पतन के उदाहरण से हमें रोकता, नयित्तरति करता और पीछे रखता है [और हम पाप से बचते हैं], यह इस लिए नहीं कि दूसरों की नजरों में न गरि, बल्कि इस लिए कि ईश्वर को दुखी न करें।

वश्वास की शक्ति

— गेरौन्डा, मेम्ने की मुहर क्या है?

— मेमना कौन है?

— मसीह।

— खैर, मसीह के पास कसि तरह की मुहर है? बपतस्मा में, पुरोहिती एक क्रॉस के आकार में पवित्र क्रस्मि से ईसाई के माथे पर अभिषिक्त करता है, यह कहते हुए: 'पवित्र आत्मा की देन की मुहर।' इसके बाद, जब भी कोई ईसाई क्रॉस का चहिन बनाता है, तो वे प्रभु के उद्धारकारी कष्टों का सम्मान करते हैं और क्रॉस की शक्ति को पुकारते हैं, जो हमारे मसीह की क्रॉस पर मृत्यु की शक्ति है। 'हे मसीह के क्रॉस, अपनी शक्ति से हमारा उद्धार करो' कहकर, हम क्रॉस पर प्रभु की बलिदान की शक्ति को पुकारते हैं। यही कारण है कि क्रूस में महान शक्ति है। उदाहरण के लिए, एक तूफान आ गया है। बजिली चमकती है, और घंटी के मीनार पर लगे एक बड़े लोहे के क्रूस पर भी बजिली गरि सकती है। हालाँकि, यदि इस लोहे के क्रूस के नीचे खड़ा एक ईसाई इस तरह का एक छोटा क्रूस पहने हुए है और कहता है, 'हे मसीह के क्रूस, अपनी शक्ति से मेरी रक्षा कर,' तो बजिली उसे नुकसान नहीं पहुँचाएगी। पहले मामले में, प्रकृतिके नियम प्रभावी होते हैं: बजिली क्रूस पर गरिती है और उसे जमीन पर गरि देती है। दूसरे मामले में, यह छोटा सा क्रूस उस वश्वासी की रक्षा करता है जिसने मदद के लिए क्रूस की शक्ति को पुकारा है।

— गेरौन्डा, ऐसा क्यों है कि भले ही मैं वश्वास के साथ कुछ माँगता हूँ, परमेश्वर मुझे वह क्यों नहीं देता?

— तुम वश्वास करते हो और माँगते हो, लेकिन यदि तुममें वनिमरता नहीं है या अहंकार की प्रवृत्ति है, तो ईश्वर वह नहीं देता जो तुम माँगते हो। किसी के पास न केवल 'सरसों के दाने के बराबर' (220) बल्कि एक कलौ सरसों के बराबर भी वश्वास हो सकता है; फरि भी अगर उस वश्वास के साथ वनिमरता नहीं है, तो ईश्वर कार्य नहीं करेंगे, क्योंकि यह उस व्यक्ति के भले के लिए नहीं होगा। अगर अहंकार है, तो वश्वास काम नहीं करता।

यदि कोई व्यक्ति जीवन में वश्वास के साथ, बनिा संदेह के, और ईश्वर की मदद माँगते हुए चलता है, तो उनके साथ [चमत्कारिक] घटनाएँ धीरे-धीरे होने लगती हैं: पहले छोटी-छोटी, फरि बड़ी, और वे अधिक वश्वास वाले व्यक्ति बन जाते हैं। दविय रहस्यों का स्वयं अनुभव करके, कोई व्यक्ति एक धर्मशास्त्री बन जाता है, क्योंकि वे उन्हें मन से नहीं, बल्कि वास्तविकता में अनुभव करते हैं। उनका वश्वास लगातार बढ़ता जाता है, क्योंकि वे दैवीय घटनाओं के क्षेत्र में, एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करते हैं। हालाँकि, ईश्वर के रहस्यों का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए, मनुष्य को अपने पुराने स्व को त्यागना चाहिए और एक तरह से, पतन से पहले की अवस्था में लौटना चाहिए। मनुष्य में कोमलता और सरलता होनी चाहिए — ताकि उसका वश्वास अटूट हो सके। एक को बनिा शर्त यह वश्वास करना चाहिए कि ऐसा

²²⁰ मत्ती 17:20; लूका 17:6.

कुछ भी नहीं है जो ईश्वर नहीं कर सकता। और क्या आप जानते हैं कतिब आप कैसा महसूस करेंगे, जब आप यह सुनेंगे कि कोई ईश्वर की मदद के संबंध में वशिवास नहीं करता या संदेह करता है?

— जेरोंडा, यदि किसी व्यक्ति के पास आस्था है, तो क्या वह प्रार्थना के माध्यम से घटनाओं के प्रवाह को बदल सकता है?

— यदि किसी के पास दृढ़ आस्था हो, तो वह कई चीजें बदल सकता है। भले ही कोई व्यक्ति किसी पर्वतीय नदी के तल के बीच में घर बना ले और एक उग्र बाढ़ उस पर आ जाए, यदि उस व्यक्ति की आस्था दृढ़ हो और उसने ईश्वर से पूरे मन से प्रार्थना की हो, तो वह बाढ़ वापस मुड़ जाएगी। हालाँकि, उनका वशिवास इतना दृढ़ होना चाहिए कि किसी चमत्कार (जैसे समुद्र का सूख जाना, ट्रैक्टरों द्वारा उसे जोता जाना, और मछलियों को ट्रकों में लादा जाना) के बारे में सुनकर भी वे उस पर वशिवास कर लें। वह यह देखने के लिए भी नहीं जाएगा कि ऐसा है भी या नहीं। भले ही वह समुद्र से सौ मीटर दूर रहता हो और अपने घर से यह न देख पाता हो कि क्या हो रहा है, वह यह जांचने के लिए नहीं जाएगा कि यह सच है या नहीं, क्योंकि उसे कोई संदेह नहीं है। वह जानता है कि ईश्वर के लिए सब कुछ संभव है, कि दिव्य शक्त किसी भी चीज से सीमिति नहीं है, और इसलिए उससे परे कुछ भी उसे दलिचस्प नहीं लगता। ऐसा है उसका वशिवास। केवल एक सच्चा वशिवासी ही वास्तव में जीता है और वास्तव में ईश्वर की संतान है।

आस्था ईश्वर में वशिवास की नींव है

— गेरोन्डा, मुझे क्या करना चाहिए? मुझे सुरक्षिति महसूस नहीं हो रहा है; मैं चितिति हूँ।

— मेरे बच्चे, ईश्वर में अपनी सुरक्षा खोजो। या क्या तुम केवल कार सीटबेल्ट के बारे में ही जानते हो? क्या ईश्वर की सुरक्षा तुम्हारे लिए अज्ञात है? खुद पर क्रॉस का नशान बनाओ और कुछ भी करने से पहले कहो: 'हे मेरे मसीह, हे परमेश्वर की मेरी अतिपवित्र माता, मेरी मदद करो।' ईश्वर में वशिवास से बड़ी कोई सुरक्षा है क्या? ईश्वर को स्वयं सौंप देने से, एक व्यक्ति में वह लगातार 'प्रीमियम' पेट्रोल भरते रहते हैं, और उसकी आध्यात्मिक गाड़ी कभी नहीं रुकती: वह दौड़ती ही रहती है। जतिना हो सके चौकस रहें, प्रार्थना करें, खुद को ईश्वर के हवाले कर दें, और किसी भी मुश्कलि में वह आपकी मदद करेंगे। चिति और बेचैनी से छुटकारा पाने के लिए, ईश्वर में नशिरता वशिवास के माध्यम से अपने जीवन को सरल बनाएं।

— गेरोन्डा, मैं हमेशा जो कहा जाता है, उसे डर और हचिकचाहट से शुरू करती हूँ, और डर के मारे हो सकता है कि मैं उसे ठीक से न कर पाऊँ।

— मेरे प्रिय बच्चे, क्रॉस का चहिन बनाओ, और जैसा कहा जाए वैसा करो। अगर तुम कहते हो, 'हमारे पवित्र पतिताओं की प्रार्थनाओं के द्वारा...' — तो क्या इतने सारे संतों में से एक भी तुम्हारी मदद नहीं करेगा? ईश्वर में अपना वशिवास कभी मत खोना। अपने आप को सीमिति मानवीय तर्क तक सीमिति न रखें: ऐसा करने से, आप खुद को पीड़ा देते हैं और दैवीय मदद में बाधा डालते हैं। यदि अपने समझदार मानवीय कार्य करने के बाद, आप खुद को और अपने हर काम को ईश्वर के हवाले कर दें, तो यह न केवल आपकी, बल्कि दूसरों की भी बहुत मदद करेगा। भगवान पर भरोसा रखना एक महान बात है। एक बार, चार महिला डॉक्टर मेरा खून निकाल रही थीं। पहली आई — उसने मुझे बहुत तंग किया, लेकिन नस नहीं ढूँढ सकी। दूसरी — उसके साथ भी यही हुआ। तीसरी आई — इस क्षेत्र की एक वशिषज्ज — लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तभी, चौथी वहाँ से गुजरी: यह देखकर कि वे मुझे कैसे सता रहे थे, उसने भी इसे आजमाने का फैसला किया। पहले उसने क्रॉस का नशान बनाया, और तुरंत नस ढूँढ ली, क्योंकि उसने ईश्वर की मदद मांगी थी। हालाँकि, बाकी लोग किसी न किसी तरह से केवल खुद पर ही भरोसा कर रहे थे।

अपने आप को ईश्वर के हाथों सौंपना एक महान बात है। लोग अपने लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, बना ईश्वर की इच्छा की परवाह किए या अपने कार्यों को उसके अनुरूप बनाने का प्रयास किए। हमें घटनाओं के क्रम को ईश्वर पर सौंप देना चाहिए, जबकि स्वयं अपने कर्तव्य को लगन से पूरा करना चाहिए। एक व्यक्ति तब तक पीड़ित रहेगा जब तक वह ईश्वर पर इतना भरोसा नहीं करता कि वह खुद को पूरी तरह से उनके हाथों में सौंप दे। आमतौर पर, लोग पहले मानवीय सांत्वना की ओर रुख करते हैं, और लोगों से नाराज होने के बाद ही ईश्वर की ओर मुड़ते हैं। हालाँकि, यदि हम दुख नहीं सहना चाहते, तो हमें द्रव्य सांत्वना की तलाश करनी चाहिए, क्योंकि वही एकमात्र सच्ची सांत्वना है। ईश्वर में विश्वास प्राप्त नहीं है:²²¹ हमें उस पर भरोसा भी करना चाहिए। ईश्वर में भरोसा करने से उसकी मदद मिलती है। एक ईसाई मृत्यु तक विश्वास करता है और स्वयं को ईश्वर के हवाले कर देता है। और फिर वह स्पष्ट रूप से ईश्वर का हाथ देखता है जो उसे बचा रहा है।

प्रेरित पौलुस कहते हैं कि विश्वास का अर्थ है अदृश्य में विश्वास करना, न कि केवल दृश्य में।²²² अपने भविष्य को ईश्वर के हाथ सौंपकर, हम उन्हें हमारी मदद करने के लिए बाध्य करते हैं। विश्वास ईश्वर में निश्चित भरोसे की नींव है। ऐसा विश्वास रखकर और गुप्त रूप से प्रार्थना करके, एक व्यक्ति आशा के फल प्राप्त करता है। ईश्वर में विश्वास निरंतर प्रार्थना है, और सही क्षण पर यह द्रव्य परिणामों की ओर ले जाती है। और फिर यह स्वाभाविक है कि एक व्यक्ति दैवीय जीवन जिए और स्तुति से परिपूर्ण हो जाए: *'पवतिर, पवतिर, पवतिर है सेनाओं का प्रभु'*²²³ क्योंकि ईश्वर में विश्वास करके, एक व्यक्ति अपने जीवन को स्वर्ग बना सकता है। वह हर बात के लिए उसकी महिमा करता है और एक प्रेमपूर्ण पति की तरह उसकी मार्गदर्शन को स्वीकार करता है। अन्यथा, एक व्यक्ति अपने जीवन को नरकीय यातना में बदल देता है। इस जीवन में भी स्वर्गीय आनंद का स्वाद चखना एक महान बात है।

— जेरोंडा, जब शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य की बात आती है, तो किसी को कसि हृद तक खुद को ईश्वर के हाथों में सौंपना चाहिए?

— सबसे पहले, व्यक्ति को अपना भरोसा ईश्वर में रखना चाहिए, और ईश्वर के बाद, हमारी मदद करने में सक्षम व्यक्ति में।

विश्वास और प्रेम

— जेरोंडा, विश्वास और प्रेम के बीच क्या संबंध है?

— पहले विश्वास होता है, और फिर प्रेम आता है। प्रेम करने के लिए, विश्वास करना आवश्यक है। कोई व्यक्ति उस चीज़ से प्रेम नहीं कर सकता जिसमें वह विश्वास नहीं करता। इसलिए, ईश्वर से प्रेम करने के लिए, उसमें विश्वास करना आवश्यक है। अपने विश्वास के अनुसार ईश्वर और अपने पड़ोसी के लिए आशा, प्रेम और आत्म-बलदान आएगा। ईश्वर में गहरी आस्था, उनके और उनकी प्रतिमा — हमारे fellow human beings — के प्रति गहरे प्रेम को जन्म देती है। और यहाँ तक कि दुर्भाग्यपूर्ण जानवर भी हमारे प्रेम की प्रचुरता से पोषित होते हैं, एक ऐसा प्रेम जो हृदय में समा नहीं पाता और बाहर छलक जाता है। हम जितना अधिक विश्वास करेंगे, उतना ही अधिक प्रेम करेंगे। यदि

²²¹ इस संदर्भ में, 'विश्वास' का अर्थ ईश्वर के अस्तित्व की केवल स्वीकृति है, जो मसीह में जीवन के लिए अपर्याप्त है।

²²² इब्रानियों 11:1 देखें।

²²³ यशायाह 6:3.

हमारा विश्वास सुस्त है, तो हमारा प्रेम भी सुस्त होगा। लेकिन यदि हमारा विश्वास उत्साही है, तो हमारा प्रेम भी उत्साही होगा।

हमारे विश्वास के साथ प्रेम भी होना चाहिए। प्रेम की मेहनत इसी से शुरू होती है। कोई व्यक्ति जितना अधिक प्रेम में मेहनत करता है, उसका विश्वास और प्रेम उतना ही अधिक बढ़ता है। प्रेम की मेहनत में, ईश्वर की कृपा पर मनन करने से व्यक्ति को बहुत मदद मिलती है। ईश्वर में विश्वास करने वाला व्यक्ति इस बात पर विचार नहीं करता कि स्वर्ग है या नहीं। वे प्रयास इसलिए करते हैं क्योंकि वे ईश्वर में विश्वास रखते हैं और उससे प्रेम करते हैं। ईश्वर से प्रेम न करने वाला व्यक्ति यह सोचने लगेगा: 'प्रयास करने की क्या ज़रूरत है? यह अभी भी एक सवाल है कि स्वर्ग है भी या नहीं और क्या अंत में न्याय होगा...' यदि कोई व्यक्ति कृतघ्न है, तो आप उसके लिए कुछ भी करें, वह कृतघ्न ही रहेगा। ईश्वर के प्रति प्रेम से परंपूर्ण व्यक्ति परीक्षा की घड़ी में भी उसकी महिमा करता है और धीरे-धीरे उस बदि पर पहुँच जाता है जहाँ वह लगातार ईश्वर का धन्यवाद करता है, जिससे उसकी आत्मा में एक द्रव्य परिवर्तन होता है, और वह लगातार आनंदित और प्रसन्न रहता है। फिर भी, कुछ ऐसे लोग भी हैं जो किसी भी परीक्षा का सामना नहीं करते—केवल आशीर्वाद ही पाते हैं—और फिर भी वे कभी संतुष्ट नहीं होते।

ईश्वर के प्रति प्रेम के बाद त्याग आता है। और जब नस्वार्थ त्याग होता है, तो एक व्यक्ति के साथ द्रव्य घटनाएँ और चमत्कार होने लगते हैं। किसी को केवल ईश्वर की खातिर ही बलदान देना चाहिए, जिन्होंने इस ब्रह्मांड की रचना की और हम पर इतनी सारी कृपाएँ बरसाते हैं। मूर्तपूजकों का उदाहरण लें: उन्होंने प्रकृतिको देवता बनाया, सूर्य और नदियों की पूजा की, और अपने विश्वास के लिए अपना बलदान करने तक पहुँच गए। और यदि उन्होंने किसी प्राणी के लिए अपना बलदान दिया, तो हमें सृष्टिकर्ता के लिए कतिना अधिक बलदान करना चाहिए!

लोग विश्वास नहीं करते, और इसीलिए वे अपना बलदान नहीं करते। सारी उदासीनता यही से शुरू होती है। कोई ईश्वर की नदि करता है, कोई आधे मन से विश्वास करता है और दुखी रहता है। सच्ची प्रसन्नता के लिए, विश्वास और प्रेम करना आवश्यक है।

"मेरे बनि तुम कुछ भी नहीं कर सकते"²²⁴

यदि कोई व्यक्ति पीड़ा रहित जीवन जीना चाहता है, तो उसे मसीह की इस बात पर विश्वास करना चाहिए: *'मेरे बनि तुम कुछ भी नहीं कर सकते'*। अर्थात्, व्यक्ति को—शब्द के सकारात्मक अर्थ में—अपने आप से नरिंश होकर अपना विश्वास ईश्वर की शक्ति में रखना चाहिए। अपने आप से—शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में—नरिंश होकर, व्यक्ति ईश्वर को पाता है। 'मैंने अपनी सारी आशा आप पर ही रखी है।'²²⁵ सबसे आध्यात्मिक लोग भी अपने जीवन के बारे में नश्चिति नहीं हो सकते; इसलिए, वे कभी भी ईश्वर में अपने विश्वास की सीमाओं से बाहर नहीं जाते। वे अपनी आशा ईश्वर में रखते हैं और केवल अपने 'स्व' से नरिंश होते हैं, क्योंकि 'स्व' ही व्यक्ति को सभी आध्यात्मिक दुर्भाग्य लाता है।

आत्मविश्वास हमारा सबसे बड़ा और सबसे खतरनाक दुश्मन है, क्योंकि जब हमें इसकी सबसे कम उम्मीद होती है, तो यह नरिंदयता से हमारे द्वारा बनाई गई चीजों को चकनाचूर कर देता है, और हमें, हमारी दुर्दशा में, असहाय छोड़ देता है। जब कोई व्यक्ति आत्मविश्वासी होता है, तो वह सुन्न हो जाता है और कार्य करने में असमर्थ हो जाता है, या

²²⁴ यूहन्ना 15:5.

²²⁵ महान संध्या-प्रार्थना में थियोडोकोस का भजन, स्वर 6।

फरि वह अकेले ही संघर्ष करता है। उसके बाद, यह स्वाभाविक है कि वे दुश्मन से हार जाते हैं या असफलता का सामना करते हैं और अपना 'स्व' चूर-चूर कर देते हैं। अक्सर, दयालु ईश्वर बहुत बुद्धिमानी से हमें अपनी द्रव्य हस्तक्षेप और हमारे आत्मवश्वास के कारण हुई असफलता, दोनों को देखने की अनुमति देते हैं। जीवन में हमारे साथ घटिति होने वाली हर घटना को देखकर और उसका अनुभव करके, हम अनुभव प्राप्त करते हैं, अधिक चौकस हो जाते हैं, और इस प्रकार समृद्धि प्राप्त करते हैं।

मसीह ने पहले परमेश्वर की शक्ति में वश्वास मांगा और फरि चमत्कार किया। उन्होंने कहा, 'यदि तुम परमेश्वर की शक्ति में वश्वास करते हो, तो तुम चंगे हो जाओगे।'²²⁶ यह वैसा नहीं है जैसा कि आज कुछ लोग गलती से दावा करते हैं: 'मनुष्य में शक्तियाँ हैं, और उन पर वश्वास करके, वह कुछ भी कर सकता है।' क्या सुसमाचार ठीक यही बात नहीं कहता: 'वश्वास करो?' परणामस्वरूप, हमारे शब्द सुसमाचार के अनुरूप हैं। हाँ, मसीह ने पूछा: "क्या तुम वश्वास करते हो?" — लेकिन ऐसा पूछकर, उनका आशय यह था: "क्या तुम परमेश्वर में वश्वास करते हो? क्या तुम वश्वास करते हो कि परमेश्वर यह कर सकते हैं?" वह चाहते थे कि कोई व्यक्ति यह पुष्टि करे कि वह ईश्वर में वश्वास करता है, और फरि वह उसकी मदद करे। सुसमाचार में कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि किसी को अपनी स्वार्थपरता में वश्वास करना चाहिए। यह हमसे ईश्वर में, इस तथ्य में वश्वास करने का आह्वान करता है कि ईश्वर मेरी मदद कर सकते हैं, मुझे चंगा कर सकते हैं। लेकिन ये लोग सुसमाचार के शब्दों का अर्थ तोड़-मरोड़ कर कहते हैं: 'एक व्यक्ति में शक्ति होती है, और उसे खुद पर वश्वास करना चाहिए।' लेकिन अगर कोई खुद पर वश्वास करता है, तो इसमें या तो स्वार्थपरता या फरि शैतानी-बाधा शामिल होती है।

— गैराना, जब कोई चमत्कार होता है, तो ये लोग कहते हैं कि व्यक्ति ने वश्वास किया था कि ऐसा होगा, और इसलिए ऐसा हुआ।

— प्रश्न को इस तरह स्व-केंद्रित ढंग से पेश करने के पीछे शैतान का काम है। वे मसीह के शब्दों, 'क्या तुम वश्वास करते हो?', को अपने 'मैं वश्वास करता हूँ' से भ्रमति करते हैं। यही से दुनिया में हो रहा यह सारा पागलपन शुरू होता है। और फरि वे आपसे कहते हैं: 'यदि आपको अपने दम पर एक व्यक्ति बिना है तो आपको न तो महान का सम्मान करना चाहिए और न ही छोटे का।' इसीलिए आप ऐसे आह्वान सुनते हैं: 'अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्हें कुचल दो, उन्हें तोड़ दो।' सम्मान को अतीत की बात मान लिया गया है, और शैतान की वजिय होती है। इस बीच, यदि कोई बच्चा भी अपने माता-पिता या बड़ों से थोड़ी भी असम्मानजनक बात करने की हिम्मत करता है, तो ईश्वर की कृपा उससे दूर हो जाती है, और वह शैतानी प्रभावों का शिकार हो जाता है! तो फरि क्या कहा जा सकता है यदि कोई व्यक्ति अभद्रता को ही अपना जीवन जीने का तरीका बना ले!

— और अगर, गैराना, कोई व्यक्ति ईश्वर में वश्वास करने का दावा करते हुए भी यह वश्वास नहीं करता कि ईश्वर हमारी रक्षा करते हैं, तो क्या होगा?

— तो वह खुद को एक देवता बना लेता है। वह ईश्वर में कैसे वश्वास कर सकता है?

— वह हर सुबह क्रॉस का चहिन बनाता है।

— वह कहता है: 'मैं ईश्वर में वश्वास करता हूँ, लेकिन ईश्वर ने हमें बुद्धि इसलिए दी है ताकि हम अपनी मर्जी से काम कर सकें।' या ऐसा: 'मैं एक देवता हूँ। क्या धर्मग्रंथ यह नहीं कहते: 'तुम देवता हो, और तुम सब परम-उच्च के

²²⁶ देखें मत्ती 9:29; मरकुस 9:23.

पुत्र हो" ²²⁷ लेकिन अनुग्रह से देवता बनने के लिए, किसी के पास ईश्वर का अनुग्रह होना चाहिए, और ऐसा व्यक्ति इसके बारे में नहीं सोचता। वह अपने ही तर्क से खुद को देवता बना लेता है। ईश्वर की कृपा प्राप्त करना और कृपा से देवता बनना एक बात है, लेकिन स्वयं को देवता बनाना बिल्कुल दूसरी बात है। भ्रम इस बात में है: एक व्यक्ति स्वयं को देवता बनाता है, और अंत में उस बटु पर पहुँच जाता है जहाँ वह नास्तिक बन जाता है।

वह समय आएगा जब हर कोई विश्वास करेगा

— गेरोन्डा, ऐसा कैसे होता है कि विश्वासी नास्तिकता की ओर चले जाते हैं?

— दो संभावित परिदृश्य हैं। पहले मामले में, कोई व्यक्ति बहुत धार्मिक आस्तिक रहा हो सकता है; द्रव्य शक्ति ने उनके जीवन में कई बार काम किया हो, और उन्होंने कई स्पष्ट रूप से चमत्कारी घटनाओं का अनुभव किया हो, लेकिन बाद में वे एक ऐसे बटु पर पहुँच गए जहाँ उनका विश्वास धूमल हो गया। ऐसा तब होता है जब, उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति, बिना ठीक से सोचे-समझे, स्व-केंद्रित तपस्या में कूद पड़ता है—अर्थात्, वह आध्यात्मिक जीवन को एक सूखे, यांत्रिक तरीके से अपनाता है और कहता है: 'अमुक संत ने तपस्या कैसे की थी? मैं भी वैसा ही करूँगा।' और इस प्रकार वह अपना लापरवाह प्रयास शुरू करता है। लेकिन धीरे-धीरे — बिना यह महसूस किए भी — उसके भीतर एक झूठा भाव जड़ जमाने लगता है कि भले ही वह किसी विशेष संत के स्तर तक नहीं पहुँचा है, फिर भी वह कम से कम उससे बहुत दूर नहीं हो सकता। और वह अपने प्रयास में लगा रहता है। लेकिन जहाँ तक उस बटु तक अनुग्रह उसकी मदद कर रहा था, वहीं से वह उसे छोड़ने लगता है। क्योंकि ईश्वर की कृपा का अहंकार से क्या लेना-देना? परिणामस्वरूप, वह व्यक्ति अब पहले की तरह प्रयास नहीं कर पाता, और खुद पर जबरदस्ती करने लगता है। हालाँकि, यह आत्म-दमन उसके भीतर चिता को जन्म देता है। अहंकार का कोहरा भी उस पर छा जाता है, जो उसे भ्रम में डाल देता है। और, उसने जो कुछ भी हासिल किया है, द्रव्य अनुग्रह और चमत्कारिक घटनाओं के बावजूद, अवश्वास के विचार धीरे-धीरे उसके मन में आने लगते हैं, और वह ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह करने लगता है।

दूसरा परिदृश्य तब है जब कोई अनपढ़ व्यक्ति धर्मशास्त्र में गहराई से उतरने की कल्पना करता है। ओह, वह स्पष्ट रूप से ठीक से होश में नहीं है! मैं किसी विशेष मत से संक्षेप में परिचित होने की बात नहीं कर रहा हूँ। लेकिन यदि कोई शक्ति व्यक्ति अहंकार के कारण मतवाद के मामलों में शामिल होना चाहता है, तो ईश्वर की कृपा उस अहंकार के कारण उसे छोड़ देगी, और उसके भीतर संदेह उत्पन्न होने लगेंगे। बेशक, मैं उन लोगों के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ जिनमें श्रद्धा है। एक भक्त व्यक्ति शक्ति नहीं हो, फिर भी, अपने तर्क का उपयोग करके और जहाँ तक उसकी समझ में आता है, किसी विशेष सिद्धांत से परिचित होकर, वह उसे समझ सकता है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति जो आध्यात्मिक जीवन में विश्वास नहीं रखता, सिद्धांतों के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो, भले ही उसमें पहले थोड़ा-बहुत विश्वास था, बाद में उसका विश्वास बिल्कुल भी नहीं रहेगा।

— जेरोन्डा, हमारे युग में अवश्वास बहुत व्यापक हो गया है।

— हाँ, लेकिन अक्सर यह स्पष्ट होता है कि जो लोग कहते हैं कि ईश्वर में विश्वास नहीं करते, उनमें भी आस्था की एक छिपी हुई चिंगारी होती है। एक बार, एक नौजवान ने मुझसे कहा: 'मैं विश्वास नहीं करता कि ईश्वर का अस्तित्व है।' — 'थोड़ा और पास आओ,' मैंने उत्तर दिया। 'क्या तुम कोयल की कूक सुन सकते हो? यह उपहार उसे किसने दिया?'

²²⁷ भजन संहिता 81:6.

उस बेचारे लड़के के मन में तुरंत कोमलता आ गई। उसके अवशिवास की कठोरता मटि गई, और उसका चेहरा बदल गया। एक अन्य अवसर पर, दो आगंतुक मेरी कुटिया पर आए। वे लगभग पैंतालीस वर्ष के थे, और उनका जीवन बहुत सांसारिक था। जैसे हम भिक्षु कहते हैं, 'चूँकयिह जीवन व्यर्थ है, हम सब कुछ त्याग देते हैं,' वैसे ही इन दोनों ने, जबकवि युवा थे, ठीक इसके विपरीत नरिणय लिया था: 'क'कोई दूसरा जीवन नहीं है।' और इस प्रकार उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और सांसारिक जीवन में खुद को झोंक दिया। वे उस बटु पर पहुँच गए थे जहाँ वे आत्मा और शरीर दोनों से खंडहर बन गए थे। उनमें से एक का पति दुख से मर गया। दूसरे ने अपनी माँ की संपत्ति उड़ा दी और उसे दिल की बीमारी में डाल दिया। हमारे उनसे बात करने के बाद, उन्होंने चीजों को अलग नज़रिए से देखना शुरू कर दिया और वलिाप करने लगे: 'हम अब किसी काम के नहीं रहे।' मैंने उनमें से एक को उसकी माँ के लिए एक आइकन दिया। मैं दूसरे को भी एक आइकन देना चाहता था, लेकिन उसने उसे नहीं लिया। उसने कहा, 'मुझे वे छोटी तख्तियाँ दें जो आप आरी से काट रहे हैं।' 'मुझे ईश्वर में विश्वास नहीं है, लेकिन मुझे संतों में विश्वास है।' तब मैंने उत्तर दिया: 'चाहे कोई व्यक्ति आईना हो या टनि के डबिबे का ढक्कन, अगर उन पर सूरज की करिणें नहीं पड़ती, तो वे चमकेंगे नहीं। संत ईश्वर की कृपा की करिणों से चमके, ठीक वैसे ही जैसे तारे सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करते हैं।'

दुर्भाग्यपूर्ण युवा विभिन्न सिद्धांतों से मस्तिष्क-धोया जा रहे हैं। जब मैं अपने कलवि में आगंतुकों का स्वागत करता हूँ, तो मैंने देखा कि आमतौर पर पचास की उम्र के कुछ मार्क्सवादी युवाओं के समूह में शामिल हो जाते हैं और उन्हें मस्तिष्क-धोया करते हैं। मार्क्सवादी विश्वास नहीं करते, और यदि आप उन्हें ईश्वर के अस्तित्व को साबित करने की कोशिश करते हैं, तो वे ईश्वर के बारे में नरिणय करना शुरू कर देते हैं और आप पर सवाल दागते हैं: 'ऐसा क्यों है, और वैसा क्यों है?' भविष्यवक्ता यशायाह कहते हैं कि जो लोग उद्धार नहीं चाहते, वे समझते नहीं हैं।²²⁸ एक बार मैंने उनसे कहा: 'क्या तुम तारे देखते हो? वे नट्स से आकाश में बोल्ट किए नहीं गए हैं; कोई उन्हें गगन में थामे हुए है। जो भविष्यवक्ताओं ने मसीह के बारे में बताया था, वह पूरा हो चुका है। हमारे पास इतने सारे संत हैं जो कभी भयंकर अविश्वासी, जल्लाद और मूर्तपूजक थे, लेकिन बाद में उन्होंने मसीह में विश्वास किया और शहादत के माध्यम से अपने विश्वास की गवाही दी। उनमें से कुछ की जीभ काट दी गई ताकि वे मसीह के बारे में न बोल सकें, फिर भी जीभ कटने के बाद वे और भी बेहतर बोल सके! चर्च हर दिन इतने सारे संतों का स्मरणोत्सव मनाती है! उनकी उपस्थिति बहुत जीवंत है। और भले ही हम उन्हें खोजें नहीं, वे स्वयं ही हमें ढूँढ लेते हैं। रेगस्तान में कई तपस्वी, जिनके पास कोई कैलेंडर नहीं होता और वे यह नहीं जानते कि चर्च किस संत का स्मरणोत्सव मना रही है, प्रार्थना में कहते हैं: 'दनि के संतों, हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।' और संत उनके सामने प्रकट होते हैं और उन्हें अपने नाम बताते हैं; इससे भी बढ़कर, इन संतों के नाम कठनि होते हैं। बाद में, तपस्वी कैलेंडर में देखते हैं और उन्हें एहसास होता है कि जो संत उनके सामने प्रकट हुए थे, उनका उत्सव उसी दिन मनाया जा रहा था।²²⁹ 'आप इसका क्या स्पष्टीकरण देंगे?' इसके बाद, उन्होंने मुझसे पूछा: 'जरूरतमंद लोगों की मदद करने के बजाय संत भिक्षुओं के पास ही क्यों जाते हैं?' — 'दोस्तों,' मैंने जवाब में उनसे पूछा, 'क्या आप यहाँ हवाई जहाज से उड़कर आए?' — 'नहीं,' उन्होंने कहा, 'हम कार से आए हैं।' — 'ठीक है, और

²²⁸ तुलना करें यशायाह 6:9-10 से।

²²⁹ 3 जून 1979 को, एल्डर पैसयिस अपनी माला से प्रार्थना कर रहे थे, कह रहे थे: 'आज के संत, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें: उन्हें याद नहीं आ रहा था कि यह किस संत का पर्व था, और वे मासिक कैलेंडर में देखने के लिए अपनी चश्मा भी नहीं ढूँढ पाए (कुछ ही दिन पहले, एल्डर 'पनागुडा' सेल में आए थे और अभी तक अपना सामान भी नहीं खोला था)। तब पवित्र शहीद लुसिलियन, जिनका पर्व 3 जून को मनाया जाता है, उनके सामने प्रकट हुए और उनका कठनि नाम तीन बार दोहराया।

यहाँ आते समय, जब आप गाड़ी चला रहे थे, आपने कतिने चैपल देखे? ²³⁰ ये अपने आप नहीं उगे, जैसे बारिश के बाद मशरूम। संतों ने लोगों की मदद की, और श्रद्धा के कारण उन्होंने ये छोटे-छोटे चैपल बनाए और उनमें दीपक जलाए। आध्यात्मिक लोग जतिना अधिक भौतिकता को त्यागते हैं, उतना ही ऊँचा उठते हैं।" भौतिकवादी भी खाली हाथ नहीं लौटते—वे कम से कम कुछ तो लाभ कमाते हैं: उदाहरण के लिए, वे एक नश्चिति संख्या में मग बनाएंगे और एक नश्चिति राशि प्राप्त करेंगे; यदि वे और अधिक बनाते हैं, तो उन्हें और अधिक मलिका। आप, हालाँकि, केवल प्रचार में लगे हुए हैं और वहीं रुक जाते हैं: आपको कहीं से भी कोई लाभ नहीं होता। तुम सबसे अधिक दुखी हो, क्योंकि यदि तुम वह प्राप्त कर लेते हो जो तुम चाहते हो, तो तुम्हारा संपूर्ण आदर्श मार्क्सवादी दासता के कष्ट से ही मलिक बन जाएगा।" अंत में, उन्होंने मुझसे कहा: 'तुम एक बहुत अच्छे व्यक्ति हो, बुद्धिमान, न्यायप्रिय...'

वैसे भी, चाहे लोग चाहें या न चाहें, वह समय आएगा जब वे सभी मानने लगेंगे, क्योंकि वे एक ऐसे रास्ते पर पहुँच जाएंगे जहाँ से आगे कोई रास्ता नहीं है। और फिर मसीह हस्तक्षेप करेंगे।

अध्याय 3. जहाँ ईश्वर मदद करता है जहाँ मानवीय शक्ति कम पड़ जाती है

ईश्वर उस काम में मदद करता है जिसे मानवीय साधनों से हासिल नहीं किया जा सकता

— वह वहाँ धुआँ क्या है?

— हम कचरा जला रहे हैं, गैरोना।

— क्या तुमने सच में ऐसी हवा में आग जलाई है?

— गैरोन्डा, आज सुबह बारिश हुई...

— अगर बारिश हुई होती और बाढ़ आ जाती, फिर भी अगर बाद में हवा चल पड़ी, तो सब कुछ बारूद की तरह सूख जाएगा! क्या बात है: 'बारिश हुई!' क्या तुम पहले भूल गए कि अपनी ही मूर्खता के कारण, नीचे आग कैसे लग गई थी? अगर कोई एक बार कीचड़ में पैर रख चुका हो, तो उसे भविष्य में बहुत सावधान रहना चाहिए। भगवान तब मदद करते हैं जब उनकी मदद की ज़रूरत होती है, जहाँ लोग मानवीय साधनों से कुछ नहीं कर सकते। लेकिन वह हमारी मूर्खता में मदद नहीं करेंगे। इस तरह, हम संतों को भी दुनिया के सामने मज़ाक बना देते हैं।

— जैरोन्डा, क्या यह हमेशा स्पष्ट होता है कि किसी को कसि हद तक मानवीय तरीके से काम करना चाहिए?

— चलिए इस तथ्य से शुरू करते हैं कि यह स्पष्ट है। लेकिन भले ही कोई व्यक्ति वह सब कुछ करने को तैयार हो जो वह कर सकता है और कुछ उसे ऐसा करने से रोक दे, तो ईश्वर उसकी ज़रूरत के समय उसकी मदद करेगा। हालाँकि,

²³⁰ ग्रीस में धर्मनिरपेक्ष ईसाइयों के बीच, सड़कों के किनारे छोटे-छोटे चैपल बनाने की एक व्यापक परंपरा है, जो आमतौर पर परमेश्वर, परमेश्वर की पवित्रतम माता या संतों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने, या सड़क दुर्घटनाओं में मारे गए प्रयोजनों की स्मृति में बनाए जाते हैं। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

अगर उसके पास ताकत तो थी लेकिन इच्छाशक्ति नहीं थी, तो ईश्वर उसकी मदद नहीं करेगा। उदाहरण के लिए, आपको रात में दरवाज़ा बंद करने के लिए कहा जाता है, लेकिन आप बहुत आलसी हैं, आप उसे बंद नहीं करते और कहते हैं कि ईश्वर आपको सुरक्षित रखेंगे। आप इसे इसलिए बंद नहीं करते क्योंकि आप ईश्वर पर भरोसा करते हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि आप आलसी हैं। लेकिन फिर, ईश्वर आपकी मदद कैसे करेगा? क्या वह वास्तव में एक आलसी व्यक्ति की मदद करेगा? वास्तव में, यदि किसी को दरवाज़ा बंद करने के लिए कहा जाए और वह ऐसा करने में वफ़िल रहे, तो वह केवल उसी अवज्ञा के लिए दंड का पात्र है।

हमें वह करना चाहिए जो मानवीय रूप से संभव है, और जो मानवीय क्षमता से परे है उसे ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। और यदि आप अपनी क्षमता से थोड़ा अधिक करते हैं—स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि उनके प्रतिप्रेम से, यह महसूस करते हुए कि आपने अभी अपनी सारी मानवीय शक्त का उपयोग नहीं किया है—तो ईश्वर उसे भी देखेंगे। ऐसा उत्साह उन्हें प्रसन्न करेगा, और वह मदद के लिए तत्पर होंगे। हमारी मदद करने के लिए, ईश्वर यह भी चाहते हैं कि हम अपने प्रयास करें। उदाहरण के लिए, नूह को लें: उन्होंने जहाज़ बनाने में सौ साल तक कड़ी मेहनत की। उन्होंने लकड़ी को लकड़ी की आरी से काटा: उन्होंने अन्य पेड़ों की तुलना में अधिक कठोर पेड़ खोजे और उनसे आरी बनाई। तो क्या ईश्वर जहाज़ के निर्माण को तेज़ करने के लिए कुछ नहीं कर सकते थे? [वे कर सकते थे — लेकिन] नूह और उसके साथियों को जहाज़ बनाना सखाने के बाद, उन्होंने उन्हें ऐसा करने की शक्ति भी दी।²³¹ अतः, हम जो कर सकते हैं, वह करें, ताकि जो हम नहीं कर सकते, ईश्वर कर सकें।

एक बार, एक आदमी कालीवा में मेरे पास आया और पूछा: 'भिक्षु लोगों की मदद करने के लिए दुनिया में बाहर क्यों नहीं जाते?' — 'अगर वे दुनिया में बाहर जाकर लोगों की मदद करते, मैंने जवाब दिया, 'तो आप पूछ रहे होते कि भिक्षु दुनिया में क्यों भटक रहे हैं।' अब वे संसार में नहीं जाते, और आप पूछते हैं कि वे क्यों नहीं जाते।' फिर उसने मुझसे कहा: "भिक्षु डॉक्टरों के पास क्यों जाते हैं? उन्हें उनके मसीह और परमेश्वर की माता द्वारा क्यों नहीं ठीक किया जाता?" — "यहूदी धर्म के एक डॉक्टर ने," मैंने उत्तर दिया, "मुझसे बिल्कुल यही सवाल पूछा था।" — "वह यहूदी नहीं है," — मेरे वार्तालापकर्ता के बचाव में उसके साथ आए लोगों में से एक ने कहा। "इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह यहूदी नहीं है," मैंने जवाब दिया, "यह सवाल अपने आप में पूरी तरह से यहूदी है। और मैं आपको वही उत्तर दोहराऊंगा जो मैंने उस यहूदी को दिया था, क्योंकि परिस्थितियाँ समान हैं।" "आप," मैंने तब उससे कहा, "एक यहूदी होने के नाते, पुराने नियम को ज़बानी याद होंगे। नबी यशायाह बताते हैं कि कैसे ईश्वर ने राजा हज़कियाह, जो एक बहुत अच्छे इंसान थे, को जीवन के और पंद्रह साल दिए थे। ईश्वर ने राजा के पास भविष्यवक्ता यशायाह को भेजा, जसिने उससे कहा: 'ईश्वर तुम्हें और पंद्रह साल की आयु देगा क्योंकि तुमने उन पवित्र वृक्षों को नष्ट कर दिया है जहाँ मूर्तपूजक बलिदान किया जाता था। जहाँ तक तुम्हारे फोड़े (राजा के शरीर पर एक फोड़ा था) की बात है, ईश्वर कहते हैं कि तुम उस पर सूखी अंजीरों का एक गुच्छा बाँधो, और तुम ठीक हो जाओगे।' चूँकि ईश्वर ने उन्हें पंद्रह और साल की आयु दी, तो क्या वे इस फोड़े को भी ठीक नहीं कर सकते थे? [बेशक वे कर सकते थे], लेकिन इस फोड़े को अंजीर की एक गुच्छी से भी ठीक किया जा सकता था।"²³² हम ईश्वर से वह न माँगे जो लोगों के माध्यम से किया जा सकता है। आइए हम लोगों के सामने स्वयं को नम्र करें और उनसे मदद माँगे।

²³¹ उत्पत्ति 6:13 और बाद के श्लोक देखें।

²³² देखें यशायाह 38:4 और आगे।

एक व्यक्ति को एक निश्चिती सीमा तक मानवीय तरीके से काम करना चाहिए, और फरि सब कुछ ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। उन मामलों में मदद करने की कोशिश करना जिन्हें मानवीय साधनों से हल नहीं किया जा सकता, स्वार्थी है। मैं अक्सर देखता हूँ कि ऐसी ज़िद शैतान के प्रभाव से उत्पन्न होती है, जिसका उद्देश्य उस व्यक्ति को निष्क्रिय कर देना होता है। मुझे इस बात का मोटा-मोटा अंदाज़ा है कि मानवीय साधनों से कतिनी मदद की जा सकती है, और वह कौन सा बंदी है जहाँ हर चीज़ को ईश्वर के भरोसे छोड़ देना चाहिए। इसलिए, जब मैं देखता हूँ कि किसी स्थिति को मानवीय साधनों से हल नहीं किया जा सकता, तो मैं दुःख के साथ अपने हाथ उठाता हूँ, कुछ मोमबत्तियाँ जलाता हूँ, उस कठिनाई को ईश्वर के भरोसे छोड़ देता हूँ, और वह तुरंत हल हो जाती है। ईश्वर जानता है कि मैं ऐसा इसलिए नहीं करता क्योंकि मैं मानवीय तरीके से काम करने के लिए बहुत आलसी हूँ।

इसलिए, जब हमसे मदद मांगी जाती है, तो हमें वयिक से काम लेना चाहिए और जतिनी हो सके मदद करनी चाहिए। और जहाँ हम मदद नहीं कर सकते, वहाँ कम से कम एक प्रार्थना करके या सब कुछ पूरी तरह से ईश्वर को सौंपकर मदद करनी चाहिए, जो कएक तरह की रहस्यमयी प्रार्थना भी है।

ईश्वर हमारे भले के लिए हर चीज़ का ध्यान रखते हैं

ईश्वर स्वभाव से ही भला है, और वह हमारे भले के लिए हर चीज़ का ध्यान रखता है। यदहिम उससे कुछ मांगते हैं, तो वह हमें वह देगा, बशर्ते कि वह हमारे भले के लिए हो। ईश्वर उदारतापूर्वक हमें वह प्रदान करता है जो हमारी आत्मा के मोक्ष और हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, और उसकी कृपा हम पर बनी रहेगी। और यदविह हमें कुछ नहीं देता है — या तो हमें आजमाने के लिए, या हमारी रक्षा के लिए — तो हमें न केवल इसे खुशी से स्वीकार करना चाहिए, बल्कि इस पर चतिन भी करना चाहिए, ताकि हमें इससे लाभ हो सके। वह जानता है कि अपनी सृष्टि की मदद कब और कैसे करनी है; वह सही समय पर अपने द्वारा जाने हुए तरीके से मदद करता है। हालाँकि, उसकी नाजुक रचनाओं में अक्सर धैर्य की कमी होती है; वे उसी क्षण वह प्राप्त करना चाहते हैं जिसकी वे माँग करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक छोटा बच्चा अपनी माँ से एक बेगल माँगता है जो अभी पका नहीं है और तैयार होने तक इंतज़ार नहीं कर सकता। माँगना और धैर्य रखना हमारा कर्तव्य है, और हमारी अच्छी माँ, परम पवतिर थियोटोकोस, हमें वह देगी जिसकी हम माँग करते हैं जब वह तैयार हो जाएगा।

— जेरोडा, संत कनि परस्थितियों में मदद करते हैं?

— वे तब मदद करते हैं जब वास्तव में ज़रूरत होती है, न कि जब हम केवल ऐसा मान लेते हैं। दूसरे शब्दों में, वे तब मदद करते हैं जब यह हमारे अपने भले के लिए हो। क्या आप समझते हैं? उदाहरण के लिए, एक बच्चा अपने पिता से एक मोपेड माँगता है, लेकिन उसके पिता उसे नहीं खरीदते। 'मुझे एक मोपेड चाहिए,' बच्चा ज़िद करता है, 'मैं चल-चल कर थक गया हूँ, यह एक संघर्ष है।' हालाँकि, पिता उसे मोपेड नहीं खरीदता क्योंकि उसे डर है कि उसके बेटे का कोई हादसा हो जाएगा। 'मैं तुम्हें बाद में कार खरीद दूँगा,' वह अपने बेटे से कहता है, 'पैसे बैंक में जमा कर देता है, और जब वह पर्याप्त पैसे बचा लेता है, तो कार खरीद लेता है। संतों के साथ भी ऐसा ही है: वे जानते हैं कि हमें कब मदद की ज़रूरत है।

— गेरोन्डा, हम ईश्वर की दया का अनुभव कैसे करें?

— ईश्वर की दया दविय सांतवना है, जसि हम अपने भीतर महसूस करते हैं। ईश्वर चीज़ों को इस तरह व्यवस्थित करते हैं ताकि हम मानवीय सांतवना में आराम न पाएं और इसके बजाय दविय सांतवना की ओर मुड़ें। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया में ग्रीक लोग, जो खुद को पूरी तरह से अकेला पाया, वे उन लोगों की तुलना में ईश्वर के और करीब आ गए जो अन्य देशों, जैसे जर्मनी गए, जहाँ ग्रीक लोग अपने देश के करीब और अपने देशवासियों से घरि हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया

गए लोगों के लिए, कठनिाइयों ने वास्तव में उन्हें ईश्वर से जुड़ने में मदद की। वे सभी सरिफ एक सूटकेस लेकर आए थे, वे अपने वतन और अपने परिवारों से बहुत दूर थे, फरि भी उन्हें काम, अपने बच्चों के लिए शकिषक और भी बहुत कुछ ढूँढना था। मदद के लिए कोई नहीं था। इसीलिए उन्होंने ईश्वर की ओर रुख कयिा और अपने वशिवास पर दृढ़ बने रहे। हालाँकि, यूरोप में ग्रीकों को ऐसी कठनिाइयों का सामना नहीं करना पड़ा और इसलए वे ईश्वर से इतनी दृढ़ता से नहीं जुड़े।

"माँगो, तो तुम्हें दयिा जाएगा"²³³

— जेरोंडा, हमें ईश्वर से मदद क्यों माँगनी चाहएि, जबकविह हमारी जरूरतों को जानते हैं?

— क्योंकि स्वतंत्रता है। और, इसके अलावा, जब हम अपने पड़ोसी के लिए दर्द महसूस करते हैं और ईश्वर से उनकी मदद करने के लिए कहते हैं, तो यह उन्हें गहराई से प्रभावति करता है, क्योंकि तिब वह मानव इच्छा की स्वतंत्रता का उल्लंघन कएि बनिा हस्तक्षेप करते हैं। ईश्वर पीड़ति लोगों की मदद करने के लिए पूरी तरह से इच्छुक हैं। हालाँकि, उनकी मदद करने के लिए, किसी को उनसे ऐसा करने के लिए कहना चाहएि। क्योंकि अगर ईश्वर किसी की मदद बनिा किसी के उनसे ऐसा कहने के करते, तो शैतान वशिध करता और कहता: 'आप उसकी मदद क्यों कर रहे हैं और मानव इच्छा की स्वतंत्रता का उल्लंघन क्यों कर रहे हैं? वह एक पापी है और इसलए वह मेरा है।' यह ईश्वर की महान आध्यात्मकि कुलीनता को भी प्रकट करता है, जो शैतान को आपत्तिकरने का अधिकार भी नहीं देते। इसलए, हस्तक्षेप करने के लिए, वे चाहते हैं कि हम उनसे ऐसा करने का अनुरोध करें। वे तुरंत हमारी सहायता के लिए आने के लिए उत्सुक हैं, बशर्ते कि यह हमारे भले के लिए हो। वे अपनी रचनाओं की उनकी जरूरतों के अनुसार मदद करना चाहते हैं। वह प्रत्येक व्यक्ती के प्रति व्यक्तीगत रूप से कार्य करते हैं — उस तरीके से जो प्रत्येक के लिए सबसे अधिक लाभकारी हो।

तो, ईश्वर और संतों की मदद पाने के लिए, व्यक्ती को स्वयं इच्छा करनी चाहएि और माँगनी चाहएि। अन्यथा, वे मदद नहीं करेंगे। "क्या तुम ठीक होना चाहते हो?"²³⁴ — मसीह ने लकवाग्रस्त व्यक्ती से पूछा। यदि कोई व्यक्ती ऐसा नहीं चाहता, तो ईश्वर उसका सम्मान करते हैं। और यदि कोई स्वर्ग नहीं जाना चाहता, तो ईश्वर उसे वहाँ जबरदस्ती नहीं भेजते, सविाय उन मामलों के जहाँ कोई व्यक्ती [आध्यात्मकि] अज्ञानता में होने के कारण अन्याय का शकिार हुआ हो; ऐसे मामलों में, उसे दैवीय सहायता का अधिकार प्राप्त होता है। अन्य सभी मामलों में, ईश्वर हस्तक्षेप नहीं करना चाहते। क्या कोई व्यक्ती मदद माँगता है? ईश्वर और संत उसे प्रदान करते हैं। इससे पहले कि आप पलक झपकते, वे पहले ही मदद कर चुके होते हैं। और कभी-कभी आपको पलक झपकाने का भी समय नहीं मलिता, इतनी जल्दी ईश्वर आपके बगल में प्रकट हो जाते हैं।

पवतिर शास्त्र कहता है, 'माँगो, तो तुम्हें दयिा जाएगा...'। ईश्वर से मदद माँगे बनिा, हम पूर्ण वफिलता का सामना करते हैं। लेकिन अगर हम दवि्य सहायता माँगते हैं, तो मसीह हमें अपनी कृपा की एक छोटी रस्सी से बाँध लेते हैं और हमें मजबूती से थामे रखते हैं। हवा कभी एक तरफ से, कभी दूसरी तरफ से चलती है, लेकिन हम बँधे हुए हैं और खतरे से बाहर

²³³ मत्ती 7:7.

²³⁴ यूहन्ना 5:6.

हैं। फरि भी जब कोई व्यक्ति यह नहीं समझता कि उसे कौन थामे हुए है, तो वह रस्सी खोल देता है, खुद को मसीह से अलग कर लेता है, और हवाएँ उसे हर तरफ से झकझोरने लगती हैं, जिससे वह कष्ट में पड़ता है।

जान लो कि केवल हमारे जुनून और पाप ही सचमुच हमारे अपने हैं। जो भी अच्छा हम करते हैं वह ईश्वर से आता है; जो भी मूर्खता हम करते हैं वह हमारे अपने कएि की है।

जसि क्षण दविय अनुग्रह हमें छोड़ देता है, बस, हम और कुछ नहीं कर सकते। प्राकृतिक जीवन में, जैसे ही ईश्वर हमें ऑक्सीजन से वंचित कर देता है, हम तुरंत मर जाते हैं। आध्यात्मिक जीवन में भी ऐसा ही है: जसि क्षण वह हमसे दविय अनुग्रह थोड़ा सा भी हटा लेता है, बस, हम खो जाते हैं। एक बार, प्रार्थना करते समय, मुझे आनंद का अनुभव हुआ। मैं कई घंटों तक अपने पैरों पर खड़ा रहा और मुझे थकान का बिल्कुल भी अहसास नहीं हुआ। पूरे समय मैं प्रार्थना कर रहा था, मुझे एक तरह की मीठी शांतिका अनुभव हो रहा था, कुछ ऐसा जसि शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। लेकिन कुछ देर बाद, मेरे मन में एक मानवीय वचिार आया: 'मेरी दो पसलियाँ कम हैं, और मुझे आसानी से सर्दी लग जाती है। इस अवस्था को खोने से बचने और जब तक यह बनी रहे इसका अनुभव करने के लिए, मुझे एक गर्म शॉल लेने और खुद को ढकने जाना चाहिए, नहीं तो मुझे ठंड लग सकती है।' जैसे ही मैंने यह वचिार मन में लाया, मैं फर्श पर गरि पड़ा। मैं लगभग आधे घंटे तक वहीं पड़ा रहा, फरि किसी तरह उठा, अपनी कोठरी में गया और लेट गया। उससे पहले, जब मैं प्रार्थना में और गहराई तक गया, तो मुझे एक तरह की हवा-सी, हल्कापन और आनंद महसूस हुआ जसि शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। लेकिन जैसे ही मैंने वह वचिार कयिा, मैं फर्श पर गरि पड़ा। अगर मैंने कोई घमंडी वचिार कयिा होता और, उदाहरण के लिए, सोचा होता: "सवाल यह है: क्या मेरे जैसी स्थिति में दो या तीन और भी लोग हैं?" — तो मैंने खुद को बहुत नुकसान पहुँचाया होता। मेरा वचिार शैतानी नहीं था। मैंने वैसा ही सोचा जैसा एक इंसान सोचता है, जैसे कोई लंगड़ा आदमी अपनी बैसाखी उठाने के बारे में सोचता है। यह वचिार स्वाभाविक था, लेकिन, देखिए, इसके कारण मेरे साथ क्या हुआ!

एक व्यक्ति के पास जो एकमात्र चीज़ होती है, वह है उसका स्वभाव, और ईश्वर उसी स्वभाव के अनुसार उसकी मदद करते हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हमारे पास जो भी आशीर्वाद है, वे ईश्वर की देन हैं। हमारे कर्म कुछ भी नहीं हैं, और हमारे पुण्य शून्य की एक नरितर श्रृंखला के सिवा कुछ नहीं हैं। इसलए आइए हम लगातार शून्य पर शून्य जोड़ने का प्रयास करें और मसीह से प्रार्थना करें कि वह इस श्रृंखला की शुरुआत में एक (एक अंक) लगा दें। इस तरह हम धनी हो जाएँगे। लेकिन अगर मसीह शुरुआत में एक नहीं लगाते, तो हमारी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी।

नम्रता से ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है

— गेराना, मुझे धैर्य बनाए रखना मुश्किल हो रहा है।

— क्या आप मसीह से मदद मांगते हैं, या आप अकेले ही संघर्ष कर रहे हैं? क्या आपने मसीह को अपनी कमजोरी के बारे में बताया है? आप स्वयं को नम्र नहीं करते, आप मसीह से मदद नहीं मांगते, और फरि आप कहते हैं: 'मुझे तपस्या का अभ्यास करना मुश्किल हो रहा है।' यदि आप स्वयं को नम्र करते हैं और मसीह से थोड़ी मदद मांगते हैं, तो वह आपकी मदद करेंगे। अक्सर, एक व्यक्ति का प्रयास स्व-केंद्रित होता है, इसीलिए मसीह मदद नहीं करते। अपने 'स्व' को त्याग दें, उसे ध्यान में न रखें, और ईश्वर की कृपा आपके भीतर वास करेगी। हम किसी जादुई साधन से [बिना प्रयास के] पवित्रता प्राप्त करना चाहते हैं, फरि भी ईश्वर उस व्यक्ति की मदद नहीं करते जो [आध्यात्मिक रूप से] गलत स्थिति में है। यदि थोड़ी भी स्वार्थपरता आ जाए, तो यह दैवीय सहायता में बाधा डालती है।

— लेकिन अगर मैं खुद को सुधारने के लिए तैयार हूँ, तो क्या ईश्वर मुझे अपनी उस कमजोरी को समझने में मदद नहीं करेंगे, जसि मैंने खुद नहीं देखा है?

— ईश्वर की मदद के लिए, आपके भीतर प्रयास करने की इच्छा होनी चाहिए। 'प्रयास करने की इच्छा' से हमारा तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को अपनी कमजोरी पर काबू पाने के लिए थोड़ा प्रयास करना चाहिए। थोड़ी सी भी सच्ची इच्छा देखकर, ईश्वर उदारतापूर्वक उस व्यक्तिकी मदद करते हैं, और उन पर उदारतापूर्वक अपनी कृपा बरसाते हैं। एक व्यक्ति ईश्वर की धारा में प्रवेश करता है।

— गेरान्डा, ईश्वर हमारे आध्यात्मिक संघर्ष में कसि हद तक हमारी मदद करते हैं?

— जब तक हम स्वयं उसकी मदद करने में उसकी मदद करते हैं। जब आप लंबे समय तक ईश्वर से कुछ मांगते हैं और वह आपको अपनी मदद नहीं देते, तो जान लें कि इसका कारण आपका अहंकार है। यदि हममें वासनाएँ हैं—उदाहरण के लिए, लालच, जीभ पर काबू न होना, क्रोध, ईर्ष्या आदि—और साथ ही हममें अहंकार भी है, तो ईश्वर हमें उनसे मुक्त होने में मदद नहीं करते, क्योंकि हम दैवीय कृपा में बाधा डाल रहे हैं। और भले ही हममें केवल अहंकार की प्रवृत्ति ही हो, तब भी हम ईश्वर को हमारी मदद करने से रोकते हैं, भले ही हम आवश्यक से अधिक प्रयास और प्रार्थना करें। ईश्वर के लिए मदद न करना असंभव है, यदि इस बात का कोई डर न हो कि व्यक्ति इसका श्रेय स्वयं ले लेगा। जैसे ही अहंकार की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है और कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ हो जाता है, ईश्वर तुरंत उस व्यक्ति को उसे सताने वाले जुनून से मुक्त कर देगा और उनके द्वारा किए गए 'असाधारण' प्रयास के लिए उन्हें पुरस्कृत करेगा। इसलिए, सहायता प्राप्त करने के लिए, हमें अपने वनिम्र चित्त से ईश्वर की सहायता करनी चाहिए। आइए हम कहें: 'हे मेरे ईश्वर, मैं कतिना नकिम्मा व्यक्ति हूँ! मैं आपसे वनिती करता हूँ, मुझे क्षमा करें और मेरी मदद करें।' तब ईश्वर मदद करते हैं, क्योंकि जो आत्मा, एक अच्छे और वनिम्र स्वभाव के साथ, स्वयं को उनके हाथों में सौंप देती है, वह दैविय सहायता की हकदार होती है।

हमें विश्वास करना चाहिए कि मसीह और परमेश्वर की अतिपवित्र माता हमेशा हमारी रक्षा और मदद करते हैं, बशर्ते कि हमारा दृष्टिकोण वनिम्र हो। हमारा ईश्वर बहरा नहीं है कि वह हमें सुन न सके, और न ही वह अंधा है कि वह हमें देख न सके; वह बाअल जैसा नहीं है।²³⁵

आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत में सहायता

— गेराना, क्या यह सच है कि ईश्वर किसी व्यक्तिकी सबसे अधिक मदद उसके आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत में करते हैं?

— हाँ, जब कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक जीवन में पहले कदम रखता है, तब ईश्वर उसकी बहुत मदद करता है, ठीक वैसे ही जैसे माता-पिता अपने छोटे बच्चों की अधिक रक्षा करते हैं। लेकिन जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो माता-पिता उनकी इतनी चिंता नहीं करते, क्योंकि बच्चे अपनी बुद्धि का प्रयोग करने लगते हैं। आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत में, एक व्यक्ति स्पष्ट रूप से ईश्वर की कृपा को महसूस करता है, लेकिन फिर ईश्वर उनसे थोड़ा पीछे हट जाते हैं ताकि वे संघर्ष कर सकें और शक्ति में बढ़ सकें। मुझे याद है कि मैंने अपनी सब्जी की क्यारी में कुछ टमाटर के पौधे लगाए थे। पहले तो मैंने उन्हें हर दिन पानी दिया, लेकिन फिर मैंने बंद कर दिया और केवल तब पानी दिया जब उनके पत्ते

²³⁵ देखें 3 राजा 18:26।

पीले होने लगे। पानी के बनिा, टमाटरों ने संघर्ष किया, और नमी खोजने के लिए, उन्हें अपनी जड़ें ज़मीन में गहरी तक भेजनी पड़ी। उन पर फल भी लगने लगे। लेकिन अगर मैंने उन्हें लगातार पानी दिया होता, तो वे बस ऊपर की ओर बढ़ते, जबकि उनकी जड़ें सतह पर ही रह जाती।

— गेरौन्डा, आपने कहा कि किसी के आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत में, एक व्यक्ति ईश्वर की कृपा महसूस करता है, और फिर कृपा उनसे थोड़ी पीछे हट जाती है।

— हाँ। ईश्वर अपनी कृपा इसलिए पीछे हटाता है ताकि व्यक्ति स्वयं को नम्र बना सके और उसकी सहायता का अनुभव कर सके।

— क्या ऐसा परिवर्तन दर्दनाक नहीं है?

— नहीं, क्योंकि ईश्वर किसी व्यक्ति को पूरी तरह से नहीं छोड़ता। जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से काम करना शुरू करता है, तो ईश्वर उसे, खैर, मान लीजिए... एक चॉकलेट बार देता है। तो, धीरे-धीरे, वह व्यक्ति काम करने और चॉकलेट बार खाने का आदी हो जाता है। लेकिन अगर ईश्वर किसी व्यक्ति को मठाई देना बंद कर दे और वह काम करना बंद कर दे, और इसके बजाय विलाप करने लगे: 'पहले मैं चॉकलेट बार खाता था, लेकिन अब — एक भी नहीं!... ओह, मुझे पर क्या मुसीबत आ गई है!...' — तो ऐसा व्यक्ति तिरक्की नहीं करता। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति [इसके विपरीत] इस पर प्रसन्न होना चाहिए। हमें मसीह से आसान मदद नहीं माँगनी चाहिए, और न ही हमसे नरमी की प्रार्थना करनी चाहिए, क्योंकि तब हम बनिा परखे और बनिा प्रशिक्षण के ही रह जाएँगे। और सेना में, वही लोग बचते हैं जो अच्छी तरह प्रशिक्षण लेते हैं। यदि कोई व्यक्ति अनंत मदद प्राप्त करता है, तो वह अंततः असहाय ही रहता है। यह तथ्य कि मसीह लगातार मदद नहीं करते, मुझे प्रशंसा से भर देता है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं ऐसे शिक्षकों का छात्र हूँ जो बहुत उम्मीदें रखते हैं। आध्यात्मिक परीक्षाएँ पास करना कठिन है: इसके लिए निरंतर आत्म-अनुशासन और प्रयास की आवश्यकता होती है, लेकिन इसी तरह एक व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से फलता-फूलता है। क्या ईश्वर के लिए हर समय हर व्यक्ति की मदद करना वाकई इतना मुश्किल है? बिल्कुल नहीं, लेकिन केवल उसी तरह की मदद से किसी व्यक्ति को लाभ नहीं होगा। यदि माता-पिता अपने बगिड़े हुए बच्चे को लगातार चॉकलेट खिलाते रहें, और बच्चा खुद भी लगातार खाते रहना चाहे, तो ऐसा व्यक्ति बिड़ा होकर आलसी, बगिड़ा हुआ और दयनीय बन जाएगा। यही बात आध्यात्मिक जीवन पर भी लागू होती है — यदि कोई लगातार ईश्वर की मदद स्वीकार करता है और स्वयं प्रयास नहीं करता, तो वह कभी भी आध्यात्मिक परिपक्वता प्राप्त नहीं कर पाएगा। इसलिए, जबकि ईश्वर किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत में मदद करते हैं, बाद में वे धीरे-धीरे पीछे हट जाते हैं ताकि व्यक्ति को यह एहसास हो कि उन्हें स्वयं वह करना होगा जो वे कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा चलना सीख रहा होता है: माता-पिता लगातार उसका हाथ नहीं पकड़ते, बल्कि उसे अकेले चलने की कोशिश करने देते हैं। और जैसे ही वह गरिने वाला होता है, वे — झट से! — उसे पकड़ लेते हैं! तब बच्चे को एहसास होता है कि उसकी अपनी ताकत केवल किसी और चीज़ को पकड़कर चलने के लिए ही काफी है। हालाँकि, यदि कोई छोटा बच्चा केवल हाथ पकड़कर ही चलता है, और जब उसे अकेला छोड़ दिया जाता है तो वह खुद से चलना सीखने और धीरे-धीरे अपनी ताकत बढ़ाने के लिए किसी चीज़ को पकड़ता नहीं है, बल्कि फिर पर बैठ जाता है, तो वह कभी चलना नहीं सीखेगा, क्योंकि उसने वह नहीं किया जो वह करने में सक्षम था।

— क्या कोई व्यक्ति महसूस करता है कि उसे पहले दैवीय सहायता मिली, और फिर वह उससे वंचित हो गया?

— यदि कोई व्यक्ति स्वयं पर ध्यान नहीं देता, तो उसे कुछ भी महसूस नहीं होता।

दिव्य शक्तियाँ सर्वशक्तमिान हैं

— गेराना, बहुत से लोग चतिति हैं: 'दुनिया में हो रही ये वभिनिन [मुश्कलिन और प्रलोभन] कैसे खतम होंगे?'

— जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ, वह सुनो: अभी, अगर ईश्वर हमें छोड़ना भी चाहें, तो भी वे ऐसा नहीं कर सकते।

— आपका क्या मतलब है, जेरोंडा?

— बात यह है: माता-पति, एक बच्चे को जीवन देने के बाद, जतिना अधिक वे उसे पालने के लिए संघर्ष करते हैं, उतना ही अधिक वे उससे प्यार करते हैं और उसकी देखभाल करते हैं। ईश्वर के साथ भी ऐसा ही है — उन्होंने हमें जीवन दिया; एक तरह से, उन्होंने हमें पालने के लिए कष्ट उठाए; उन्होंने, कह सकते हैं, हमारे लिए जो कुछ भी किया है, उसमें वे थक गए। और अब वह हमें छोड़ नहीं सकते, भले ही वे चाहें भी, क्योंकि उन्हें हमारा दर्द महसूस होता है, बशर्ते कि हमारे अंदर भी थोड़ा सा प्यार हो। अगर हमारे अंदर थोड़ा सा प्यार है, तो हमें जन्नत से वंचति नहीं किया जाएगा।

— आपने कहा था, गेराना, कदियालु प्रभु हमें कभी नहीं छोड़ेंगे...

— हाँ। ईश्वर हमें कभी नहीं छोड़ता; हम ही उसे छोड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन नहीं जीता है, तो उसे दिव्य सहायता का कोई अधिकार नहीं है। आध्यात्मिक जीवन जीकर और ईश्वर के करीब रहकर ही उसे इसका अधिकार प्राप्त होता है। और फिर, यदि ऐसा कोई व्यक्ति भी जाए, तो वह आने वाले जीवन के लिए तैयार रहता है, ताकि उसे इस जीवन और अगले जीवन दोनों में लाभ हो।

न तो लोग और न ही राक्षस ईश्वर की मदद में बाधा डाल सकते हैं। ईश्वर या एक पवित्र व्यक्ति के लिए कुछ भी कठिनाई नहीं है। एकमात्र बाधा हमारी मानवीय अविश्वास की कमी है। अपने अविश्वास की कमी के कारण, हम महान दैवीय शक्तियों को हमारे करीब आने से रोकते हैं। हमारे बहुत करीब इतनी बड़ी शक्ति है, लेकिन हमारे भीतर मानव तत्व इतना प्रबल है कि हम उस दैवीय सिद्धांत को समझ ही नहीं पाते, जो पूरी दुनिया की सभी मानवीय शक्तियों से परे है, क्योंकि ईश्वर की शक्तियाँ सर्वशक्तमिान हैं।

हम अक्सर घंटों तक बेकार बैठे रहते हैं, खुद से ही किसी स्थिति से निकलने का रास्ता खोजने की कोशिश करते हैं और इस काम में अपनी सारी अनुभवहीनता लगा देते हैं। हमारा सरि फटता है और हमारी आँखों में जलन होती है; हम सो नहीं पाते क्योंकि हम परेशान करने वाले विचारों से ग्रस्त रहते हैं। और अंत में हम खुद ही एक रास्ता निकाल ही लेते हैं, लेकिन बाद में ईश्वर हमारे लिए एक अलग, बेहतर रास्ता निकालते हैं—जसके बारे में हमने सोचा भी नहीं था—और हमें सरिदर्द और नींद से रहति रातों के सिवा कुछ नहीं मिलता। यदि ईश्वर हमारे सामने नहीं है, तो हमारी सोच कतिनी भी सटीक क्यों न हो, हमारा सरि थक जाता है और दर्द करने लगता है। लेकिन, ईश्वर में विश्वास के साथ प्रार्थना, एक व्यक्ति की शक्ति को पुनर्स्थापित करती है। इसलिए, आइए हम मानव साधनों से प्राप्त करना कठिनाई है, उसे विश्वास के साथ ईश्वर पर सौंप दें। आइए हम अपने मानवीय प्रयासों पर भरोसा न करें, बल्कि वह वही करेगा जो सबसे अधिक लाभकारी है।

जब भी आप कुछ करने वाले हों, तो कहें 'यदि ईश्वर को उचित लगे', ताकि एक आत्मविश्वासी व्यक्ति के साथ जो हुआ, वह आपके साथ न हो। वह दाख की बारी में काम करने जा रहा था और उसने अपनी पत्नी से कहा: 'कल सुबह-सुबह मैं दाख की बारी में जाऊँगा।' उसकी पत्नी ने उससे कहा, 'अगर ईश्वर को उचित लगे, तो तुम जाओगे।' उसने उत्तर दिया, 'चाहे ईश्वर को उचित लगे या न लगे, मैं जा रहा हूँ।' अगले दिन सुबह, जब अभी भी अँधेरा था, वह अंगूर के बगान के लिए निकल पड़ा, लेकिन रास्ते में इतनी तेज बारिश होने लगी कि उसे वापस लौटना पड़ा। अभी तक भोर नहीं हुई थी। उसने दरवाजा खटखटाया। उसकी पत्नी ने पूछा, "कौन है?" उसने जवाब दिया, "अगर ईश्वर की इच्छा हो, तो मैं हूँ, तुम्हारा पति!"

एक अच्छा स्वभाव

— जेरोंडा, उन लोगों का क्या होगा जिनमें दया तो है लेकिन आस्था नहीं?

— क्या आपको लगता है कि उनमें आस्था नहीं है? ठीक है, मान लीजिए कि ऐसा ही है। लेकिन जब वे छोटे थे, तो क्या उनकी माँ ने उन्हें पवित्र सहभागिता नहीं दी थी? और अगर उन्होंने नहीं भी दी, तो क्या उनका बपतिस्मा नहीं हुआ था, क्या उन्हें पवित्र तेल से अभिषेक नहीं किया गया था? क्या वे ऑर्थोडॉक्स और बपतिस्मा प्राप्त माताओं से नहीं जन्मे थे? आप देखेंगे कि ईश्वर इन दयालु लोगों की कैसे मदद करेंगे: परीक्षाओं या बीमारी, आपदाओं या भूकंप, बजिली, गरज, बाढ़, एक ही शब्द, या किसी और चीज के माध्यम से। और अंत में, वह उन्हें स्वर्ग ले जाएँगे। अक्सर, एक संत या एक देवदूत ऐसे व्यक्तियों के सामने प्रकट हो सकता है, भले ही वह ऐसी बड़ी कृपा का हकदार न हो। मसीह, पहले सभी अन्य साधनों को आजमाने के बाद, ऐसा कर सकते हैं। लेकिन अक्सर इन लोगों के साथ नम्रिलखित होता है: शैतान हस्तक्षेप करता है, उन्हें धोखा देता है, और इनमें से कई दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएं भटक जाती हैं, क्योंकि शैतान उनसे कहना शुरू कर देता है: 'अरे, देखो, ईश्वर ने तुम्हें इतना बड़ा चमत्कार इसलिए दिखाया है क्योंकि तुम दुनिया को बचा सकते हो!' और वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति, पश्चातापी होने के बजाय, यह कहने के बजाय: 'मेरे ईश्वर, मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ? मैं ऐसी महान कृपा का पात्र नहीं था,' इसके बजाय वह शैतान द्वारा लाए गए विचारों को स्वीकार कर लेता है और अहंकारी हो जाता है। फिर शैतान उसके पास फिर से आता है और एक 'प्रसारण' शुरू करता है: वह उसे देवदूत और संत दिखाता है और उससे कहता है, 'तुम ब्रह्मांड को बचाओगे।' यदि हालांकि, ऐसा व्यक्ति होश में आ जाता है, तो ईश्वर एक बार फिर उसकी मदद करेंगे।

किसी भी हाल में, हम यह न भूलें कि हम सभी के पास एक वरिसत है, ईश्वर का एक उपहार। यही कारण है कि हर व्यक्ति के भीतर गहराई में अच्छाई होती है। हालांकि, शैतान सब कुछ भ्रष्ट कर देता है। और आज कुछ लोग, चर्च से भटक जाने के बाद भी, इस वरिसत, इस अच्छाई को बनाए हुए हैं। तो फिर, ईश्वर उनकी मदद करेंगे। इसलिए, जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलें जो पाप के जीवन में फंस गया हो, फिर भी दयालु हो—जो, उदाहरण के लिए, किसी बीमार और पीड़ित व्यक्ति को देखता है और उसके लिए अपने दिल में दर्द महसूस करता है, या किसी गरीब को देखता है और उसकी मदद करता है—तो जान लें कि ईश्वर इस व्यक्ति को नहीं छोड़ेंगे; वह उनकी मदद करेंगे। लेकिन यदि आप देखते हैं कि कोई व्यक्ति जो ईश्वर से दूर हो गया है, क्रूर, नरिदयी और अन्य वासनाओं को पाल रहा है, तो आपको उनके लिए दैनिक प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि ईश्वर उनके हृदय में एक 'उद्धार दल' भेजे और वह व्यक्ति परिवर्तित हो जाए।

ईश्वर के नरिणय अथाह हैं। मैं एक बात जानता हूँ: सांसारिक जीवन जीने वाले लोग, जिन्हें ईश्वर को जानने का अनुकूल अवसर नहीं मिला, जिन्हें बुराई ने भटका दिया है, जिन्हें उसकी ओर धकेला गया है—ये सभी लोग, बशर्ते कि उनमें एक अच्छा स्वभाव हो, ईश्वर को दया करने के लिए प्रेरित करते हैं, और वह उनकी मदद करेंगे। वह ऐसे साधन-संसाधन चालू कर देगा कि ऐसे लोग अपना मार्ग पा सकें; वह उन्हें नहीं छोड़ेगा। वह ऐसा प्रबंध करेगा कि मृत्यु के समय में भी वे अच्छी अवस्था में रहेंगे।

भाग 5.

आध्यात्मिक हथियारों पर

"यदि कोई आज की दुनिया की स्थिति से परेशान है, यदि कोई इसके लिए प्रार्थना करता है, तो लोगों को सहायता मिलती है, जबकि उनकी स्वतंत्र इच्छा अक्षुण्ण रहती है"

अध्याय 1.

प्रार्थना, एक शक्तिशाली हथियार

बहुत प्रार्थना की आवश्यकता है

पहले के दिनों में, एक सांसारिक व्यक्ति कुछ भी करने निकलने से पहले अच्छी तरह सोच-समझ लेता था। हालाँकि, यदि कोई आध्यात्मिक व्यक्ति कुछ करना चाहता था, तो वह पहले सोच-समझता और प्रार्थना भी करता था। आजकल, 'आध्यात्मिक' लोग भी न केवल प्रार्थना करने में वफिल रहते हैं, बल्कि वे सोचते भी नहीं हैं। यह मामला अक्सर गंभीर मुद्दों से संबंधित होता है, फरि भी वे प्रयोग करते हैं—और किस पर? लोगों पर! हर मामले में, कुछ भी करने से पहले, आइए हम खुद से पूछें: 'क्या मैंने इस पर अच्छी तरह से विचार किया है? क्या मैंने इसके बारे में प्रार्थना की है?' बिना सोचे-समझे या प्रार्थना किए कुछ करने से, एक व्यक्ति शैतानी तरीके से काम करता है। अक्सर, कई ईसाई अपने कार्यों के माध्यम से ईश्वर के हस्तक्षेप में बाधा डालते हैं। वे मानते हैं कि वे इस कार्य को स्वयं संभाल सकते हैं, और जबकि अविश्वासी भी कहते हैं, 'ईश्वर की मदद से,' ये लोग इस तरह से बात नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति कार्नविल,²³⁶ के खिलाफ अभियान चला रहा है, जबकि वह प्रार्थना कर सकता है, और ईश्वर ऐसी ओलावृष्टि भेज देगा कि सारी भीड़ तितर-बितर हो जाएगी और सभी प्रदर्शन रद्द हो जाएंगे। या, मान लीजिए कुछ लोग किसी बशिप पर कुछ आरोप लगाते हैं; अन्य लोग इन आरोपों के खिलाफ राज्य परिषद में अपील करते हैं, लेकिन वे यहीं नहीं रुकते: प्रदर्शन, हंगामा, अखबारों के लेख... मानवीय प्रयास अनंत हैं — ये लोग ईश्वर को कार्य करने नहीं देते; वे प्रार्थना की ओर नहीं मुड़ते ताकि वह इसके माध्यम से उत्तर दे सकें। जो कुछ भी गड़बड़ है और जिसे ठीक नहीं किया जा सकता, वह सब वनिम्रता और प्रार्थना के द्वारा ठीक हो जाता है।

आज हम प्रलय के समय में जी रहे हैं, और यह महसूस करने के लिए किसी नबी होने की आवश्यकता नहीं है। सब कुछ एक के बाद एक हो रहा है। हम नहीं जानते कि आगे क्या है; यह दुनिया में प्रचलित परिस्थितियों से स्पष्ट है। इसलिए, पहले से कहीं ज्यादा, हमें प्रार्थना पर अधिक दृढ़ता से भरोसा करने और प्रार्थना से बुराई से लड़ने की जरूरत है। यही एकमात्र रास्ता है। आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह अपनी सृष्टि पर दया करें, भले ही हम उनकी दया के योग्य नहीं हैं। लोग एक-दूसरे से सहमत नहीं बना पाएंगे। हर कोई वही करेगा जो उसे भाए। जैसा कि एटोलीया के संत

²³⁶ यह ग्रीस की गैर-ईसाई परंपरा का संदर्भ है, जिसमें एक वार्षिक श्रोवेटाइड कार्नविल आयोजित किया जाता है, जिसके साथ जोरदार तमाशे और लोकप्रिय उत्सव होते हैं। — अनुवादक का नोट।

कॉस्मास ने भवषियवाणी की थी, वैसा ही होगा:²³⁷ "एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से मलिन के लिए लंबा रास्ता तय करना होगा, और जो बचेंगे वे सोने के चम्मच से खाएंगे।" बेशक, कुछ लोग सोच सकते हैं: 'अगर भवषियवाणियाँ वैसे भी सच होने वाली हैं तो प्रार्थना का क्या फायदा?' हाँ, ईश्वर जानते हैं कितना ठीक इसी तरह घटित होगी, लेकिन हम प्रार्थना इसलिए करते हैं ताकि बुराई कम दर्दनाक हो और फैले नहीं। इसीलिए सुसमाचार में कहा गया है कि चुने हुएों के लिए, दानों को कम कर दिया जाएगा।²³⁸ उदाहरण के लिए, युद्ध में, प्रार्थना की शक्ति चमत्कार करती है: अधिक लोग बच जाते हैं, जबकि इसके विपरीत, हताहतों की संख्या कम हो जाती है। लोग इन सब से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करते हैं; वे आसक्ति बन जाते हैं और बेहतर के लिए बदल जाते हैं।

यह कोई हँसी-मजाक की बात नहीं है। यह अपने आप में एक चमत्कार है कि दुनिया अभी तक चकनाचूर नहीं हुई है। ईश्वर अपना हाथ बढ़ाए — पूरी दुनिया तीन-चार लोगों पर निर्भर है; उसकी तकदीर कुछ पागलों के हाथ में है। जैसा कि कहावत है: 'जब घोड़े लड़ते हैं, तो मुरगियाँ कुचली जाती हैं।' वास्तव में यह ठीक ऐसा ही है। जब महाशक्तियों के बीच झगड़ा होता है, तो बदकस्मिन् छोटे लोगों पर अन्याय की बौछार हो जाती है। बड़े इधर-उधर लातें मारते हैं, जबकि छोटे बखिर जाते हैं। हमें सत्ता में बैठे लोगों को ज्ञान देने के लिए ईश्वर से बहुत प्रार्थना करने की आवश्यकता है, क्योंकि, यदि वे चाहें, तो वे दुनिया को नष्ट कर सकते हैं। लेकिन ईश्वर उन्हें भी बहुत आसानी से थोड़ा ज्ञान दे सकते हैं। यदि वह केवल एक व्यक्ति को ज्ञान दे दें, तो बस उस व्यक्ति को उचित आदेश देना होगा, और सब कुछ बदल जाएगा।

प्रार्थना में नविदन

— गेरोन्डा, क्या आप, यदि संभव हो, हमें कुछ विशेष बता सकते हैं जिसके लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए?

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आइए हम प्रार्थना करें कि हमारी प्रार्थनाओं के माध्यम से, जो जीवित हैं और जो अभी पैदा होने वाले हैं, वे ईश्वर का आदर करें। जब मैं अपनी प्रार्थना में कहता हूँ, 'जो तुम्हें जानते हैं, उन पर अपनी दया दिखाओ,' तो मैं जोड़ता हूँ: '...और जो तुम्हें नहीं जानते।' और मैं इस प्रकार भी प्रार्थना करता हूँ: 'प्रभु, अधर्मी लोगों को बचा।' (चर्च ने, बेशक, सही ढंग से यह आह्वान स्थापित किया है: 'प्रभु, धर्मपरायण लोगों को बचा,' क्योंकि अन्यथा अधर्मी लोग यह सुनकर आहत हो सकते हैं कि उनके लिए प्रार्थनाएँ की जा रही हैं।) फिर, जब पुरोहित कहते हैं: 'हे उन लोगों, जिन्होंने हम जैसे अयोग्यों को उनके लिए प्रार्थना करने का आदेश दिया है,' तो मैं जोड़ता हूँ: '...और उन लोगों के लिए जिन्होंने हमें आदेश नहीं दिया है,' क्योंकि हमें उन लोगों के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए जिन्होंने हमसे ऐसा करने को कहा है और उन लोगों के लिए भी जिन्होंने नहीं कहा है, उन लोगों के लिए जिन्हें हम जानते हैं और जिन्हें हम नहीं जानते। कितने ही हजारों लोगों की ज़रूरतें और समस्याएँ उन लोगों से कहीं ज्यादा बड़ी और गंभीर हैं, जिन्होंने हमारी प्रार्थनाओं के लिए कहा है! आइए हम उन लोगों के लिए भी प्रार्थना करें जिनके साथ अन्याय हुआ

²³⁷ एटोलीया के संत कोस्मास, पवित्र शहीद और प्रेरितों के समान († 1779; उनकी शहादत की स्मृति 24 अगस्त को)। वे 18वीं सदी में रहते थे। उन्होंने माउंट अथोस पर एक भिक्षु के रूप में काफी समय बिताया। अपनी द्रव्य पुकार के बाद, वे दुनिया में निकल पड़े और तुर्की के कब्जे वाले ग्रीस के कस्बों और गांवों में प्रचार करते हुए घूमे। उन्होंने सुसमाचार का उपदेश दिया, स्कूल खोले, और ग्रीकों के इस्लामीकरण का विरोध किया। उन्होंने कई चमत्कार किए और संपूर्ण मानवता के भवषिय के बारे में कई भवषियवाणियाँ छोड़ीं। उन्हें आधुनिक युग के एक महान भवषियवक्ता के रूप में सही मायने में माना जाता है। 2007 में, 'होली माउंट' पब्लिशिंग हाउस ने अथानासियोस जोइटाकसि की पुस्तक *द लाइफ एंड प्रॉफेसीज ऑफ़ कॉस्मास ऑफ़ एटोलीया* प्रकाशित की। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

²³⁸ मत्ती 24:22; मरकुस 13:20 देखें।

है, कसिचचाई सामने आए; कजिल में बंद लोगों को क्षमा मलि जाए, और जो दुख उन्होंने सहा है, वह उनके भले के लिए काम करे, और वे सुधर सकें।

जब मैं आग में लकड़ियाँ डालता हूँ तो मैं प्रार्थना करता हूँ: 'हे मेरे ईश्वर, जो लोग गर्मी से वंचित हैं, उन्हें गर्मी प्रदान करो।' जब मैं मुझे भेखे गए पत्र जलाता हूँ (उन्हें पढ़ने के बाद, मैं उन्हें इसलिये जलाता हूँ क्योंकि उनमें ऐसी बातें होती हैं जो दूसरों को नहीं पता होनी चाहिए, और विशेष रूप से पापों के स्वीकारोक्ति), तो मैं कहता हूँ: 'ईश्वर उनकी सभी कमियों को जलाकर दूर कर दे। ईश्वर उन्हें आध्यात्मिक रूप से जीने में मदद करे और उन्हें पवित्र करे।' मेरी यह भी आदत है कि मैं संतों से उन लोगों के लिए मध्यस्थता करने का अनुरोध करता हूँ जिनके नाम उनके नाम पर हैं, और मैं सभी संतों से उन लोगों के लिए मध्यस्थता करने का अनुरोध करता हूँ जिनका कोई संरक्षक संत नहीं है।²³⁹

— गेरोन्डा, क्या बेहतर है: सामान्य रूप से ईश्वर की दया माँगना, या उद्धारकर्ता की आज्ञा के अनुसार, 'माँगे, तो तुम्हें दिया जाएगा' (²⁴⁰), प्रार्थना में किसी वशिष्ट चीज के लिए माँगना?

— सामान्य शब्दों में प्रार्थना करें और कहें: 'हे प्रभु यीशु मसीह, शरीर और आत्मा में पीड़ित लोगों पर दया करें।' इस प्रार्थना में दविंगत आत्माएँ भी शामिल हैं। यदि कोई रशितेदार मन में आए, तो उनके लिए प्रार्थना करें: 'अपने सेवक (नाम) पर दया करें', और फिर तुरंत पूरी दुनिया के लिए सामान्य प्रार्थना पर आ जाएँ: 'अपनी सारी दुनिया पर दया करें।' आप किसी जरूरतमंद विशेष व्यक्ति को याद कर सकते हैं, उनके लिए संक्षेप में प्रार्थना कर सकते हैं, और फिर "हे प्रभु यीशु मसीह, हम पर दया करें" की प्रार्थना कह सकते हैं — सभी के लिए दुख की भावना के साथ, ताकि... ट्रेन सिर्फ एक यात्री के साथ न चल जाए। सिर्फ एक व्यक्ति पर अटकने की कोई आवश्यकता नहीं है, अन्यथा हम प्रार्थना के माध्यम से न तो खुद की और न ही दूसरों की मदद कर पाएंगे। जब आप, उदाहरण के लिए, किसी कैसर पीड़ित के लिए प्रार्थना करें, तो सभी कैसर पीड़ितों के लिए प्रार्थना करें, और दविंगतों के लिए भी एक प्रार्थना जोड़ें। या, यदि आप किसी संकट में पड़े व्यक्ति को देखें, तो अपने विचार तुरंत सभी संकटग्रस्त लोगों की ओर मोड़ें, और उनके लिए प्रार्थना करें। मुझे बचपन में एक भखारी याद है जो हमारे घर से दस मीटर दूर एक तुर्की घर के दरवाजे पर मर गया था। उसका नाम पीटर था। सुबह एक तुर्की महिला ने उसे उनके बरामदे के पास पड़ा हुआ पाया, और जब उसने उसे धक्का देने की कोशिश की, तो उसे एहसास हुआ कि वह मर चुका था। मुझे आज भी वह याद है। और दुनिया में ऐसे कितने ही 'पीटर' हैं! प्रार्थना करने वाले के लिए यह मददगार है कि वह कुछ वशिष्ट माँगे और अपने पड़ोसियों के दुख के बारे में सोचे, क्योंकि इससे हृदय में पीड़ा जागृत होती है। और फिर, हृदय में पीड़ा के साथ, व्यक्ति प्रार्थना में विशेष से सामान्य की ओर लौटता है, और हार्दिक प्रार्थना के माध्यम से लोगों की ओर भी अधिक मदद करता है।

एक भिक्षु के लिए अपनी प्रार्थना को तीन भागों में विभाजित करना अच्छा है: अपने लिए, पूरी दुनिया के लिए, और दविंगतों के लिए। लेकिन इस तरह के विभाजन के बावजूद, भले ही यह बराबर लगता हो, एक भिक्षु की सबसे बड़ी चिंता अपने लिए होती है, क्योंकि उसकी केवल एक आत्मा है, जबकि जीवित और दविंगत लोग अरबों की संख्या में हैं।

— गेरोना, मैं आमतौर पर अपने कर्तव्यों के दौरान केवल अपने लिए ही प्रार्थना करता हूँ।

— यह गलत है। यदि आप अपनी कोठरी में केवल अपने लिए प्रार्थना करते हैं, यदि आप ड्यूटी के दौरान केवल अपने लिए प्रार्थना करते हैं, तो आपका हृदय दुख से कैसे स्पर्शित होगा? जब किसी व्यक्ति में प्रेम, दुख और आत्म-

²³⁹ ग्रीक चर्च गैर-ईसाई नामों वाले लोगों का बपतिस्मा करना अस्वीकार्य नहीं मानता है। स्थापित प्रथा के अनुसार, ऐसे लोग सर्व संत स्वरि को अपना नाम दविस मनाते हैं। — अनुवादक की टिप्पणी।

²⁴⁰ मत्ती 7:7.

त्याग उत्पन्न होते हैं, तो दूसरों के लिए एक विशेष उच्च चिंता भी उत्पन्न होती है, और हृदय को इसमें मिलास मिलती है।

इस तरह, कोई काम करते समय प्रार्थना करना नहीं भूलता। तब लोगों को वास्तविक सहायता मिलती है, लेकिन जो प्रार्थना करता है और आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करता है, उसे भी सहायता मिलती है। अपना कर्तव्य नभाएँ और प्रार्थना करें: 'हे प्रभु यीशु मसीह, हम पर दया करें,' ताकि आपकी प्रार्थना सभी लोगों की मदद कर सके। यह 'हम पर दया करें' सभी लोगों को समाहित करता है, यहाँ तक कि उन पाँच या छह—चाहे कितने भी हों—'महान लोगों' को भी, जिन पर पूरी दुनिया का भाग्य निर्भर करता है। जो परश्रम करते हैं उनके लिए काम करें और प्रार्थना करें। यह प्रार्थना उन दोनों की मदद करती है जो शारीरिक रूप से परश्रम करते हैं और जो आध्यात्मिक रूप से परश्रम करते हैं। क्योंकि किई लोग परश्रम कर रहे हैं, और इसके अलावा, वे लगन से परश्रम करते हैं। कुछ चर्च और राज्य की भलाई के लिए परश्रम करते हैं। अन्य बुराई के लिए परश्रम करते हैं: वे पूरी रात जागते हैं, दुनिया को नष्ट करने के तरीके सोचते हैं। तीसरा समूह सम्मेलनों में इकट्ठा होता है और पहले वालों को बुराई करने से रोकने का कोई रास्ता खोजने की कोशिश करता है। चौथा समूह भी दिन-रात, बिना सोए, सार्वभौमिक मानवीय समस्याओं के समाधान खोजने के लिए प्रयासरत रहता है। प्रार्थना करें कि ईश्वर दुष्टों को ज्ञान दे ताकि वे कम बुराई करें, या ईश्वर बुराई को पूरी तरह से दूर कर दे। प्रार्थना करें कि वह नेक लोगों को ज्ञान दे ताकि वे लोगों की मदद कर सकें। उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो काम करना चाहते हैं लेकिन बीमार होने के कारण असमर्थ हैं; उन लोगों के लिए भी प्रार्थना करें जो स्वस्थ हैं लेकिन काम नहीं ढूँढ़ पा रहे हैं, जबकि उन्हें इसकी आवश्यकता है। विभिन्न परिस्थितियों के बारे में सोचें और उनके लिए प्रार्थना करें। जब आपका मन इन सभी लोगों की ओर मुड़ता है, तो आपका हृदय दुख से भर जाता है, और आपकी प्रार्थना हार्दिक हो जाती है। दिन भर में कितनों को प्रार्थना की आवश्यकता होती है! अतः अपना समय बर्बाद न करें। किसी ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना शुरू करने के बाद जिसने इसके लिए कहा हो (इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्रार्थना की वास्तविक आवश्यकता कम होने के बावजूद, वे मानते हैं कि उन्हें इसकी आवश्यकता है), प्रार्थना करने वाला और आगे बढ़ता है और उन सभी के बारे में सोचता है जिनमें और भी अधिक आवश्यकता है। और फिर जिसने सोचा था कि उसे प्रार्थना की आवश्यकता है, उसे भी मदद मिलती है, क्योंकि वह कई लोगों की ओर से किसी और की प्रार्थना का कारण बना।

प्रार्थना के माध्यम से प्रदान की गई सहायता

— पवित्र प्रेरित जेम्स, गेरोन्डा कहते हैं: 'धर्मी व्यक्तिकी प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावशाली होती है।' 'शक्तिशाली और प्रभावशाली' का क्या अर्थ है?

— किसी की प्रार्थना मांगने वाले के लिए यह भी आवश्यक है कि वह स्वयं की मदद करना चाहे, वह उद्धार पाना चाहे। उसे प्रयास करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक धर्मी व्यक्तिकी प्रार्थना से मदद प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को स्वयं भी एक अच्छे मानसिक दशा में होना चाहिए। ईश्वर हृदय से की गई प्रार्थना सुनता है; हालाँकि, जिस व्यक्ति के लिए कोई प्रार्थना कर रहा है, उसे भी उस मदद को स्वीकार करने के लिए तैयार होना चाहिए। यदि वे तैयार नहीं हैं,

तो प्रार्थना करने वाले के पास पैसयिस द ग्रेट की पवतिरता होनी चाहिए ताकि वह उनकी आत्मा को नरक से बचा सके।²⁴¹ इसलिए, पहले उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो मोक्ष की ओर झुकाव रखते हैं।

जब मैं ईश्वर से वभिनिन आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करता हूँ, तो मैं कहता हूँ: "हे मेरे ईश्वर, आपकी सहायता स्पष्ट हो, ताकि लोग इससे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर सकें। यदि, हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है, तो हमारी मदद की कोई आवश्यकता नहीं है।" कई लोगों को यह भी एहसास नहीं होता कि ईश्वर हमें कनि तूफानों से बचाता है; वे इस पर दूसरा विचार नहीं करते और उसकी महिमा नहीं करते। इसलिए, आइए हम प्रार्थना करें कि मसीह, ईश्वर की माता, और संतों लोगों की मदद करें, लेकिन उनकी मदद मूर्त हो, ताकि यह लोगों के लिए लाभदायक हो सके। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कोई मचान से फसिलकर नदी में गिर जाता है, लेकिन ईश्वर ऐसा प्रबंध कर देता है कि वह किसी ऐसी चीज को पकड़ लेता है जहाँ पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं था, और वह बच जाता है। या कोई गिर जाता है और उसे कोई चोट नहीं लगती, या कार दुर्घटना में फंसकर भी बाल-बाल बच जाता है। इन सभी मामलों में, व्यक्ति को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह यह महसूस करे कि उसे इसलिए बचाया गया क्योंकि ईश्वर ने उसकी मदद की और, यह महसूस करने के बाद, वह आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करे। मेरा एक परिचित एक पुल से नदी में गिर गया और बच गया। मैंने उससे पूछा, 'तो फिर, क्या तुम गहराई का पता लगाने के लिए कूदे थे?' संत हमें अपनी बाहों में उठाए हुए हैं। मैंने एक युवक को आशीर्वाद के रूप में एक क्रॉस दिया। वह अपनी मोटरसाइकिल पर तेजी से जा रहा था और वह मोटरसाइकिल के साथ ही एक टैक्सी के ऊपर से उछल गया, हवा में पलटा और बिना किसी खरोंच के सड़क पर तेजी से आगे बढ़ गया। कई लोग निश्चिंता मृत्यु से बच जाते हैं, लेकिन बहुत कम लोग इसे महसूस करते हैं और अपने रास्ते सुधारते हैं।

— अगर मैं किसी के लिए प्रार्थना करूँ, लेकिन वह स्वयं मदद मांगे नहीं, तो क्या उसे मदद मिलेगी?

— यह कई बातों पर निर्भर करता है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, यदि उस व्यक्ति के इरादे अच्छे थे लेकिन उन्हें उन्हें अमल में लाने का कोई अनुकूल अवसर नहीं मिला, तो वे दैवीय सहायता के हकदार हैं। भले ही दूसरे उनके लिए प्रार्थना न करें, समय बीतेगा, और ईश्वर उन्हें अपने रास्ते सुधारने का एक अनुकूल अवसर प्रदान करेंगे। लेकिन अगर वे शुरू से ही मदद मांगते हैं, तो ईश्वर हस्तक्षेप करेंगे, और वे जल्द ही अपने रास्ते सुधार लेंगे। अन्यथा, वे बाद में अपने रास्ते सुधारेंगे। प्रार्थना के माध्यम से, हम ईश्वर को हस्तक्षेप करने का अधिकार देते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है: यदि कोई व्यक्ति दिल से मदद मांगता है और वनिमृतापूर्वक कहता है: 'मेरे लिए भी प्रार्थना करें, पिताजी,' तो वह आपके दिल को गहराई से छूता है, और आप उसे भूल नहीं सकते। लेकिन अगर वह बहुत ही सतही ढंग से कहे: 'प्रार्थना करें, प्रार्थना करें, बस थोड़ी सी प्रार्थना कह दीजिए,' जैसे आपको 'नमस्ते!' कह रहा हो — तो आप उसे कैसे याद रख सकते हैं?

जब दुनिया की ज़रूरतों के लिए हार्दिक, पीड़ा से भरी प्रार्थना की जाती है, तो जो लोग उसी क्षण ईश्वर से मदद मांग रहे होते हैं, उन्हें वह तुरंत प्राप्त होती है। मैं इसके कई बहुत स्पष्ट उदाहरण दे सकता हूँ। कई साल पहले, एक आदमी, जो गहरी निराशा में था और जिसका दमिग भ्रमति था, सीमा पार कर गया और खुद को एक साम्यवादी देश में पाया। वहाँ, उसे जासूस समझकर गिरफ्तार कर लिया गया, पीटा गया और जेल भेज दिया गया। जेल में, उसने प्रार्थना

²⁴¹ महान पूज्य पैसयिस का जीवन निम्नलिखित घटना का वर्णन करता है: एक लापरवाह नवसखिआ अवज्ञा के कारण एक निश्चिंता पाप में पड़ गया और पश्चाताप करने का मौका मिलने से पहले ही मर गया। उनके वरिष्ठ की लगातार प्रार्थनाओं के बाद, ईश्वर ने उन्हें प्रकट किया कि उस नवसखिआ की आत्मा न्याय के दिनों तक नरक में रहेगी, जिस दिनों उसे अपना अंतमि, उपयुक्त पुरस्कार मिलेगा। तब वरिष्ठ ने परम पूज्य पैसयिस की ओर मुड़कर उनसे मृतक की मुक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया। आदरणीय संत की प्रार्थना की तीव्रता के कारण, मसीह ने उस पश्चाताप न करने वाले नवसखिआ की आत्मा को नरक से मुक्त कर दिया।

की। एक भिक्षु जिसे मैं जानता था, उसे उसकी दुर्दशा का पता चला और उसने प्रार्थना की: 'हे मेरे ईश्वर, मैं आपसे वनिती करता हूँ, उसे मुक्त कर दें! यह आपके लिए करना आसान है।' उसे पूछताछ के लिए जेल से बाहर ले जाया गया, और पूछताछ के बाद वह... खुद को ग्रीक क्षेत्र में पाया। जब हमारे जांचकर्ताओं ने उससे पूछताछ की, तो उसने जवाब दिया: "उन्होंने मुझे पीटा, मुझे जेल में डाल दिया, और कबूलनामा देने की मांग की। जहाँ तक इसके बाद क्या हुआ, मुझे याद नहीं है। मुझे यह भी एहसास नहीं हुआ कि मैं ग्रीक सीमा चौकी पर कैसे पहुँच गया; मुझे नहीं पता यह कैसे हुआ।" प्रार्थना की यही शक्ति है। प्रार्थना ईश्वर को दया दिखाने के लिए प्रेरित करती है।

यह अच्छा है जब हमारा 'रेडियो' लगातार चालू रहता है, ताकि हम मदद मांगने वाले हर किसी के साथ संपर्क बनाए रख सकें। सेना में, सग्नल कंपनी में, हम सिर्फ दुश्मन के रेडियो स्टेशनों की नगिरानी ही नहीं करते थे; हम अपने ही लोगों की भी मदद करते थे। हम उन लोगों के लिए एक रलि स्टेशन चालू करते थे जो केंद्र से दूर थे और जनिके पास पर्याप्त बजिली नहीं होती थी; हम उनके संदेश प्राप्त करते और उन्हें आगे भेजते थे। हमेशा हम दो लोग होते थे, और हम चौबीसों घंटे रेडियो संभालने के लिए दो पालियों में काम करते थे, क्योंकि अगर केवल एक ही रेडियो ऑपरेटर होता, तो उसे ब्रेक लेना पड़ता, और फरि मदद के जरूरतमंद व्यक्तिको मदद नहीं मिल पाती; उसके संदेश अपनी मंजलि तक नहीं पहुँच पाते। इस तरह का एक अकेला रेडियो, अगर वह लगातार काम करता रहे, तो उन लोगों की मदद कर सकता है जनिके संदेश मुख्यालय तक नहीं पहुँचते। इसी तरह, जो कोई भी ईश्वर के पास जाने का साहस करता है और अपने पड़ोसी के लिए प्रार्थना करता है, वह मदद मांगने वाले व्यक्ति और ईश्वर के बीच अपना मध्यस्थ 'रेडियो स्टेशन' सक्रिय करता है। लेकिन अगर एक व्यक्ति मदद मांगता है जबकि दूसरा अपना 'रेडियो स्टेशन' बंद कर देता है, तो उसका क्या परिणाम होगा?..

प्रार्थना का मूल्य उसकी गुणवत्ता में नहिती है

— गेरोन्डा, जब हम कुछ गंभीर मांगते हैं, तो क्या प्रार्थना के साथ उपवास नहीं होना चाहिए?

— इसका उल्लेख करना भी जरूरी नहीं है; यह अनविरय है। उपवास और तपस्या प्रार्थना के लिए पूर्वापेक्षाएँ हैं। लेकिन प्रार्थना सच्ची होने के लिए, किसी को दूसरों के लिए पीड़ा का अनुभव करना चाहिए। आखिरकार, हमारे युग के कई ईसाइयों के लिए, चिंता न करने की इच्छा ही पहले से ही मानक, मानदंड बन चुकी है। दनि भर कुछ नहीं करने वाले पेंशनभोगी भी एक परतियक्त बच्चे को नहीं पालना चाहते, क्योंकि इससे उन्हें परेशानी होगी। वे तो एक नवाला खाना, एक कप कॉफी पीना, टहलने जाना, नर्सों और देखभाल करने वालों के साथ अस्पताल में किसी बीमार व्यक्तिसे मलिना, या किसी ऐसी जगह जाना पसंद करेंगे जहाँ सब कुछ व्यवस्थिति हो, क्योंकि यह आसान है। दूसरे शब्दों में, यह सब उनके लिए एक सुखद अनुभव होगा, और साथ ही वे अपने आप को यह कहकर तसल्ली देंगे कि उन्होंने अपना कर्तव्य नभिया है। मैंने कतिने लोगों से परतियक्त बच्चों की मदद करने के लिए कहा है! लेकिन सब व्यर्थ गया।

एक बार पवतिर पहाड़ पर, वे बारशि के लिए एक जुलूस निकालने गए, और बारशि के बजाय आग लग गई! जुलूस में ऐसे नहीं जाना चाहिए जैसे कोई सैर-सपाटा हो। उसमें पीड़ा होनी चाहिए। नशिचति रूप से कोई प्रलोभन या कठनिई अनसुलझी नहीं रहेगी अगर भिक्षु दलि से प्रार्थना करें? लेकिन मैं देखता हूँ कि इन सभी कठनि वर्षों के बावजूद मठों में कसि भावना का बोलबाला है। 'आओ आनंद मनाएँ!' लेकिन दुनिया आग में जल रही है! हमें किसी बीमार के लिए जागरण रखने को कहा जाता है। हम गाते हैं: 'मैं अपने हाथ तुझ पर उठाता हूँ' और आनंदति होते हैं। एक व्यक्तिभिर रहा है, फरि भी हम खुशी-खुशी समय बतिाते हैं और कहते हैं: 'हमने बीमार व्यक्ति के लिए जागरण किया है।' यह कैसा जागरण है?! आपने अपने लिए थोड़ी मनोरंजन की व्यवस्था कर ली है! हाँ, यह आध्यात्मकि मनोरंजन है। और कभी-कभी हम उन

लोगों के लिए प्रार्थना भी नहीं करते जो बीमार हैं, तब भी जब पुरोहित घोषणा करता है: 'अस्वस्थ लोगों के लिए।' लेकिन हमारी मदद अधिक प्रभावी होगी यदि हम अपनी माला के मनकों से थोड़ी प्रार्थना करें। मैं चर्च के वधानों द्वारा निर्धारित उत्सव की प्रार्थना सभाओं को समाप्त करने का आह्वान नहीं कर रहा हूँ, लेकिन अभी-अभी बताए गए जैसे मामलों में, हमें कम से कम एक या दो जपमालाएँ इस प्रार्थना के साथ कहने के लिए थोड़ा समय निकालने की जरूरत है: 'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने सेवक पर दया करें।'

सम्पूर्ण आधार प्रार्थना की गुणवत्ता में नहिती है। प्रार्थना हृदय से आनी और दुख से उत्पन्न होनी चाहिए। ईश्वर के लिए, प्रार्थना की मात्रा की तुलना में उसकी गुणवत्ता अधिक मायने रखती है। मठों में बहुत प्रार्थना होती है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है; उसमें गुणवत्ता भी होनी चाहिए। कतिने ही लोग कतिने ही घंटे प्रार्थना करते हैं! अगर यह प्रार्थना हार्दिक होती, तो दुनिया बहुत पहले ही बदल जाती! और इसलिए उद्देश्य यह है कि चर्च की सेवाएँ हृदय से की जाएँ।

दिल से की गई प्रार्थना न केवल दूसरों की मदद करती है, बल्कि खुद हमारी भी, क्योंकि यह हमारे भीतर के सद्गुणों के विकास को बढ़ावा देती है। जब हम खुद को दूसरे की जगह रखते हैं, तो प्रेम, करुणा, वनिम्रता और ईश्वर के प्रतिकृतज्ञता—साथ ही उनकी अखंड स्तुति—स्वाभाविक रूप से हमारे भीतर उत्पन्न होती है। और फिर, ईश्वर को प्रसन्न करके, हमारे पड़ोसी के लिए हमारी प्रार्थना उनकी मदद करती है।

"और उसके जरूरतमंदों"²⁴²

— गेरोनडा, मुझे क्या करना चाहिए? प्रार्थना के दौरान, मेरा दिल ठंडा रहता है।

— ऐसा इसलिए है क्योंकि मन संदेश नहीं भेज रहा है। इसके अलावा, प्रार्थना में प्रयास की आवश्यकता होती है; पलक झपकते ही ऐसी अवस्था में पहुँचना असंभव है जहाँ मन बलिकूल न भटके। धैर्य आवश्यक है। कोई दरवाज़े पर कैसे दस्तक देता है? कोई एक बार दस्तक देता है, फिर से, फिर इंतज़ार करता है — और दरवाज़ा खुल जाता है। लेकिन तुम चाहते हो कि एक बार खटखटाओ और सीधे अंदर चले जाओ। ऐसा नहीं होता। जब तुम प्रार्थना करना शुरू करते हो, तो क्या तुम्हें ऐसा करने की कोई इच्छा नहीं होती?

— मुझे लगता है कि मुझे मदद की जरूरत है, क्योंकि मैं कमजोर महसूस करता हूँ।

— आह, यह बलिकूल वहीं से शुरू होता है। प्रार्थना में दृढ़ता आवश्यक है। 'और उन्हें उसकी आवश्यकता थी,' एम्माउस के रास्ते पर प्रभु से मिलने वाले दो शिष्यों के बारे में सुसमाचार कहता है। मसीह उनके साथ रुके क्योंकि उनके साथ [आध्यात्मिक] एकता में होने के नाते, उन्हें इसका अधिकार था। उनमें वनिम्रता, सरलता, दयालुता और साहस था — शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। मसीह के उनके साथ रहने के लिए सभी पूर्वापेक्षाएँ उनमें थीं, और इसीलिए उन्होंने ऐसा किया।

हमें जो कुछ भी हम माँगते हैं, उसके लिए हमें विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए; हमें धैर्य रखना चाहिए, और ईश्वर बोलेंगे। क्योंकि, विश्वास के साथ प्रार्थना करके, एक व्यक्ति एक तरह से ईश्वर को उस विश्वास के लिए माँग की गई वस्तु को प्रदान करने के लिए बाध्य कर देता है। इसलिए, जब हम ईश्वर से कुछ माँगे, तो हमें 'उगमगाना नहीं

²⁴² लूका 24:29।

चाहिए और हमारी सुनी जाएगी। 'वश्वास करो और संदेह न करो,'²⁴³ — प्रभु ने कहा। ईश्वर जानते हैं कहिमें वह कब देना है जो हम मांगते हैं, इस तरह से कहिससे हमें आध्यात्मिक हानि न हो। कभी-कभी हम ईश्वर से कुछ मांगते हैं, लेकिन हमारे पास धैर्य नहीं होता और हम चित्ति हो जाते हैं। अगर हमारा ईश्वर शक्तिशाली न होता तो हमें चित्ति करने का कारण होता, लेकिन चूँकि हमारे पास एक सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जिसका प्रेम इतना महान है कि वह हमें अपने लहू से पोषित करता है, इसलिए हमारी चित्ति का कोई बहाना नहीं है। कभी-कभी हम किसी कठिनाई के समाधान को ईश्वर के हाथों में नहीं सौंपते, बल्कि मानवीय तरीके से काम करते हैं। जब हम ईश्वर से कुछ मांगते हैं, लेकिन हमारा वश्वास डगमगा जाता है, और—उनके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना—हम मानव तरीके से उस चीज़ को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं जैसे प्राप्त करना कठिन है, तो यह ऐसा है जैसे हम राजा ईश्वर के सामने एक याचिका प्रस्तुत कर रहे हों, लेकिन जब वह कार्य करने के लिए अपना हाथ बढ़ाते हैं, तो हम अपनी याचिका वापस ले लेते हैं। फिर हम उनसे फिर से पूछते हैं, लेकिन हमारा वश्वास एक बार फिर डगमगा जाता है; हम फिर से चित्ति हो जाते हैं और वही बात दोहराते हैं। इस प्रकार हमारा दुख चलता रहता है। दूसरे शब्दों में, हम उस व्यक्तिकी तरह व्यवहार करते हैं जो किसी सरकारी विभाग में आवेदन जमा करता है, लेकिन जल्द ही अपना मन बदलकर उसे वापस ले लेता है। फिर वे अपना मन बदलते हैं और उसे एक बार फिर जमा करते हैं; थोड़ा और समय बीतता है, और वे उसे फिर से वापस ले लेते हैं। हालाँकि, आवेदन को अपनी बारी आने के लिए वहीं रहना चाहिए।

दर्द के साथ प्रार्थना

— जेरोडा, किसी विशेष आवश्यकता के लिए आप कैसे प्रार्थना करते हैं?

— हर चीज़ की कुंजी यह है कि वह पीड़ादायक होनी चाहिए। यदि वह पीड़ादायक नहीं है, तो आप घंटों तक अपनी माला जप सकते हैं, लेकिन आपकी प्रार्थना का कोई फल नहीं निकलेगा। यदि कोई व्यक्ति उस चीज़ की पीड़ा महसूस करता है जिसके लिए वह प्रार्थना कर रहा है, तो एक आह भी हृदय से की गई प्रार्थना मानी जाती है। कई लोगों के पास दूसरों के लिए प्रार्थना करने का समय नहीं होता, और इसलिए वे केवल एक आह भरकर ही उनकी ज़रूरतों के लिए प्रार्थना कर लेते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, लेकिन अगर ऐसा हो कि समय न हो, तो किसी और के दर्द के लिए एक आह ही दिल से की गई प्रार्थना है। यानी, अपनी शक्त के मामले में, यह घंटों की प्रार्थना के बराबर है। उदाहरण के लिए, आप एक पत्र पढ़ते हैं, एक ज़रूरत देखते हैं, एक आह भरते हैं, और फिर प्रार्थना करते हैं। ओह, यह कतिनी अद्भुत बात है! आपने फोन तक नहीं उठाया है, आपने नंबर तक डायल नहीं किया है, और ईश्वर पहले से ही आपको सुन रहे हैं! और जिसके लिए ऐसी प्रार्थना की जाती है, वह यह बात कतिनी अच्छी तरह समझता है! देखिए, भूत-प्रेत बाधति लोग, वे कहीं भी हों, यह कब समझ जाते हैं कि मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ, और वे पुकार उठते हैं!

सच्ची प्रार्थना कोई सुख नहीं है, न ही 'निर्वाण'; इसकी शुरुआत दर्द से होती है। यह किस तरह का दर्द है? एक व्यक्ति वेदना में होता है, शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में। वह दर्द में होता है, वह कराहता है, वह पीड़ित होता है, चाहे वह जिसके लिए भी प्रार्थना कर रहा हो। क्या आप जानते हैं कि 'पीड़ित होने' का क्या मतलब है? हाँ, वे पीड़ित होते हैं क्योंकि वे सामूहिक मानवीय पीड़ा या किसी विशिष्ट व्यक्ति के दर्द में भागीदार होते हैं। इस सहभागिता के लिए, इस पीड़ा के लिए, ईश्वर उन्हें दिव्य आनंद से पुरस्कृत करते हैं। बेशक, कोई व्यक्ति दिव्य आनंद की मांग नहीं करता; यह एक परिणाम के रूप में आता है, क्योंकि वे किसी और के दर्द में भागीदार होते हैं।

²⁴³ मत्ती 21:21 देखें।

— शुरुआत कहाँ से करें?

— एक व्यक्ती को किसी बात की जानकारी होती है, उदाहरण के लिए, कोई दुर्घटना हुई है। 'आह!' — वह आह भरता है, और ईश्वर तुरंत उस छोटी सी आह के लिए उसे सांतवना देते हैं। वे किसी को दर्द में देखते हैं और तुरंत उसके लिए करुणा महसूस करते हैं, ईश्वर के द्रव्य सांतवना में सांतवना पाते हैं, और उस दर्द की कटुता उनमें नहीं रहती। फिर उनके पड़ोसी को उनकी प्रार्थना के माध्यम से मदद मिलती है। या वे चिंतन करते हैं: "भगवान ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन मैंने उनके लिए क्या किया है?" एक व्यक्ति ने मुझसे ये शब्द कहे, जिनोंने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला: "जब द्रव्य यूखरसित का संस्कार मनाया जाता है, तो स्वरगदूत अपना चेहरा ढक लेते हैं, जबकि हम मसीह के शरीर में सहभागी होते हैं। और मैंने मसीह के लिए क्या किया है?" इस प्रकार, एक अच्छे अर्थ में, आत्मा पीड़ित होती है।

— गैरना, कोई प्रार्थना करने वाला व्यक्ति यह कैसे जान सकता है कि उसकी प्रार्थना ने उसके पड़ोसी की मदद की है?

— प्रार्थना करने वाला व्यक्ति इसे उस दैवी सांतवना से पहचानता है जो वह एक दुःख से भरी हार्दिक प्रार्थना करने के बाद अपने भीतर महसूस करता है। हालाँकि, पहले किसी दूसरे के दर्द को अपना बनाना पड़ता है, और केवल तभी एक हार्दिक प्रार्थना की जा सकती है। प्रेम एक द्रव्य गुण है; यह पड़ोसी के हृदय को छूता है। तो अस्पतालों में भी ऐसा ही है — यदा डॉक्टर और नर्स वास्तव में बीमारों के लिए पीड़ित होते हैं, तो यह उन सभी दवाओं में सबसे प्रभावी दवा है जो वे उन्हें देते हैं। बीमार लोग इस करुणा को महसूस करते हैं और उनमें आत्मवश्वास, सुरक्षा और आराम का भाव जागृत होता है। जो लोग कष्ट में हैं, उन्हें न तो हमारी लंबी-लंबी बातों की और न ही हमारे उपदेशों की जरूरत होती है। वे समझ जाते हैं कि आप उनकी खातिर दुखी हैं, और इससे उन्हें मदद मिलती है। दर्द ही सब कुछ है। अगर हम दूसरों के दर्द को महसूस करते हैं, तो हम खुद को और अपनी जरूरतों को भूल जाते हैं।

द्रव्य सांतवना

— गैरना, जब मैं दूसरों के लिए पीड़ित होता हूँ, तो मैं चिंता से अभिभूत हो जाता हूँ और प्रार्थना नहीं कर पाता।

— यह चिंता दर्शाती है कि आपके भीतर का मानवीय स्वभाव जीवित है। मैं दूसरों के लिए जितना अधिक दर्द महसूस करता हूँ, उतना ही अधिक मैं प्रार्थना करता हूँ और आध्यात्मिक रूप से आनंदित होता हूँ, क्योंकि मैं मसीह को सब कुछ बता देता हूँ, और वह सब कुछ ठीक कर देते हैं। और मैं देखता हूँ कि जैसे-जैसे साल बीतते हैं, शारीरिक शक्ति कम हो जाती है, लेकिन आध्यात्मिक शक्ति बढ़ जाती है, क्योंकि प्रेम, आत्म-बलदान और अपने पड़ोसी के लिए दुःख महान आध्यात्मिक शक्ति देते हैं। बस देखें: कल शाम, जब आप जागरण कर रहे थे, मुझमें खुद में ज्यादा ताकत नहीं थी, लेकिन मैंने दूसरों के दुःख से ताकत ली। मैं द्रव्य लटिर्जी तक पूरी रात अपने पैरों पर खड़ा रहा, मंडली का स्वागत करते हुए।²⁴⁴ फिर चर्च में मैं फिर से अपने पैरों पर खड़ा रहा, लेकिन इसके बावजूद, मुझे कोई थकान महसूस नहीं हुई, क्योंकि मुझे लोगों के लिए दर्द महसूस हुआ और उसी दर्द ने मुझे ताकत दी। तो आप भी — प्रार्थना करें और आनंदित हों। ईश्वर सब कुछ व्यवस्थित कर देंगे।

यदि कोई व्यक्ति पीड़ा को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखता है, तो उसे कोई शोक नहीं होता। उदाहरण के लिए, वे लोग जो मुझसे मिलने आए थे। मैंने उनकी पीड़ा को कतिनी गहराई से महसूस किया! मैंने उन्हें आधे मन से, सिर्फ आधी

²⁴⁴ एल्डर 9 से 10 नवंबर 1993 तक आयोजित प्रार्थना सभा का उल्लेख कर रहे हैं। वे कैसर से पीड़ित थे, लेकिन इसके बावजूद, अपने पैरों पर खड़े होकर और एक कुर्सी पर सहारा लेकर, उन्होंने उस दिन आए लगभग तीस हजार वशिवासियों को अपना आशीर्वाद दिया।

कान से नहीं सुना; मैं ने दुख महसूस किया और आहें भरीं, लेकिन हर आह के साथ मैंने बोझ ईश्वर पर डाल दिया, और उन्होंने मेरे पड़ोसी के लिए महसूस करवा दिया। दूसरे शब्दों में, जब मैंने किसी और के दर्द के प्रति एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाया, तो द्रव्य सांतवना मिली, क्योंकि अगर उस दर्द के भीतर ईश्वर में आशा है, तो उसके भीतर द्रव्य सांतवना भी है। और कोई इन सबको और कैसे सहन कर सकता था! अगर यह सांतवना न होती, तो मैं उन सब बातों को सुनकर कैसे जी पाता जो मुझे सुननी पड़ती हैं? मुझे दुख होता है, लेकिन मैं उन लोगों के लिए दैवीय प्रतिशोध के बारे में भी सोचता हूँ जो कष्ट झेल रहे हैं। हम ईश्वर के हाथों में हैं। चूँकि द्रव्य न्याय और द्रव्य प्रतिफल है, इसलिए कुछ भी अनदेखा नहीं रहता। कोई व्यक्ति चाहे कतिना भी कष्ट सह ले, उसका प्रतिफल भी ठीक उतना ही होगा। ईश्वर, पृथ्वी पर इतना दर्द देखकर, यहाँ तक कि वह भी जो हमारी समझ से परे है, फिर भी नरिंश नहीं होता। 'क्या तुम और अधिक पीड़ा सह रहे हो? मैं तुम्हें आने वाले जीवन में और अधिक दूँगा,' ईश्वर कहते हैं, और वह इसमें आनंदित होते हैं। क्योंकि अन्यथा, वह कथित तौर पर, इतनी अन्याय, इतनी बुराई को कैसे सहन कर सकते थे? हालाँकि, जो लोग पीड़ा सहते हैं, उनके लिए पुरस्कार को ध्यान में रखते हुए, वह कथित तौर पर इस महान पीड़ा को सहन करने में सक्षम हैं। और हमसे, जो यह नहीं देख सकते कि हमारे पड़ोसी को कैसी महिमा प्राप्त होगी, और जो उसकी ओर से पीड़ित होते हैं, ईश्वर द्रव्य सांतवना प्रदान करता है।

— गैरोंडा, क्या अपने पड़ोसी की यह चिंता व्यक्ति को थका नहीं देती?

— नहीं। यदि कोई हर समस्या को आध्यात्मिक रूप से देखे, तो कोई थकान नहीं होगी। शुरुआत में, किसी के दुख के बारे में सुनकर, मन में कड़वाहट आती है, लेकिन फिर, एक पुरस्कार के रूप में, द्रव्य सांतवना आती है, और शरीर नष्ट नहीं होता। दुनियावी परेशानियों से उत्पन्न कड़वाहट बीमारी की ओर ले जाती है: पेट में खून का रसिाव और इसी तरह की अन्य समस्याएँ; लेकिन दूसरों के दर्द से उत्पन्न कड़वाहट में एक द्रव्य मरहम होता है और यह शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचाती।

असंवेदनशीलता का खतरा

— गैरोंडा, कभी-कभी गृहस्थ मुझसे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए प्रार्थना करने को कहते हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ, लेकिन मुझे कोई पीड़ा महसूस नहीं होती।

— इसके दो कारण हो सकते हैं। पहला एक खतरे से जुड़ा है, जबकि दूसरा समस्या के प्रति एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण दर्शाता है। पहला मामला तब होता है जब एक भिक्षु अपने प्रियजनों को भूल जाता है, लेकिन दूसरों के बारे में भी नहीं सोचता—यानी, वह लोगों के लिए प्रार्थना नहीं करता। यह बहुत बुरा है। दूसरे शब्दों में, अपने प्रियजनों को पीछे छोड़कर, हम मठ में आते हैं और, समय के साथ, उन्हें भूल जाते हैं। लेकिन निश्चित रूप से इस प्रक्रिया में दूसरों को भूल जाना कहीं अधिक आसान है। हाँ, हमने अपना आध्यात्मिक जीवन शुरू कर दिया है, लेकिन हमने दूसरों के दुख में आध्यात्मिक रूप से सहभागी होना शुरू नहीं किया है। हम आध्यात्मिक रूप से इस योग्य बनने के लिए विकास नहीं कर रहे हैं कि हम उनकी जरूरतों को महसूस कर सकें, और परिणामस्वरूप असंवेदनशीलता में पड़ने का खतरा है। धीरे-धीरे, भिक्षु उदासीन हो जाता है, और उसका हृदय पत्थर का हो जाता है। दूसरे मामले में, प्रार्थना करने वाला व्यक्ति पूरी दुनिया के लिए दर्द महसूस करता है, फिर भी उसे सांतवना भी मिलती है, यह महसूस करते हुए कि जो पीड़ित हैं उन्हें ईश्वर से अपना प्रतिफल मिलेगा और वे शहीद होंगे। यह विचार उसे गहरी आश्वासन देता है; वह आंतरिक आनंद का अनुभव करता है। इस मामले में, उसका हृदय पत्थर का नहीं, बल्कि द्रव्य प्रेम से भरा होता है।

यदि साधु सावधान न रहें, तो उनका हृदय बहुत कठोर हो सकता है। गृहस्थ अपने पड़ोसियों की परेशानियों और दुर्भाग्यों को देखते हैं और उनके लिए दुःखित होते हैं। हम इसे नहीं देखते हैं और उस बटु पर पहुँच सकते हैं जहाँ हम केवल अपने लिए ही माँगते हैं। और यदि हम दूसरों की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के प्रति सहानुभूति रखने और उनके लिए हार्दिक प्रार्थना करने की सूक्ष्म कला का अभ्यास नहीं करते हैं, तो हम कठोर-हृदय हो जाएँगे। हम उस बटु पर पहुँच जाएँगे जहाँ हम केवल अपना ही लाभ चाहेंगे, और हमारी उदासीनता के कारण हमारे दिल पत्थर हो जाएँगे। यह सुसमाचार के विपरीत है। एक भिक्षु को करुणा दिखाना चाहिए, दूसरों के दर्द को महसूस करना चाहिए, और सभी लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। यह उसे विलीन नहीं करता; बल्कि, प्रार्थना के माध्यम से वह स्वयं और दूसरों दोनों की मदद करता है।

— गेराना, भले ही मैं अपनी सारी दुर्दशा देखता हूँ, मैं दूसरों के लिए अधिक प्रार्थना करता हूँ। शायद मुझे दूसरों के लिए नहीं, बल्कि केवल अपने लिए प्रार्थना करनी चाहिए?

— क्या यह [गहरी] वनिमृता से है? यदि यह वनिमृता से है, तो ईश्वर से बड़ी वनिमृता के साथ कहो: 'हे मेरे ईश्वर, आपको मुझे जैसा हूँ वैसा नहीं सुनना चाहिए। लेकिन क्या यह अन्याय नहीं होगा यदि मेरे कारण दूसरे लोग पीड़ित हों? आखिरकार, अगर मैं आध्यात्मिक अवस्था में होता और प्रार्थना में नडिर होता, तो आप मेरी सुनते और उनकी मदद करते। किसी के दुःख के लिए मैं आंशिक रूप से दोषी हूँ। लेकिन मेरे पड़ोसी ने क्या गलत किया है, वह मेरी वजह से क्यों भुगतता? मैं आपसे वनिती करता हूँ, उसकी मदद करें।'

दूसरे शब्दों में, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि हम दूसरों के संबंध में खुद को कैसे स्थापित करते हैं। आप अपनी ही अयोग्यता महसूस करते हैं, फिर भी जब आप किसी और का दुःख देखते हैं, तो आप भावुक हो जाते हैं, आप सहानुभूति रखते हैं, आप प्रार्थना करते हैं। जब मैं, उदाहरण के लिए, एक अंधे व्यक्ति को देखता हूँ, तो मुझे उसके लिए दोषी महसूस होता है, क्योंकि अगर मैं आध्यात्मिक अवस्था में होता, तो मैं उसे ठीक कर सकता था। ईश्वर ने हमें संत बनने और चमत्कार करने का अवसर दिया है, ठीक वैसे ही जैसे वह करते हैं। और इसलिए, अपनी आध्यात्मिक बीमारी को स्वीकार करते हुए—चाहे वह बड़ी हो या छोटी—हम वनिमृतापूर्वक अपने पड़ोसी, अपने साथी मानव के लिए शारीरिक उपचार की प्रार्थना करते हैं, और साथ ही उनकी बीमारी में अपनी दोषी भावना को भी स्वीकार करते हैं। क्योंकि अगर हम आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होते, तो वे बहुत पहले ही ठीक हो गए होते और पीड़ित नहीं होते। दूसरों के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाकर, दुनिया में होने वाली हर चीज़ के लिए खुद को दोषी मानते हुए, हम प्रार्थना करते हैं: 'हे प्रभु यीशु मसीह, हम पर दया करो,' और पूरी दुनिया को मदद मिलती है। और जहाँ तक हमारी अपनी दयनीयता का सवाल है—हमें इसके लिए दर्द महसूस करना चाहिए और ईश्वर की दया माँगनी चाहिए। लेकिन, बेशक, यदि किसी व्यक्ति ने आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर ली है, तो वे अपने लिए कुछ नहीं माँगते।

मैं देखता हूँ कि हम अक्सर 'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझ पर दया करो' शब्दों को गलत समझ लेते हैं और झूठी वनिमृता के कारण 'हम पर दया करो' नहीं कहते; हम दूसरों के लिए नहीं, बल्कि केवल अपने लिए प्रार्थना करते हैं। इसीलिए गृहस्थ लोग कभी-कभी हमें भिक्षुओं को गलत समझ लेते हैं और आहत हो जाते हैं, कहते हुए कि हम स्वार्थी हैं और केवल अपनी मुक्ति की ही परवाह करते हैं। 'मुझ पर दया करो' का उद्देश्य हमें अहंकार में गरिने से रोकना है। एक वनिमृ व्यक्ति, जो खुद को सबसे बुरा मानता है, की एक ही प्रार्थना का पुण्य एक घमंडी दिल से की गई पूरी रात की प्रार्थना सभा से कहीं अधिक होता है। जब हम अहंकार से प्रार्थना करते हैं, तो हम खुद का मजाक उड़ा रहे होते हैं।

तैयारी की अवस्था

यह न भूलें कि हिम कठनि समय से गुजर रहे हैं, और बहुत प्रार्थना की आवश्यकता है। लोगों को अभी जो महान आवश्यकता महसूस हो रही है, उसे याद रखें; प्रार्थना के लिए उस महान उत्साह को याद रखें जिसकी परमेश्वर हमसे मांग करते हैं। उस सामान्य पागलपन के लिए प्रार्थना करें जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले ली है; प्रार्थना करें कि मिसीह अपनी सृष्टि पर दया करें, क्योंकि यह वनिश की ओर बढ़ रही है। हे प्रभु, इस पागल युग में, जिसमें हम जी रहे हैं, द्रव्य रूप से हस्तक्षेप करें, क्योंकि दुनिया को उथल-पुथल, पागलपन और एक अंधे रास्ते की ओर ले जाया जा रहा है।

ईश्वर ने हमें दुनिया के लिए प्रार्थना करने के लिए बुलाया है—एक ऐसी दुनिया जिसमें इतनी सारी समस्याएँ हैं! गरीब लोगों के पास तो खुद को चहिनति करने का भी समय नहीं है! यदि हम भिक्षु प्रार्थना नहीं करते हैं, तो हम यह कार्य किस सौपेंगे? युद्ध के समय, एक सैनिक उच्च सतर्कता पर होता है: वह पहले से ही अपने जूतों में होता है, बस आदेशों का इंतजार कर रहा होता है। एक भिक्षु को भी उसी अवस्था में होना चाहिए। आह, काश मैं एक मैकाबी होता!²⁴⁵ मैं मानवता के लिए अखंड प्रार्थना करने के लिए पहाड़ों में चला जाता।

प्रार्थना के माध्यम से, हमें पूरी दुनिया की मदद करनी चाहिए ताकि शैतान अपनी मनमानी न कर सके। शैतान ने अब कुछ अधिकार हासिल कर लिए हैं। ऐसा नहीं है कि ईश्वर उसे जो चाहे करने देते हैं; बस यह है कि वह स्वतंत्र इच्छा में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते। इसीलिए हमें प्रार्थना के माध्यम से दुनिया की मदद करने की ज़रूरत है। यदि कोई दुनिया में वर्तमान में हो रही घटनाओं से परेशान है, यदि कोई इसके बारे में प्रार्थना करता है, तो लोगों को मदद मिलती है, जबकि उनकी स्वतंत्र इच्छा अक्षुण्ण रहती है। यदि ईश्वर की कृपा से, आप थोड़ी और प्रगति करते हैं, तो हम प्रार्थना के संबंध में कुछ विशेष करेंगे; हम इस मामले को ठीक से व्यवस्थित करेंगे। आप एक 'रडार' बन जाएँगे, क्योंकि हमारे चारों ओर घटति हो रही घटनाएँ हमें ऐसा करने के लिए मजबूर कर रही हैं। हम एक प्रार्थना बर्गिड का आयोजन करेंगे। आप अपने जपमाला से युद्ध लड़ेंगे। प्रार्थना दर्द के साथ की जानी चाहिए। तब क्या आप जानते हैं कि उसमें कतिनी शक्ति होती है?

मुझे बहुत दुख होता है जब मैं भिक्षुओं को ईश्वर और प्रार्थना के माध्यम से नहीं, बल्कि मानवीय तरीके से कार्य करते हुए देखता हूँ— ऐसे मामलों में जिनमें केवल मानवीय प्रयासों से हासिल करना मुश्किल है। ईश्वर सब कुछ ठीक कर सकते हैं। सही आध्यात्मिक अभ्यास से, कोई मठ बना सकता है, उन्हें उनकी सभी आवश्यकताओं से लैस कर सकता है, और केवल प्रार्थना के माध्यम से पूरी दुनिया की मदद कर सकता है। आपको काम करने की भी ज़रूरत नहीं है: बस प्रार्थना करें। एक भिक्षु को यह कोशिश नहीं करनी चाहिए कि वह इस या उस कठिनाई पर अपना दमिग़ ख़राब करे — चाहे वह उससे व्यक्तिगत रूप से संबंधित हो, उसके पड़ोसी से, या दुनिया की सामान्य स्थिति से। उसे प्रार्थना की ओर मुड़ना चाहिए और, ईश्वर के माध्यम से, दुनिया में कई द्रव्य शक्तियों को भेजना चाहिए। क्योंकि एक न एक तरह से, यही एक भिक्षु का काम है, और यदि उसने इसे नहीं समझा है, तो उसका जीवन बिल्कुल भी अर्थहीन है। और इसलिए एक भिक्षु को यह जानना चाहिए कि उसकी हर वह चिंता, जो उसे विभिन्न कठिनाइयों के मानवीय समाधान

²⁴⁵ उपनाम 'मैकाबी' (एक ऐसा शब्द जिसका, पूरी संभावना है, अर्थ 'शत्रुओं को कुचलने वाला' है) 166 ईसा पूर्व के यहूदी विद्रोह के नेता यहूदा को दिया गया था, और बाद में उनके उत्तराधिकारियों को भी। यह विद्रोह सेल्यूसीड राजवंश के प्रमुख, एंटिओकस चौथे एपिफानिस के खिलाफ निर्देशित था। मक्काबी अपने पूर्वजों के धर्म और इज्राइल की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए आत्म-बलिदान करने वाले योद्धा थे। (देखें मक्काबी की पुस्तकें।)

खोजने के लिए प्रेरति करती है, जो उसे सताती है और उसके लिए सरिदरद का कारण बनती है, वह दुष्ट से आती है। यदि आप स्वयं को ऐसे प्रश्नों से परेशान पाते हैं जन्हें मानवीय साधनों से हल नहीं किया जा सकता, और यदि आप उन्हें ईश्वर के सुपुर्द नहीं करते हैं, तो जान लें कि यह दुष्ट की एक चाल है, जिसका उद्देश्य आपको प्रार्थना करना छोड़ने के लिए प्रेरति करना है, जिसके माध्यम से ईश्वर केवल दविय शक्ति ही नहीं भेज सकते, बल्कि कई दविय शक्तियाँ, और प्रदान की गई सहायता तब केवल दविय सहायता ही नहीं, बल्कि ईश्वर का एक चमत्कार होगी। जिस क्षण हम चिता करना शुरू करते हैं, हम जो हो रहा है उसमें ईश्वर के हस्तक्षेप में बाधा डालते हैं। हम ईश्वर के बजाय तर्क को प्राथमिकता देते हैं, ईश्वर की इच्छा के बजाय; यदि हमने बाद वाले को प्राथमिकता दी होती, तो हमें दविय सहायता का अधिकार प्राप्त होता। शैतान, कुशलता से संन्यासी का प्रेम चुराकर, उसे सांसारिक प्रेम, एक सांसारिक दृष्टिकोण और अपने पड़ोसी की सांसारिक सेवा द्वारा बंधा रखने का प्रयास करता है, जबकि संन्यासी अपने संन्यासी क्षेत्र के भीतर कार्य करने में सक्षम है; वह अपनी विशेषज्ञता, यानी एक 'संचार विशेषज्ञ' के रूप में काम करने में सक्षम है, क्योंकि यह ठीक वही आज्ञाकारिता है जिसे ईश्वर ने उसे सौंपा है। बाकी सब कुछ, जो हम मानवीय प्रयासों से हासिल करते हैं, वह एक नमिन स्तर का है।

इसके अलावा, एक भिक्षु के लिए अपने शब्दों के बजाय अपनी प्रार्थना के माध्यम से दूसरों की मदद करना बेहतर है। यदि उसमें बुराई करने वाले को रोकने की ताकत नहीं है, तो उसे प्रार्थना के माध्यम से दूर से उसकी मदद करनी चाहिए, क्योंकि अन्यथा वह खुद को नुकसान पहुँचा सकता है। जब शब्द दूसरों तक पहुँचने में वफिल रहते हैं, तो एक दयालु, हार्दिक प्रार्थना में हजारों शब्दों से अधिक शक्ति होती है। लोग कहते हैं कि मैं उनके मदद करता हूँ जो मुझसे मलिन आते हैं। लेकिन मैं दुनिया के लिए अपनी सच्ची भेंट उस डेढ़ घंटे को मानता हूँ, जब मैं भजन संहिता पढ़ता हूँ। मैं बाकी सब कुछ एक मनोरंजन मानता हूँ; दुखी लोग आते हैं, मुझसे अपना दुख-दर्द बयां करते हैं, और मैं उन्हें बस कोई न कोई सलाह दे देता हूँ। इसीलिए मैं दूसरों की मदद को अपना योगदान नहीं मानता: यह प्रार्थना है जो लोगों की मदद करती है। अगर मैं अपना सारा समय प्रार्थना में लगा सकूँ तो मैं दुनिया की और भी बड़ी सेवा करूँगा। मान लीजिए कि एक दिन मैं अपने दुखों के साथ दो सौ लोगों को स्वीकार करता हूँ। लेकिन क्या दुनिया में सचमुच केवल दो सौ लोग ही पीड़ित हैं? एक भी व्यक्ति से न मलिकर और [उस समय] पूरी दुनिया के लिए प्रार्थना करके, मैं पूरी दुनिया से मलित हूँ। और इसीलिए मैं लोगों से कहता हूँ: 'मैं आपके बारे में ईश्वर से बात करना चाहता हूँ, न कि आपके सामने ईश्वर के बारे में। इस तरह आपके लिए बेहतर है, लेकिन आप मुझे नहीं समझते।'।

इन कठिन वर्षों में हम अपनी प्रार्थना में लापरवाह न हों। प्रार्थना सुरक्षा है; प्रार्थना ईश्वर के साथ संबंध है। क्या आपको याद है कि अब इसाक क्या लिखते हैं? 'ईश्वर हमें प्रार्थना न करने के लिए नहीं, बल्कि भिंसीह के साथ संबंध बनाए रखने में वफिल रहने और शैतान द्वारा धोखा खा जाने के लिए उत्तरदायी ठहराएंगे।' ²⁴⁶

²⁴⁶ "उस दिन परमेश्वर हमें भजन-संग्रह के लिए न्याय करेंगे, प्रार्थना की उपेक्षा करने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि इस उपेक्षा से हम दुष्टात्माओं को जगह देते हैं।" तुलना करें: *अबा इसाक द सीरयिना* कृतियाँ। सेरगीव पोसाद, 1911। प्रवचन 71। पृ. 362।

अध्याय 2. इस तथ्य पर कर्मिष्ठ चर्च के कलि हैं

एक भिक्षु एक प्रकाशस्तंभ है, जो चट्टानों पर दृढ़ता से स्थापित है

— गैरोना, एक भिक्षु का क्या करतव्य है?

— संन्यासी का कार्य पवित्र आत्मा का पात्र बनना है। उसे अपना हृदय सोने की पन्नी के पत्ते जतिना संवेदनशील बनाना चाहिए। संन्यासी के सभी कर्म प्रेम हैं, और वह भी ईश्वर के प्रतप्रेम से प्रेरित होकर अपने मार्ग पर चलता है, जिसमें अपने पड़ोसी के प्रतप्रेम भी शामिल है। एक भिक्षु मानवता की दुर्दशा पर मनन करता है; उसका हृदय दुःख से वर्दीर्ण हो जाता है, और वह शांति के लिए अथक और पूरे मन से प्रार्थना करता है। इस प्रकार, एक भिक्षु प्रार्थना के माध्यम से दुनिया पर दया दिखाता है। ऐसे भिक्षु हैं जो लोगों की मदद उस तरह करते हैं, जैसे पूरी दुनिया कभी कर सकती भी नहीं। उदाहरण के लिए, कोई गृहस्थ एक गरीब व्यक्ति की एक कलि चावल और दो संतरे देकर मदद कर सकता है, और तब भी अक्सर वह यह इसलिए देता है ताकि दूसरे उसे देखें, जबकि उसी समय वह उन्हीं लोगों को उनके कंजूस होने के लिए कोसता है। लेकिन एक भिक्षु प्रार्थना करता है और, उसके माध्यम से, चुपचाप अपने पड़ोसियों तक टनों की मदद भेजता है।

एक भिक्षु अपना कार्य-कर्म स्वयं नहीं बनाता, न ही वह मशीनरी कार्य के लिए सांसारिक योजनाएँ रचता है; वह बना किसी अपनी योजना के आगे बढ़ता है, और दयालु प्रभु उसे अपनी दिव्य योजना में शामिल कर लेते हैं; और यदि आवश्यकता होती है, तो वे, केवल स्वयं जाने-माने तरीके से, उसे एक प्रेरित मशीन पर भेज सकते हैं। ईश्वर भिक्षुओं से यह अपेक्षा नहीं करता कि वे संसार में जाकर लोगों का हाथ पकड़कर उनका मार्गदर्शन करें। वह चाहता है कि भिक्षु अपने जीवन के उदाहरण द्वारा लोगों को प्रकाश दिखाएँ और इस प्रकार उन्हें अनंत जीवन की ओर मार्गदर्शन करें। दूसरे शब्दों में, एक भिक्षु की सेवा संसार में रहते हुए संसार की मदद करने में नहीं है। एक भिक्षु संसार से दूर इसलिए नहीं जाता क्योंकि वह संसार से घृणा करता है, बल्कि इसलिए क्योंकि वह उससे प्रेम करता है। संसार से दूर रहते हुए, एक भिक्षु अपनी प्रार्थना के माध्यम से, उन मामलों में उसकी मदद करेगा जहाँ मानवीय सहायता असंभव है, लेकिन जहाँ केवल दैवीय हस्तक्षेप ही मदद कर सकता है। इसलिए, एक भिक्षु को ईश्वर के साथ निरंतर संवाद में रहना चाहिए, उनकी मार्गदर्शन प्राप्त करनी चाहिए, और लोगों को उनकी ओर जाने का मार्ग दिखाना चाहिए।

बहुत समय तक, मैं यह नहीं समझ सका कि कैथोलिक कुछ चीजों को कैसे सही ठहराते हैं। लेकिन हाल ही में, रोम के दो कैथोलिक वास्तुकार मेरी कोठरी में मुझसे मिलने आए, और मेरी भ्रम दूर हो गई। वे यह नहीं समझ सके कि ऑर्थोडॉक्स क्या है, लेकिन वे सद्भावनापूर्ण थे। "क्यों," उन्होंने मुझसे पूछा, "भिक्षु यहाँ बैठते हैं? वे समुदाय की सेवा करने के लिए दुनिया में बाहर क्यों नहीं जाते?" "खैर," मैंने जवाब दिया, "क्या प्रकाशस्तंभों को चट्टानों पर नहीं खड़ा होना चाहिए? क्या आप उन्हें शहरों में जाकर सड़क के दीयों के साथ उनके काम में शामिल होने के लिए कहेंगे? प्रकाशस्तंभों की अपनी ही पुकार होती है, और सड़क के दीयों की अपनी।" एक भिक्षु शहर की सड़क पर लटका हुआ एक बल्ब नहीं है, जो राहगीरों के ठोकर न खाने के लिए चमकता हो। एक भिक्षु एक दूरस्थ प्रकाशस्तंभ है, जो चट्टानों की ऊँचाई पर दृढ़ता से स्थापित है, और अपनी करिणों से समुद्रों और महासागरों को प्रकाशित करता है ताकि जिहाज सही मार्ग का अनुसरण कर सकें और ईश्वर—अपने अंतिम गंतव्य—तक पहुँच सकें।

एक भिक्षु का मौन उपदेश

...मैं प्रार्थना करूँगी कि तुम तीनों नवसंन्यास कभी बड़े न होओ!... कि तुम हमेशा ऐसे ही रहो: इन नीली दुपट्टों में, इस छोटी कद-काठी में, इस उम्र में! क्या तुम जानती हो कि तुमहें देखकर लोगों को क्या चुपचाप लाभ होता है? आखिरकार, आज की दुनिया में एक सभ्य युवती मलिना आसान नहीं है। ज्यादातर युवतियाँ बहुत अजीब तरह से व्यवहार करती हैं: हाथ में सगिरेट लिए, पता नहीं किसके अंदाज़ में टहलती फिरती हैं... लेकिन यहाँ लोग ऐसी कन्याओं को देखते हैं जिन्होंने खुद को ईश्वर को समर्पित कर दिया है, चर्च में गाती हैं, आनंद मनाती हैं... 'यह आखिर है क्या?' लोग सोचते हैं। 'यहाँ कुछ तो अजीब हो रहा है। क्या आप कह सकते हैं कि वे मूर्ख हैं? नहीं, आप नहीं कह सकते। क्या आप कह सकते हैं कि उनमें कुछ कमी है? नहीं, उनके पास सब कुछ है। तो यह स्पष्ट है कि वास्तव में यहाँ कुछ उच्चतर शक्त काम कर रही है।' हाँ, हाँ, सचमुच, क्या आप जानते हैं कि इससे क्या लाभ होता है?..

जब सांसारिक लोग—यहाँ तक कि अविश्वासी भी—किसी मठ में आते हैं और असली संतों को देखते हैं, तो अगर वे खुले विचारों वाले होते हैं, तो वे आस्तिक बन जाते हैं। कई नास्तिक वैज्ञानिक, जो सिर्फ घूमने-फरिने के लिए पर्वत पर आए थे, ने अपना जीवन बदल लिया है। लोग, सकारात्मक अर्थ में, आध्यात्मिक जीवन पर चर्च और उसे खोजने लगते हैं। वे प्रसन्न युवाओं को देखते हैं जिन्हें दुनिया में सफल होने के हर अवसर मिले थे, जिन्होंने धन-संपत्ति और पदों को पीछे छोड़ दिया है और अब प्रार्थना और जागरण को समर्पित एक तपस्वी जीवन जी रहे हैं। यह सब देखकर लोग अपने आप से पूछते हैं: 'तो फिर क्या? आखिरकार, अगर ईश्वर सचमुच मौजूद है, अगर दूसरी ज़िंदगी है, अगर नरक में यातना है, तो मैं इस तरह क्यों जी रही हूँ?' और वे कम पापी जीवन जीने लगते हैं या अपनी ज़िंदगी को पूरी तरह से बदल ही देते हैं। मैं ऐसे एक मामले को जानती हूँ। एक बीस साल की लड़की ने आत्महत्या की कोशिश की: उसने अपनी कलाई काट ली, लेकिन उसे समय रहते बचा लिया गया। तब एक भिक्षुणी ने उसे ले जाकर एक मठ में पहुँचाया। पहले तो वह बेचारी हर बात पर गुस्सा करती थी, लेकिन बाद में, वहाँ की भिक्षुणियों को जानने-समझने के बाद, वह होश में आ गई और बोली: 'यहाँ मुझे एक अलग दुनिया दिखाई देती है। क्या मैं आपके साथ रह सकती हूँ?'

ऐसा ही एक भिक्षु का मौन उपदेश है। कई उपदेश देते हैं, लेकिन कुछ ही लोगों में विश्वास जगाते हैं, क्योंकि उनका जीवन उनके शब्दों से मेल नहीं खाता। फिर भी, भिक्षु दूसरों के सुनने के लिए बनाए गए जोरदार उपदेश नहीं देता। वह अपने जीवन के माध्यम से मौन रूप से मसीह का उपदेश देता है और अपनी प्रार्थना के माध्यम से अपने पड़ोसी की मदद करता है। वह अनुभव के माध्यम से सुसमाचार को जीता है, और ईश्वर की कृपा उसे प्रकट करती है। इस प्रकार संन्यासी सबसे प्रामाणिक तरीके से सुसमाचार का प्रचार करता है, और यही वह है जिसकी दुनिया, विशेष रूप से आज, लालसा करती है। जब संन्यासी बोलता है, तो वह केवल एक विचार ही नहीं, बल्कि एक अनुभव व्यक्त करता है। फिर भी संन्यासी द्वारा व्यक्त किया गया एक विचार भी अपने भीतर प्रकाश लिए होता है।

— लेकिन कुछ लोग, गैरना, कहते हैं कि युवा पुरुष या महिलाएँ किसी मठ में या तो नरिशा के कारण, या इसलिए प्रवेश करते हैं कि उनमें कोई शारीरिक विकलांगता है, या क्योंकि वे दुर्बल-चित्त होते हैं।

— ऐसा लगता है कि इन लोगों को एक या दो ऐसे मामले याद आ गए हैं, और अब, द्वेष या ईर्ष्या के कारण, वे बाकी के संतों पर बदनामी करते हैं, जो कुल का 90 प्रतिशत हैं। हालाँकि, एक बार जब वे मामले की जाँच कर लेंगे और देख लेंगे कि ऐसा नहीं है, तो वे कहेंगे कि कुछ तो उच्चतर है, कि ईश्वर है।

और इसलिए एक भिक्षु को हमेशा दुनिया के लिए एक अच्छा उदाहरण होना चाहिए: 'तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने इस प्रकार चमके।'²⁴⁷ एक सच्चा भिक्षु दुनिया के लिए एक प्रकाश है। याद है कि सेंट जॉन क्लाइमक्स क्या लिखते हैं? 'भिक्षुओं का प्रकाश स्वर्गदूत हैं, और सामान्य लोगों का प्रकाश भिक्षु हैं।'²⁴⁸ एक भिक्षु की सहायता तब प्रभावी होती है जब वह सांसारिक लोगों से अलग होता है। क्योंकि जो बात व्यर्थ चीजों से पीड़ित सांसारिक लोगों की मदद करती है, वह पवत्रिता है। अपनी सादगी के माध्यम से, यह उन्हें जीवन के गहरे अर्थ को समझना सिखाती है, ताकि उनके हृदय पर बोझिल भार उठ सके।

भिक्षु और संसार का नवीनीकरण

संन्यासी मसीह की नियमिति सेना हैं; इसीलिए वे अपनी सेवा के लिए पैसा नहीं लेते। देखो, कई लोग माउंट अथोस को भूल नहीं सकते। वे कहीं और कहीं भी जाएँ, उनसे पैसे वगैरह मांगे जाएंगे, लेकिन माउंट अथोस पर उन्हें केवल यात्रा की अनुमति लेनी होती है; जिसके बाद वे जहाँ चाहें घूमने के लिए स्वतंत्र हैं। भोजन या आवास के लिए उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जाता। लोग पवत्रि परवत पर कुछ बलिकुल अलग पाते हैं और इससे लाभान्वित होते हैं। एक बार, जब मैं होली क्रॉस के कलवि में रह रहा था,²⁴⁹ एक आदमी अपनी कठिनाइयों के बारे में सलाह लेने के लिए मेरे पास आया। हम लगभग डेढ़ घंटे तक बातें करते रहे। जब वह जाने ही वाला था, तो उसने 500-ड्रैक्मा का एक नोट निकाला। मैंने पूछा, "यह क्या है?" उसने जवाब दिया, "इतना ही हम एक डॉक्टर को एक बार की परामर्श के लिए देते हैं। मुझे माफ़ कीजिए, शायद मुझे थोड़ा और जोड़ देना चाहिए?"

पवत्रि परवत पर हाल की आग के बाद, EEC के कई उच्च-पदस्थ अधिकारी यह देखने और सहायता आवंटित करने के लिए आए कि क्या-क्या जरूरत है। वे मेरी कोठरी में भी आए। हमारी बातचीत के दौरान, मैंने उनसे कहा: "हम यहाँ लेने के लिए नहीं, बल्कि देने के लिए आए हैं।" — "यह पहली बार है जब हमने ऐसा सुना है," उन्होंने स्वीकार किया, और तुरंत जो कुछ उन्होंने सुना था उसे एक नोटबुक में लिख लिया।²⁵⁰ क्या हम भौतिक वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए भिक्षु बने थे? हम भिक्षु इसलिए बने हैं कि हम आध्यात्मिक पोषण दें, बदले में कोई भौतिक वस्तु प्राप्त किए बिना। हमें सांसारिक चिंताओं से मुक्त रहना चाहिए ताकि हम स्वयं को आध्यात्मिक मामलों के लिए समर्पित कर सकें। मसीह के प्रतर्पित से प्रेरित होकर, हम अपनी वासनाओं की दासता से स्वयं को मुक्त करने और दूसरों को भी इससे मुक्त करने के लिए पहाड़ों में भाग गए।

हमारा कार्य यह सुनिश्चित करना है कि हमारी प्रार्थनाओं और उदाहरण के माध्यम से लोगों को सहायता मिले और वे आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म प्राप्त करें। दुनिया छोड़कर मठ में प्रवेश करने पर व्यक्ति 'पिता' या 'माता' बन जाता है—अर्थात् एक आध्यात्मिक पिता या आध्यात्मिक माता। जब एक युवती नन बनती है, तो वह मसीह से सगाई कर लेती है, उनकी दुल्हन बन जाती है, और एक आध्यात्मिक माता के रूप में लोगों को आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म पाने में मदद करती है। अपनी प्रार्थना के माध्यम से, वह उदाहरण के लिए, मजबूत ईसाई परिवारों के निर्माण में योगदान करती

²⁴⁷ मत्ती 5:16।

²⁴⁸ *सेंट जॉन क्लाइमक्स। द लैडरा* सेरगीव पोसाद, 1908। प्रवचन 26 और 31। पृ. 181

²⁴⁹ एल्डर पैसियोस 1969 से 1978 तक होली क्रॉस स्केटा में रहे।

²⁵⁰ मई 1991 में दिया गया।

है। लेकिन प्रार्थना के अलावा, ऐसे समय भी आते हैं जब लोगों को व्यावहारिक मदद की आवश्यकता होती है। हर सच्ची नन, दुनिया के लिए प्रार्थना करने के अलावा, अपने आचरण से, विभिन्न समस्याओं से निपटने के तरीके से, किसी तीर्थयात्री से मिलने पर कहे गए कुछ शब्दों के माध्यम से उसकी मदद करती है, ताकि वह जीवन के गहरे अर्थ को समझ सके, या किसी माँ को सहारा देने के लिए। लेकिन, बेशक, यदि कोई नन स्वयं ही सांसारिक लोगों और इसी तरह के लोगों की संगत खोजती है, तो यह बिल्कुल अस्वीकार्य है, क्योंकि सांसारिक प्रवृत्तियाँ आध्यात्मिक कानूनों से टकराती हैं, और यह हमें, साधुओं के रूप में, कष्ट में डाल देती है। जहाँ तक संभव हो, दूसरों की नज़रों से दूर रहने का प्रयास करें। कुछ भिक्षु उत्सवों में शामिल होने, एक-दूसरे से मिलने और आध्यात्मिक मंत्रि बनाने के लिए उत्सुक रहते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, जब मुझे किसी आध्यात्मिक काम से कहीं जाना पड़ता है, तो मुझे ऐसा लगता है मानो मैं शहादत को जा रहा हूँ; मैं इसे समय की बर्बादी मानता हूँ। मैं इन दोनों बातों की तुलना करता हूँ और मेरी आत्मा कराह उठती है।

— गैरोना, अगर कोई संन्यासिनी अब जवान नहीं है, तो वह आध्यात्मिक रूप से अपरपिक्व क्यों रहती है?

— वह स्वयं को नियंत्रित नहीं रखती और उचित आध्यात्मिक अभ्यास में संलग्न नहीं होती। इसी से बुराई की शुरुआत होती है। मान लीजिए कि मिसीह ने आप में से किसी को भी संन्यासी जीवन के लिए नहीं बुलाया होता। वह युवती संसार में ही रहती, शादी कर लेती और माँ बन जाती। तब दूसरों से उम्मीदें रखने वाली वह नहीं होती, बल्कि दूसरे उससे उम्मीदें रखते। वह खुद को बलदान कर देती और ऐसा करते हुए, वह बहुत कुछ देती और बहुत कुछ पाती। लेकिन कन्वेंट में, उसे एक आध्यात्मिक माँ बनना चाहिए; उसकी पुकार एक माँ से भी ऊँची है। लेकिन अब क्या हो रहा है? वह बहुत छोटी उम्र में ही कन्वेंट में प्रवेश कर लेती है और, उचित आध्यात्मिक अभ्यास में संलग्न हुए बनि, यह धारणा पालती है कि वह अभी भी एक बच्ची है। फिर भी उसे यह एहसास होना चाहिए कि वह बच्ची नहीं है, ताकि वह एक बच्चे की तरह न सोचे: 'हमारे पास माँ है, हमारे पास घर है, मुझे कोई चिंता नहीं है, और मुझे किसी भी चीज़ की कोई परवाह नहीं है।' उसे स्वयं को समर्पित करना चाहिए; अपने व्यवहार के माध्यम से, उसे छोटी बहनों के आध्यात्मिक पुनर्जन्म में योगदान देना चाहिए। अपनी आज्ञाकारिता के माध्यम से—आर्कोन्डेरियन और चर्च में—उसे मठ में आने वाले सामान्य लोगों की सहायता करनी चाहिए। हर चीज़ में, उसे स्वयं को बलदान करना चाहिए, और ऐसा करने पर उसे बनि मांगे ही प्राप्त होगा। यदि किसी नन ने यह रवैया नहीं अपनाया है, तो सब कुछ बर्बाद हो जाता है। वह अपरपिक्वता की स्थिति में रहती है और केवल अपने कनिष्ठों और वरिष्ठों दोनों से लेने की इच्छा रखती है, अपने आप में से कुछ भी नहीं देती। वह अपने भीतर एक भ्रष्ट आत्मा को पनपाती है और परपिक्व होने में वफिल रहती है, क्योंकि वह दूसरों को स्वयं को समर्पित नहीं करती।

मैं देखता हूँ कि कुछ भिक्षुओं की स्थिति बिल्कुल भी उस बेदुइन से अलग नहीं है, जिससे मैं सनाई में मिला था। वह पैसठ साल का था, फिर भी उसने कहा: 'लेकिन मेरा कोई पति नहीं है: मैं एक [पूरी तरह से] अनाथ हूँ।' पैसठ साल की उम्र में लोगों के तो पोते-पोतियाँ हो जाते हैं। दो-तीन पीढ़ियाँ बीत चुकी हैं, और [कोई कैसे कह सकता है], 'मेरा कोई पति नहीं है'—यानी, पति का प्यार ढूँढना! और हम भिक्षु, लापरवाह होने के कारण, बच्चे ही बने रहते हैं—बुराई इसी में है। हालाँकि, इस उम्र में वे दुनिया में क्या कर रहे होते, इस पर विचार करने के बाद, एक भिक्षुणी या भिक्षु को कहना चाहिए: 'अब मुझे मानवीय आराम नहीं ढूँढना चाहिए। मुझे दूसरों से मांग करने के बजाय खुद को बलदान करना चाहिए।' अधिकांश लोग युवावस्था में मठों में आते हैं, वहाँ आध्यात्मिक माता-पति पाते हैं, और बचकानेपन की स्थिति में, बचकानेपन की मांगों के साथ बने रह सकते हैं, जबकि यदि वे सांसारिक दुनिया में ही रहते, तो वे स्वयं माता-पति बन चुके होते। दूसरे शब्दों में, वे वास्तव में बचपन से कभी बाहर नहीं निकलते—सकारात्मक अर्थ में नहीं, बल्कि एक बचकाने, शिशु-सदृश अर्थ में। कोई इसे इस तरह भी देख सकता है: एक व्यक्ति बूढ़ा हो गया है, लेकिन अगर उसने अपने दमिग का इस्तेमाल करना शुरू नहीं किया है, तो उसे एक मठाई या एक टी-शर्ट में आनंद आता है। "और मेरे पति ने मुझे एक

छोटी सी जैकेट खरीदी," माउंट एथोस के एक वृद्ध भिक्षु ने अपने बड़े भैया द्वारा दी गई गर्म स्वेटर का दिखावा करते हुए डींग मारी। ठीक वैसे ही जैसे कोई छोटा लड़का जिसने उसकी माँ ने एपॉलेट वाली जैकेट खरीदी हो!...

बुराई के सामने हम शिशुओं की तरह हों, लेकिन अपने मन में नहीं।²⁵¹ अन्यथा, साहस हमारे जीवन में कैसे प्रवेश करेगा? हमें साहस कैसे मिलेगा? एक भिक्षु को सफल होने के लिए, अपने भीतर की कठोरता को नरम करना होगा; यानी, उसे अपने दिल को थोड़ा और मातृसुलभ बनाना होगा। दूसरी ओर, एक भिक्षुणी को सफल होने के लिए, थोड़ा साहस प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

हमारी आध्यात्मिक विनिमृता दूसरों को बदल देती है

— गैरोना, जब कोई मठ में प्रवेश करता है लेकिन उसकी मानसिकता अभी भी सांसारिक होती है, और सांसारिक विचार अभी भी उसके मन में उड़ रहे होते हैं, तो वह खुद को इससे कैसे मुक्त कर सकता है?

— एक बार जब आप मठ में प्रवेश कर लेते हैं, तो आपको दुनिया को भूल जाना चाहिए, और फिर यह न भूलें कि आप मठ में हैं। घर पर, खैर, वहाँ आपको आध्यात्मिक जीवन शुरू करने का सही अवसर नहीं मिल सकता है, या उचित परवरिश नहीं मिल सकती है। लेकिन अब आपको बहुत ध्यान देना होगा: यहाँ, मठ में आपको किस तरह की परवरिश मिलेगी? एक मठवासी परवरिश। मठ एक पवित्र स्थान है। दुनिया एक अलग मामला है। यदि आप इस तथ्य पर विचार करें कि आप एक पवित्र स्थान में हैं, तो विनिमृता स्वाभाविक रूप से आएगी। लेकिन यह कैसे आ सकती है यदि कोई व्यक्ति खुद को खो देता है और यह मान लेता है कि वह दुनिया में है? एक नन को स्वाभाविक रूप से, सादगी और विनिमृता के साथ व्यवहार करना चाहिए, न कि खुद को 'दुर्भाग्य' की मूर्त के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। यह घृणा उत्पन्न करता है और दूसरों को दूर कर देता है।

मैं देखती हूँ कि कुछ नवोदित बहनें सांसारिक तरीके से व्यवहार करती हैं। वे मयूरों की तरह, सांसारिक दुनिया की दुल्हनों की तरह इतराती हैं, न कि मिसीह की दुल्हनों की तरह। हालाँकि, अन्य विनिमृता से चलती हैं, और मैं देख सकती हूँ कि उनके भीतर कुछ पवित्र है। दोनों में कतिना अंतर है! और तुरंत स्पष्ट हो जाता है कि मिठवासी जीवन का सार क्या है। यदि आप गेहूँ के बालों को देखें, तो आप देखेंगे कि किसी भी बाल में जो सीधा और ऊँचा खड़ा होता है, उसमें कुछ भी नहीं होता है। हालाँकि, अनाज से भरा एक बाल नीचे की ओर झुकता है।

जो साधु श्रद्धा से परिपूर्ण होता है, वह उसे देखने वालों को बदल देता है। आज ही, एक हायरोमोंक मलिन आए थे; मैं उन्हें लंबे समय से जानता हूँ। वह सुंदर नहीं हैं—यानी, उनमें बाहरी सुंदरता की कमी है—लेकिन इसके बावजूद, हर बार जब वे पवित्र भोज ग्रहण करते थे, तो मैं देखता था कि उनका चेहरा दीप्तमान हो जाता था। और जब वह पवित्र सहभाग ग्रहण नहीं कर रहे थे, तब भी मैंने उनके चेहरे पर एक तेज देखा—एक आध्यात्मिक तेज। यह टारमैक की तरह है—मूल रूप से एक प्रकार का तार—लेकिन अगर आप गर्मियों में इसे दूर से देखें, तो यह अक्सर चमकता है। यहाँ भी ऐसा ही है: आप एक बदसूरत व्यक्ति के चेहरे पर एक तेज देखते हैं। बेशक, टारमैक का उदाहरण विशेष रूप से उपयुक्त नहीं है, लेकिन यहाँ कोई और तुलना कैसे की जा सकती है? मेरा मतलब यह है कि एक व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति उसे एक बाहरी तेज प्रदान करती है। यह आध्यात्मिक सुंदरता, अनुग्रह, दिव्य अनुग्रह है। लेकिन इस पवित्र पद के अन्य

²⁵¹ देखें 1 कुरिन्थियों 14:20।

धारक कतिने घृणति हैं: बाहरी रूप से सुंदर, फरि भी भीतर एक सांसारिक आत्मा के मालकि, जो सांसारिक हवा से प्रभावति होते हैं! आप अपने सामने एक पूरी तरह से सांसारिक व्यक्तिको देख रहे हैं।

उनके पवतिर पद के अलावा, कुछ भी आध्यात्मिक दिखाई नहीं देता! एक व्यक्तिकी चेहरा उसकी आध्यात्मिक स्थितिको दर्शाता है। यही वह है जिसके बारे में मसीह ने कहा था: " *आँख शरीर का दीपक है। यदि आपकी आँख साफ़ है, तो आपका पूरा शरीर प्रकाश से भर जाएगा।*"²⁵² यदि किसी व्यक्ति में सरलता है, यदि उसमें वनिमृता है, तो उसमें दैवीय प्रबोधन है, और वह प्रकाशति होता है। यह ऐसा ही है। एक भिक्षु को ठीक यही प्राप्त करना चाहिए।

— जेरोडा, कैलाबरिया के संत नीलस कहते हैं कि भिक्षु बनने पर, एक व्यक्ति या तो एक देवदूत बन जाता है या एक शैतान।²⁵³ तो, क्या कोई बीच का रास्ता नहीं है?

— संत का मतलब है कि एक भिक्षु का अपने ऊपर काम सही ढंग से किया जाना चाहिए। इसीलिए ईश्वर एक घातक पाप में पड़े महान योजना के भिक्षु पर कठोर दंड आने देते हैं, ताकि वह उनके माध्यम से अपने अपराध का प्रायश्चित्त कर सके। हम कभी-कभी सोचते हैं कि हमें किसी बाहरी, कृत्रिम या जादुई साधन से अनुग्रह प्राप्त होगा। लेकिन इससे न तो ईश्वर को, न ही व्यक्ति के अपने अंतरमन को, और न ही दूसरों को कोई संतुष्टि मिलती है। उदाहरण के लिए, कुछ भिक्षु अपने लिए चौड़े और लंबे स्कामि सलिते हैं जो सीधे जमीन तक पहुँचते हैं, और उन पर लाल क्रॉस, गुलाब, गहरे लाल रंग की टहनियाँ और ढेर सारे अक्षर कढ़ाई करते हैं... वे अपनी कासोक (पोशाक) को भी खोलते हैं ताकि यह सारी 'सौंदर्य' दिखाई दे सके, ठीक वैसे ही जैसे फरीसी अपने वस्त्रों के कनारों को चौड़ा करते थे,²⁵⁴ यह दिखाने के लिए कि वे कतिनी प्रार्थना करते हैं! जबकि पुराने दिनों में, एक भिक्षु का स्कामि (skhim) उसकी कासोक के नीचे मुश्किल से ही दिखाई देता था, और वह भी केवल चलते समय ही। कई लोग छोटी स्कीमा को अपनी कासाक के नीचे पहनकर घूमते थे ताकि कुछ भी दिखाई न दे। लेकिन अब वे केवल दिखावा करते हैं। क्या इस तरह उन्हें वास्तव में स्कीमा से अनुग्रह प्राप्त होगा? स्कीमा उनसे घृणा करती है, और अनुग्रह चला जाता है। एक भिक्षु का उद्देश्य भीतर से एक महान स्कीमा-भिक्षु बनना है। और जो भीतर से एक महान स्कीमा-भिक्षु बनता है, वह अपनी स्कीमा को छपाता है। बाहरी दिखावा आंतरिक परिवर्तन की ओर नहीं ले जाता है। इस प्रकार लोग सतही बने रहते हैं, और अंततः वे मसीह से सुनेंगे: 'मैं तुम्हें नहीं जानता।'²⁵⁵

मठों का एक आध्यात्मिक उद्देश्य होता है

एक भिक्षु अपनी मुक्ति और सभी जीवितों तथा दविंगतों की मुक्तिकी चिंता करता है। एक भिक्षु के लिए, सच्चा, दैवी प्रेम अपनी आत्मा की मुक्तिकी पीड़ा में और संपूर्ण विश्व की मुक्तिकी पीड़ा में निहित है। ईश्वर को समर्पित एक भिक्षु की आत्मा न केवल अपने स्वजनों, बल्कि अपने देशवासियों की मुक्ति में भी योगदान करती है। इसलिए, एशिया माइनर में, हर परिवार से कम से कम एक भिक्षु होना एक पुरानी प्रथा थी, ताकि वह सभी के लिए मध्यस्थता कर

²⁵² मत्ती 6:22.

²⁵³ देखें द वेनेरेबल नीलस ऑफ कैलाबरिया। होली मॉनास्ट्री ऑफ द एनन्यूंसिएशन ऑफ द थोडोकोस, ओर्मलिया, 1991 द्वारा प्रकाशित। पृ. 252

²⁵⁴ मत्ती 23:5 देखें।

²⁵⁵ मत्ती 25:12.

सके। फारस में, जब कोई भिक्षु बनता था, तो पूरे गाँव के लिए एक उत्सव आयोजित किया जाता था। लोग कहते, 'वह अब हमारे गाँव की भी मदद करेगा।'

बेशक, एक भिक्षु कभी नहीं कहता, 'मैं दुनिया को बचाऊंगा।' वह अपनी मुक्तिके लिए प्रार्थना के साथ-साथ दुनिया की मुक्तिके लिए भी प्रार्थना करता है। और जब दयालु प्रभु, उसकी प्रार्थना सुनकर, दुनिया की मदद करते हैं, तो भिक्षु यह नहीं कहता, 'मैंने दुनिया को बचाया है,' बल्कि यह कहता है, 'ईश्वर ने दुनिया को बचाया है।' एक भिक्षु को उस अवस्था में पहुँचना चाहिए जहाँ ऊँ प्रार्थना करता है: 'मेरे ईश्वर, मुझ पर नज़र न डालो, मुझ पर दया न करो। दुनिया का ध्यान रखो; उस पर दया करो।' एक भिक्षु इस तरह प्रार्थना इसलिए नहीं करता क्योंकि उसे स्वयं ईश्वर की दया की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसलिए कि वह दुनिया से बहुत प्यार करता है।

— गैरोना, लोगों की मदद करते समय एक भिक्षु को कसि हद तक खुद को भूल जाना चाहिए?

— उस हद तक कि वह देखे कि यह लोगों के लाभ के लिए है। लेकिन अगर मैं खुद को पूरी तरह से गृहस्थों के भरोसे छोड़ दूँ, तो मैं भी सांसारिक व्यक्ति बन जाऊँगा। जब कोई भिक्षु, दखिावटी तौर पर सांसारिक लोगों की मदद करने के लिए, भिक्षु जीवन के अनुरूप नहीं काम करता है, तो इससे उन लोगों की मदद नहीं होती। उदाहरण के लिए, एक भिक्षु एक उत्कृष्ट टैक्सी चालक बन सकता है। वह करिया नहीं लेगा, और वह अपने यात्रियों के साथ आध्यात्मिक बातचीत करेगा... लेकिन यह एक भिक्षु का ध्येय नहीं है। कभी-कभी आपको भिक्षुओं में सांसारिक भावना और गृहस्थों में भिक्षु-भावना मिलती है। और इसीलिए मसीह आने वाले जीवन में कहेंगे: 'हे तुम, अपनी भिक्षु की वेशभूषा उतार दो; और हे तुम, अपनी पहन लो।' एक गृहस्थ जो भिक्षु जीवन की इच्छा रखता है, वह पवित्र हो जाता है। लेकिन अगर एक भिक्षु सांसारिक जीवन की इच्छा रखता है, तो वह शाश्वत यातना के लिए अभिशप्त है।

— और यद्यपि एक भिक्षु ने अपना मन गलत मार्ग पर लगा लिया है, तो क्या वह यह महसूस करता है?

— भले ही उसे इसका एहसास न हो: यद्यपि किसी भी मामले में कोई गलती हुई है, तो उसे अपने भीतर पूर्ण शांति और सुकून नहीं मिलेगा। संन्यासी जीवन के अनुकूल न होने वाले मामलों में, संन्यासी की आत्मा को कोई शांति नहीं मिलेगी। और जसि क्षण उसकी आत्मा अपनी शांति खो देती है, उसे इसके कारण को ढूँढकर पता लगाना चाहिए।

मेरा एक परिचित एक विशेष मठ में गया और बाद में कहा: "वहाँ तो एक असली कार्यशाला है! और मदर सुपीरियर – क्या अद्भुत शख्सियत है! अगर वह एथेंस के मोनास्ट्रिकी²⁵⁶ में बटन बेच रही होती, तो वह अपने घर जैसा ही महसूस करती!" उसे इस तरह की चीजों का बहुत शौक है!" दूसरे शब्दों में, मठ एक कार्यशाला है। फरि यह एक कारखाने, फरि एक सुपरमार्केट, और फरि एक मेले में बदल जाता है! दुनियादार गरीब लोग हम संतों से कुछ ऊँचा उम्मीद करते हैं। लेकिन सर्वोच्च को प्राप्त करने के लिए, हमें सभी सांसारिक सुखों से बचना होगा।

मठों का एक आध्यात्मिक उद्देश्य होता है। उनमें सांसारिकता का कोई अंश नहीं होना चाहिए, केवल आध्यात्मिकता होनी चाहिए, ताकि वे मानव आत्माओं को स्वर्ग के आनंद से भर सकें। आखिर हम सांसारिक मामलों में गृहस्थों से प्रतस्पर्धा क्यों करें! आखिरकार, आप इसे जसि भी नज़रिए से देखें, उन्हें हमसे कहीं ज्यादा अवसर मिलते हैं। लेकिन अगर एक संन्यासी समुदाय आध्यात्मिक जीवन जीता है, तो आप जानते हैं कि यह दुनिया को कैसे रुकने और सोचने पर मजबूर कर देता है! जब श्रद्धा हो, ईश्वर का भय हो, जब न तो सांसारिक तर्क हो और न ही व्यावसायिक भावना, तो यह सामान्य लोगों के हृदय को छू जाता है। लेकिन, दुर्भाग्य से, व्यावसायिक भावना मठवासी जीवन में हड्डियों के मज्जे तक चुपचाप समा रही है। एक बार एक भिक्षु मेरी कोठरी में मिलने आया। मैं जपमाला बना रही थी। उसने मुझसे

²⁵⁶ एथेंस का एक पड़ोस।

कहा, "तुम, इस तरह की तेतीस गाँठों वाली जपमाला आशीर्वाद स्वरूप देती हो। लेकिन मैं एक ऐसी जपमाला पाँच सौ ड्राकमा में बेच सकता हूँ।" और मैं, तुम्हारी तरह, कोई भी सामग्री बर्बाद नहीं करता: जैसे ही मैं गाँठें पूरी कर लेता हूँ मैं सरिं को काटकर उन्हें थोड़ा सा एक साथ बाँध देता हूँ ताकि उन बेवजह बर्बाद न हो। और क्रॉस से बची हुई डोरी भी काम आती है—मैं उसे भी सलि देता हूँ। और मैं कोई मनके इस्तेमाल नहीं करता। मेरा मुनाफ़ा तुम्हारे मुनाफ़े से ज्यादा हो जाता है!" — "सुनो," मैंने जवाब दिया, "तुम्हें शर्म नहीं आती! क्या तुम्हें एहसास नहीं कि एक धोखेबाज़ की आत्मा तुम पर हावी हो गई है? मैं 1950 से एक भिक्षु हूँ, लेकिन मैंने पहली बार ऐसी बात सुनी है!"

— गैरोना, दुनिया की मदद करने में सक्षम आध्यात्मिक रूप से परपिक्व लोग बहुत कम हैं।

— हाँ, दुर्भाग्य से, ऐसे बहुत कम लोग हैं! और इसके बाद दुनिया का क्या होगा? क्या आप जानते हैं कि मैं कतिनी बार ईश्वर से दुनिया की मदद करने में सक्षम सच्चे लोगों को प्रकट करने के लिए कहता हूँ? इन दुर्भाग्यशाली आत्माओं के लिए इतना ही काफी है कि आप उनके लिए थोड़ी सहानुभूति महसूस करें और अपने लाभ के लिए उनका शोषण न करें — वे इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहते! दुनिया में, वे नरितर संघर्ष में रहते हैं और सुरक्षति महसूस नहीं करते हैं। जब वे सही मार्ग पर चलने वाले किसी मठ में आते हैं, तो उन्हें मदद मिलती है क्योंकि वे सुरक्षति महसूस करते हैं, और यह उन्हें संघर्ष जारी रखने की ताकत देता है।

इन कठिनी समयों में, लोगों को शारीरिक पोषण की बजाय आध्यात्मिक पोषण की ज़रूरत है। दूसरे शब्दों में, उन्हें रोटी की ज़रूरत नहीं है (हालांकि, दुर्भाग्य से, जल्द ही लोगों को रोटी देने में भी मदद करना संभव नहीं होगा), बल्कि आध्यात्मिक सहारे की ज़रूरत है।

तो आइए हम प्रार्थना के माध्यम से पूरी दुनिया की मदद करने का प्रयास करें। आइए हम, उदाहरण के लिए, एक परिवार को टूटने से बचाने में मदद करें; आइए हम एक माँ को अपने दुर्भाग्यशाली बच्चों का सही ढंग से पालन-पोषण करने में मदद करें; आइए हम उन लोगों का समर्थन करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करें जिनमें श्रद्धा की भावना है।

आध्यात्मिक स्थिति— आध्यात्मिक शक्ति

आज अपने आत्मा को तैयार करने का समय है, क्योंकि अगर कुछ गंभीर हो जाता है, तो मुझे नहीं पता कि परिणाम क्या होंगे। काश, ईश्वर कठिनी दिनि न आने दे! लेकिन अगर वे आ गए, तो एक छोटा सा भूकंप, एक ही उथल-पुथल, पूरे भाईचारे, पूरे मठों को नष्ट कर देगी, क्योंकि हर कोई खुद को बचाने की कोशिश करेगा, हर कोई अपनी-अपनी दिशि में भाग जाएगा।

ताकि ईश्वर हमें न छोड़ें, हमें अत्यंत सतर्क रहना चाहिए। हमारी आत्मा में कुछ आध्यात्मिक होना चाहिए। यदि यह मौजूद है, तो यह आपको सम्मान दिलाता है। हलिना बहुत भयंकर होगा। मैंने आपसे इसके बारे में कतिनी बार बात की है, और आपने मुझसे कतिने कठोर शब्द सुने हैं! काश कोई मुझसे ऐसा कुछ कहता, तो मैं उस पर ज़रूर विचार करता, अपना दमिग खपाता: 'मुझसे यह क्यों कहा गया? वे मुझसे क्या चाहते थे?' मैं एक रात, या शायद कई रातों तक सोया नहीं होता। अगर मुझे यह न दिखता कि कठिनी वर्ष आने वाले हैं, तो मैं इसे इतना मन पर न लेता। लेकिन मैं देख सकता हूँ कि एक समय आ रहा है जब तुम्हारे लिए हालात बहुत मुश्किल हो जाएँगे। तुम मुझे अभी नहीं समझते, लेकिन तब तुम मुझे समझ जाओगे।

— गैरोना, अगर कोई व्यक्ति इन कठिनी वर्षों के दौरान खुद को अकेला पाता है तो? तब उन्हें क्या करना चाहिए?

— अभी के लिए, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आज्ञाकारिता का अभ्यास करें और वविक वकिसति करें; बाकी के बारे में बाद में देखेंगे। इसीलिए हमने कहा कि, सबसे बढ़कर, हमें अपनी कमियों को दूर करना चाहिए। अगर

किसी भिक्षु में कमियाँ हैं, तो जो हो रहा है वह उसके लिए सहन करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। अगर वह अभी भी किसी भी चीज़ से कभी संतुष्ट नहीं होता है, अगर वह खुद को एक चील मानता है जबकि बाकी सभी को कीड़े समझता है, तो... आइए हम खुद को सुधारें, खुद को सुधारें, ताकि हम द्रव्य सहायता के योग्य बन सकें। ईश्वर में और भी दृढ़ता से स्थापित हो जाइए। कठिनी समय आने वाला है। फल अभी हरे हैं, अभी पके नहीं हैं... क्या आप जानते हैं कि जब आप आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो जाएंगे तो आपका मठ क्या बन जाएगा? एक कला! और सिर्फ स्थानीय महत्व का नहीं; आपकी मदद और भी दूर तक फैलेगी। अन्यथा, आपको स्वयं को मानवीय मदद और सुरक्षा की आवश्यकता होगी। और जब बहनों की पूरी फौज वाले मठ को सामान्य लोगों की ज़रूरत हो, तो क्या आप जानते हैं कि यह कतिना बुरा है?

आज एक भिक्षु के लिए यह उचित है कि वह एक आध्यात्मिक जीवन जिए ताकि वह कठिनीयों पर काबू पाने के लिए तैयार रहे। उसे खुद को इस तरह तैयार करना चाहिए कि अभाव उसकी उड़ान न रोकें; अन्यथा, वह मसीह का भी परित्याग कर सकता है। वह समय आएगा जब नदियाँ सूख जाएंगी, हर कोई प्यास से तड़पेगा, और सभी कष्ट सहेंगे। हम भिक्षुओं के लिए, यह इतना डरावना नहीं है। प्यास से पीड़ित होना? खैर, हमें इससे पीड़ित होना ही चाहिए, क्योंकि हमने इस मार्ग पर चलने का संकल्प लिया है, दुख को अपनाने की खोज में। 'जो मैंने एक भिक्षु के रूप में स्वेच्छा से नहीं किया,' मैं तब कहूँगा, 'वह मैं अब अनिच्छा से करूँगा, ताकि मैं समझ सकूँ कि एक भिक्षु होने का क्या अर्थ है। मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, मेरे ईश्वर!' लेकिन दुनिया, यह दयनीय दुनिया! जब वे इतनी हद तक चले गए हैं कि उन्होंने ऐसे बम तक बना लिए हैं जो लोगों को मारते हैं पर इमारतों को नष्ट नहीं करते, तो फिर क्या कहा जाए! यदमसीह ने कहा था कि एक आत्मा की कीमत पूरी दुनिया के बराबर है,²⁵⁷ फिर भी उनके लिए इमारतें पूरी दुनिया से अधिक कीमती हैं, तो यह भयानक है!

— जेरोंडा, मुझे आगे क्या होने वाला है, इस बात को लेकर चिंता और डर महसूस हो रहा है।

— यह भय हमें मसीह से चपिके रहने में मदद करता है। इसका यह मतलब नहीं है कि हमें आगे आने वाली हर चीज़ में आनंदित होना चाहिए। हमें इस बात की खुशी मनानी चाहिए कि मसीह के लिए एक वीरतापूर्ण संघर्ष हमारे सामने है। दूसरे शब्दों में, हम किसी हटिलर या मुसोलिनी की दासता का सामना नहीं कर रहे हैं; हमें मसीह के प्रति अपनी वफादारी की परीक्षा से गुजरना होगा। जीत के लिए हमारे पास न तो मशीन गन होंगी और न ही सबसे आधुनिक परमाणु बम। आज, संघर्ष आध्यात्मिक होगा। हम स्वयं शैतान के साथ एक लड़ाई का सामना कर रहे हैं। लेकिन शैतान के पास तब तक कोई शक्ति नहीं है जब तक हम स्वयं उसे शक्ति दें। डर किस बात का? अगर यह हटिलर या मुसोलिनी होता, तो स्थिति अलग होती। कोई डर नहीं होना चाहिए। आइए हम इस बात की खुशी मनाएं कि यह लड़ाई आध्यात्मिक होगी।

यदि आप एक मठवासी जीवन, एक पतिसदृश जीवन जीते हैं, यदि आप चौकस हैं, तो शत्रु के हर हमले के साथ आप दैवीय हस्तक्षेप के हकदार होते हैं। यदि प्रार्थना करने वाले, वनिम्र लोग हैं, जो दुख और प्रेम से परिपूर्ण हैं, तो ये वास्तविक आध्यात्मिक दुर्ग, आध्यात्मिक सामरिक आधार हैं। यदि किसी मठ में दो—तीन—आत्माएँ हैं जो दूसरों के दुख के बारे में सोचती हैं और प्रार्थना करती हैं, तो वे एक आध्यात्मिक कला बन जाती हैं। ऐसे आध्यात्मिक रूप से परिपक्व लोग दुश्मन की सभी ताकतों को बाँध देते हैं।

²⁵⁷ मत्ती 16:26 देखें।

प्रार्थना, धार्मिक जीवन, व्यक्तिगत उदाहरण

— गेरोन्डा, आज की कठिनी स्थिति के संबंध में एक भिक्षु को क्या सही रुख अपनाना और व्यक्त करना चाहिए?

— प्रार्थना, एक धर्मी जीवन और व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करना सर्वप्रथम होना चाहिए। और जब और जहाँ आवश्यक हो, उसे बोलना चाहिए और अपनी स्थितिव्यक्त करनी चाहिए।

— तो जब कोई विशेष अवसर आता है, तो क्या एक भिक्षु को बोलना चाहिए?

— बेशक! एक भिक्षु के अलावा और कौन बोलेगा? एक भिक्षु को डरने की कोई बात नहीं है। बाकी लोग थोड़ी सी फटकार से ही डर जाते हैं। अगर हम नहीं, तो युद्ध में सबसे पहले कौन जाएगा—वे लोग जिन्होंने खुद को ईश्वर को समर्पित कर दिया है?

एक वचन मुझे बताता है कि ईश्वर हमें कभी नहीं छोड़ेंगे, वे नहीं छोड़ेंगे! स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। इस समय, ऐसा है मानो बहुत सारी मछलियाँ एक बड़े जाल में फँस गई हों। लेकिन जाल सड़ा हुआ है। एक मछली इस तरफ़ तड़पती है, दूसरी उस तरफ़, और अंततः जाल फट जाएगा। यह इस लिए नहीं फटेगा कि मछलियाँ बड़ी हैं, बल्कि इसलिए कि जाल खुद पहले ही सड़ चुका है।

— गेरोन्डा, क्या मछलियाँ ईसाई हैं?

— हाँ, ईसाई। ईल और साँप — वे बाकी हैं। लेकिन हमें भी जो हो रहा है, उसके लिए ईश्वर के सामने जवाब देना होगा। मैं अब इन सबके बारे में स्पष्ट रूप से बोल रहा हूँ; मैं अब और रोक नहीं सकता।

— तो फिर, हमें क्या करना चाहिए, जेरोन्डा?

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें अपने ऊपर काम करना होगा। आखिरकार, एक भिक्षु के रूप में, मुझे नमिनलखिति कार्य का सामना है: अपनी व्यक्तिगत मानवीय आत्मा को जड़ से उखाड़ना, पहले खुद को व्यवस्थित करना, ताकि मैं एक आध्यात्मिक व्यक्ति बन सकूँ; क्योंकि अन्यथा, मेरे संन्यासी जीवन का कोई अर्थ नहीं है। उसके बाद, यदि आवश्यकता पड़ी, तो हम गंभीरता से बोलेंगे, और ईश्वर इस मामले को एक अच्छे नष्टिकर्ष पर पहुँचाने में हमारी मदद करेंगे।

— लेकिन कुछ लोग, गेरोन्डा, कहते हैं कि मौन और प्रार्थना बेहतर है।

— जब आपके चारों ओर सब कुछ आग में जल रहा हो, तो आप उदासीन नहीं रह सकते! आपको आग बुझानी होगी। दर्द आपको चुप रहने नहीं देता। बेशक, सबसे ज़रूरी बात यह है कि यथासंभव आध्यात्मिक रूप से जीवन जीने की कोशिश की जाए। लेकिन अगर किसी गंभीर मामले पर, अपनी बात रखना ज़रूरी हो, तो आपको वही कहना चाहिए जो ईश्वर आपको कहने के लिए प्रेरित करें।

नम्रता, सादगी और आध्यात्मिकता से जियो — ताकि कठिनी समय में आपको समझौता करने के लिए मजबूर न होना पड़े। इसके अलावा, मठ में उन युवा महिलाओं को प्रवेश दिलाने की कोशिश करें जिनमें मठवासी जीवन की क्षमता दिखाई देती है, ताकि वे सच्ची भिक्षुणियाँ बन सकें। एक बार जब कोई व्यक्ति एक अच्छा भिक्षु बन जाता है, तो वह जानता है कि किसी विशेष समस्या के लिए खुद को कसि हद तक समर्पित करना है। वे जानती हैं कि क्या करना है और क्या नहीं, और वे जानती हैं कि कैसे कार्य करना है। हालाँकि, यदि वे एक अच्छी भिक्षुणी नहीं बनी हैं, तो सब कुछ गड़बड़ हो जाता है। क्या आप यह समझती हैं? यदि आप सच्ची भिक्षुणियाँ बनती हैं, तो आप वक्त से काम लेंगी। लेकिन अगर आप सच्ची नन नहीं बनती, तो जब हम आप में से किसी एक को किसी काम से भेजेंगे, तो हमें स्पष्ट रूप से बताना पड़ेगा: 'ध्यान रखना, इस बारे में कुछ भी अनावश्यक मत कहना, और उस बारे में कुछ भी मुँह से मत बोल देना,' वरना वह

बहुत सारी बकवास बोल सकती है। लेकिन ऐसी स्थिति अपरपिक्व होगी। तो फिर हम उन सभी चीजों का सामना कैसे करेंगे जो हमारे सामने हैं?

इसलिए, जनिमें मठवासी जीवन की योग्यता है, उन्हें सच्ची नन बनने का प्रयास करना चाहिए, और यह जानना चाहिए कि कठिनी कृष्णों में कतिनी बात करनी है, क्या कहना है, और क्या करना है। तब वे आज्ञाकारिता की सीमाओं को पार नहीं करेंगी, क्योंकि उनकी आत्मा मदर सुपीरियर की आत्मा के साथ सामंजस्य में होगी। यदि आवश्यक हुआ, तो मदर सुपीरियर उन्हें केवल एक संकेत देंगी, और वे उन्हें समझ जाएँगी, क्योंकि वे उनकी ही तरंग पर होंगी। यह अन्यथा नहीं हो सकता। क्योंकि यदि आप यह नहीं सीखते हैं, तो कोई और उसी तरंग पर जुड़ सकता है। वह आपको वे बातें बताएगा जो आपको नहीं सुननी चाहिए; आप उसे पहचान नहीं पाएँगे, और वह काफी नुकसान पहुँचाएगा।

संन्यासवाद खतरे में है

आज दुनिया आग की लपटों में है, जबकि मिठवाद अपनी ताकत खो रहा है, पतन की ओर जा रहा है और अपनी गरिमा खो रहा है। यदि मिठवाद से आध्यात्मिक तत्त्व चला जाता है, तो उसमें कुछ भी नहीं बचता। पवित्र पर्वत पर, एक यात्री ने एक निश्चिंत भिक्षु से पूछा: 'सुनो, तो क्या यहाँ तपस्या की कोई भावना नहीं है?' — 'अब,' भिक्षु ने उसे समझाया, 'एक नया युग है। पुराने तरीकों का जमाना बीत चुका है।' खैर, ठीक है, मान लीजिए कि वह पागल था। शायद उसके जैसे पाँच या दस और लोग हैं जो थोड़े सनकी हैं, लेकिन अगर वे ऐसी बकवास करते हैं, तो उन्हें किसी मीनार में बंद कर देना चाहिए! उन्हें बकबक करने, हमारे समय के मठवासी जीवन पर कीचड़ उछालने और लोगों को गुमराह करने का कोई अधिकार नहीं है! आखिरकार, कुछ लोग तो ऐसा करने का बहाना ही ढूँढ़ रहे होते हैं।

आप देखेंगे: धीरे-धीरे, कुछ मठों में, बेनकाब होने से बचने के लिए, वे पवित्र पतिओं के ग्रंथों के पाठ को बंद कर देंगे। वे समाजशास्त्रीय प्रकृतिकी कतिबें पढ़ेंगे, कथित तौर पर इसलिए क्योंकि वे हमारे युग में फायदेमंद हैं। हाँ, हाँ, हम उसी ओर बढ़ रहे हैं! और बेचारे गृहस्थ मदद के लिए पवित्र मठों में आते हैं... जसि प्रकार धर्मनिरपेक्ष दुनिया में एक धर्मपरायण व्यक्तिका तरिस्कार किया जाता है, उसी प्रकार एक अच्छे भिक्षु का भी जल्द ही तरिस्कार किया जाएगा। और हम पर वनिश आएगा यदि हम सांसारिक भावना के खतरे को कम आंकते हैं; क्योंकि तब, नकिट भवषिय में, जब कोई युवक धर्मपरायण जीवन, एक भिक्षु की तरह जीने की इच्छा से मठ में आएगा, तो दूसरे उससे कहेंगे: 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' जब लोग संन्यासियों को गृहस्थों से अलग नहीं देखते, तो वे भिक्षु जीवन से नरिश्च हो जाते हैं। कई लोग मेरे पास आते हैं और बताते हैं कि कैसे कुछ मठ उन्हें लुभाते हैं। अब मैं उनका मन कैसे सही करूँ?

सांसारिक भावना ने भिक्षु जीवन में गहराई से प्रवेश कर लिया है, और बुराई स्थिर नहीं रहती। भिक्षुओं को स्वयं को भिक्षु साबित करना चाहिए, न कि गृहस्थ। हमने वह सादगी खो दी है जो पछिली पीढ़ियों की विशेषता थी। युवा भिक्षु अब सांसारिक तर्क और सांसारिक परवरिश से प्रेरित हैं: वे अपनी प्रतिष्ठा न खोने का प्रयास करते हैं और अक्सर खुद को धर्मनिरपेक्ष समाज के कानूनों की ओर उन्मुख करते हैं। फिर भी, कुछ ही साल पहले, मठों में 'लावसाइका' में वर्णित स्थिति अभी भी देखी जा सकती थी।²⁵⁸ कुछ द्रव्य उत्साह से मठ में आए, तो कुछ पश्चाताप के कारण। उन्हें मठ तक लाने वाले हालात अलग-अलग थे: एक अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद आया, जबकि दूसरे ने अपने पूर्व, सांसारिक

²⁵⁸ 'लावसाइका' — मसिर और फलिसितीन के तपस्वियों की जीवनी। यह पुस्तक संभवतः 5वीं शताब्दी के मध्य में बथिनिथिया के हेलेनोपोलिस के बशिप, पैलाडियस द्वारा संकलित की गई थी, जिन्होंने इसे बाइजेन्टाइन कुलीन लाव्स को समर्पित किया था। यह कृतस्वयं बाद में उसी के नाम से जानी जाने लगी।

जीवन से तौबा करके ऐसा किया। मठों में आप भूतग्रस्त लोगों से भी मलि सकते थे: वे मदद की तलाश में आते थे, संतों की प्रार्थनाओं से ठीक हो जाते थे, वहीं ठहरते और मठ के संन्यास की शपथ लेते थे। और यदवि बाद में कोई पाप करते, तो अशुद्ध आत्मा फिर से उनमें प्रवेश कर जाता। इसलिए सामुदायिक कक्षाओं में भी भूतग्रस्त लोग रहते थे। ऐसे भी थे जो भटक गए थे, मसीह के लिए पवित्र मूर्ख थे, और ऐसे भिक्षु थे जिनके पास दूरदर्शिता और चंगा करने का वरदान था। कतिनी बड़ी विविधता थी! लेकिन आज आपको न तो कोई दूरदर्शी मलिंगा, न कोई चमत्कार करने वाला, न भूतग्रस्त, न ही मसीह के लिए पवित्र मूर्ख। हमारे पास एक अलग तरह की मूर्खता है—इस दुनिया की मूर्खता। हमने अपने मन को पहले रखा है, और इसने हमारे मन को भ्रष्ट कर दिया है। बहुत सारा सांसारिक तर्क हममें समा गया है, और तर्क की इस प्रचुरता ने सब कुछ नष्ट कर दिया है। और सबसे बुरी बात यह है कि हमें इसका एहसास भी नहीं है।

कुछ मठों के संन्यासी, आज अपने जीवन को तरह-तरह की सुख-सुविधाओं से भरकर, अपने जीवन को ही बोझ बना लेते हैं। वे उन चीजों में बहुत अधिक उलझे हुए हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता नहीं है, जबकि उन आध्यात्मिक मामलों की उपेक्षा करते हैं जिनमें उन्हें लगे रहना चाहिए। यद्युवा, मठ में प्रवेश करने पर, सांसारिक बेचैनी को एक धर्मनिरपेक्ष संस्थान की भावना से नहीं बदलते हैं, तो उन्हें कोई शांति नहीं मिलेगी। बाद में, मनोरंजन की तलाश में, वे 'आध्यात्मिक पर्यटन' में शामिल होना और भ्रमण पर जाना चाहेंगे। यहाँ तक कि कुछ तो यह भी कहेंगे, 'मैं छुट्टियों पर जाना चाहता हूँ' जबकि एक भिक्षु को अपनी कुटिया केवल भारी मन से ही छोड़नी चाहिए।

मैं कई बातों से आहत हूँ, और इसलिए ये कटु शब्द मुझसे फूट रहे हैं। मुझे दुख होता है: आखिरकार, अतीत में, गरीब भिक्षुओं के पास न तो आध्यात्मिक पुस्तकें थीं और न ही उन्हें पता था कि भिक्षु जीवन में क्या-क्या शामिल होता है, फिर भी वे फलते-फूलते थे। मठों में प्रवेश करने वालों में से तीस प्रतर्षित जन्मजात भिक्षु होते थे, जबकि बाकी बना किसी प्रशिक्षण के आते थे: विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए एक विविध समूह, फिर भी वे फलते-फूलते थे। कोई व्यक्ति आध्यात्मिक मामलों की थोड़ी-सी भी समझ के बिना मठ में आ सकता था, एक-दो महीने वहाँ रह सकता था, और मठाधीश को भी पता नहीं चलता था कि वह कौन था। फिर, भिक्षु बनने का निर्णय लेने के बाद, वह अपने आध्यात्मिक पिता के पास जाता, पापस्वीकार करता, और मठ में ही रहता। यह भी किसी को नहीं पता होता था कि वह किस तरह का व्यक्ति था, वह कहाँ से आया था, या उसे मठ में क्या लाया था। फिर भी, उन सभी कठिनाइयों के बावजूद, वह आध्यात्मिक रूप से विकसित हुआ और फल-फूल गया। कुछ तो निरक्षर भी थे। वे भोजनशाला में पढ़ी जाने वाली सामग्री और चर्च में सैनिकसारथिन को सुनते थे, और बस इतना ही; वास्तव में, कभी-कभी तो वे उसे भी नहीं समझते थे। न ही वे मंत्रोच्चारण को समझते थे: सेवाओं के दौरान वे यीशु प्रार्थना का जाप करते थे, लेकिन उनका इरादा अच्छा था। और इन सबके बावजूद, उन्होंने आध्यात्मिक परिपक्वता प्राप्त की। वे एक आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँचे, जबकि आजकल रविवार के स्कूल, आध्यात्मिक पुस्तकें और इतने सारे अनुकूल परिस्थितियाँ हैं, फिर भी यह सारी कच्ची सामग्री बर्बाद हो जाती है! यह पता चलता है कि अनपढ़ों का आध्यात्मिक विकास इतना मजबूत था, जबकि शिक्षित और संस्कृत लोगों के पास कुछ भी नहीं है! यानी, मानो एक जोता हुआ खेत है; उसमें बीज बोए गए हैं, लेकिन एक भी अंकुर नहीं फूटता! क्या यह दुखद नहीं है? आप क्या सोचते हैं?

खैर, अगर हम लापरवाह रहें, तो मठवासी जीवन स्थिर नहीं रहेगा; यह पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो जाएगा। लेकिन भविष्य, बेशक, मसीह और परमेश्वर की परम पवित्र माता के हाथों में है। वह, हमारी शुभ स्वामिनी, एक झाड़ू उठाएंगी, अपने पवित्र मठों से कूड़ा-करकट झाड़ू देगी और उनमें फिर से व्यवस्था बहाल करेंगी। हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि यह सब बिना किसी निशान के बीत जाएगा; फिर भी यदविम सही ढंग से, एक मठवासी की तरह नहीं जीते हैं, तो हम ईश्वर के सामने ऋणी के रूप में खड़े होंगे। हम अपनी आत्मा को बचाने के लिए, और प्रार्थना के माध्यम से समाज की

मदद करने के लिए भिक्षु बने हैं। इसलिये, यह न भूलें कि हमने मसीह से क्या व्रत लिए हैं, और दुनिया में उन लोगों को क्या सहना पड़ता है जिन्हें यह वशिषाधिकार—देवदूतों के क्रम में बुलाए जाने का वशिषाधिकार—नहीं मिला है।

हमें अपने पीछे एक वरिसत छोड़नी चाहिए

— गेराना, आजकल कई लोग अपनी आशाएँ मठों में लगाते हैं। इसकी जम्मेदारी मुझ पर भारी बोझ है।

— हाँ, कई लोग कहते हैं कि अब बाहर निकलने का एकमात्र तरीका यह है कि कुछ संत हों, जैसे एटोलीया के संत कोस्मास, और वे दुनिया को उपदेश देने और ज्ञान देने के लिए विभिन्न देशों में जाएँ। मठ आध्यात्मिक केंद्र हैं। यदि मठों ने 1821 के विद्रोह में मदद नहीं की होती, तो यह विद्रोह होता ही नहीं। और जर्मन कब्जे के दौरान, मठों ने आत्मसमर्पण नहीं किया और मुक्ति के संघर्ष में अपना योगदान दिया। इसीलिए डाकू²⁵⁹ ने उन्हें नष्ट कर दिया। अधिकांश मठ जर्मनों द्वारा नहीं जलाए गए थे; उन्हें उनके ही लोगों, ग्रीक डाकूओं द्वारा लूटपाट किया गया था। जर्मनों ने घोषणा की: 'यदि किसी मठ में गोला-बारूद और हथियार पाए गए, तो हम उसे जला देंगे।' ये डाकू, खुद को नरिदोष दिखाने और मठों के विनाश का दोष नाज़ियों पर मढ़ने के लिए, मठों में जाते, कुछ पुराने कारतूसों के क्लिप और एक-दो टूटी हुई बंदूकें रख देते, और फिर खुद ही कब्जा करने वाली सेनाओं को रिपोर्ट करते कि कितनी तौर पर डाकू अमुक मठ में छिपे हुए हैं। फासीवादी छापा मारते, गोला-बारूद ढूँढते और मठ को आग लगा देते। और इस तरह, डाकू कई मठों को जलाने में कामयाब रहे, क्योंकि वे उनसे डरते थे। वे कहते, "अगर मठ बने रहेंगे, तो हम कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे, भले ही हम एक नास्तिक शासन स्थापित करने में सफल हो जाएँ। चलो उन्हें जला ही देते हैं।" और उन्होंने वैसा ही किया।

आज, लोग खमीर की तलाश में मठों में जाते हैं। लेकिन जब मठ स्वयं ही इतनी अव्यवस्था की स्थिति में हों, तो वहाँ कैसी खमीर होगी? उन्हें वहाँ कोई खमीर भी नहीं मिलेगी। इसलिये आइए, आने वाले कठिन वर्षों के लिए थोड़ी सी खमीर बचाने का प्रयास करें।

वर्तमान में, जो लोग जादूगरों और इसी तरह के लोगों के पास जाते हैं, वे मदद के लिए मठों में आ रहे हैं। बाद में, पाप से थके हुए लोग आएँगे। इतना थका हुआ, कि अगर आप उन्हें शराब पीने या पाप करने के लिए भेजेंगे, तो वे नहीं जाएँगे। इन कठिन वर्षों में, ईश्वर व्यक्तिगत निमित्तों के माध्यम से लोगों को मठवासी जीवन की ओर बुला रहा है। यह पीढ़ी अपने मठवासी जीवन की यात्रा सबसे अच्छी संभावनाओं और आदर्शों के साथ शुरू कर रही है, फिर भी शैतान इस सारी कच्ची सामग्री को बेकार बना रहा है। अगली पीढ़ी अलग होगी। मठों में कई ऐसे लोग भी आएँगे जो मठ जीवन के लिए उपयुक्त नहीं हैं। वे एक ऐसी स्थिति में पहुँचेंगे जहाँ उन्हें भिक्षु बनने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। वे दुनिया से थके-हारकर और जखमी होंगे। विवाहित जोड़े (चर्च की अनुमति से और बिना अनुमति के दोनों तरह से) तलाक लेकर मठों में प्रवेश करेंगे। दुनियावी जीवन से ऊब चुके युवा भी मठों में आएँगे: कुछ अपनी आत्मा को बचाने के लिए, तो अन्य अपने लिए थोड़ी शांति की तलाश में। जो शादी करना चाहते हैं लेकिन किसी और के साथ अपना जीवन समर्पित करने से डरते हैं, वे भी भिक्षु बन जाएँगे। दूसरे शब्दों में, आने वाले वर्षों में, मानसिक रूप से बीमार और जो लोग बस परिवार शुरू करने का संकल्प नहीं रखते, दोनों ही संन्यास जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। वे तर्क देंगे, "मुझे विवाह में क्या मलिका? मैं कैसे जीऊँगा?" "मेरे लिए तो संन्यासी बनना ही बेहतर है।" दूसरे शब्दों में, वे संन्यास जीवन को समय बताने का एक सुखद तरीका मानेंगे। वे कतिने सफल होंगे, यह एक अलग बात है। मठों में प्रवेश करने वाले पश्चातापी नहीं होंगे; परिस्थितियाँ

²⁵⁹ 'डकैटों' शब्द का तात्पर्य फासीवादी कब्जे के वर्षों के दौरान ग्रीस की कम्युनिस्ट पार्टी की सशस्त्र इकाइयों से है। — अनुवादक की टिप्पणी।

उन्हें भक्तिबु बनने के लिए मजबूर करेंगी। उनके उद्देश्य नरिदोष नहीं होंगे। खतरा इसी में है। जब कोई व्यक्ति सिन्यास जीवन के लिए दुनिया छोड़ता है, तो स्थितिकाफी अलग होती है। इन दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं को बहुत मदद की जरूरत होगी; उन्हें सांसारिक सुखों का स्वाद याद रहेगा, और इसलिए शैतान उनके खिलाफ एक भयंकर लड़ाई लड़ेगा। वह हमसे ऐसी लड़ाई नहीं लड़ता; वह हमारे आध्यात्मिक प्रयासों में बाधा डालने और हमें नरिशामें धकेलने की कोशिश करता है, ताकि हमारे बाद आने वालों को खमीर न मल सकें।

इन सब से मेरा तात्पर्य यह है कि हमें अब सफल होना चाहिए, ताकि हम इन लोगों की मदद करने की स्थिति में आ सकें। आइए हम उनके लिए एक पतिसुलभ वरिसत छोड़ें। हमारे पास 'आध्यात्मिक आनंद' है—लेकिन हमारे पास स्वर्ग का आनंद नहीं है। हम मुंडन, अभषिक, सर्व-रात्रिजागरण, 'राबी, प्रभु...' के गायन, दीप-स्तंभ के झुलाने पर आनंदित होते हैं... लेकिन ये आनंद स्वर्गीय नहीं हैं; ये हृदय के सांसारिक आनंद हैं — शब्द के सकारात्मक अर्थ में। स्वर्गीय आनंद कुछ उच्चतर है, कुछ अभविकृत नहीं किया जा सकता। जब कोई व्यक्ति स्वर्गीय का थोड़ा सा स्वाद चखना शुरू करता है, तो उसका हृदय उछलता है और आनंदित होता है। भवष्य की पीढ़ियों को स्वर्गीय आनंद सौपने के लिए, हमें स्वयं उनका अनुभव करना होगा।

अध्याय 3. जीवन के गहरे अर्थ पर

आओ आने वाले जीवन के लिए तैयारी करें

— जेरोंडा, एक युवक लापता हो गया है, उसने अपने माता-पिता के लिए एक नोट छोड़ा है जिसमें लिखा है कि विह अपनी जान लेना चाहता है क्योंकि विह बदसूरत है, और इसके लिए वे दोषी हैं...

— लोग अभी तक जीवन के गहरे अर्थ को नहीं समझ पाए हैं। वे दूसरी ज़िंदगी में विश्वास नहीं करते। उनकी सारी पीड़ा इसी से उत्पन्न होती है। 'मेरे साथ अन्याय हुआ है,' एक व्यक्ति कहता है, 'दूसरे खुश हैं, लेकिन मैं नहीं हूँ।' लोग अपने पास जो कुछ भी है उससे असंतुष्ट रहते हैं; स्वार्थ पनपता है, और वे पीड़ित होते हैं। ईश्वर सभी लोगों से प्रेम करता है। प्रत्येक व्यक्ति को उसने वह दिया है जो उनके लिए अच्छा है: चाहे वह कद हो, साहस हो, सुंदरता हो या कुछ और। उसने लोगों को वह दिया है जो उन्हें मोक्ष पाने में मदद कर सकता है, बशर्ते वे इसका सही उपयोग करें। फरि भी दुनिया इस सवाल से त्रस्त है: 'मैं ऐसा क्यों हूँ, और वह वैसा क्यों है?' लेकिन तथ्य यह है कि आपके पास एक चीज़ है, और उसके पास दूसरी। एक रोमानियाई पवित्र मूर्ख, जो मसीह के लिए पवित्र पर्वत पर रहते थे, ने ऐसे विचारों से पीड़ित किसी व्यक्ति को एक कहानी सुनाई: 'एक मेंढक ने एक भैंस को देखा और कहा, "मैं भी भैंस बनना चाहता हूँ।" उसने खुद को फुलाया, फुलाया, और अंत में फट गया। आखिरकार, ईश्वर ने कुछ को मेंढक और कुछ को भैंस बनाया है। और मेंढक ने जाकर क्या किया? वह भैंस बनना चाहता था! खैर, वह फट गया!" हर किसी को उसी रूप में आनंदित होना चाहिए जिसमें सृष्टिकर्ता ने उन्हें बनाया है।

²⁶⁰जैसे ही कोई व्यक्ति ईश्वर और आने वाले अनंत जीवन में विश्वास करने के लिए प्रदान किए गए अनुकूल अवसर का उपयोग करता है—अर्थात्, जब वह जीवन के गहरे अर्थ को समझता है और, पश्चात्ताप करके, अपने जीवन का पुनर्निर्माण करता है—तो दैव्य सात्वता और ईश्वर की कृपा तुरंत आती है, और वह कृपा उन्हें बदल देगी, उनकी सभी जन्मजात कमियों को दूर कर देगी। कई पश्चात्तापी पापियों ने वनिमृतापूर्वक एक महान प्रयास किया, अनुग्रह प्राप्त किया, संत बन गए, और अब हम उनका श्रद्धापूर्वक सम्मान करते हैं और उनकी प्रार्थनाएं मांगते हैं। फरि भी, पहले उनमें कई वासनाएं थीं, जिनमें जन्मजात वासनाएं भी शामिल थीं। उदाहरण के लिए, आदरणीय मोसेस द मूर को लें। जन्मजात द्वेष के साथ एक रक्तंजित डाकू होने के बाद, जैसे ही उसे ईश्वर में विश्वास हुआ, उसने तुरंत पश्चात्ताप किया, तपस्या का अभ्यास करना शुरू कर दिया, उसके सभी वासनाएं उससे दूर हो गईं, और ईश्वर की कृपा उस पर उतरी। उन्हें भवषियवाणी का वरदान भी प्राप्त हुआ, और उनकी आध्यात्मिकी सूझ-बूझ महान आर्सेनयिस () की भी बराबरी कर गई, जो एक उच्च-वर्गीय रोमन परिवार से थे, जिनमें जन्मजात गुण थे और जो बाहरी मामलों में बहुत विद्वान थे।

— तो, गेराना, इस जीवन का वास्तव में क्या अर्थ है?

— यह क्या है? यह स्वयं को हमारी मातृभूमि, स्वर्ग, और परमधाम के लिए तैयार करना है। सार यह है कि कोई व्यक्ति जीवन के इस गहरे अर्थ को समझे, जो आत्मा का मोक्ष है। ईश्वर और आने वाले जीवन में विश्वास करके, एक व्यक्ति यह महसूस करता है कि यह अस्थायी जीवन क्षणिक है, और आने वाले जीवन के लिए अपना 'पासपोर्ट' तैयार करता है। हम भूल जाते हैं कि हम सभी का वंश होना तय है। हम यहाँ जड़ें नहीं जमा सकते। यह जीवन आलस्य में जीने के लिए नहीं है, बल्कि परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने और एक अन्य जीवन की ओर बढ़ने के लिए है। इसलिए, हमें अपने लिए निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए: खुद को इस तरह तैयार करना कि जब ईश्वर हमें बुलाए, तो हम एक निर्मल अंतरात्मा के साथ प्रस्थान कर सकें, मसीह तक उड़ सकें और हमेशा उनके साथ रह सकें। जब मसीह ने पाँच रोटियों पर आशीर्वाद दिया और इतने हजारों लोगों को खिलाया, तो भीड़ ने तुरंत कहा: 'वह एक बेहतरीन राजा बनेगा।' उन्होंने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ खाईं और उत्साह से भर गए। हालाँकि, मसीह ने उनसे कहा कि वे इस भोजन के बारे में चिंता न करें, क्योंकि हम यहाँ नहीं रहेंगे। इस जीवन में, हम में से प्रत्येक को यह परखने के लिए आजमाया जाता है कि क्या हम उस पर खरे उतरते हैं जो परमेश्वर चाहता है।

— गेराना, ईश्वर की इच्छा करने के लिए एक व्यक्ति को हमेशा क्या ध्यान में रखना चाहिए?

— उन्हें अपना मन ईश्वर पर केंद्रित रखना चाहिए, उस उद्देश्य के बारे में सोचना चाहिए जिसके लिए वे इस जीवन में आए हैं। हम यहाँ दुनिया की हर चीज़ में उलझने और आरामदायक छोटे-मोटे जीवन जीने के लिए नहीं आए हैं। हम आने वाले जीवन के लिए तैयारी करने आए हैं। इसलिए, हमारा मन लगातार उस भवषिय के जीवन और उस पर केंद्रित होना चाहिए जो हमें उसे प्राप्त करने में मदद कर सके। हर चीज़ को प्रेम से अपनाकर, और प्रेम तथा वनिमृता के साथ प्रयास करके, एक व्यक्ति आध्यात्मिकी जीवन के अर्थ को समझ पाता है। आध्यात्मिकी जीवन असीम साहस, एक आध्यात्मिकी दावत है। क्या आप जानते हैं कि दावत क्या होती है? मठवास का गहरा अर्थ समझें; आध्यात्मिकी कुलीनता

²⁶⁰ आदरणीय आर्सेनयिस महान (354–447) रोम के मूल निवासी थे। वे अपनी बुद्धि और सदगुणों के लिए प्रसिद्ध थे। उन्हें 'राजाओं के पति' की उपाधि दी गई क्योंकि सम्राट थियोडोसियस ने अपने दो बच्चों की परवरिश का ज़िम्मा उन्हें सौंपा था। 394 में, एक दैवीय प्रकट होने के बाद, उन्होंने संसार त्याग दिया और मसिर के रेगिस्तान में चले गए। महलों में अपने पूर्व जीवन के बावजूद, संत आर्सेनयिस ने अपने संन्यासी तप को बड़ी कठोरता और आत्म-बलिदान के साथ निभाया।

और पवतिर पतिओं की संवेदनशीलता प्राप्त करें। और सभी लोग जीवन के गहरे अर्थ को समझने के लिए बाध्य हैं (केवल मठवासी जीवन ही नहीं, बल्कसामान्य जीवन भी)। यद्वि ऐसा करते, तो तुच्छ झगड़े, संघर्ष और स्वार्थपरता के अन्य सभी रूप पूरी तरह से समाप्त हो जाते। चूँकि एक द्रव्य पुरस्कार है, तो आइए इस बारे में सोचें कि आने वाले जीवन के लिए थोड़ा 'धन' कैसे अर्जित करें, न कि इस जीवन में गरमा से कैसे रहें और दूसरों से मानवीय महिमा कैसे स्वीकार करें।

जब कोई व्यक्ति वास्तविक जीवन के क्षेत्र में चलता है, तो वह हर बात में आनंदित होता है। इस तथ्य में कि वह जीवित है। इस तथ्य में कि वह मरने वाला है। वे इस लिए आनंदित नहीं होते क्योंकि वे जीवन से थक गए हैं; नहीं, वे इस लिए आनंदित होते हैं कि वे मरकर मसीह के पास जाएँगे।

— गेराना, क्या वह इस बात पर प्रसन्न होता है कि वह परमेश्वर की अनुमति का विरोध नहीं करता?

— वह इस बात पर आनंदित होता है क्योंकि वह देखता है कि यह जीवन क्षणिक है, जबकि दूसरा जीवन शाश्वत है। वह जीवन से ऊब नहीं गया है, बल्कि यह सोचकर, 'हमारा क्या इंतजार कर रहा है? क्या हम नहीं जाएँगे?'—वह वहाँ जाने की तैयारी करता है, यह महसूस करते हुए कि यही उसकी नियति है, जीवन का अर्थ है।

उदाहरण के लिए, सामाजिक कल्याण प्रणाली में काम करने वाली महिलाओं को लें। वे दयालु हैं: वे, बेचारे, दूसरों के लिए अपनी हड्डी-पसली एक करने के लिए इधर-उधर दौड़ती रहती हैं। वे प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक हैं, लेकिन ऐसे समय भी आते हैं जब दूसरों की मदद करने का उनका तरीका बस काम नहीं करता। वह, उदाहरण के लिए, एक ऐसे व्यक्ति को सांत्वना देने जाती है जिसका पैर काट दिया गया है, और वह उससे कहता है: 'तुम दो पैरों पर यहाँ आई हो और मुझसे कहती हो, "शुभ दोपहर," जबकि मेरे पास सिर्फ एक पैर है।' वह उससे क्या कह सकती है? वह मनोवैज्ञान से उसकी कैसे मदद कर सकती है? अगर यह आदमी जीवन के गहरे अर्थ को समझने में असफल रहता है, तो कोई भी चीज उसकी मदद नहीं कर पाएगी। उसे यह एहसास होना चाहिए कि ईश्वर की अनुमति से मिला इस विकलांगता के लिए, बशर्ते वह शकियत न करे, उसे अगले जन्म में अपने संचित स्वर्गीय पुरस्कार प्राप्त होंगे। यह समझकर, उसे प्रसन्न होना चाहिए। भले ही बाकी सब चार पैरों पर चल रहे हों, उसे कहना चाहिए: 'मैं आपकी धन्यवाद करता हूँ, मेरे ईश्वर, कि मैं एक पैर पर चलता हूँ।' लेकिन, जीवन को एक गैर-आध्यात्मिक तरीके से देखने के कारण, ये बेचारे लोग लोगों को सांत्वना देने जाते हैं और नहीं जानते कि उनसे क्या कहें। उदाहरण के लिए, ऐसा 'सामाजिक सांत्वना देने वाला' एक पैंतीस वर्षीय महिला, , के दुख को कम करने के लिए जाता है, जिसे कैसर है और जिसके तीन बच्चे हैं। वह उससे क्या कहेगी? यद्यपि माँ जीवन के गहरे अर्थ को समझने में विफल रहती है, तो वह यह सोचकर निराश हो जाएगी कि उसके बच्चों का क्या होगा। और वह मनोवैज्ञानिक स्वयं, जो उसे सांत्वना देने आई है, उसी निराशा में डूब जाएगी यद्यपि कुछ उच्चतर, कुछ आध्यात्मिक रूप से गहरा नहीं समझती है। आखिरकार, पहले अपना आध्यात्मिक संतुलन प्राप्त किए बिना, वह अपने पड़ोसी की इस तरह से ठीक से मदद करने में असमर्थ होगी कि उन्हें द्रव्य सांत्वना मिल सके। इसलिए ये बेचारे मनोवैज्ञानिक न केवल शारीरिक रूप से थक जाते हैं, बल्कि यह देखकर निराश भी हो जाते हैं कि वे लोगों को कोई वास्तविक मदद नहीं दे सकते। दूसरे शब्दों में, वे दोगुने रूप से थक जाते हैं।

हमें अच्छाई को एक आवश्यकता के रूप में पहचानना चाहिए

एक व्यक्ति को अच्छाई को एक आवश्यकता के रूप में पहचानना चाहिए, अन्यथा वह कष्ट भोगेगा। और यह कहना कि हर कोई अच्छाई को एक आवश्यकता के रूप में नहीं पहचान सकता, असत्य होगा। मैं इस तरह के दृष्टिकोण को सही नहीं ठहरा सकता। यहाँ तक कि एक पाँच साल का बच्चा भी अच्छाई को एक आवश्यकता के रूप में पहचानने में

सक्षम है। मान लीजिए, उदाहरण के लिए, कएक छोटे बच्चे को बुखार है। माता-पति डॉक्टर को बुलाते हैं, जो कहते हैं: "बच्चे को कसकर पकड़ो" — और — धड़ाम! — उसे इंजेक्शन लगा देता है। उसके बाद, वह नन्हा बच्चा, जैसे ही डॉक्टर को देखता है, रो पड़ता है और भाग जाता है। लेकिन अगर वे पहले उससे कहें: "सुनो, तुम बीमार हो; तुम्हें बुखार है। तुम स्कूल या खेलने नहीं जा सकते। देखो, दूसरे बच्चे वहाँ खेल रहे हैं। लेकिन अगर आप पहले उसे यह बताएं: "सुनो, तुम बीमार हो; तुम्हें बुखार है। तुम स्कूल या खेलने नहीं जा सकते। देखो, दूसरे बच्चे वहाँ खेल रहे हैं। लेकिन अगर तुम डॉक्टर से बस एक छोटा सा इंजेक्शन लगवा लोगे, तो तुम्हारा बुखार उतर जाएगा और फिर तुम भी जा कर खेल सकोगे," तो वह नन्हा बच्चा तुरंत अपनी आँखें बंद कर लेगा और इंजेक्शन के लिए डॉक्टर की ओर अपना नन्हा हाथ बढ़ा देगा। मैं यह कहना चाहता हूँ कि अगर एक छोटा बच्चा भी किसी अच्छी चीज़ की ज़रूरत को समझ सकता है, तो एक वयस्क के लिए यह कतिनी ज़्यादा समझ में आने वाली बात है?

एक बार जब कोई व्यक्ति समझ जाता है कि क्या सही है और क्या गलत, तो बस—मामला नपिट गया। मान लीजिए मैं आपसे कहता हूँ: 'मैं आपको खड़िकी से बाहर फेंक दूँगा।' आप समझ जाते हैं कि इसका क्या मतलब है। यहाँ तक कि बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति को भी यह समझ आता है कि अगर वह ऊपरी मंजिल की खड़िकी से गरि गया तो उसकी टाँगें टूट जाएँगी। वे समझते हैं कि खिाई क्या होती है और समतल जमीन क्या होती है, क्या अच्छा है और क्या बुरा। एक वयस्क जसिने पवतिर पतिाओं और सुसमाचार को पढ़ा है, वह जानता है कि क्या सही है और क्या गलत। उस क्षण से आपको अपना व्यवहार बदलना होता है। लेकिन अक्सर, जब आप कुछ लोगों से कहते हैं: "आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? क्या आपको एहसास नहीं है कि यह गलत है?" — तो वे शुरू कर देते हैं: "खैर, दुर्भाग्य से, मैं बस ऐसा ही हूँ। और मैं ऐसा क्यों हूँ? आखिर, मैं पहले भी ऐसा ही था..." — "हे भगवान, यह भूल जाओ कि तुम पहले कैसे थे! अब जब मैं आपको यह बता रहा हूँ, तो आप चीजों को ठीक करने के लिए क्या कर रहे हैं?" अगर वे सही से सोच नहीं सकते, तो यह एक अलग बात है; तब उनके पास एक बहाना होता है। लेकिन केवल एक बच्चा ही मठिाई के बजाय कोयला पकड़ लेगा, सरिफ इसलिए कि वह सही से सोच नहीं सकता।

— जेरोंडा, तुम्हारी माँ बहुत संवेदनशील व्यक्ति थीं; वह तुमसे प्यार करती थीं। उन्होंने तुम्हें पालना से ही इतनी सख्ती से कैसे पाला?

— बहुत कम उम्र से ही, कोई व्यक्ति जीवन के गहरे अर्थ को समझने और सच्ची खुशी पाने में खुद की मदद कर सकता है। जब मैं छोटा था और दूसरे लड़कों के साथ दौड़ लगाता था, तो मैं उन्हें पीछे छोड़ देता था। वे मुझे दौड़ने नहीं देते थे; वे मुझे भगा देते और मुझे 'प्रवासी' या 'शरणार्थी' कहकर चढ़ाते थे। मैं रोते हुए माँ के पास घर आ जाता था। वह मुझसे पूछती, 'तुम क्यों रो रहे हो?' 'लड़के मुझे उनके साथ दौड़ने नहीं देते,' मैं जवाब देता। 'क्या तुम दौड़ना चाहते हो? यह आँगन है — चलो, दौड़ो। तुम सड़क पर क्यों दौड़ना चाहते हो? ताकिलोग तुम्हें देखकर कहें "शाबाश"? इसमें तो गर्व की बात है।' एक और बार, मैं गेंद खेलना चाहता था, लेकिन लड़कों ने मुझे फिर से भगा दिया। मैं फिर रोया और मम्मी के पास गया। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या बात है? तुम फिर से क्यों रो रहे हो?" मैंने कहा, "लड़के मुझे गेंद से खेलने नहीं दे रहे हैं!" "हमारे पास एक बड़ा आँगन है, और तुम्हारे पास एक गेंद है - यहीं खेलो। क्या, तुम चाहते हो कि लोग तुम्हें देखें और तुम्हारी तारीफ करें? उसमें तो गर्व होता है।" और फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं सही थीं। और धीरे-धीरे, सरिफ़ दिखावे के लिए गेंद के साथ दौड़ने-भागने और खेलने की इच्छा मुझसे खत्म हो गई, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि उसमें कोई गर्व नहीं है। मैंने सोचा, 'यह सच है, यह सब कतिना बकवास है!' मम्मी सही थीं।" और बाद में, जब दूसरे बच्चों को इधर-उधर दौड़ते, गेंद को लात मारते और उसकी डींगें हाँकते देखा, तो मुझे सच में कोई परवाह नहीं हुई। मैं हँसा और कहा, "ये लोग आखिर कर क्या रहे हैं?" — हालाँकि उस समय मैं खुद भी बस एक छोटा लड़का था: मैं प्राथमिक स्कूल में तीसरी कक्षा में था। उसके बाद, मैंने एक स्वाभाविक जीवन जिया। और अब, अगर कोई मुझसे पूछे: 'आप क्या चुनेंगे: अगस्त में माउंट

अथोस की चोटी पर नंगे पैर काँटों पर चढ़ना, या किसी ऐसे समारोह में जाना जहाँ आपको पोशाक पहनाई जाएगी और सम्मानों से नवाज़ा जाएगा?" — मैं कहूँगा कि मैं नंगे पैर माउंट अथोस पर चढ़ना पसंद करूँगा। वनिम्रता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि मुझे उसका आनंद आता है।

जो लोग घमंडी होते हैं, उन्हें बचपन में अपने परिवार से कोई सहारा नहीं मिला। एक व्यक्ति की सांसारिक मानसिकता उन्हें सताती है। अगर कोई इस मामले में खुद को ढीला छोड़ दे, अगर माता-पिता अपने छोटे बच्चों की मदद नहीं करते जब वे, तो यह अंततः एक स्थायी स्थिति बन जाएगी। यह एक बात है कि बच्चे की थोड़ी प्रशंसा की जाए ताकि उनका हौसला न टूटे; और यह बिल्कुल दूसरी बात है कि उनके अहंकार को बढ़ाया जाए। मान लीजिए कि एक बच्चा कविता सुनाते समय ठोकर खा गया है और अब वह नरिश महसूस कर रहा है। उसकी माँ, यह देखकर, उससे कहती है: "कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। तुमने इसे अच्छी तरह से पढ़ा।" हालाँकि, अगर उसने कविता अच्छी तरह से सुनाई है और उसकी माँ दूसरों के सामने उसकी तारीफ करना शुरू कर देती है: "ओह, तुम कतिने होशियार लड़के हो! तुमने इसे बाकी सभी बच्चों से बेहतर सुनाया! मेरा बच्चा सबसे अच्छा है!" — यह गलत है। इस तरह माता-पिता अक्सर अपने बच्चों में अहंकार को बढ़ावा देते हैं। या, उदाहरण के लिए, एक बच्चा स्कूल में शरारत कर बैठता है और शिक्षक उसे डांटता है। वह घर आता है और अपने पिता से शिकायत करता है: "शिक्षक ने मुझ पर अन्याय से डांटा।" यदि पिता और माता बच्चे का पक्ष लेते हैं और, इससे भी बढ़कर, बच्चे की मौजूदगी में शिक्षक के बारे में यह कहते हुए बोलते हैं: 'मैं उसे दिखाता हूँ! उसे कैसे हमिमत हुई, मेरे अपने बच्चे को!...' — तो बाद में बच्चा यह मानने लगता है कि उसकी शरारत जायज़ थी, और अंततः कुछ मामलों पर खुद को ही सताने लगता है। सब कुछ की कुंजी यह है कि बच्चा माता-पिता के घर में रहते हुए ही कुछ बातों को समझ जाए। यदि कोई व्यक्ति किम उम्र से ही जीवन का गहरा अर्थ आत्मसात कर लेता है, तो सब कुछ अपने आप सही हो जाता है। अन्यथा, वे क्णकि चीजों से, मानवीय प्रशंसा से आनंद प्राप्त करते हैं, जो वास्तव में उन्हें कोई शांति नहीं देती, और वे स्वयं एक क्णकि व्यक्ति बने रहते हैं।

आओ पश्चाताप के माध्यम से दुनिया की मदद करें

— गेरोन्डा, आज दुनिया की मदद करने में सबसे अधिक क्या सक्षम है?

— यदि आज दुनिया को पश्चाताप सिखाया जाए, तो अकेले वही मददगार होगा। इसका लाभ उठाने के लिए, आइए हम संतों के जितने संभव हो उतने जीवन पढ़ें, विशेष रूप से उन लोगों के जो पश्चाताप पर विशेष जोर देते हैं। ईश्वर से पश्चाताप मांगना ज्ञान मांगना है। पश्चाताप की खोज करके और अधिक गंभीरता से पश्चाताप करके, हम स्वाभाविक रूप से अधिक वनिम्रता प्राप्त करेंगे। और फिर, आवश्यकता के रूप में, महान द्रव्य अनुग्रह आएगा, ईश्वर से प्रबोधन। पश्चाताप में बने रहने से, एक व्यक्ति ईश्वर की कृपा को बनाए रखता है। आखिरकार, लोग अच्छे हैं। बहुमत को देखो: वे पाप-स्वीकार के लिए नहीं जाते, वे पवित्र सहभागिता प्राप्त नहीं करते, वे महान अज्ञानता में हैं; फिर भी, दूसरी ओर, वे मेरे पास आते हैं और मदद मांगते हैं। इसमें कुछ न कुछ बात है।

— गेरोना, क्या ऐसा हो सकता है कि परीक्षाएँ लोगों के लिए ईश्वर के करीब आने का अवसर प्रदान करती हैं?

— जनिका स्वभाव अच्छा होता है, उनके लिए परीक्षाएँ सहायक होती हैं। जनिमें ऐसा स्वभाव नहीं होता, वे ईश्वर को दोष देना शुरू कर देते हैं, उसकी नंदा करते हैं, और अपने लिए बहाने बनाते हैं। समस्या यह है कि लोग यह स्वीकार नहीं करते, 'मैंने पाप किया है,' फिर भी वे पीड़ित रहते हैं। दुनिया में शैतान की बहुत शक्ति है। हमने उसे बहुत अधिक शक्ति दी है। आधुनिक मानव किस कदर पहुँच गया है! समस्या यह है कि पश्चाताप की कमी के कारण, वह ईश्वर को हस्तक्षेप करने और उसकी मदद करने से रोकता है। यदि पश्चाताप होता, तो सब कुछ ठीक हो जाता। तूफ़ान हमारा

इंतज़ार कर रहे हैं, तूफ़ान! ईश्वर अपना हाथ बढ़ाए! आइए हम पूरी दुनिया के पश्चाताप के लिए प्रार्थना करें। आइए हम उन लोगों के लिए भी प्रार्थना करें जो जानबूझकर कलीसिया को नुकसान पहुँचाते हैं और जनिका सुधारने का कोई इरादा नहीं है, कि ईश्वर उन्हें पश्चाताप की कृपा दे और फिर उन्हें एक बेहतर दुनिया में ले जाए।

आइए हम दुनिया को, जहाँ तक संभव हो, पश्चाताप करने में मदद करें, ताकि वह ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त कर सके। पश्चाताप और स्वीकारोक्ति— आज यही आवश्यक है। लोगों के लिए मेरी अपरिवर्तनीय सलाह यह है: पश्चाताप करो और स्वीकारोक्ति के लिए जाओ, ताकि शैतान अपनी शक्ति से वंचित हो जाए, और आप बाहरी दैवीय प्रभावों के अधीन होना बंद कर दें। लोगों को समझने और पश्चाताप करने के लिए, उन्हें एक जागृत्तिकी आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति व्यभिचार करने का पाप स्वीकार करता है। पाप-स्वीकार करने वाला पादरी उस पर पाप-मोचन की प्रार्थना पढ़ता है, उस पर एक प्रायश्चित्त लगाता है, और बस इतना ही कर देता है। लेकिन पादरी को उसे यह एहसास दिलाना चाहिए कि बुराई केवल व्यभिचार में ही नहीं थी। पश्चातापी को यह एहसास होना चाहिए कि ऐसा करके वह एक अपराधी बन गया है और उसने दो परिवारों को बर्बाद कर दिया है। फिर भी कुछ पादरी न तो खुद गहराई में जाते हैं और न ही लोगों को चिंतित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

— गेराना, ऐसे अच्छे लोग भी हैं जो, हालाँकि, शायद ही कभी चर्च आते हैं और नियमिति रूप से चर्च के संस्कारों में भाग नहीं लेते...

— ऐसे मामले हैं जहाँ कोई व्यक्ति बहुत बार चर्च नहीं जाता, फिर भी उसमें भक्ति और दया होती है, और इसलिए ईश्वर अपने लिए एक स्थान पा लेते हैं और उनमें नवित्ति करते हैं। यद्यपि लोग चर्च के संस्कारों के जीवन में भाग लेते, तो वे अपने आध्यात्मिक जीवन में बहुत अधिक फलते-फूलते। हालाँकि, अन्य लोग चर्च जाते हैं, पाप-स्वीकार करते हैं, पवित्र सहभागिता प्राप्त करते हैं, और जो कुछ भी आवश्यक है वह सब कुछ करते हैं; फिर भी ईश्वर को उनके भीतर वास करने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता, क्योंकि उनमें वनिमृता, दया और सच्ची पश्चाताप की कमी होती है। अनुग्रह की उचित अवस्था प्राप्त करने के लिए, केवल एक आध्यात्मिक पति के सामने पाप-स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं है। पश्चाताप भी होना चाहिए। और हर प्रार्थना की शुरुआत ईश्वर के प्रति स्वीकारोक्ति से होनी चाहिए। बेशक, लगातार रोते हुए नहीं: 'मैं ऐसा-वैसा हूँ, ऐसा-वैसा, इस तरह की चीज़...' — और फिर उसी पुरानी दनिचर्या को जारी रखना। यह पाप का सच्चा अनुभव नहीं है। इसे सच्चे रूप में अनुभव करने से, एक व्यक्ति, भले ही थोड़ा सा ही सही, एक बेहतर इंसान बन जाता है।

क्या आपको याद है कि इस्राएलियों ने कतिनी सरलता से प्रार्थना की थी? "हे प्रभु, उठो, तुम क्यों सो रहे हो?"²⁶¹ अर्थात्, "हे प्रभु, जागो, तुम क्यों सो रहे हो?" और प्रभु ने उत्तर दिया, "मैं उठूँगा... मदरि से बलवान और उन्मत्त होकर, और मैं अपने शत्रुओं को... मार गिराऊँगा..."²⁶² कतिनी सादगी, कतिनी वनिमृता, फिर भी कतिनी नरिभीकता के साथ उन्होंने कहा: "प्रभु, अब हम मूर्तपूजकों से क्या कहें? आपने हमें लाल सागर पर बचाया, लेकिन अब हमारा क्या इंतज़ार कर रहा है? मरुभूमि में मरना है या वदेशी जनजातियों की तलवार से मारे जाना? हमें उपहास का पात्र न बनाओ!"²⁶³ लेकिन हम यह सोचने की भी हम्मित न करें कि हम कुछ इस तरह कहने के लिए अपना मुँह खोलें: "हे प्रभु, आप क्यों सो

²⁶¹ भजन संहिता 43:24।

²⁶² भजन संहिता 77:65–66।

²⁶³ नरिग. 32:12; व्यवस्थाविरण 9:28; भजन संहिता 78:10 देखें।

रहे हैं, और नहीं देखते?" — क्योंकि इसके लिए हमें सरि पर एक थप्पड़ पड़ सकता है। यह नरिलज्जता होगी। इस्राएलियों ने ये शब्द वनिमरता और सादगी से कहे। उन्होंने दोष ईश्वर पर नहीं मढ़ा, और न ही उनसे कहा: 'हे प्रभु, आपने ऐसा क्यों किया?' — बल्कि उन्होंने पश्चाताप किया और वनिती की: 'हम इससे भी बदतर के पात्र हैं, लेकिन अब हम अन्यजातियों से क्या कहेंगे?' और क्या आप देखते हैं? उन्होंने तुरंत ईश्वर को दया के लिए प्रेरित किया। क्या आप इसे समझते हैं? भूल को स्वीकार किया गया, पश्चाताप हुआ, और परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और 'शत्रुओं को मार गिराया...' लेकिन अगर हम भी खुद को एक कठनि स्थिति में पाते हैं और आध्यात्मिक रूप से खुद को संचालित करने में असफल रहते हैं, तो इस दुनिया के लोग हमसे कहेंगे: 'अच्छा, तुम्हारी प्रार्थना कहाँ है? आखिर तुम कहते तो हो कि तुम प्रार्थना करते हो। तो फिर तुम्हारा क्या मामला है?' और इस प्रकार हम उपहास का पात्र बन जाते हैं।

पश्चाताप बुराई को समाप्त करने में मदद करता है

दुनिया के लिए पश्चाताप मांगते समय, हमें खुद को दोषी लोगों में गनिना चाहिए। प्रार्थना में, हमें यह नहीं कहना चाहिए: 'दुनिया की मदद करो, जो पापी है।' बाइबिल के तीन युवक बेबीलोन की कैद में पैदा हुए थे, फिर भी उन्होंने यह नहीं कहा: 'हम किस बात के दोषी हैं?' — लेकिन उन्होंने परमेश्वर के सामने स्वीकार किया: 'हमें वही मिला जिसके हम हकदार थे; हम इससे भी अधिक के लायक थे।' उन्होंने ऐसा कहा मानो, बेबीलोन की बंधुवाई से पहले, वे उन लोगों में से थे जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया था, मानो वे भी पाप में सहभागी रहे हों, भले ही वास्तव में उनका इसमें कोई हिस्सा नहीं था, क्योंकि वे उन वर्षों में पैदा भी नहीं हुए थे। बेबीलोन की भट्टी में उनका प्रार्थना-पत्र मेरे हृदय को छू लेता है।" *जो कुछ भी आपने हम पर किया है, उसमें आप धर्मी हैं... क्योंकि हमने पाप किया है और उल्लंघन किया है... और अब हमारे पास कहने के लिए कोई शब्द नहीं है... अंत तक हमें न छोड़िए... और अब्राहम के वास्ते, जिससे आप प्रेम करते हैं, हमसे अपनी दया न रोकें...* अर्थात्: "हे प्रभु, आप हमें न्यायपूर्वक दंडित कर रहे हैं, क्योंकि हमने पाप किया है। लेकिन केवल अब्राहम के वास्ते, जिससे आप प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पाप नहीं किया, हमें न छोड़ें।" उन्होंने खुद को पापियों में गनिना और अपने ही होठों से कही बात पर विश्वास किया। इसीलिए भट्टी ठंडी हो गई, जबकि उसे देखने आए अवशिवासी आग की लपटों से झुलस गए।²⁶⁴

ऐसे आंतरिक कार्य को कएि बना, एक व्यक्ति अपने लिए लगातार बहाने बनाने लगता है। 'शैतान ने मुझे पाप में डाला,' या 'आदम दोषी है,' या 'हव्वा दोषी है, मैं नहीं।' एक 'पेशेवर धर्मशास्त्री' ने एक बार मुझसे कहा: 'लेकिन हमें अब ईव के कारण क्यों भुगतना चाहिए?' — 'मेरे प्रिय पुरुष,' मैंने जवाब दिया, 'क्या इससे तुम्हारा उद्धार रुकता है? तुम बेचारे आदम और दीर्घ-पीड़ित ईव के बारे में बार-बार क्यों बात कर रहे हो? एक ही एकलौता पाप — और इतनी सदियों तक नरक में तड़पते रहना!' लेकिन मसीह हमारे पास आए और हमें बचाया।" — "यद्यपि सत्तर बार सात तक पाप करते हो," उन्होंने कहा, "और पश्चाताप करते हो, तो मैं तुम्हें क्षमा कर दूँगा।"²⁶⁵ हम हजारों बार पाप करते हैं, लेकिन जब तक हम सच्चे दिल से पश्चाताप करते हैं, मसीह हमें क्षमा कर देते हैं। और फिर भी हम यही कहते रहते हैं कि आदम और हव्वा को दोषी ठहराया जाना चाहिए? और देखो: किसी को भी ईव नाम नहीं दिया जाता। आइए किसी नवोदित को उसके

²⁶⁴ दानयिल 3:1–100 देखें।

²⁶⁵ तुलना करें: मत्ती 18:22।

मुंडन के समय 'ईव' नाम दें, या कम से कम 'जोई' नाम दें,²⁶⁶ यदा ईव नाम बहुत भारी लगता है। आखिरकार, ईव के साथ इस तरह का व्यवहार करना बहुत अन्यायपूर्ण है! वह हम सभी की पूर्वज हैं, वह पूरी दुनिया की माँ हैं, और फरि भी हम उनका नाम सुनना भी नहीं चाहते! और असल में तो, शैतान को ही ईश्वर ने शाप दिया था। "साँप धूर्त था।"²⁶⁷ शैतान मनुष्य को धोखा देने के लिए साँप में प्रवेश कर गया। बस देखिए कवि हर चीज़ का दोष ईव पर कैसे मढ़ते हैं। वे कहते हैं कि हमें बर्बाद करने वाली वही थी, कि अगर उसकी अवज्ञा न होती, तो हम आज भी स्वर्ग में रह रहे होते — और दुखी न होते। लेकिन अगर हम भी मसीह से सुनते: 'तुमने एक ही गलती की है — अब इतने युगों के लिए नरक में जाओ!' खैर, तो फिर उन्हें भी आजमाने दो!... आखिरकार, यह कतिनी कृतघ्न दुनिया है!...

खैर, पश्चाताप एक महान चीज़ है। हमने अभी तक यह महसूस नहीं किया है कि पश्चाताप के माध्यम से, एक व्यक्ति ईश्वर के नरिणय को बदल सकता है। यह तथ्य कि एक व्यक्ति के पास ऐसी शक्ति है, कोई मज़ाक नहीं है। क्या आप बुराई करते हैं? ईश्वर आपको एक हल्की चेतावनी देते हैं। क्या आप कहते हैं, 'मैंने पाप किया है'? ईश्वर अपना क्रोध दया में बदल देते हैं और आप पर अपनी कृपा बरसाते हैं। दूसरे शब्दों में, जब एक अवज्ञाकारी बच्चा होश में आता है, पश्चाताप करता है और पछतावा महसूस करता है, तो उसका पिता प्यार से उसे सहलाता और सांत्वना देता है। इस्राएली, जो ईश्वर की आज्ञाओं से भटक गए थे, ने बेबीलोन की कैद में पचहत्तर साल बिताए। लेकिन अंत में, जब उन्होंने पश्चाताप किया, तो साइरस राजा बना; उसके बारे में यह कहा जा सकता है कि उसने उन इस्राएलियों से बेहतर व्यवहार किया जिन्होंने बलदान के पवित्र स्थानों का अपमान किया था। ईश्वर ने साइरस की सोच को बदल दिया और उसे स्वर्ग के ईश्वर में एक विश्वासी बना दिया। और इस प्रकार साइरस ने इस्राएलियों को उनकी स्वतंत्रता प्रदान की, उन्हें मंदिर के निर्माण के लिए धन और लकड़ी दी, उनके लिए यरूशलेम के चारों ओर दीवारें बनवाईं, और इतनी दया और इतनी श्रद्धा दिखाई, जो, अगर मैं कह सकता हूँ, तो खुद इस्राएलियों ने भी नहीं दिखाई थी।²⁶⁸ और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि लोगों ने पश्चाताप किया और बदल गए।²⁶⁹ देखो कि पश्चाताप बुराई को कैसे मटिने में मदद करता है!

तुम्हें मैकाबीज़ की सभी पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिए। वे असाधारण रूप से शक्तिशाली पुस्तकें हैं। क्या राजकीय आदेश था वह! हाथियों से यहूदियों को रौंद डालना! उन्होंने प्रभारी नियुक्त किए, नष्टपादन के लिए सभी तैयारियाँ कीं, ताकि पाँच सौ हाथियों को क्रोधित किया जा सके; उन्होंने उन्हें धूप के साथ मिलाई गई मजबूत शराब पिलाई, और राजा के नष्टपादन शुरू करने का इंतज़ार करने लगे। लेकिन राजा ने वह आदेश भूल गया था जो उसने उन्हें दिया था। हाथियों के प्रमुख ने उसके पास आकर कहा: 'हे राजा, हम आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हाथी, यहूदी — सब कुछ तैयार है। और मेहमान अधीर हो रहे हैं।' — 'और यह सब करने के लिए तुम्हें किसने कहा?' — राजा ने उत्तर दिया। चिल्लाहट, धमकियाँ!.. और यह सरिफ एक बार नहीं, बल्कि तीन बार हुआ।²⁷⁰ राजा द्वारा वह आदेश भूल जाना जो उसने स्वयं दिया था? यह कोई हँसी-मज़ाक की बात नहीं है। और उसने न केवल यह भूल किया, बल्कि बाद में उसने यहूदियों के प्रति अपना रवैया ही पूरी तरह से बदल दिया। यह सबका आधार है: कि दुनिया पश्चाताप करे।

²⁶⁶ जोए (ग्रीक) — जीवन। तुलना करें: उत्पत्ति 3:20।

²⁶⁷ उत्पत्ति 3:1 देखें।

²⁶⁸ देखें 2 एस्दरास 1:1 आदि।

²⁶⁹ देखें 1 एस्दरास 8:88–92।

²⁷⁰ देखें 3 मैकाबीज़ 5:1–35।

— गेरोन्डा, क्या वशिव शांतिके लिए संघर्ष करने को समर्पति वभिनिन अंतरराष्ट्रीय संगठनों से कोई लाभ होता है? क्या वे इसे बनाए रखने में मदद करते हैं?

— यह कई बातों पर निर्भर करता है। कुछ लोग हैं जो इन सबको अच्छे इरादों से स्थापति करते हैं। लेकिन कभी-कभी आपको ऐसा 'मशिरति झुंड' मिलता है! इसमें जादूगर, अग्नि-पूजक और प्रोटेस्टेंट हैं — इतनी गड़बड़ है कि आपकी आँखों में पानी आ जाए! और वे 'दुनिया भर में शांतिके लिए!' लड़ रहे हैं। उनका क्या फायदा? ईश्वर मुझे क्षमा करे, लेकिन ये 'मशिरण' शैतान ने बनाए हैं। अगर संगठन खुद ही पापी है, तो कैसी शांति हो सकती है! अगर लोग ईश्वर से मेल नहीं खाते, तो शांति कैसे आ सकती है? जब कोई व्यक्ति ईश्वर से मेल करता है तभी शांति आती है—भीतरी और बाहरी दोनों। लेकिन किसी व्यक्ति का ईश्वर से मेल करने के लिए, उसे होश में आना होगा। उसे पश्चाताप करना होगा और ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीना होगा। तब ईश्वर की कृपा और शांति उनके भीतर जड़ जमा लेती है। और फिर वे यह सुनिश्चिती करने में मदद कर पाते हैं कि उनके आसपास भी शांति बिनी रहे।